

नखशिखहजारा ॥

परमानन्दसुहाने संग्रहीत ॥

जिसमें

श्रीजगज्जननी राधिकाजी महारानी के नख-
शिखका वर्णन पद्माकर, पजनेस, परताप, प्रवीन,
वेनी, बलदेव, बलभद्र, ब्रह्म, भूषण, भगवन्त, म-
तिराम, मुधारक, रघुराज, रघुनाथ, रसखानि शम्भु,
हठीदिव्वाकर, सेनापति, दूलहद्विजराज, ठाकुर, चि-
न्तामणि, शिवनाथ, गिरिधरि, ग्वाल, केशवदास,
किशोर, कालिदास, कविन्द, श्रीपति, इत्यादि
कवियों के बनायेहुये २३७ दोहा व १००० सवैया
कवित्तों में वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीवल्लभकुलसेवक वैश्यकुलोत्पन्न बंगालीलाल सु-
हानेके पुत्र परमानन्दसुहाने ने सर्वकाव्यानुरागि-
यों के अवलोकनार्थ अतिपरिश्रम करके अने-
कानेक मुद्रित व हस्तलिखित ग्रन्थोंसे
चुनकर संग्रहकिया ॥

प्रथमवार

लखनऊ

मुंशीनिवलकिशोर (सी, आइ, ई) के छापेखाने में छपा
दिसम्बर सन् १८९३ ई० ॥

हकूमतनाफ महफूज है वहकू नयनकिशोर गोम

विज्ञापनपत्र ॥

विचित्रचरित्र ॥

तयारहै ! तयारहै ! तयारहै ! अब यह अपूर्वकथा विचित्रचरित्र नामीतयारहै इसपुस्तकमें १४४७ सफेहें और आदिते अन्ततक प्रेम-वीर-शृंगार और करुणाआदि अनेकरसोंसेभरेहुए नानाप्रकारके छन्द आख्यानोंसे पूर्ण है मुख्य आशय इसपुस्तकका यह है कि इसभरतखण्ड में एकसमय ऐसा होगयाहै कि उससमय में सर्वत्र म्लेच्छोंकाराज्य होगयाथा और वह म्लेच्छ ऐसे मायावी थे कि दूसरी पृथ्वी दूसरा आकाश दूसरा सूर्य और दूसरा चन्द्रमा माया बलसे बना देते थे और अपनेको ईश्वर समझते थे और संतारी मनुष्यभी उनको अपनाईश्वरसृष्टिकर्ता जानकर उनकी पूजा और उपासना ईश्वरके समान करतेथे निदान ऐसाहोगया था कि उत्तसमयमें संपूर्ण वेदमार्ग संतारसे उठगयेथे और जो सृष्टिकर्ता परमेश्वरहै उसका कोई नामभी नहींजानताथा ऐसा कठिनसमय प्राप्तहोनेपर उससमयके महात्माओंने सच्चिदानन्द ईश्वर से उन म्लेच्छों के नाश होनेकी प्रार्थनाकी और उसके अनुसार एक शत्रुंजयनामी बड़ाहरिभक्त राजा उत्पन्नहुआ और उसने सहस्रों वर्ष युद्धकरके सब पृथ्वी के मायावी म्लेच्छों का नाशकरके सन्मार्गको स्थापितकियायह तौ इसपुस्तकका तात्पर्याशय है और इसके अन्तर्गत जो कथा वर्णित हैं वह यहहैं १ मायासेरचेहुए सहस्रोंदेश और पर्वतोंकावर्णन २ सहस्रोंमायाकृत वन वाग उपवन और वाटिकाओंकी शोभाका कथन ३ मायाकृत असंख्यदुर्ग प्रासाद मन्दिर नगर ग्राम और सभाओं की अद्भुत सुन्दरताका आख्यान ४ मायाकृत लाखोंनदी सरोवर और समुद्रों की शोभा की कथा ५ सहस्रों मायावी म्लेच्छ और म्लेच्छियोंके मायाकृत स्वरूप और सामर्थ्यका निरूपण ६ शतशः मायाकृत युद्ध होने की कथा ७ नानाप्रकार के मायाकृत अष्ट शस्त्रोंका वर्णन ८ सहस्रों स्त्री और पुरुषों की नखशिखशोभा और शृंगार

भूमिका ॥

विदित हो कि इस पुस्तक के रचनेका यह कारण है कि एक देवस में कुछ कवित्त अवलोकनकर रहा था उसी समय हमारे नेता बंगालीलाल सुहाने जोकि इसकाव्यके कहनेमें प्रसिद्ध थे, मुझसे कहा कि एक पुस्तक तुम ऐसी संग्रह करो कि जिसमें नख न शिख तकके कवित्त एकसहस्र अनेकानेक कवियों के रहें — मैं प्रिय पाठक गणो यह आज्ञा पिताकी पातेही उसी दिन ने इस पुस्तकके रचने का उत्साह हुआ, परन्तु दैवगतिसे पिता का देहान्त जेठ सुदी ११ संवत् १९४७ तारीख ३० मई सन् १८९० को होजाने के सबब से फिर यह कार्य वर्ष भरतक न होसका इसके पश्चात् पुतली घरकी नौकरी छूटजाने के सबबसे फेर मुझको राजनादगांवदी सेन्ट्रल प्राविन्सेज मिलसलिमिटेड के सेक्रेटरी वा ऐजण्ट पंडित गदाधर शुक्ल के पास जाना पड़ा वा उनके आश्रित वहां रहा लेकिन वहां भी यह ग्रंथ संग्रह न होसका तदनन्तर तारीख ९ अक्टूबर सन् ९२ को उनकी मृत्यु होजाने के सबबसे वहांसे नौकरी छोड़कर घरआया--वा दो तीन महीनाका अवकाश मिलनेसे फिर यह कार्य पूर्णरूपसे होसका अब मैं सब विद्यानुरागियोंसे प्रार्थना करताहूं कि इस विषयका यह प्रथमही संग्रह है इससे जैसा होसका संग्रह किया जहां कहीं इसमें अशुद्ध वा अनुचित देखें क्षमाकरेंगे ॥

(आपका शुभचिन्तक श्रीविल्लभ कुल सेवक

परमानन्दसुहाने)

जिलाजवलपुर, मध्यप्रदेश

इतिहास ॥

सब महाशयोंको सूचित किया जाता है कि इस पुस्तकका कुल हक मैंने श्रीमान् मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) मालिक मतवा अवध अखबार लखनऊ को दे दिया है इससे मेरी वा उक्त महाशय की आज्ञाविना कोई छापने का अधिकारी नहीं है ॥

मैं सर्व काव्यानुरागियों के अवलोकनार्थ और भी तीन ग्रन्थ संग्रह कर रहा हूँ उनके नाम नीचे लिखे हैं, वा उक्त महाशय की कृपा दृष्टि रहने से इसी प्रेसमें प्रकाशित किये जायेंगे ॥

(१) षट् ऋतुहजारा--इसमें एकहजार कवित्त सवैया हर एक कविके अलग अलग रहेंगे और ऋतुभी अलग अलग रहेंगी सूची-पत्र में देखकर जिस कविका कवित्त चाहो तुरन्त देखलो ॥

(२) परमानन्दसंग्रहीतकवित्तहजारा--इसमें भी एकहजार कवित्त सवैया प्राचीन कवियों के जुदे जुदे हर एक कविके रहेंगे ॥

(३) नायकासर्वसंग्रह--इसमें नायका भेदके प्रायः दो हजार कवित्त सवैया रहेंगे ॥

नीचे लिखेहुयेग्रन्थ प्राचीनकवियोंके बनायेहुये जिनमहाशयों के पास हस्त लिखित वा छपेहुये हों और मुझे कृपा पूर्वक दें तो मैं उनको उनकी इच्छानुसार पारितोषिक देसक्ता हूँ मिहरबानगी करके नीचे लिखे पतेसे पत्र भेजें ॥

ग्रन्थोंकेनाम ॥

(कालिदासहजारा--कालिदासकविकृत) (भूषणहजारा--भूषणकविकृत) (किशोरसंग्रह--किशोरकविकृत) (सतकविगिराविलास--बलदेवकविकृत) (हनूमान् नखशिख--खुमानकविकृत) (रागसागरोद्भवरागकल्पद्रुम--कृष्णनन्द व्यासदेवकृत यह कलकत्ता का छपा हुआ है) (रहीमकविके दोहा) बाबिहारी कवि की सतसईके ऊपर करीबवीसटीकाहुयेहैं वहभी हमको चाहिये ॥

वावू परमानन्द सुहाने बम्बई बीडी

मरचन्ट कोतवाली के पास

जबलपुर, सिटी मध्यप्रदेश

नखशिखहजारा का सूचीपत्र ॥

नम्बर	विषय	पृष्ठ	तादाद दोहा	तादाद क० व स०
१	अथ चरण वर्णन	१	१	३४
२	अथ पग अंगुरी व०	६	१	५
३	अथ पद अंगुरी भूषण सह व०	११	६	६
४	अथ पद नख व०	१३	३	५
५	अथ पग तल व०	१४	८	५
६	अथ गड्डी व०	१६	४	२
७	अथ मुरवा भूषण सहित व०	१७	२	३
८	अथ गुलफ व०	१८	०	४
९	अथ पिंडुरी व०	२०	०	३
१०	अथ जंघ व०	२०	४	१३
११	अथ नितम्ब व०	२४	४	१२
१२	अथ चुद्रघांटिका व०	२७	०	३
१३	अथ कटि व०	२८	६	१८
१४	अथ नाभौ व०	३३	०	६
१५	अथ उदर व०	३५	०	५
१६	अथ त्रिवली व०	३७	५	१२
१७	अथ रोमराजी व०	४०	०	१३
१८	अथ रोमावली व०	४४	६	१२
१९	अथ हृदय व०	४७	०	२
२०	अथ कुच तरहटो व०	४८	०	२
२१	अथ कुच व०	४९	८	५०
२२	अथ कुचअथ लालमा और श्यामता व०	६३	५	६
२३	अथ कुच कंचुकी सहित व०	६६	१३	१५
२४	अथ चार व०	७१	०	३
२५	अथ भुज व०	७१	४	१५
२६	अथ करतल व०	७६	४	१६
२७	अथ कर अंगुरी व०	८०	६	५
२८	अथ नख मेहंदो सहित व०	८२	३	५
२९	अथ कलाई व०	८४	४	४
३०	अथ बाँठ व०	८५	३	१३
३१	अथ शीशा व०	८९	०	१४
३२	अथ मुख व०	९३	१४	३८
३३	अथ मुख सुवास व०	१०४	१	५

नम्बर	विषय	पृष्ठ	तादाद देहा	तादाद क्र० व ५०
३४	अथ शीतला दाग व०	१०५	०	७
३५	अथ मुख राग व०	१०७	१	४
३६	अथ दशन व०	१०८	०	२०
३७	अथ रसना व०	११३	१	१०
३८	अथ वाणों व०	११६	१	१३
३९	अथ हासी वा मुसक्यान व०	११९	६	१९
४०	अथ अधर व०	१२५	६	१९
४१	अथ अधर गड़हा व०	१३०	९	२
४२	अथ टोही व०	१३०	८	१४
४३	अथ कपोल व०	१३४	४	१५
४४	अथ कपोल गड़हा व०	१३८	०	४
४५	अथ कपोल तिल व०	१३९	०	१०
४६	अथ अग्रण भूषण सहित व०	१४२	८	२०
४७	अथ नासिका भूषण सहित व०	१४८	०	२६
४८	अथ नेत्र व०	१५४	१५	६०
४९	अथ सेन व०	१७६	०	५
५०	अथ तार व०	१७८	०	५
५१	अथ कटाक्ष व०	१७९	०	४
५२	अथ नेत्रतिल व०	१८०	०	२
५३	अथ वरुणी व०	१८१	०	८
५४	अथ पलक व०	१८३	०	२
५५	अथ अंजन व०	१८३	१	४
५६	अथ मृकुटी व०	१८४	०	१४
५७	अथ भाल व०	१८८	०	११
५८	अथ वेदी व०	१९१	८	२
५९	अथ अलक व०	१९२	१३	२०
६०	अथ पाटी व०	१९८	०	११
६१	अथ मांग व०	२०१	५	१०
६२	अथ शीशफूल व०	२०४	३	७
६३	अथ केश व०	२०६	५	२३
६४	अथ वेनी व०	२१२	६	२५
६५	अथ जूरा व०	२१८	०	५
६६	अथ खट्टे उपमा वा कृत्रि व०	२२०	०	२०२

नखशिख हजारके कवियोंका सूचीपत्र ॥

हे प्रिय काव्य रसिकों ॥

आपने आजतक अनेकानेक इसविषयके ग्रन्थ अवलोकन किये होंगें परन्तु ऐसा सूचीपत्र दृष्टिगोचर न हुआ होगा इस सूचीपत्रमें यह गुण है कि कवियोंके कवित्तसवैया बहुत सरलता से देखने में आते हैं, इसग्रन्थमें एकसौ साठ कवियों की कविता है वा जिन कवित्तोंमें कवियोंके नाम ठीक ठीक नहीं मालूम होते वे जुदे लिखे गये हैं. इसग्रन्थको देखकर कोई कोई महाशय यह भी कहेंगे कि उक्त कवियोंके जीवन चरित्र क्यों नहीं दिये सो जीवन न देनेका यह कारण है कि एकएक नामके कई कवि हो गये हैं इससे उनकी काव्य अलग अलग लिखना वर्तमान समय के संग्रह कर्त्तासे नहीं होसता वा एक ग्रन्थ महान् परिश्रमसे शिवसिंहजीने (शिवसिंह सरोज) नाम संग्रह करके छपाया है इसमें एक हजार कवियोंके जीवन चरित्रमय सन् सम्बतके दिये हैं और इसी प्रेसमें छपा है अगर देखनेकी इच्छा होवै तो मंगाकर देखिये. मेरीभूलसे पांच कवियोंके कवित्त इसग्रन्थमें नहीं दिये गये जिनके नाम कि ग्रन्थके आदिमें हैं वा कई ऐसे कवित्त भी हैं कि जो दो दफे लिख गये हैं उन कवित्तों के ऊपर ऐसा चिह्न है आप सब महाशय रुपा करके इसमेरी भूल को क्षमा करेंगे ॥

आप का रुपाभिलाषी
पुस्तक संग्रहकर्त्ता

परमानन्द सुहाने
बम्बई बीड़ी मरचण्ट
जबलपुर सिटी ॥

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ पंक्ति नम्बर		
१ श्रीधर कवि			
कोहर औ बिंदुइंदु बधूके बरण जीते	३	१७	१०
२ श्रीपति कवि (टोटल १)			
आगिराति ललित बनत चहुँ ओर लागी	५०	१५	४
कैसे राति रानीके सिधोरा कबि श्रीपतिजू	५१	६	७
कंचनकी पाटीपर काजर की धार मानो	२१३	६	४
फूले पारिजातमें लखातहै मधुप कैधौं	१४१	१६	६
पलकै अमोल तापै बरुनी भूवा लंसत	१६२	६	२८
खंजनके प्राणपिय बिरह तिमिर भान	१६६	५	४५
सुखमा मलिंदके अलिंद अरबिंदहै	१६८	११	५५
सारी घनघोर वारी जरजरी कोरवारी	२४३	५	९६
भूमत भुकत उभुकत फेर भूमत है	१६९	२	५८
वादर रसाल पर दामिनीको ख्याल कैधौं	२०५	१०	५
वारिजात वारिजात पारिजात पारिजात	२५४	१२	१४४
चन्दकला की कला कलधौं तकी	२३२	८	५१
रोहिनी रमणकी मरीची सी सुखद सीरी	२५७	१७	१५७
गोरी महाभोरी तेरे गातकी गुराईदेखि	२६२	१९	१७९
३ आलम कवि (टोटल १४)			
मौनीबिबि गंगाकूल करत तपस्या कैधौं	५५	४	२३
सन्पुट कमल तापै राजत प्रभात द्युति	५३	१८	२९
सजनी मिलि है अवलोकिकहै	६९	१०	९
सुधाको समूह तामें दुरे हैं नक्षत्रकैधौं	११३	३	१८
सौरभ सकेलि मेलि केलिन्ह की बेलिकिन्ही	२४५	२३	१०७
रजनीमधि प्यारीने गौन कियो	६९	५	८
रंगभरी रसभरी सुन्दर सुगन्ध भरी	२५८	४	१५९
फूलि फुलवारीरही उपमा न जात कही	१११	१६	११
प्यारीतन भूमितामें रूप जलसागरहै	१५३	६	२२

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
प्रेम रँगमगे जगमगे जागे यामिनीके	१६२	१२	२९
लांबी लहकारी बहूँ पेचनकी भारी	२१७	१७	२२
अंगनई ज्योतिलै बरंगना बिचित्र एक	२२२	२५	१३
हारही के भार उरभार ना सँभारैनारि	२५६	१८	१६६
देह में बनकसी है नूपुर भनकसी है	२६६	८	१९४
४ अमरेश कवि	(टोटल १४)		
किधौँ रूप सरोवर में ते कढ्यो	९१	१४	=
हमही में रहै पै न कहेमें है दहै देह	१६१	१४	२०
५ अम्बुज कवि	(टोटल २)		
क्षीरधि की क्षीर कैधौँ नरिसर आपको	१२२	३	=
६ औध कवि	(टोटल १)		
उडिगे चकोर मोर खंज शिलीमुख्य जोर	२७६	४	८८
७ ईश्वर कवि	(टोटल १)		
पीठि तन ताकतही दीठि डसिलेत	२१६	११	१७
८ उदैनार्थ कवि	(टोटल १)		
अरुण कमल अरुणोदय परम मित्र	८	५	२९
९ ऊधव कवि	(टोटल १)		
कज्जल कवच किये वरुनी के शर लिये	१५८	१४	१२
१० ऊधवरास कवि	(टोटल १)		
यौवन प्रवाह तामें छविकी तरंग उठै	१७२	२०	७४
११ केशो कवि	(टोटल १)		
कामकी दुहाई की सुहाई सखी माधुसी की	११७	११	४
१२ केशव कवि	(टोटल १)		
चम्पकली दलहूते भली	१२	७	३
चहूँघोर चित्तचोर चाक चक चक्रमणि	२५	१८	४
कोमल कमलमुखी तेरे ये युगल जान्हु	२३	१५	१०

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
केशव कुँवर देवी राधिका कुँवरिआजु	८८	१८	१२
केशव सुगन्ध श्वास सिद्धिन की गुफाकैधौ	१४८	६	१
केशववाकी चितौनकी कौन	१७७	४	२
केशवअशोक कीधौ सुन्दरशृंगार लोक	१८८	२०	१
केशव कसाहै कैधौ अनंगकी सुरंग भूमि	१९७	१८	१८
कैधौभयो उदित अनंगजू को अंगउर	१०४	५	१
कैधौ मुख कमल में कमलाकी ज्योति होती	१२४	१६	१९
कैधौ लागी पंकज के अंक पंक लीक	१८८	५	१३
कैधौकुहू युग आय मिली	१९९	८	४
कैसी छर्वाली की छायरही छवि	२०६	२२	२
अधर अरुण अति सुबुधि सुधाके धर	१२९	१४	१८
पहिरे करणफूल देवी है कुमारी एक	१४७	११	१८
पियमन दूत कैधौ प्रेमरथ सूतकैधौ	१७५	११	८५
राधेके अंग गोराई सी और	२५८	१६	१६१

१३ केशवदास कवि

(टोटल १७)

कैधौ यह कोमल अमलताकी रंगभूमि	३	११	९
कैधौकाम बागवान बोई या शृंगार बेलि	४१	२३	५
कैधौ मनाहर मनिहार दितिसुत	५३	४	१५
केशवदास गौर गौर गोलकाम शूलहर	७५	१६	१५
केशवदास रागरागिनीन को कि अंगराग	१०७	२३	३
कैधौकली बेली कि चमेली की चमक परै	१०९	७	१
किधौ सातौ मंडलके मंडन अयंक मधि	११३	१५	२०
कैधौ हरि मनोरथ रथकी सुप्रथ भूमि	१३८	४	१४
केशवदास सकल सुवासको निवास सखि	१८४	२	२५
कैधौ रसरज रस रसित अस्ति	१८४	१२	४
कोमल अमल चल चीकने चिकुर चारु	२११	१९	२३
गंगाजूके जल मध्य कंठके प्रमाण बैठि	८	१७	३१

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
गोरी गोरी आँगुरीन रातेसे रुचिर नख	२२	५	५
गजरा बिराजै गजमोतिन के अतिनीके	२५	१०	४
ग्रहनि में कीनों गेह सुरनिदैं देख्यो देह	१०२	११	३३
भूतकी मिठाई जैसी साधुकी भुठाई जैसी	२९	१०	१
आली ऐंडदार बैठी ज्वानी के तखत पर	६२	४	५३
सुर नर प्राकृत कविलरीत आर भरी	९२	११	१२
शोभन शृंगार रसकीसी छीटिसोहै फोंक *	१३४	९	१४
शोभन शृंगार रसकीसी छीटिसो है फोंक *	१४१	२	४
लेतिमोल लालको अमोल चित्त गोल ग्रिव	९२	१८	१३
देखतही आधापल बाधीजाति बाधासत्र	११६	७	१०
रागनिके आगर बिराग के बिभाग कर	१४६	२४	१६
खुटिला खचित मणि सोहत बनक बनि	१४७	५	१७
चन्दन चढाय चारु कुम्कुम लगाय पीछे	२१०	५	२०
१४ कालिदासकवि		(टोटल २५)	
राजत गँभीर रोमावली बनतीर मनतीर	३४	२३	६
रसना ललित कल वानीजूको आसन है	१२३	१९	१५
राते सेत फूलन की उलही ललित पांति	१९९	२५	७
योवन नृपति जाके परस पुनीत भये	६१	१३	५०
लाल करताल कर गहिके नवेलीके	७८	१२	९
हाथ हँसिदिन्हों भीति अन्तर परसि प्यारी	७९	१९	१
देखे अनदेखे हरि तजत न अंक तेरो	८३	२५	५
दाबि दाबि दशननि रसके सवाद कै कै	१२८	५	१२
खरी खण्ड तीसरे रँगीलीरंग रावटी में	९८	६	१६
सहज भरोखा मांभ बोलत रसीले तेरे	११८	२१	१०
चपला के ऐसे चारु चमकै है छवि पुंज	१३५	२०	४
चन्दमई चम्पक जराव जरकस मई	२३४	२३	६२
कानन में कुन्दन के नगन जटित सोहै	१४४	१२	५

६ नखशिख हजारा के कवियोंका सूचीपत्र ॥

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
करत उचाट पाट मंत्रन को मंत्र मनो	१८९	३	२
नजर परते उलहत उर आनँदहै	१८१	८	२
प्रहिलेही ललन नवेली अलवेली रची	२०३	०	८
१५ काशीरामकवि	(टोटल १६)		
मन्दही चपत इन्दवधू के वरणहोत	४	२२	१५
कारे सटकारे फटकारे चटकारे नेकु	२०७	३	३
गरकि गुलाब नीर चीर सों लपटि करै	२११	८	२१
१६ कमलापतिकवि	(टोटल ३)		
जिनसोहै कहा चली पंकजकी	६	२२	२४
वरगोल सुडौल बनेहैं अमोल हरे	१९	१२	३
लखिकै वहि प्राण पियारे के कण्ठ को	९२	६	११
लखीआज अचानक इन्दुमुखी	१४२	१४	१०
नहिं जानिये कौने बिरञ्चि रचे	१३६	१	५
मदमाती मनोज के आसव सों	१५३	२२	२४
१७ कान्ह कवि	(टोटल ६)		
सोने के सितून ब्रजराज मन मन्दिर के	९	१०	३४
अवनि अकाशके प्रकाशित बनाये पला	१०३	६	३६
काननलों अँखियाँ हैं तिहारी	१५८	३	१०
पीके प्राणप्यारे प्रेम परम सुजान जी के	१६२	१८	३०
१८ कोविद कवि	(टोटल ४)		
वे धरै अंग भुजंग के भूषण	५९	८	४०
कैयों मित्र मित्र में बसाई है किरण	११०	२३	८
१९ कविराज कवि	(टोटल २)		
हूजे न आतुर हू अवही	६१	२	४८
२० किशोर कवि	(टोटल १)		
आई जल केलिकै नवेली रति रंग भरी	६८	८	४

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
लगी जब आश तब उतरयो अकाश ही ते	१५१	२४	१६
२१ कुशलसिंह कवि	(टोटल	२)	
कञ्चन की पाटी तामें सोहन करयो है कैधौं	८६	२२	४
कैधौं कली बेलाकी चमेली की चमक चोका	११०	१	४
शारदाकी सेज कैधौं सुखकी सहेली सोहै	११४	२५	५
अरुणसे अमल कमल की सी कोमलाई	१२५	१५	१
गाड़ परयो कैधौं यह मदन मतंग मात्यो	१३३	२२	१२
मोहर ज्यों मुक्ता की युगल विकारी दई	१९४	११	४
२२ कविन्द्रकवि	(टोटल	६)	
ऐसे नैन मैन के न देखे ऐन सैन के	१७१	१	७५
चलत मरालन की महिमा घटावै	२३५	१९	६५
गरब गुरज पै चढाई तोप कोपकरि	२६२	७	१७७
गहिरी गुराई ते प्रथम चूमि चामीकर	२६२	१३	१७८
२३ कृष्णलालकवि	(टोटल	४)	
केशरि को कंचन ने कंचन को चम्पक ने	१०२	२४	३५
२४ कामताप्रसादकवि	(टोटल	१)	
कुन्दन से भलकै खलक बशकरै	६२	१०	५४
आनन अनूप छवि छलकी छटासी होत	६४	१४	७
२५ गिरिधरकवि	(टोटल	२)	
रजोगुण रंगवारी जावक सुरंगवारी	१७	१४	२
कञ्ज की कली से उपमा हूं भलीके	५१	१५	८
२६ गिरिधरदास कवि	(टोटल	२)	
आजु अलबेली अलबेले संग रंगधाम	५०	९	३
आनन की उपमा जो आननको चाहै तऊ	२२२	१	९
२७ गिरिधारन कवि	(टोटल	२)	
सोवत बाल गोपाल लखी मुख	२०२	२१	६
२८ गंग कवि	(टोटल	१)	

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
सोने के चूरनमें चम के	५७	१२	३२
सुन्दरी साज शृंगार सुधारति	१६८	१	५३
श्रीनंदलाल गोपाल के कारण	१९३	१६	१
को वरणैउपमा कवि गंग	११०	१८	७
कारीभूपकारी बरवरुणी सुसौहै सोहै	२८८	२१	३०
बांकीभौहैसोहै बांकीचितवनि मनसोहै	१४१	२२	७
दीरघढरारे आछेडारे रतनारेलागे	१७२	८	०२
अंगतेरोकेशरिसो करिहांकेहरिकैसो	२२२	१९	१२

२६ गोकुलकवि

(टोटल ८)

मानोमनोजकी पाटीलिखी	८७	१५	७
भृकुटीकुटिल राजैमूठिसी विराजैबर	१६७	९	५०
वारिजसोमुख मीनसेनयन	२५६	१८	१५३

३० गुलाबकवि

(टोटल ३)

राख्योमयंकके पीछे फनीफन	२१५	२५	१५
-------------------------	-----	----	----

३१ ग्वालकवि

(टोटल १)

सोहतसजीले तितअसित सुरंगरंग	१६८	१७	५६
कोरतिहैअरु कौन रमाउमा	२२०	११	३१
जोपैमुखप्यारी को बताऊंचारुचन्दसो	२३९	८	८०

३२ गुपालकवि

(टोटल ३)

ज्ञानभयोजवते तवते	१३२	८	५
-------------------	-----	---	---

३३ गुंधरकवि

(टोटल १)

नेकजोहँसोतो लालमालहोत हीरनकी	२६१	७	१७३
------------------------------	-----	---	-----

३४ गदाधरकवि

(टोटल १)

राधिकाकेचरणविराजै चारुमाणिकसे	२५९	६	१६४
-------------------------------	-----	---	-----

३५ गोकुलचन्दकवि

(टोटल १)

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
रंगभरेबहु बिद्रुमकेविच	१२३	२५	१६
३६ घासीरामकवि	(टोटल	१)	
सुखकीनदीमें कैधोंपरतगँभीरभौर	१४	४	३
कारेकजरारे सटकारेधुंधवारेप्यारे	२०७	६	४
३७ घनआनन्दकवि	(टोटल	२)	
शोभासुमेरु की संथितटी	८८	६	१०
अंगुरीनलौजाइ भुलाइतही	२२३	७	१४
अंजनतोरहीताकां करैनित	२२३	१२	१५
जिनहीवरुणीन सों बांध्योहियो	२३८	१७	७७
३८ घनश्यामकवि	(टोटल	४)	
बैठीचढिचांदनी में चन्द्रमाबिलोकनको	२५५	२४	१५०
३९ चंदनकवि	(टोटल	१)	
सिंहनीकी करिहांते छीनकंजनालकरघो	३०	१६	६
४० चिन्तामणिकवि	(टोटल	१)	
प्यारीकेपगन पाई एतीमरुणाई	७	२	२५
सारघनसारलै केसरकनकचूर	२०	२	१
सुन्दरवरणराधे शोभाको सदनतेरो	९९	१०	२१
सोहतहै चिन्तामणि नगनजटितदिव्य	१३६	२३	९
अंधकारमध्यमुनिमैनकी गुफाहैकैधों	३४	१०	४
चिन्तामणिचौकी श्याम मणिके मयूषनकी	४१	९	३
चामीकरजूहचम्प चांदीकोचलन कहा	२३४	१६	६१
चैतचांदनीके कैधों चन्द्रमवलोकनते	२३४	३	५९
बालपन दूरिकरि बालतन मध्य आइ	५९	२	३६
बारनकी रचना रची है प्राणप्यारी एरी	२१४	२५	११
यौवन महीपति को सेवक मदन तोहि	८७	२०	८
जाको लय सारदेश करत है गधबध	१००	२२	२०

१० नखशिख हजारा के कवियोंका सूचीपत्र ।

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
कैथों द्विजराजी द्विजराज जूको सेवत है	१११	१०	१०
४१ जयकवि	(टोटल १३)		
कोऊकहै नाक हाँसी कोऊ मनमथ फाँसी	१४९	११	६
४२ जगदीशकवि	(टोटल १)		
कुण्डलरूप अरूप विराजत	१४८	२५	४
४३ जीवन कवि	(टोटल १)		
महा मञ्जु नाभी सर रूप है सलिलवर	५५	१०	२५
४४ ठाकुर कवि	(टोटल १)		
कोमलता कंजते गुलाब ते सुगन्ध लैकै	९५	२१	६
जगर मगर जरवाफिये बसन साजे	२३७	५	७१
४५ तोष कवि	(टोटल २)		
गोरी गुलारी सुठारसी साँचे की	२०	६	२
जान किधौं है रती रतिनाथ को	२४	१	१२
कैथों द्वार मारजू के दोऊ चारु चौतरा है	२४	२५	१
कैसे कहौं कोक वे तो शोकभै ही रहत निशि	५३	१६	१७
कैथों काम महलके कनक कँगूरे पूरे	५३	२३	१८
करतार करे यहि कामिनी के कर	७७	१	३
कैथों करतार तार सरस श्रृंगार ही ते	२०७	१५	५
कैथों पुरहुत वारी बाटिका को नारियर	२१९	५	३
पारसी पाँतिकी पीपर पत्र	४५	१४	३
प्यारी सुकुमारी ताके उरज बढ़त आवै	७०	६	१३
अरुण अनार ऐसे नारंगी सुठार ऐसे	५०	२२	५
सोई हुती पल्लंगापर बाल	५७	७	३१
साँचे ते निकारी भरि प्यारी की ललित पीठ	८८	११	११
फूलनसी भारि शूल है	११८	३	७
देखे अरुणाई करुणाई लगै कंजनपै	१७१	२१	७०
४६ ताराकवि	(टोटल १५)		

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
कैधों बिबि नीलकण्ठ वसत सुमेरुपर	५२	११	१२
अति अनियारे तारे कजरारे रेक भारे	१५०	१६	८
गुंजागिले खञ्जन की भौर भय कञ्जन की	१६४	३	३६

४७ तुलसी कवि

(टोटल ३)

भाषत है मुख बैन सखीन सों

२४८ २३ १२०

४८ दिवाकर कवि

(टोटल १)

अंगुठा अनोटे छोर अंगुरी अरुण तोर	१६	३	३
अमल कपोलन पै अमोल गोल श्याम रंग	१४०	८	१
पायजेब घुंघुरू घुमाउ देइ जेब पाव	१८	६	२
हाटक समान रम्भखम्भसी लसत जानु	२२	२१	७
कैधों खरी खीन कटि निकसी नितम्ब पीन	२६	५	६
कारे सुकुमारे पन्नगी के रूप धारे वीर	४५	८	२
कैधों जग जीति मार दुन्दुभी उलटि दीन्हे	५१	३	६
कैधोंअरविन्द प्रातवापीमें प्रकाशभयो	९६	२	०
कैधोंस्वेदअहर विचारिकै बनायोविधि	१०६	१८	६
कैधोंदाने दाड़िमके पांतिपांतिराजतहै	१०६	१३	२
केकीपिककोकिला अवाजनपै गाजपरै	११७	५	३
कीरकैसेठौरपैख परमप्रकाशमान	१४८	१२	२
कारेकजरारे रतनारेअरविन्दसम	१६०	२१	२२
कैधोंअलीपक्षको पसारिवैठोदर्पणमें	१८५	१७	२
कारे सटकारेकेश मृदुताभरीहैवेश	२०६	१६	१
कोठरीअंधेरी प्यारीबरति मशालकैसी	२२५	१८	२४
कंचनकीवेलीसी नवेलीको शरीरलागे	२२५	२४	२५
सारी जरतारी बूटीमोतिन किनारीदार	२१	१५	१०
सोनाकी कलीपैकैधों भौरालपटिगयो	८१	२४	४
शंखजडेमणिमाणिकसों	९०	२४	५
सीपकेसमान कानरंचक लखातप्यारी	१४८	२४	७

१० नखशिख हजारा के कवियोंका सूचीपत्र ।

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
कैथों द्विजराजी द्विजराज जूको सेवत है	१११	१०	१०
४१ जयकवि	(टोटल १३)		
कोऊकहै नाक हाँसी कोऊ मनमथ फाँसी	१४९	११	६
४२ जगदीशकवि	(टोटल १)		
कुण्डलरूप अरूप बिराजत	१४८	२९	४
४३ जीवन कवि	(टोटल १)		
महा मञ्जु नाभी सर रूप है सलिलवर	५५	१०	२५
४४ ठाकुर कवि	(टोटल १)		
कोमलता कंजते गुलाब ते सुगन्ध लैकै	९५	२१	६
जगर मगर जरवाफिये बसन साजे	२३७	५	७१
४५ तोष कवि	(टोटल २)		
गोरी गुलारी सुठारसी सांचे की	२०	६	२
जान किधौं है रती रतिनाथ को	२४	१	१२
कैथौं द्वार मारजू के दोऊ चारु चौतरा है	२४	२५	१
कैसे कहौं कोक वे तो शोकभै ही रहत निशि	५३	१६	१७
कैथौं काम महलके कनक कँगूरे पूरे	५३	२३	१८
करतार करे यहि कामिनी के कर	७७	१	३
कैथौं करतार तार सरस शृंगार ही ते	२०७	१५	५
कैथौं पुरहूत वारी वाटिका को नारियर	२१९	५	३
पारसी पांतिकी पीपर पत्र	४५	१४	३
प्यारी सुकुमारी ताके उरज बढत आवै	७०	६	१३
अरुण अनार ऐसे नारंगी सुठार ऐसे	५०	२२	५
सोई हुती पल्लगापर बाल	५७	७	३१
साँचेते निकारी भरि प्यारी की ललित पीठ	८८	११	११
फूलनसी भरि शूल है	११८	३	७
देखे अरुणाई करुणाई लगै कंजनपै	१७१	२१	७०
४६ ताराकवि	(टोटल १५)		

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
कैधों बिबि नीलकण्ठ वसत सुमेरुपर	५२	११	१२
अति अनियारे तारे कजरारे रेक भारे	१५०	१६	८
गुंजागिले खञ्जन की भौर भय कञ्जन की	१६४	३	३६

४७ तुलसी कवि

(टोटल ३)

भाषत है मुख बैन सखीन सों	२४८	२३	१२०
--------------------------	-----	----	-----

४८ दिवाकर कवि

(टोटल १)

अंगुठा अनोटे छोर अंगुरी अरुण तोर	१६	३	३
अमल कपोलन पै अमोल गोल श्याम रंग	१४०	८	१
पायजेब घुँधुरू घुमाउ देइ जेब पाव	१८	८	२
हाटक समान रम्भखम्भसी लसत जानु	२२	२१	७
कैधों खरी खीन कटि निकसी नितम्ब पीन	२६	५	६
कारे सुकुमारे पन्नगी के रूप धारे वीर	४५	८	२
कैधों जग जीति मार दुन्दुभी उलटि दीन्हे	५१	३	६
कैधों अरविन्द प्रातवापीमें प्रकाशभयो	९६	२	०
कैधों स्वेदअहर विचारिकै बनायोविधि	१०६	१८	६
कैधों दाने दाड़िमके पांतिपांतिराजतहै	१०८	१३	२
केकीपिककोकिला अवाजनपै गाजपरै	११७	५	३
कीरकैसेठौरपेख परमप्रकाशमान	१४८	१२	२
कारे कजरारे रतनारे अरविन्दसम	१६०	२१	२२
कैधों अलीपक्षको पसारिबैठोदर्पणमें	१८५	१७	२
कारे सटकारेकेश मृदुताभरीहैवेश	२०६	१६	१
कोठरीअंधेरी प्यारीवरति मशालकैसी	२२५	१८	२४
कंचनकीवेलीसी नवेलीको शरीरलागे	२२५	२४	२५
सारी जरतारी बूटीमोतिन किनारीदार	२१	१५	१०
सोनाकी कलीपैकैधों भौरालपटिगयो	८१	२४	४
शंखजड़ेमणिमाणिकसों	९०	२४	५
सीपकेसमान कानरंचक लखातप्यारी	१४४	२४	७

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
सूरसुरमाके सैनकामजंगजीतेहेतु	१८१	२१	४
शीशफूलशीशपै रतीशके निशानकैधौ	२०४	२३	३
जंघयुगडोरिधरि लहरी सुरोमभोरि	१८	१३	४
जोशनवाजू बिजायठ भूषित	७५	४	१३
जुराशीश ऊपरकँगूरा कामबीरकैसो	२१६	१८	५
मदनमहीप कुचगुम्बज उठाघउर	५४	२३	२२
मदनकेकूपकैधौ रूपके तलावमंजु	१३३	४	९
मदनमहीपके मुकुरद्वै सोहातगोल	१३५	२	१
मेचकअलकलट छूटिकैकपोलआयो	१६४	५	३
वेनीछूटि शीशते लटकि भूमिभूमिकर	८७	४	५
बोलतवालप्रसूनभरै	१२२	२३	११
वारगुहि रसमसे दीन्हीलटकायपीठ	२१५	१२	१३
लालेमृदु उथले सुथलेफलकुंदुरूसे	१२६	२१	६
भालमेंविशेषवास अधरबुभावैप्यास	२४६	३	१२१
भानुसेअधरबिम्ब कृष्णसेचिकुरप्यारी	२५३	८	१३९
४६ देवकीनन्दनकवि			(टोटल ३६)
मोतिनकीमाल तोरिचीरसबचारिडारघो	२५०	१३	१२७
५० देवकवि			(टोटल १)
भोरहिभोरहि श्री वृषभानके	७३	१५	६
भृकुटीतनीको लटनागिनिफनीकोदेव	९०	२४	१५
भागभरे आननअनूपदाग शतिलाके	१०६	१२	५
भोजनके भामिनि भवनबीच ठाहीभई	२४८	१६	११०
मृगनैनीके पीठिपै वेनीलसैयां	८०	३०	६
मांगसिंदुरारीतनतरुणअरुणज्योति	२५१	१०	१३१
घूँघटखुलत अवै उलटद्वैजैहैदेव	१००	९	२५
घांघरोघनेरोलांवीलटैलचकीलोलंक	२६६	२५	१९७
गोरोमुखगोल हरेहँसत कपोलचडे	१००	१५	२६

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
गोरीगरबाली उठी ऊँघत उधारे गात	२६१	२०	१७५
गोरेमुख गोल हरेहँसत कपोलबडे ॐ	२६२	१	१७६
सोनेमें सुरंगसबवैसई लसत अंग ॐ	१०४	२४	४
सौतिनको होतदुख सखिनको सुखसुने	११९	२	११
सोने सों सुरंग सब वैसई लसत अंग ॐ	२४२	२३	९५
सूभक्त न गात बीतिआई अथरात	२४५	१७	१०६
क्षीर कीसी लहरि छहर गई क्षिति माँह	२३६	१८	६६
देखी ना परति देव देखिवे की परी वानि	११६	१	९
बसि वर्ष हजार पयोनिधिमें	११५	११	६
बरुणी वधम्बर में गूदरी पलक दोऊ	१०४	१०	८२
नीचे को निहारत नगीचै नैन अधर	१५२	६	१७
नासिका ऊपर भौहन के मधि	१८०	१५	१०
आई हुती अन्ह वावन नाइन	२२२	१४	११
कुन्दन के अंग लव यौवन सुरंग उठै	२२३	१७	१६
कंजसे चरण देव गह्नीसी गुलफ शुभ	२२०	२१	३३
चोवासों चुपरि केश केसरि सुरंग अंग	२३३	१६	५७
जोनितके जूहानि दुरासद दुरूहनि	२३९	१५	८१
उज्ज्वल अखण्ड खण्ड सातये महल महा	२६७	१९	२००

५१ देवमणिकवि

(टोटल १७)

जग मगै यौवन जराऊ तरवन कान

२३८ ५ ०५

लगत समीर लङ्कलहकै समूल अंग

२४० २० ८६

५२ दयादेवकवि

(टोटल २)

केसरिको रंग अंग संगमें न जान्यो जात

२२८ १५ ३६

५३ दयानिधिकवि

(टोटल १)

कोमल अमल कोश कमला वसत ताके

१२० २२ ३

१४ नखशिख हजारा के कवियोंका सूचीपत्र ।

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
सुथरे सवारे वारसेंदुर सों मांगभरे	२४२	१०	९३
५४ दयालकवि	(टोटल २)		
गोरेगात गेदसे गसेहैगदकारेगाल	६२	१६	५५
५५ दामोदरकवि	(टोटल १)		
धारेलालसारी प्यारी हीरन किनारीवारी	२६७	१२	१९९
५६ दासकवि	(टोटल १)		
अलकपै अलिवृन्दमालपै अरधचन्द्र	१५	१६	१
कंजसे सम्पुटहै पेश्वरे	५२	६	११
कंजसकोचगडेरहैकचिनि	१५९	२५	१८
दासप्रदीप शिखाउलटीकि	८८	१	९
दासमनोहरआननवालको	१४६	८	१३
दासललानवलाछवि देखि कै	२६६	१४	१९५
५७ दत्तकवि	(टोटल ६)		
कंचुकीमाहैकसेउकसेपरै	५२	१	१०
साँवरेरतिकरसबश बिपरीतिरची	१९४	१७	५
मृगनैनीकी पीठपै बेनीलसै	२१७	२३	२३
चोपकरि विरची विरंचि रूपराशि कैसी	२३०	९	४३
हीरन के मुक्तान के भूषण	२५९	२४	१६७
५८ दिनेशकवि	(टोटल ५)		
गोरी गोरी आँगुरीन ऊपर अनूपछवि	११	१८	१
चरण कमल कर हाटक की शोभा देत	१८	२३	१
मोहन के मन के अवलम्ब ये आली लाखि	२१	२०	३
सुखरुखसुख ही के सुखमा सरोवर सों	२०१	११	२९
सकुच समेत ह्वैके सुन्दर समेटि शुण्ड	२३	३	८
सुन्दर सुवेष रुचि राजत त्रिवेष युत	९०	१८	४
सरस श्रृंगार रस सारही को धार यह	१९५	४	७
रागिनी की मण्डली रची है कामदेव कैथी	२७	२१	१

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ पंक्ति नम्बर		
रूपकी नदीते निकसत मन्द मन्द कैधों	५८	१०	३६
योवन सरोवरमें अलक भलक कैधों	४१	२	३
कैधों बिधु ऊपर बधूक के कुसुम धरे	१२६	३	३
कैधों बेनी पन्नगी के फण दुहुँआर	१९८	१४	१
कोमल कुटिल नीलमणि की शिखा से चल	२०७	२१	६
कच अभिराम ज्योति यमुनाकी जीते लेत	२१४	१	७
प्यारी कि ठोढी को विन्दु दिनेश	१३२	१३	६
पहिरे वनाय सितभूषण दिनेश सब	२६४	११	१८६
हरी अच्छ लच्छ करतलनि समान स्वच्छ	१३५	१४	३
अंग अंग भूषण जडाऊ के जगमगात	२०४	९	१
भूषण जरायन के पाँयन अनोट ओट	२४८	१०	११८

५६ द्विजकवि (मन्नालालशर्मा काशी) (टोटल १६)

कोऊ कहै जपा जावक रंगकी	२	२०	६
कैधों मानसर के विमल कमल दोऊ	३	५	८
कै बिधि कञ्चनगार सिंगार कै	२४	६	१३
कम्बु बिलोकतही जिहिको	९१	६	७
मीठी अनूठी कहै बतियां	११७	२३	६
मञ्जन कै तिय बैठी अगार	२०९	७	१२
बैठी श्रृंगार श्रृंगार कै बाल	२००	१२	९
छूटे छए छवालों छबीले घुँघुवारे वार	२३६	५	६७
दन्तन की दमक दवाकै द्युति हीरन की	२६८	६	२०२

६० द्विजनन्द कवि (टोटल ६)

गौन को नवेली तू भवन ते न बाहरहो	५८	२१	३८
---------------------------------	----	----	----

६१ द्विजराज कवि (टोटल १)

रूप की राशिमें कैरसराज को	१४२	६	६
बाजी चपलाई तामें मैत असवार गाढो	१७४	५	८४

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
चन्दन की खौर गोरे गात ज्यों झलमलात	२३१	९	४७
६२ द्विजबलदेव कवि	(टोटल ३)		
जानै भेद कविताहि गौरव गहे रहत	२३९	२१	८२
सहज बिलोकि फँसिजात मन कैसी होइ	२४७	५	११३
६३ धुरन्धर कवि	(टोटल २)		
सुधाके पयोधि करि मज्जन अरुण अंग	६६	४	२०
६४ नूर कवि	(टोटल १)		
पियरति समता के थमिबे की ठौर कीधौं	२६	२३	९
नूररस छलकै सुनाभी भौर झलकै	३६	५	२
निपट नवेली बाल सुधर सहेली लाल	२०२	९	४
प्यारी नैन नटन के नाट को अखारो नूर	३६	२३	५
योवन छत्र पती के मनोसर	६३	२५	१
मानो काम लतासी सवाँरी कामिनी है नूर	६९	२५	१२
कैधौं है ये कमल की ललित मृडाल नाल	७२	१५	२
कमल की शोभा सी समाइ रही प्यारी सुनि	७६	११	१
कोककला पढिबेकी पोथी सी बनाई काम	११४	१४	३
कारी नीकी निपट सँवारि नेह चिकनाई	१९९	२	३
सुन्दर सुडौल आछी भाँतिसौं सुधारि करी	६०	६	२
सप्तस्वर सागर की नौकासी बनाई विधि	११५	७	६
शीश शीश फूल सोहै त्रिभुवनमन मोहै	२०५	४	४
दाड़िम देखि तपोवन सेवत	११२	७	१४
ओठन के बीच छवि दन्तन की झलकत	१२०	११	१
तामरस सोहै तरुणी के वरनैनवीर	१०६	३	५
तामसी तमोगुण को जानिकै सतोगुणधौं	२०१	१६	१
भागको भौन सुहागको चौतरो	१९०	१४	८
६५ नाथकवि	(टोटल १८)		
सरलसुखमाके सुखमाके जाके सेवनते	८	२३	३२

कवियोंके नाम वा विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
कीरति पताके काम देवताके पात्रताके	१७५	१७	८६
पीन हेतु दीनताके क्षीनताके हीनताके	१७५	२३	८७
मदन तुकासी कियों राधे कुन्दकासी	२५१	४	१३०
साधि जरतारी शीशभारी छविवारी प्यारी	२४२	१६	९४
सोहत अंग सुभायके भूषण	१९०	१९	९
सुन्दर सीधापना के विधु बंदनाके	१५४	८	२६
एकही छमाके में छमाके मन मोहिलेत	६	४	३३
गुणजो कपोत ताके उपमाके पोतगधे	९२	२५	१४
पूरण मयंक कैंधौं मेठिकै कलंक कियों	१०६	६	४
पटियाके पारे कौनपारे तासु उपमाके	२००	२२	११
चन्द्र प्रतिबिम्ब ऐसो जानिपरै जाके आगे	२२९	२२	४१
आधे चन्द्रमाके रूप हाके केश घटा कैंधौं	१९१	४	११
ताकी एक दाठताकी समताकी छायापरै	१८८	१२	१४
भूमत भुक्त भरे मदके अरुण नैन	१६६	८	६९
रूप सिन्धुताके युग सीप गढ़हाके युत	१४०	१७	१६

६६ नेही कवि

गौरी गौरी गोल गोल भामिनी की बाहु नेही
पाटिन में मांग सोहै उपमा कहै सो कोहै

(टोटल १६)

७४ १३ १०

२०३ १ ७

६७ नवी कवि

मृग कैसे मीन कैसे खंजन प्रवीण कैसे

(टोटल २)

१६९ २० ६१

६८ नवीनकवि

अचरज कला कलाधर धरिराखी पीछे

(टोटल १)

२१८ १७ १

६९ नेसुक कवि

विम्बमें प्रवाल में न ईगुर गुलाबमें

(टोटल १)

६ ११ २२

७० नन्दन कवि

(टोटल १)

१८ नखशिख हजारा के कवियोंका सूचीपत्र ।

कवियोंके नाम वा विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
राजें रतनारे दृग ऊपर उजारे भारे	१६५	६	६१
७१ नन्दराम कवि	(टोटल १)		
हरिग हेराने कठूँ हारन में हेरि नयन	१६१	२	२३
कंचनसे गात जलजात से लजीले नयन	२२६	२४	२९
७२ नाने कवि	(टोटल २)		
छूटी रतिरंगमें अनंग की उमंग भरी	१९८	६	२०
७३ नारायण कवि	(टोटल १)		
अलक असोल अलवेली की अनोखी आँखि	१५५	२३	१
७४ नृपशम्भु कवि	(टोटल १)		
कोहर कौल जपादल बिद्रुम	२	२५	७
कै निधि क्षीरके बीचमें जाय	४७	५	११
राधेके पायँन की अँगुरी	१२	१२	४
रूपको कूप बखानतहै कवि	३५	४	७
लाड़िलीके बरणे को नितम्बन	२७	१५	१२
लसे वीरै चकासी चलै श्रुति में	१७३	२५	७९
जो कहिये विधि नाहींरची	३३	२	१७
प्यारी के गात बनाइवे की विधि	३३	७	१८
प्यारी कि नाभिही सो बरनै	३५	१४	९
प्यारीके अंग बनावतही	४०	६	११
मनोहर अंगकी भाटीरची	४५	२५	५
योवन वाहिर आयो नहीं	४६	२०	९
उरमें उलहे मुलहे द्वै सुरोज	५९	१९	४२
७५ नीलकंठ कवि	(टोटल १३)		
अटके ललन रूपहटके सकोचन में	४८	१६	२
नैनरखवारे निशिदिन निरखत रहै	५४	१७	२१
कैधौनैन नटुवाके नाचिवेकी रंगभूमि	१३७	१०	११

कवियोंके नाम व विषय

पृष्ठ पांक्ति नम्बर

छविबालबरसील साहबके घरपिय	१७३	१९	७८
तेरी भौहैं धनुष धरत करकोपचाप	१७६	१७	२
तैसी चष चाहन चलन उतसाहनसों *	१९६	१३	१३
तैसी चषचाहन लगत उरशायकसी *	२५५	१५	१९१
ज्योतिसी जगीरहै सो सौतऊ जगी रहै	२३८	१९	७६

७६ पजनेश कवि

(टोटल ८)

दिपट पटीजै नभनखत जतीजै	१८	१५	-३
सम्पुट सरोज कैधौं शोभाके सरोवरमें	६३	३	५७
छहरै छबीली छटा छूटि क्षिति मण्डलपै *	९८	१८	१८
छहरै छबीली छटा छूटि क्षिति मण्डल में *	२३६	१२	६८
चंचरीक चेटुवा को लागो है चरण चुभि	१३४	३	१३
मुनिमन मंजु मौज मिश्रित मजेजदार	१३८	१०	१५
प्रीति सित मिश्रित सुकेशनललित सारी	२६३	१८	१८३

७७ पदमाकर कवि

(टोटल ७)

सुन्दर सुरंग नैन शोभित अनंग रंग *	५	९	१७
सुन्दर सुरंग नैन शोभित अनंग रंग *	२२३	२३	१७
साजि ब्रजबालनंदलाल के मिलै के लिये	२४७	११	१०१
सोसनी दुकुलानि दुरायो रूपरोशनी ह्वै	२४४	१७	१०२
साजिब्रजचन्दपै चली है मुखचंद्रचारु	२४५	११	१०५
सांवरी सारी सखी संगसांवरी	२४६	९	१०९
दूलैइते पर मैं महाउत	२६०	४	१६८
घूंघटके घूमके सुभूम के जवाहिरके	२६६	१९	१९६
जाहीजुही मल्लिका चमेली मनमोदनीकी	२४०	९	८४
जाहिरै जागति सी यमुना	२३९	३	७९
जगजीवन को फल जानि परयो	६०	५	४४
गुलगुल कंद कै सुमन्द करि दाखन को	१२३	१३	१४
गुलगुले कन्द के सुमन्द कर दाखन को	१२७	१३	९

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
कैथों रूपराशि में शृंगार रस अंकुरित	१४०	१५	२
चहचही चहल चहूँया चारु चंदन की	२३२	१	५०
चहचही चुभकै चभी है चौक चुम्बन की	२३३	२२	५८
७८ परसराम कवि	(टोटल १६)		
जपाके कुसुमता की छबिके चतुरमाणि	१२८	११	१३
कैथों रूप धरणी में राजत युगल खगड	१३७	२२	१३
कैथों रसनायक त्रिहंगम क युग पच्छ	१९८	२०	२
७९ प्रसादकवि	(टोटल ३)		
दृगमीन वाशिके की बंशी ये सची है कैथों	१९७	१२	१७
८० पारस कवि	(टोटल १)		
कैथों शृंगार के वारिज को दल	१८९	६	३
८१ परमेशकवि	(टोटल १)		
कोयन की कुरसी में करिकै कुमाच बैठी	१७६	१५	९०
८२ परम कवि	(टोटल १)		
राजत अमीके मदछाके कालकूट किधों	१६५	१२	४२
८३ पूखीकवि	(टोटल १)		
मंजनकै तिय बैठी अवास में	२००	१७	१०
शरद के घनमें ज्यों अरुण उदोत द्युति	६४	५	२
८४ ब्रह्मकवि	(टोटल २)		
एकसमय वृषभान सुता	१९२	५	१
ऐन सुरा विंदुली विधु भाल में	१६२	१०	२
वाल चलै अलबेली सी चाल	२१७	२०	१०
सेज ते ठाही भई उठि बाल	२१६	२५	१९
८५ वेनीकवि	(टोटल ४)		
कैथों ये त्रिगुण रूप कनककी पाटी लिख्यो	८६	९	२
८६ वेनीप्रवीण कवि	(टोटल १)		

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
छहरति छवि क्षिति छोरन लों छूटि छटा	३०	२२	७
कंकण करन कल किंकिणी कलित कटि	२२६	६	२६
चुनी से चरण चाँदनी में विलकत	२३४	९	६०
८७ ब्रजचंद्रकवि	(टोटल ३)		
रंचक दीठि के भार लहे	३२	१२	१४
८८ विजयकवि	(टोटल १)		
लाखिकै दृग मीन दुरे जल में	२४१	१८	९०
८९ बिदुषकवि	(टोटल १)		
कुन्ती पांचाली दमयन्ती तारा शकुन्तला	२२६	१२	२७
९० बलदेवकवि	(टोटल १)		
सुमन निकेत लाल जावक समेत	५	२०	१९
सुधा के समुद्र की लहर सी कढत रहै	११९	८	१२
९१ बलभरसिककवि	(टोटल २)		
फूले हैं न शरद सरोज इहि समय कहूं	२५७	५	१५५
९२ बलभद्रकवि	(टोटल १)		
कैधों मन बेधन बनाय मैन विधना है	११	३	३
कैधों बैस बेलिबे को बेलन बनाय विधि	२०	११	३
कैधों उदयाचल उदोत राका योवन को	६४	१२	३
कैधों शिशुताई के पयान सामियाने ताने	६७	१५	१
कैधों अनुराग रागराजसको रूप निज	१०७	१०	१
कैधों कुन्दकलिकाकी अवली अनूप	११०	७	५
कमल बदन मध्यकमलाके काज छवि	११४	२	१
कैधों द्विजराजनकी तपस्या को तेज ये है	१२१	१०	५
कैधों द्विजराज मुख दर्पणको भाजनहै	१३०	४	१
कनक वरण कोकनदके वरण अरु	१३१	२१	३
कैधों क्षिति मंडल कुन्नेनी देखि तारागण	१७६	२२	१
कामके केदारनकी आयसकी कीन्हीवारि	१८२	१९	८

कवियोंके नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
कंचन के कन्द परि खंजन तलफ कियों	१८३	१९	१
सातुकी सिताई रज गुणकी रताई	१६	१५	५
शोभा की तरंगनी के तोयके भँवर कैधों	३३	१९	२
सुन्दरि छवीली प्यारी तेरे करतल ये तो	७९	८	१३
सुखमा भरत भरे प्रेम कैसे सांचे ढरे	१३६	१२	७
शोभा सुखसदन को बातयन बलिभद्र	१५०	११	१०
शोभा को सकेलि ऊंची बेलिबांधी बलिभद्र	१५०	२३	१२
सौरभ सुगन्ध वास चम्पकली नासिका को	१८६	२२	७
घन अतिजघन नितम्ब पृथुपेखियत	२७	४	१०
तारसो तगासो वारलीक सो लोकंजनसो	३१	३	८
तनतरुवरकी उभयशाखाबलिभद्र	७३	३	४
तमके विपिनमें सरल पंथ सार्विकको	२०१	३३	२
पारावार रूपकी तरंग तुंग बलिभद्र	३७	१७	१
पागरस पतिकी विनत नाभि कुण्ड बैठी	४१	१६	४
पानिप पदुमकी बदन भूलकत द्युति	९६	२१	१०
पूरि पूरि मल मलयाचल उरोजनि को	१०४	११	२
पाटल नयन कोकनद कैसे दलदोऊ	१६१	२५	२७
परम प्रवीण मीन केतन के मीन कैधों	१६३	१६	३४
पय भरे भाजन न पैयत मधुप मध्य	१७८	१५	३
पातुर पूतरी पहिरे पवित्र पीत	१८३	८	२
पल्लिका ते पांय जो धरति धाय धरणी में	२६३	१२	१८२
विप की लतासी विन पानि भानु दुहितासी	४२	१८	८
विमल वरणही की कैधोंयह पुष्पदाम	११८	१५	६
वपु पक्षते लगायो भयो गुरुबन्धुजानिभुव	१९०	८	७
वेनी नवबाल की वनाय गुही बलिभद्र	२१५	६	१२
लालगुणमुक्तासी सुरसरि सरस्वती	४८	१	२
मंगल कलश भरे मकरन्द बलिभद्र	५५	२४	२६
सरकतसूतकैधों पन्नगके पूतकैधों	२०६	१	११

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
अवलम्ब अलिननलिनही के कोरि काकी	६४	२५	५
फूले मधुमालती के पुहुपपुनरभव	८१	१७	३
चन्द के चरण परि उबरोतनकतम	१३३	१६	११
भँवर परत जल योवनके जोरकीधौ	१३९	६	४
जटित जराय जगमगत सहसकर	१४४	१८	६
रूपके अनूपम की राखी है ध्वजाउत्तारि	१४६	२	१२
नेकही निहारे नैन नायका स्वकीया नारि	१७७	९	३
थापी कैधौ यशकी जनमभूमि शशिवत	१८६	१४	४
दरश दरश को परशहोत बलिभद्र	१९९	१३	५
६३ भंजन कवि	(टोटल ४६)		
कोऊ कहै है कलंक कोऊ कहै सिन्धु पंक	९५	८	४
सूर मैन हीन होत उगत नदीन है कै	९९	१६	२२
६४ भोजकवि	(टोटल २)		
आबदार अजब अनोखी अनियारी	१५६	५	३
६५ भूपतिकवि	(टोटल १)		
मानि है कमीने परे पानीमें निहारे हारि	१६९	१४	६०
६६ भूधरकवि	(टोटल १)		
योवन उज्यारी प्यारी बैठी रंग रावटी में	२३७	११	७२
६७ भगवंत कवि	(टोटल १)		
रैनी की उनींदाी राधे सोवत सकारे भये	२१५	१९	१४
६८ भौनकवि	(टोटल १)		
नखन बिलोकतही नखन व्यतीतभयो	२६१	१	१७२
६९ भरमीकवि	(टोटल १)		
अरुणकमल पगपाँखुरी की पांति लसै	९	२१	१
आरसी विमल परनारी सी सँवारी कैधौ	८६	३	१
सुन्दर सुरंग गोल शोभाकर पल्लवकि	८३	११	३

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
प्रीतमको मनतेरे हाथन लग्योईरहै	७३	९	५
पारदके गुटिका सवारे काम सिद्धजूनै	५९	२४	४३
रूप रस आसनके काम के सिंहासन है	२२	१	४
कोमल विमल काम भूपकी सुरंग भूमि	३६	१७	४
कोकनद कली जैसे खिलत बयारिलागे	१२१	४	४
गूढ गुण ग्रंथके प्रकाशकी करनहारि	११५	१४	७
मातिनसों भरीमांग शीशफूल टीकोदिये	२५३	१	१३८
१०० मधुपति कवि	(टोटल	१०)	
देखो शुभवाला पद सुन्दर विशाला	५	३	१६
१०१ मनीरामकवि	(टोटल	१)	
राधेके चरण युग अरुण अरुणरूप	७	१६	२७
वह चितवन वह सुन्दर कषोल द्युति	१५६	५	१५१
१०२ मोतीराम कवि	(टोटल	२)	
बिनलाये अंजन नचतनैन खंजन से	२५३	२०	१४१
१०३ मारकंडे कवि	(टोटल	१)	
दृषभानु षष्ठम की सुखमा कहाला कहौ	२५४	६	१४३
१०४ महाकवि	(टोटल	१)	
भृगनकी मीनन की चंचलाई चखनमें	२५०	७	१२६
ललना मुख इन्दुते दूनो लसे	२४१	१३	८९
१०५ माखनकवि	(टोटल	२)	
खंजननवीन मीन मानके उमाहे दंत	१६५	१८	४३
१०६ मानकवि	(टोटल	१)	
कहा कजरारे भृगशावक तेन्यारे	१००	१२	६४
कंकन खनक षग नूपुर ठनक	१४७	२३	२०
१०७ मनसा कवि	(टोटल	२)	
लाल रंगवारे घेरदार घांघरे सों	२५	२४	४

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
लालची लज्जिलोल ललित रसीले लखे	१७४	५	८०
१०८ मण्डन कवि	(टोटल २)		
तेरेमुख गावत गोपालजूके गुणगणि	१९	१६	९
१०६ मीरन कवि	(टोटल १)		
सुमनमें बास जैसे सुमनमें भावै कैसे	३०	४	४
११० मीर कवि	(टोटल १)		
इन्दिराके मन्दिर अमन्द द्युति कन्दुकसे	६०	१५	४६
१११ मुरली कवि	(टोटल १)		
अरुणता एंडिनकी रवि छवि छाजतहै	८	११	३०
११२ मनोहर कवि	(टोटल १)		
दूरिते दीपति देखतही	७४	२४	१२
११३ मोहन कवि	(टोटल १)		
शीतलाके दाग साधि शुभलगन मुहूरत	१०५	११	१
११४ मकरन्द कवि	(टोटल १)		
घनकी घटासी नील कंचुकी चहकि रही	४८	९	१
काजरसी रँगिरैन कारी सारी अंगएन	२२९	३	३८
११५ मतिजू कवि	(टोटल २)		
कारे कजरारे दोऊ काजरसों लालडोरे	१६७	३	४६
११६ मतिराम कवि	(टोटल १)		
गहिहाथसों हाथ सहेलीके	१२३	८	१३
कुन्दनको रँग फीको लगै	२२८	३	३४
चरण धरैन भूमि विहरै जहाँही तहाँ	२३०	३	४२
श्वेतसारी सोहत उज्यारी मुखचन्द कैसी	२४४	५	१००
सारी जरतारीकी भलक भलकत तैसी	२४५	५	१०४
११७ मुवारक कवि	(टोटल ५)		
बैठी मथे दधि राधाउतै	७९	३	१२

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
पानियके पानिय सुधर ताईके सदन	१६३	५	३३
चंचल चोखेसे चीकने से चटकारेसे	१७१	१६	६९
चार कैसो अङ्क लङ्क लचकत कुचभार	२३०	२२	४५
जाखकी चूनरी चीकनो गात	२४०	१५	८५
लांवे लहकारे सटकारे सुकुमारे कारे	२१०	११	१७
११८ सदनगुपाल कवि (टोटल ६)			
हारीहार भार उर भार त्यो उरोजभार	३१	९	१
११९ मनिकंठ कवि (टोटल १)			
रतिहूकी मतिपतिहूकी ललवात अति	२२	१५	६
रूप अनूपवनी सखी आजु	५८	१६	३७
कैथौ यह परम अनूप रूप सरिताको	३३	१३	१
कैथौ अरविन्द मकरन्दरस पानमाते	१३१	१५	३
कैमधुपावली मंजुलसे	११३	४	३
अमल अनंगके अनन्दकी उदित भूमि	२२१	२०	८
अमल कमल पर गुंजत भँवर युग	१८५	११	१
अमल अरुणअरविन्द बिम्बआभादेत	१२५	२१	२
अमल अनंगके अनंदकी उदित भूमि	३८	२०	५
सुखको सदन देखिमदन मुदितहोत	९०	१२	३
सुन्दरसहजसुमननकी सुगंधन की	१५०	१७	११
तीयनदी जल सुन्दरता कुच	१९६	८	१२
निकसी सशंकित कलंक रेखछीन हवैके	१६६	२५	१५
लांवेसुललित लहकारे सटकारे कारे	२१०	५	१६
१२० युगलकिशोर कवि (टोटल १४)			
राधाठकुरानी पासवानी लियेपानी खरी	२५९	१२	१६५
१२१ यशवन्त कवि (टोटल १)			
नयननकी गति कोरनीलौ	१२३	३	१२
१२२ रसरंग कवि (टोटल १)			

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नस्वर
सुखमाके सिन्धुको शिंगार मन मन्दिर ते	२४६	३	२४
सुखमाके सिन्धु को शिंगार के सुमंदिरते	२४६	२४	११२
१२३ रसीले कवि	(टोटल २)		
दीठिपरी नंदलालैकहूं	८४	२२	२
१२४ रसिकविहारी	(टोटल १)		
कामके तुशीरबिच पल्लव पुटीर कैधौ	३	२३	११
सरस सुगंध घालि शिशते अन्हायवाल	१९५	१०	८
१२५ रसराज कवि	(टोटल २)		
मेरुमध्यमदन मलंग को बसननील	४०	१८	१
मोहनी के अजिर में परीकैधौ खेखिबे की	२१८	३	२४
कीधौ शशि मन्दिरपै श्याम घन कलश सोहै	२१८	२३	२
कैधौरूपसागर के रतन युगुल	१५६	१	१४
कीधौहै अतिथि पिय बचनके रसराज	१४३	२५	३
लालन के मनते जिनको	१२७	८	८
लिख्यो मननायक बनायरसरराज मली	१८१	१४	३
१२६ रतन कवि	(टोटल ७)		
जगर अगार होत यमुना के जल कैधौ	२०५	२२	७
सोहत सुरंग सुख रंग में दुःख सोहै	५६	१२	२८
१२७ राम कवि	(टोटल २)		
वहजो प्रकाश मानलागत बिभावरी में	१०२	५	३२
कंचनके खाने में जटित नील मणि कैधौ	१३२	२	४
चौधती चकोरे चहुंओरे जानिचन्द मुखी	२३३	८	५६
१२८ रिभुवारकवि	(टोटल ३)		
अरुण कमल नखचन्द्रहैं समीपताते	७	२३	२८
१२९ रतिनाथ कवि	(टोटल १)		

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ पंक्ति नम्बर		
	१०	१७	४
कोमल फूल मनो अरविन्द			
१३० रघुराज कवि (श्रीमन्महाराज वांधवेसरीवा)	(टोटल १)		
वरषा अरुशीतहुआतपको	६	१	२०
कामविरंचि के बेषबनाय	१४	९	४
कैधौसुधाके सरोवर के ढिग	७२	२२	३
कैकेशलयमें लगीफली मूंगकी	८१	१२	२
कोकिल करठकी त्योंही कमोजकी	९१	४	६
कै सुखमा के सरोवर को	९५	३	३
काम के बाणन की कलकांति	११०	१३	६
की सुखमा के समुद्र के सोहि रहे	१६०	१०	२०
भृंगि की सूझमता को कहै	३२	२	१२
प्रेम के कूप को हेत कलौल	४७	१०	१२
प्रेम कथा रस पीवन को	१४५	२२	११
धुनि कैधौ विराजि रही मन मोहनि	११७	१८	५
शारदकी कैधौ पारद सी	१२४	११	१८
शोभाकी सांच में मैनकी ढारी	१३६	१८	८
सोहत कञ्चन पत्र कियौ	१९०	२४	१०
नलि मणिनके सूत कियौ	२११	१४	२२
खेलहिं खेल शशी में कियौ	१८७	२०	११
तीनहूँ लोक की दीपति संचि	१५१	१२	१४
मैन के मञ्जुल ऐन के बाग की	१३२	२५	८
दाहिम फूल के द्वै दलकी	१२७	२५	११
१३१ रघुनाथ कवि	(टोटल २०)		
सहज रसीली गरवीली छनकीली अति	१२	१	२
शोभा के निवास कै प्रकाश के निकेत मञ्जु	१५	२२	२
शोभावान परम प्रकाशित लखेहौ बने	१९	६	२

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ पंक्ति नम्बर		
शोभा के निवास को लगेहैं किधौ स्वर्णखम्भ	२२	८	५
सुमति सुशील अम्बु सरवर शोभावान	४७	१७	१
श्यामताई जटा जाल सुरसरी मोती माल	५६	५	२७
सप्तस्वर तीन ग्राम रागनको धाम धन्य	८९	२२	१
सूरसों मांगि प्रभा प्रति पून्यो कि	९८	२४	१९
शोभा सिन्धु निरखि चकोर उठे चौक चहूं	१०३	१२	३७
सुरभ सुवर्ण जासु पुहुप गुलाब कंज	१३६	६	६
सुरपति तीकी द्युति फीकी होत जाहि देखि	१५१	५	१३
सुन्दरि के सुन्दर पुरन्दर पियाले अति	१८३	२	१
श्री फल सरीफा किधौ दाडिम नरंगी रूप	५७	१७	३३
कोमल अरुण स्वच्छ पुहुप गुलाबहूते	१	७	१
कैधौ पद्मराग रत्नजटित भरे हैं कुण्ड	१३	१९	२
कैधौ काम चोपदार केसरि की भूमिपर	४३	२१	१२
कहै रघुनाथ कैधौ कञ्चन पटा पै बैठे	५२	२३	१४
कैधौ प्रीति प्रीतिम की सनद लिखी है विधि	७७	६	४
कैधौ अर्थ धर्म काम मोक्ष फलदाता वृक्ष	९०	१३	५
कैधौ कल्प तरुवर शाखा यह सोहावनी है	८१	६	१
कैधौ पद्मरागनमें मीना वर हीराजडे	८३	५	२
कैधौ पद्मरागनकी पंगति विशाल	१०९	२०	३
कुन्दन लै विरञ्चि ने नकासी मनो ताके बीच	१४८	१८	३
कैधौ प्रेम रंग को तडाग है तरंग भरो	१४६	१८	७
कञ्जन अमलतामें खञ्जन चपलतामें	१५८	२०	१३
कैधौ चंद्र बिम्ब में प्रकाशी मन्द रेखा बिम्ब	१८५	२३	३
कैधौ हेम शैलशृंग ऊपर विराजो राहु	२१४	०	८
करता पति के उर आनंद की	२२७	१६	३२
कीन्हीं सेत साज ब्रजराज के मिलनहेत	२२९	६	३६
मृदुल मनोहर गुलाब दलहूँते अति	१७	८	१
मनहंस वसिन्हे को रूपकी नदीमें कैधौ	३९	१४	८

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
मणिपारस ज्योहरि सम्पुटमें	११४	२०	४
मृदुमखतूलतूल कमल गुलाब फूल	२५१	१६	१३२
लखिलाजत जाहि मरालगते	१८	४	१
लाजै जाहि निरखि सुलंक लखिके हरहू	२६	२३	३
लालरंग राचे है प्रवालते अनोखे अति	१२७	२	७
वालावाल बैस के बिताइक किशोर कर्ण	२५	६	२
विमल विलक्षण विचित्र चपलाते अति	१०३	१९	३८
वदन प्रयाग गंगधार वर बन्दी वेश	१४५	५	८
विराचि अनूपजात रूपसों प्रपूरीप्रभा	१९५	२१	१०
वदनकलानिधिको परम प्रकाशमान	२००	६	८
वालाबारछोरके निवारत है बार बार	२०९	२४	१५
पुरट शिलापै किधौ सोहत सुधाको कुण्ड	३८	१	२
पूरतपियूपयों प्रकाशत प्रकाश पुंज	१२१	१६	६
प्रीतमकी प्रगट प्रतीत प्रीति पूरीभरी	१३२	१८	७
पतिव्रतताके मंजु मन्दिर मजाक किधौ	१६३	२२	३५
प्रीतमप्रवीण के खिलौना है अनोखे किधौ	२०५	१६	६
ग्रंग गोरे गोरे भांति देखि भिल्लि मिली कांति	३९	१	६
अमित लजीली शील सुमति सजीली	११६	१८	१
आईहौं देखि सराहे न जातहै	१५६	१२	३
अतर फुलेल मेल हेम ककईसों ओछ	२१४	१४	६
आवतिहो देखे आज बलिगई चलि देखो	२२०	१४	३
आजुएक ललना अन्हातमें निहारी लाल	२२०	२०	४
गवनि गयंद गूजरटी गुरु गुननकी	४३	७	१०
भूमि भूमि आये धूमि घने घनश्याम आली	७१	१२	३
राजत रंगीली रंग भौन रसमाती तहां	१०१	४	२८
रसभरे जसभरे कहै कविरघुनाथ	१६४	२५	४०
रातपिय चांदनी विलोकिये को रनिवास	२५७	२३	१५८
राजत रंगीली रंग भौन रसमाती तहां	२५८	१०	१६०

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
रूपचन्द्रूप लक्ष्योक्तियो	२५८	२१	१६२
चोटी देख संपालजे चंपा अंगरंगदेख	२६७	२५	२०१
चन्दसो आनन चांदनी सोपट	२३२	१३	५२
चंचल विशाल मीन खंजन मृगाते बेश	१७७	२०	५
चन्दमुखी चपला सी लली लखि	१३८	२३	२
फटिक शिलामें नीलमणि इकमुद्रितहै	१४१	९	५
खंजन चकोरमीन मृगशिशु सारमयो	१६५	२४	१४
तेरे युग्म नैनन की बरुणीयो बनीधनी	१८२	२	५
१३२ लालकवि	(टोटल ६७)		
कैधौ मुख कमल चलीहै अलिमालमिलि	२१२	१५	१
मन्दसुखयानमें अनन्द छविछलकत	२४९	२०	१२४
१३३ लालमन कवि	(टोटल २)		
कैधौ रतिनायक को कुटिल कृपाण	१८६	१०	५
आनंदके मंदिरमें कैधौ रुचिमाणिककी	१५७	४	६
शिव शिर गंग जैसे जल की तरंग जैसे	१२४	५	१७
१३४ लाल मुकुन्द कवि	(टोटल ३)		
कनका चल कन्दर अन्दर ते	४६	१५	=
१३५ लीलाधर कवि	(टोटल १)		
ललित बलित लोटै परी जाके बीच कैधौ	६६	११	१
पावै जो परस ताको होत है सरस भाग	७७	२५	७
१३६ शम्भु कवि	(टोटल २)		
बिंब प्रवाल बंधूकजपा	६	६	२१
बैठी मलीन अली अवली कि	४६	१०	७
बिम्ब औ प्रवालहू बंधूक कवि वरणत	१२८	२३	१५
कैधौ क्षुद्रघंटिका रतनकी ललित शम्भु	२८	११	३
कैधौ तेरे कुचन पै श्यामता सुहाई प्यारी	६५	१७	७

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ पंक्ति नम्बर		
आज गुपाल लखी वह वाल	७१	२	१
दाने मनोहर सान धरे वहुँ	७१	७	२
लाडिली के कर की मेहँदी	७८	१८	१०
लाडिली के कुच देखतही	६१	२४	४२
हारे करी कुम्भ तो लपेटे छार वन बसे	६०	२१	४७
हठि मांगत बाट किधौ लछिनीको	२१०	१७	१८
जनु इन्दु उयो अवनी तल में	२११	३	२०
जीति रति कामहिं करति रस रीति तहां	२१६	५	१६
जंग करिवे को ठान ठानी है अनंग	४२	११	७
सोगी करे योगी औ वियोगी सब भोगी करे	४२	४	६
सिंह भ्रमैवन भांवरीदेत	३२	१७	१५
सोवै लोग घरके बगरके किवाँरखुले	२४४	२३	१०३
श्रीफल सरोज कैधौ कोमल करारेकुच	५८	४	३५
श्रीफल कंज कलीसे विराजत	५७	२४	३४
छूटतलपट लपटत फिरिछूटछूट	२३६	२४	७०
मन्दमन्दचली नंदनन्दपै अनन्दभरी	२५०	१	१२५
राधिकारूप विरंचिरच्यो	२५६	१	१६३

१३७ शम्भुराज कवि (टोटल २२)

तेरे पगबालकैधौजावक दयोहैलाल	७	६	२६
तिलको कुसुम ताकी समकहा कीजियत	१५१	१७	१५
राधिकाके नाथकी अकथ कथासुनि जाहि	१५३	१५	२३
राधिकाके भुजनकी भूरि द्युतिलखोलाल	७५	९	१४
नूतहू के नूतन सरस सुकुमार पात	७८	६	८
ईगुर गुलालहू की हारी प्रभुताई	११५	२०	८
प्यारी रूप देखि विधि हिय में सरोखि कछु	१८७	३	८
वेंदी भालु तखत के रूप को वखत यह	१९०	१	६
कोऊकहै लाजन ते कंचुकी में कुच मूंदे	६८	२	३

कवियोंके नाम व विषय	पृष्ठ पंक्ति नम्बर		
कैधौ गिरिराज के सुहाये त्रिवि शृंग	६५	७	६
कैसे करि कुम्भ जैसे कञ्चन के कुम्भ	५४	१०	२०
कैधौ नाभि सर के निकटही सुधाके हेतु	२८	५	२
सोन जुही चम्पक कनक की बनक रंग	१४	२	१३
१३८ शोभ कवि		(टोटल १३)	
कैधौ बिधि जावक के रंगसों रंगीनकरि	१०	६	२
कैधौ रतिजंग के सुभट युवराज सोहै	५३	१०	१६
कंजन खंजन गंजन है	१६०	५	१९
ऊबीसी रहत भरबिन्दनकी आभा	१७३	१३	७७
नाइन नबेली लार्ड पाइन को जावक त्यों	२६०	१४	१७०
१३६ शोभनाथ कवि		(टोटल ५)	
कुन्दन से अंग नवजोवन तरंग राजै	२२७	९	३०
१४० शिवनाथ कवि		(टोटल १)	
कैधौमैन मंजिनी मतंगिनी की सकुच छीनि	२३	९	९
कैधौ शिवनाथ उदयाचल उदित भयो	९६	१५	९
कैधौ गुलाब की पांखुरी है यह	१३०	१०	२
कंचन के पत्र कैधौ मुक्ता जडाय दीन्हे	१४३	१४	१
करनकरी है जैसी करनी करनदोज	१४६	१८	१५
कैधौखंजरीटन की चपलताई छीनी है	१६०	१५	२१
कुटिल अनूप सोहै मानी की सी गति जामें	१८६	४	४
कंगही करत राय बेला को फुलेल लाय	२१२	२२	२
अञ्जन कोर दृगञ्चल राजत	१८४	२	२
अधरानहि में मुसको वह बाल	१२०	१७	२
अमल कठोरे गोरे चीकने उतंग भोरे	५०	३	२
पान सो उदर तामें त्रिवली विराजमान	३९	=	७
सूक्ष्मकलंक बिलोकत बाल की	३२	७	१३
शालत है नटसाल हियो	१४९	२१	=

कवियोंके नाम व विषय	पृष्ठ पंक्ति नम्बर		
मुकुर से मञ्जुल झलकि रहे माणिक ज्यों	१३५	८	२
लुरि लुरि डुरि डुरि झुकि झुकि रीझि रीझि	१२२	१७	१०
लचकै जिमि चारु कवूतर कगठहि	९२	१	१०
हलत चलत कैधौ क्षीरनिधिकी लहरि	७४	७	९
हँसि हँसि व्याल ख्याल करत सखीन हू सौं	१२२	१०	९
दाड़िमके दाने आनि भुलाने	११२	२	१३
चन्द्रकी मरीची कान तोरि विधराय दीन्ही	१०५	१७	२
चिबुक प्रकाश कैधौ इन्दिरा को मन्दिर है	१३३	१०	१०
१४१ शिवदीन कवि		(टोटल २२)	
पियमन कामना को शंकर बिराजमान	७०	१२	१४
१४२ शिव कवि		(टोटल १)	
गोरी के हथोरी शिव कवि मेहँदी को बिन्दु	८०	१	१६
गोरे तन श्वेत सारी शोभित सुगन्ध वारी	२६१	१३	१७४
१४३ शेष कवि		(टोटल २)	
अलि कामकला करि काहुके संग ते	१११	२२	१२
सुनि चित्तचहै जाके कंकण की झनकार	१४०	४	९
१४४ सेख कवि		(टोटल २)	
राति के उनींदे अलसाते मद्रमाते राते	१६४	१९	३९
१४५ सन्तन कवि		(टोटल १)	
यमुना के आगमन सारगमें मारुतन	२३७	१७	७३
तनकी सुवास आस पास रास मण्डल में	२६४	२४	१८८
१४६ सदानन्द कवि		(टोटल २)	
केसरि कलित पच तोरिया ललित लाल	२२६	१८	२८
सोहै श्वेत सारी ढिग कञ्चन किनारी भारी	२४३	११	९७
नखत से मोती नथ नासिका वनक चोती	२६०	२०	१७१
१४७ सोमनाथ कवि		(टोटल ३)	

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
सोने सों शरीर तापै आसमानी रंग चीर	१९४	२३	६
१४८ सुमेरुहरी कवि	(टोटल १)		
बैठि बिचारि बिरंचि कियो	१२९	९	१७
१४९ साहब्राम कवि	(टोटल १)		
असराफ असील खुमानी खरे	६८	१४	५
१५० सूरज कवि	(टोटल १)		
सोनेके सिधौरा कैधौ श्रीफल सरोज	५६	२४	३०
१५१ सरदार कवि (काशिराजके कवि)	(टोटल १)		
सूखसो नारिन नारिन जान	२४६	१६	१११
१५२ सूरत कवि	(टोटल १)		
कैधौ रतिरानी उरहार पीत फूलन को	४	४	१२
कैधौ रतिपति रचिगति गजराज पैये	४	१०	१३
कैधौ यह पानपै वशीकरण मंत्र लिख्यो	४३	१४	११
कैधौ यह देशभेश रसको नरेश	८६	१६	३
कैधौ बिधि रसनाकी रचीहै कसौटी यह	११४	८	२
कैधौ पियनेह मई कीरति हसन लैकै	१४६	५	५
कैधौ दृग सागरके आसपास श्यामताई	१८२	१३	७
भूकुटी निहारि को सँभारि सकै धीरगहि	१८६	१६	६
भूपतिहै प्रेमलाल डोरे है निशान तेई	१६६	२२	१८
जाकी मधुराई लै सुधाई सुरलोक छपी	१२८	१७	१४
जाके एक अंश हंसबाहिनी प्रशंसति है	११८	८	८
१५३ सेवक कवि	(टोटल ११)		
भाये महानैन मनभाये मैनकुंभकार	२१	८	१
नैन विसासिनके सँग गो	३९	२१	९
उधरे पट देखिपरे त्रिवली	४०	१	१०
उधरे पटपौन प्रसंगन सों	२३७	७	१९८
वालाकोऊ सेवक विशाला इहि घरमांभ	२५३	१४	१४०

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
वनवासी किये शुक पीठि निवासी	१५२	१७	१९
दृगभौरसे ह्वै के चकोर भये	९०	१४	१३
चन्दद्युति वृंदको निचोरि कै बनायो कैधौ	२३०	१६	४४
चिनगी चमकै विच अंचल सो	२३२	१८	५३
मौलसिरी रास तें न मालती हुलासतें	२४९	१४	१२३
१५४ सेनापति कवि			(टोटल १०)
कुन्दसे दशनघन कुन्दन बरण तन	२२८	८	३४
कामकी कमान तेरी भृकुटी कुटिल आली	१७९	११	१
करत कलोल श्रुति दीरघ अमोल लोल	१५९	७	१५
कोमल अमल कर कमल बिलासनि के	८२	२०	१
वदन सरोरुह के संगही जनम जाको	१४२	३	८
अंजन सुरंग जीते खंजन कुरंग मीन	१५६	१७	४
१५५ हनुमान कवि			(टोटल ६)
गोरी गोरी अंगुली हैं अंगना तिहारी प्यारी	१२	१७	५
गति मन्द्यों जाकी मजाकी लखै	२६३	१	१८०
पलकाते पद भौन भूमिपै धरतुनेकु	२६४	५	१८५
प्रभा चपलाकी कहै को भली	२६५	१०	१९०
बांकी चारु चन्द्रिका विराजै भाल बांकीखौरि	२५४	१८	१४५
मदमैन सों यों अलसानी लसै	२५०	१९	१२८
सति मन्द यो जाकी मजाको लखै	२५०	२४	१२९
जाके अवदात कल कुन्दन से गात आगे	२३७	२३	७४
चमकै दशनावली की निकरै	२३२	२३	५४
सुखमा सदन भूरिभूपित वदन जाको	२२४	४	१८
आजुलखी ललना लवंग लतिकासी लोनी	१६३	२४	२
कैधौ सप्तऋषिन के मखन की सिद्धिपुंज	९६	९	८
कैधौपिये कालकूट बैठे शम्भुजटाजूट	६६	२	९
कचनके अटनट वटहु युगलमठ	६२	२२	५६

कवियोंके नाम वा विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
करजारे किन्नरी तिलोत्तमा तँबोर लीन्हे	१६	९	४
छला छाप मूंदरी बिराजै करकंज तामें	१२	२३	६
१५६ हठीकवि			(टोटल १६)
कोऊउमाराज रमाराज यमाराज	२	३	३
कल्पलताके कैंधौ पल्लव चवीन दोऊ	२	६	४
कंचन फरस फैली मणिन मयूषै तन्यो	२२४	१०	१०
कंचन महल चौक चाँदनी बिछौना तामें	२१४	१६	२०
कोऊ छत्र लीन्हें कोऊ छाहगी कीने	२२४	२३	२१
केशरि सों अंगपट केशरिके रंग रंगे	२२५	४	२२
मखमल माखनसे इन्दु की मयूपन से	४	१६	१४
मोतिन की तोरनी तमाशे दार द्वारे रैवा	२५१	२२	१३३
मखमली गिलम गलीचन की पांति चारु	२५२	३	१३४
मणिन महल महुँ महकै सुगंधै तैसी	२५२	९	१३५
मलिन अटापै ठाढीपुरट पटापै प्यारी	२५२	१५	१३६
बैठी रंग भरीहै रँगिली रंग रावटीमें	२५५	६	१४७
बजत बधाय गाय मंगल सोहाय मग	२५५	१२	१४८
बैठीकुंज भौन गोरी कीरति किशोरीराधे	२५५	१८	१४९
फटिक शिलान के महल महरानी बैठी	२५७	११	१५६
गतिपै गयंद वारौपग अरविन्द वारौ	२६३	६	१८१
देखीभटू भावती प्रकाश भारे भानकैसो	२६५	२१	१९२
पैन्है श्वेत सारी जरी मोतिन किनारी द्युति	२६४	१८	१८७
पायजेब जेहर जराऊजरी जोरीहठी	९७	२	११
अतर पुतायो मढयो महल सुगंधन सों	२२१	२	४
अतर पुतायो चौक चन्दन लिपायो	२२१	८	६
आजहौ गईती वीर सहज निकुंजन में	२२१	१४	७
चामीकर चौकीपर चम्पक वरणहठी	२३५	१२	६५
चन्दसो आनन कंचन सोतन	२३५	२५	६६

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
जातरूप तखतपर बैठी रूपराशि राधे	२४१	२३	९१
सारीजरतारी लगी मणिन किनारी द्युति	२४७	११	११४
सांभ्र होगई थी वरि भौन वृषभानर्जाके	२४७	१७	११५
सारी जरतारी लगी मणिन किनारी त्योंही	२४७	२३	११६
१५७ हरिसेवक कवि (टोटल २८)			
त्रिवली तटिनी तटकी पुलिनाई	२७	१०	११
चुरियान हूं में चपि चूर भयो	८४	१७	१
दिन रैनि में भावन के रचे गात	९७	१९	१४
१५८ हरिकेश कवि (टोटल ३)			
लरकी लरकपर भौह की फरकपर	३०	१०	५
१५९ हरिराम कवि (टोटल १)			
लागे लाल चौकी में विराजे हरिराम कहै	४५	१	१
१६० हरिऔध कवि (टोटल १)			
सुन्दर सूधी सुगोल रची विधि	८५	५	३
वर विद्रुममें कहां लाली इती	१२९	४	१६
(नीचे लिखेहुये कवित्तों में कवियों के नाम नहीं मालूम पड़ते हैं (टोटल २)			
कोमल विमल मंजु कंजसे अरुण सोहै	१	१३	२
करकंजन जावक दै रुचि सों	२	१५	५
कैसी सुठार गढीहै सुनार	१०	१२	३
करैगी कहा तू दृगअंजनदौराधे	१९	१७	४
कदली दलहै सुऊषम सहित एतौ	२१	१४	२
कंचनके कमनीय किधौ	२३	२१	१५
कीन्हों कमलासन कलानिधि वदन तेरो	२९	१६	२
क्यों मनमूढ छत्रीलीके अंगनि	३५	९	८
कोमल अमल दल कमल नवलकैधौ	३५	२२	१
कैधौ मैन भूपति के रथ के सुचक्र चले	३८	७	३

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
कोऊ हेम सगै चढी वानि सकसीसे कहै	४२	२५	९
कोऊ कहै कुच कञ्चन कुम्भ	५१	२१	९
कैधौ उर आनँद के मन्दिर शिखर विन्द	५२	१७	१३
कैधौ विवि सुन्दर सुहाये चक्रवाक वैठे	५४	४	१९
कैधौ गिरि शृंगनि में तास के वितान तने	६७	२१	२
कञ्चन लतासी चपलासी नाह नेह फांसी	७२	८	१
कञ्चन के पल्लव में छोटी बड़ी लीक मानों	७६	१८	२
कहां मृदुहास कहां सुखद सुवास कहां	९५	१५	५
कञ्चन खचित भूमि पन्नन प्रकाश चारु	१०२	१८	३४
कञ्चन बदन तेरो तामें दाग शीतला के	१०६	२४	७
कैधौ कमला के गेह कमल की लाल माल	१०७	१७	२
कैधौ मुक्ताहल है पहल के आबदार	१११	४	९
कुसुम के सार कैधौ काशमरिीकेसरि सो	१२६	९	४
केसरि निकाई किशलय कीरताई	१२६	१५	५
केसरिके सनेचन्दके वचि	१३७	५	१०
केसरि कपूर कन्दकीन्हें द्युति मन्दअति	१३७	१७	१२
कोरेहिये दृगकोरही रावरे	१३८	१८	१
कैसो सुधासर मांभ फूल्यो है कमल नील	१४०	२१	३
कैधौ सुधाधर जू दृहुं ओर	१४३	२०	२
कैधौ सुर परिडत असुर गुरु दोऊ दिशि	१४४	६	४
कमलनफिके है सँवारे सुघरी के है	१४८	८	११
काजरते कारे अनियारे डारे मतवारे	१५०	१३	१६
कंजद्युति भंजन है खंजनके गंजन है	१५०	१९	१७
कैधौरूप सागर में आंच बडवागिनि की	१७८	२१	४
कैधौफन्दा दोहरा के चन्द्रमा के फाँसिवे को	१९७	२४	१९
कैधौ श्याम घनमें प्रकाश है प्रभाकर को	२०४	१५	२
कैसे है सिवार जैसे श्याम मखतूलतार	२०८	२	७
कालिन्दी की धार निरधार है अधार गण	२०८	८	८

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ पंक्ति नम्बर		
कैथोसुधारस चाखिवेको	२१३	१५	५
कैथो शशि कालिमा उतारि मेलि पाछे धरी	२१३	२०	६
कैथो नाग गिंडुरी दै फण उकसाय वैठ्यो	२१९	११	४
केसरिसी केतकी सी चम्पक चमीकरसी	२२५	११	२३
शीश जटा धरि नन्दन मैं	५	१५	१८
सुनियत कटि सो तो सूक्ष्म निपटते ही	३१	२१	११
शिशुताके भाजिवे को गहरी गुफाहै कैथो	३४	१७	५
शंकर के मुखमें हलाहलकी डरमानौ	६४	१८	४
सुन्दर सजीले परलम्ब सहजीले	६५	२१	८
सोरहौ कला कलित जानत जगतवै तो	९९	२२	२३
सुगंध प्रवाह वहै अबला मुख	१०५	५	५
सूक्ष्म सुवेष सुधी सुमन बतीसी मानों	११३	९	१६
सफरी से कंजसे कुरंग कर सायल से	१६७	२०	५२
सुखमाके घर पूरे पानिय के सरवर	१६८	५	५४
शिशुतामें थौवन निकाई कछुदेखी ताते	१८०	१७	२
सोथे सुकुमार के सिवार तंतुतार कैथो	२०८	१४	९
श्यामा अहि कोयलकी श्यामता लगत कैले	२०८	२०	१०
शीश तैं सरल हवैकै पीठिकी पनारी छवैकै	२१६	१८	१८
सोहै तोहि प्यारी फुलवारी सारी कैसी श्वेत	२१३	१८	६८
सोरह कला को इन्दु माणिक मुखारविन्द	२४३	२४	९९
सोने से अंग सरोज सुखी	२४६	४	१०८
सुन्दर जोवन रूप अनूप	२४६	१४	११०
शशि कैसो बदन जाको कनक ऐसो रूप	२४८	४	११७
है इनकी उनमें अनुहारयो	६	१७	२३
है तनहीं में लखाति नहीं	३२	२२	१६
हर नैन आगि जरे मैन को जिआवै येतो	७४	१	८
हीरा के कतार बीच नालिका के डौल मनो	८८	२४	१३
हरी सारी सोहति किनारी वारी नेह भीनी	१०८	७	४

कवियोंके नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
हैम सी अंग हियो हुलसै	१४६	१३	१४
हिय हरि लेत है निकाई के निकेत	१६१	८	२४
हरिन निहारि जकि रहे हिये हारि मानि	१७९	२३	३
है कच श्याम सोई तनया रवि	१९६	३	११
है करतार की कारीगरी	२६०	२	१६९
दशहू दिशाकी मानों देवता सी शोभियत	१०	२९	६
देन लगी मिहँदी दुलही कर	७६	१४	१४
दूरही ते सोही चार अचल हँसोही बड़ी	१७२	५	७१
देखै मुख चन्द्र द्युति मन्दसी लगत अति	१९७	६	१६
दुतिया को चन्दकीधौ तमके परयोहै पाले	२०२	१५	५
देखी भाँति भली हरि आज वृषभानुलली	२६६	२	१९३
द्युति देखत दन्तन की हिय हारत	१७६	१०	८२
रूपकी अवधि मानों कंज किशलयसद	१३	१३	१
रूपके राशिकी रूप रुमावली	४६	२५	१०
राधिका रूप निधान के पाननि	७८	२३	११
रूप सने बहुरूप दिखावत	१६४	९	३७
रैन जगी रति प्रेमपगी	१६४	१४	३८
राजै बाम लोचनी के तिल वाम लोचनमें	१८०	११	१
रूपकी नदीमें पार पाइबे को पारो है कि	१८९	२०	५
रौनि उनींदी प्रिया पलिकापर	१९५	१६	९
रेशमरसम सम सरोरुह सुन्दरी के	२०३	१३	९
रेशमलछारे रसराज रंगिडारे तिन्है	२१०	२२	१९
मानो अधगुंजकासे चंचुक चकोर चख	१४	१४	५
मुकुल सरोज के द्वै उलहे हिये में कैधौ	५५	११	२४
सधुराका किराति सखी जुरिराधिके	६९	२०	११
मानो अधि गुंजिका से चंचुक चकोर चख	८३	१८	४
सदन महीपति की कैधौ जय की रति है	१२१	२२	७
सनमोहिनी सूरति राधिका की	१७०	१	६२

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
मैनमद छाके राजे मोहनकलाके	१७०	६	६३
मोतिन ते सीरे और ईगुरुते राते राते	१७०	१८	६५
मरकत तार कैधौ काली के कुमार कैधौ	२०८	१२	१३
मंजन चीर सुहारहिये	२५२	२१	१३७
मोतिन की वेंदीवर कनक जराव जरी	१०१	१८	३०
गान कर मदन तँवूरन उलटि धरे	२५	१२	३
गिरिराज उरोजन की सरहद	७४	१९	११
गोरी किशोरी सुहोरी सी देहते	१८७	२५	१२
अंगनि में कैधौ जंघ अजब अनंगरचे	२६	११	७
अचल चकोर की कली है कोकनदकीसी	४६	१९	१
आनंद को कन्द वृषभानु जाको मुखचन्द	९४	२१	२
आजु लखीललना पढिबे में	११६	२४	२
आरसी अंकुर नोक श्रृंगार सी	१३१	१०	१
अबलख रंग अंग सुन्दरता जीनतापै	१८६	२३	५
आनन की द्युति आगे चन्द द्युति मन्दहोत	१५७	१०	७
आछे अनियारे चटकारे कारे कजरारे	१५७	२२	९
ओप अनूपहै आननकी	१८२	८	६
आई वरसाने ते बुलाई वृषभान सुता	२२०	२	१
आज मुखचन्दपर रोचनरुचिर भाल	२२०	७	२
अहिन खिलावत है मृगन लरावत है	२२२	८	१०
तोतन मनोजही की फौज है सरोज मुखी	२६	१७	८
तराकिधौ बिधुदार घृतधारसी	२६५	५	१८९
एकै कहै सुखमा लहरै	४०	११	१२
ऐसो नीको बोलिवो सिखायो सखी कौने तोहि	११९	१४	१३
एकही भामाके में क्षमाके मनमोहेदृग	१७३	७	७६
यमुना अन्हायवे को जाति जब प्राणप्यारी	२४०	२	८४
धौवनसरोवरके कोमल सिवार मूल	२०९	१८	१४
याही मुखवास कमलन की प्रतीते देति	१०४	१७	३

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
येबिन पनिचबिन करकी कसीस विन	१८७	९	९
योवन ज्योति जगामग होति	६१	७	४९
योवन फूल्यो बसन्त लसै	४५	२०	४
जो रतिनायक कोह भरो	४६	५	६
जीतिबे को रति केलि हरौलसे	६९	१४	१०
जीते जिन तोमरस अजिकुल मीनकुल	१७२	१४	७३
जूरो तियशिशकै कँगूरा काम मन्दिरको	१९९	१९	६
जोहे जहाँ मग नन्दकुमार	२३८	२२	७८
जरीदार कंचुकी के ऊपर झलकि आई	२४२	४	६२
उठेहैं उठान करि उरज उचौ हैं दोऊ	५९	१३	४१
ठाढेरहै दृग आसन कै कुटी	६०	१०	४५
लालरेशम की डोर सों बनाय जाल	६१	१८	५१
लोचन नीरज देखिनये	६८	२५	७
लांबीलहकारी अतिकारी सुकुमारी	२१७	११	२१
लहलही लहरें लुनाई की उदित अंग	२४१	१	८७
ललित कलाई कर कोमल कमल अति	२४१	७	८८
घनकी घटासी पट विज्जुल लतासी	६८	१९	६
धूँधुट भीने दुकूलकी भूलै	११२	२२	१७
प्रात समय वृषभान सुता	७०	१८	१५
परम प्रकाश रतिराज को निवास	९७	८	१२
पाँय धुवावतही नँदलाल सों	११२	१२	१५
पियगुन आसन सरोज के सिंहासन है	१४५	१६	१०
प्राण पियारी श्रृंगार सवाँरि	१६१	२०	२६
पाइयेन खोज खंजरीटन में रंचक हू	१६२	२४	३१
पंकज के दल द्वै पर द्वै ❀	१६३	११	३३
पंकजके दल द्वै पर द्वै ❀	१७८	१०	२
प्यारीतुव अंगनि की उमगी सुवास सोई	२६३	२४	१८४
भूप मुखचन्द ताके सौहै गल तकियामें	७३	२०	७

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ	पंक्ति	नम्बर
भौर सरोजते रोजजुरे	१६६	१७	१४७
भूत परेत को फेरो वचै	१६७	१५	९१
भीषम कर्ण कृपा अभिमन्यु	१८०	५	४
ईगुर अगिनजरै कंज अरुणाई ठरै	७७	१९	६
फूलेइ फूलन को तुम मोहि	९८	१३	१७
फटिकके संपुटमें सोई शालग्राम शिला	१७८	४	१
फटिक शिलान सो सुधारयो सुधामंदिर	२५६	२३	१५४
वैनी रोमावली यह रंग कालिमाहै	१०१	२४	३१
वारिज मै बिलसै अलि पाँति	११२	१७	१६
वदन सुराहीमें छबीली छवि छाक्यो मद	१५२	२२	२०
वारिज बिकाने लखि संजन खिसाने	१७४	११	८१
बंधु विधुकोरमें चकोर कैसो जोरा बैठयो	१७४	२४	८३
बाजकी बैठक लै उचकी	१७७	१५	४
बिहँसै द्युति दामिनि सी दरसै	२५४	१	१४२
वैसकी किशोरी गोरी शोभा वरणी न जात	२५४	२५	१४६
वाटिका बिहारी अभिसार को सिधारी प्यारी	२५६	११	१५२
भिलमिले कपोलन पै कुण्डल सुडोलन पै	१०५	२३	३
भूमै भुकै उभुकै फिरि भूमै	१६८	२३	५७
डाभ कैसे चीरे ओठ अल्प सुरेख अति	१२७	१९	१०
चन्दन में वन्दन में है न अरविन्दनमें	१२९	२०	१९
चख चञ्चल यों चमकै तिथ के	१७१	११	६८
चीकनी चारु सनेह सनी	२०३	१९	१०
चारु चांदनी में सजि सोने के सिंहासन पै	२२९	१६	४०
चन्द सम मुख ऐन शोभित विशाल नैन	२३१	१५	४८
चारु मुख चन्द ते अमन्द कला दीपति है	२३१	३	४६
चांदनी में धन श्वेत शृंगार कै	२३१	२१	४९
चन्द कलकी कहा कहिहै सर	२३३	३	५५
चांदनी में चांद लग्यो चांदनी चँदोवा चारु	२३५	५	६३

कवियों के नाम व विषय	पृष्ठ पंक्ति नम्बर		
नैन गड़े तो गड़े उनमें	१३९	४	३
नासिका चारु बिलोकत ही	१५२	१२	१८
नैन भरसीले सरसीले अति रस भरे	१७०	२४	६६
नैन को कमल कहौ वे तो सुरभाय आली	१७१	५	६७
नील के शैल पै राजि रही	२०२	४	३
नीलमनि मई मनमथकी निसेनी कैधौ	२१८	९	२५
छांड्यो जल सागर बिंथायो तन आप आय	१५३	३	२१
छुवत ही कोमल सिरस की सी पांखुरी है	१८१	२	१
छोटी छोटी जुलफैं द्वै औरन मरोर राखी	१९६	१९	१४
खञ्जन खिजात जलजात हू लजात	१६६	११	४६
खाय हलाहल औरन मारत	१८४	७	३

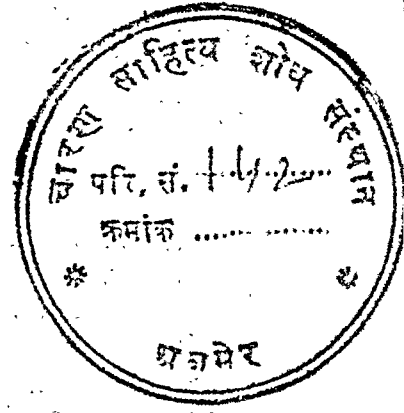
(टोटल १८६)

(कुल टोटल १०००)

इति श्रीनखशिखहजाराकेकवियोंकासूचीपत्रपरमानन्द
सुहानेसंग्रहीतसम्पूर्णम् ॥

1. 1000
 2. 1000
 3. 1000
 4. 1000
 5. 1000
 6. 1000
 7. 1000
 8. 1000
 9. 1000
 10. 1000
 11. 1000
 12. 1000
 13. 1000
 14. 1000
 15. 1000
 16. 1000
 17. 1000
 18. 1000
 19. 1000
 20. 1000
 21. 1000
 22. 1000
 23. 1000
 24. 1000
 25. 1000
 26. 1000
 27. 1000
 28. 1000
 29. 1000
 30. 1000
 31. 1000
 32. 1000
 33. 1000
 34. 1000
 35. 1000
 36. 1000
 37. 1000
 38. 1000
 39. 1000
 40. 1000
 41. 1000
 42. 1000
 43. 1000
 44. 1000
 45. 1000
 46. 1000
 47. 1000
 48. 1000
 49. 1000
 50. 1000
 51. 1000
 52. 1000
 53. 1000
 54. 1000
 55. 1000
 56. 1000
 57. 1000
 58. 1000
 59. 1000
 60. 1000
 61. 1000
 62. 1000
 63. 1000
 64. 1000
 65. 1000
 66. 1000
 67. 1000
 68. 1000
 69. 1000
 70. 1000
 71. 1000
 72. 1000
 73. 1000
 74. 1000
 75. 1000
 76. 1000
 77. 1000
 78. 1000
 79. 1000
 80. 1000
 81. 1000
 82. 1000
 83. 1000
 84. 1000
 85. 1000
 86. 1000
 87. 1000
 88. 1000
 89. 1000
 90. 1000
 91. 1000
 92. 1000
 93. 1000
 94. 1000
 95. 1000
 96. 1000
 97. 1000
 98. 1000
 99. 1000
 100. 1000

The above is a list of numbers from 1 to 1000.
 Each number is followed by the word "1000".



अथ नखशिख हजार ॥

परमानन्दसुहाने संग्रहीत ॥

अथ चरणवर्णन ॥

दोहा ॥

अतिकोमलपद वरणिये पल्लव कमल समान ॥

जलजकमलसे चरणकहि करकहिथलजप्रमान १

कवित्त ॥ कोमल अरुणस्वच्छ पुहुपगुलावहूते अति

द्युतिवन्त दिव्यकीरति कुमारीके । नूपुर निवासहे अनूप

गतवारे शुभमोहन सदैव कन्त मौतमदहारीके ॥ भनै

रघुनाथ ना विसारों क्षणएक धन्य सवसुखदाता कृष्ण-

चन्द्र पियप्यारीके । वारों रतिरम्भा शर्चीशत अतिशो-

भापुंज ऐसेपदकंज मंजु राधिकादुलारीके ५ ॥

क० ॥ कोमलविमल मंजु कंजसेअरुणसोहै लक्षण

समेत शुभ शुद्ध कंदनीकेहैं । हरीकेमनालय निरालय

निकारनको भक्तिवरदायक बखानै छंदनीकेहैं ॥ ध्यावत

सुरेशशम्भु शेष औगणेश खुलेभाग अवनिकेजहांमन्द

२

नखाशखहजारा ।

परेनीके हैं । कटँ यमफंदनीय द्दंदनीय हर हरि बंदनी
चरण वृषभाननंदनीकेहैं २ ॥

क० ॥ कोऊ उमाराज रमाराज यमाराज कोऊ कोऊ
रामचंद्र सुखकंदनाम नाधेमें । कोऊध्यावै गणपति फ-
णिपति सुरपति कोऊदेवध्याय फललेत पलआधे में ॥
हठी को अधार निरधारकी अधारतुही जप तप योग
यज्ञ कछुवैन साधेमें । कटँकोटि बाधे मुनिधरत समाधे
ऐसे राधेपद रावरे सदाही अवराधे में ३ ॥

क० ॥ कल्पलता के कैधों पल्लव नवीन दोऊ हरन
मंजु ताके कंजताके बनताके हैं । पावनपतित गुणगावै
मुनि ताके छवि छलैं सबताके जनताके गरुताके हैं ॥
नवोनिधि सिद्धि ताके आले है अमलहठी तीनोंलोक
ताके प्रभुताके प्रभुताकेहैं । कटँपापताके बंधे पुण्य के
पताके जिन ऐसे पगताके वृषभानकी सुताकेहैं ४ ॥

स० ॥ कर कंजन जावकद्वै रुचिसों बिछियासजिके
बूजमाड़िलीके । मखतूलगुहे धुँधुरूपहिराय छला छि-
गुनी चितचाड़िलीके ॥ पगजेवैजराव जलूसनकी रवि
कीकिरणें छविछाड़िलीके । जगबंदतहै जिनको सिगरे
पगबंदत कीरतिलाड़िलीके ५ ॥

स० ॥ कोऊकहै जपा जावकरंगकी कोऊकहै अरु-
णाई सहावकी । कोऊकहै गुललाला गुलालकी कोऊ
कहै रँगरोरीकेआवकी ॥ प्यारीके पायनकीउपमा द्विज
को सब जानपरी जिमि खावकी । पंकजपातकी बात
कहा जिन कोमलतालाई जीति गुलावकी ६ ॥

स० ॥ कोहरकौल जपादलविद्रुम काइतनी जोबँधू-

कमेंकोतहै । रोचनरोरी रचीमेहँदी नृपशंभुकहैं मुकता
सम पोतहै ॥ पांयधरै ढरैईगुरसो तिनमें मणिपायलकी
घनी जोत है । हाथ द्वै तीनलौ चारहू औरते चांदनी
चूनरीके रंग होत है ७ ॥

क० ॥ कैधों मानसरके विमलकमल दोऊ सोहैं जपा
जावक सुरंगअनुहारीके । कैधों सुरतरुके सुपल्लव वि-
मलराजें कैधों ये विराजें भानुभ्रमतमहारीके ॥ द्विजकहैं
कैधों रतिपतिके मुकुटवारी लाल मणि माणिक अमि-
तगुण भारी के । लोभितरहत मनमोहन को जामें ऐसे
शोभितचरण वृषभानकी दुलारीके ८ ॥

क० ॥ कैधों यहकोमल अमलताकी रंगभूमि कैधों
यह आंगनहै शोभाकेसदनको । अरुणदलनपरकीनो
कैतरणिकोप जीत्यो कैधों रजोगुण राजिवके गनको ॥
पलपल प्रनयकरत कीधों केशोदास लागिरह्यो पूरवानु-
राग पियमनको । एरी वृषभानकी कुमारी तेरेपाँयसोहैं
जावककोराग कैसुहाग सौतिजनको ९ ॥

क० ॥ कोहर औ विन्दु इन्दुवधू के वरणजीते मेहँ-
दीके मौजनकी भलक सहलकी । सहजहि सुरंगदार
जावकके रंगभार होतनसँभार उर भारतीकीललकी ॥
श्रीधर अरुणल्लवि छाय छहरायजाय क्षितिपै विछाई
मानों पांखुरी कमलकी । ज्योंज्यों प्यारी मंदमंद पांयन
धरतआवै पौधसीपरतिआवै त्योंत्यों मखमलकी १० ॥

क० ॥ कामकेतुपीरविचि पल्लवपटीर कीधों विद्रुम
की पीठपर वारिज वरन हैं । जानु युगनालफूले सुंदर
सरोज दोऊ अतिही सुदेश महामनके हरनहैं ॥ उन्नत

४ नखशिखहजारा ।

अंगुठा नख आभा आंगुरीनपर चंदकलाआई कैधों
राहुके डरनहैं । हौंहुं बलिहारी रीभे रसिकबिहारी हं-
सगतिअनुसारी कैधों प्यारीके चरनहैं ११ ॥

क० ॥ कैधों रति रानी उरहार पीतफूलनको कैधों
कदलीके अंग कंचनकी बेलहै । कैधों कमला के गेह
वांधी अतिशोभितहै पतिमणितोरण उठतछबिरेलहै ॥
सूरत सुकबिछबि कहांलों बखानों नेक देखत हियेरी
मन सबको सकेलहै । तेरेपांयपर येन पायजेब आली
कैधों गतिगजराज गरे हेमकी हमेलहै १२ ॥

क० ॥ कैधों रतिपति रचि गति गजराज पैये हेमकी
अंबारी समाधानसों विचारि कै । कैधों तनमन्दिर में
आभा चढ़िबे की सीढ़ी कीनी काम कारीगर कंचन सु-
ठारिकै ॥ सूरतबनी है तेरेपगमें भूलक शोभा कहांलों
बखानों कहिजात ना उचारिकै । जेहरि सकल जगमोहन
कहावतहै तेहरि तौरीभेहेरि जेहरि निहारिकै १३ ॥

क० ॥ मखमल माखन से इन्दुकी मयूषन से नूतन
तमालपत्र आभा आभरनहैं । गुलसे गुलालसे गुला-
व जपाजावक से पावक प्रबाललाल गावें भूधरनहैं ॥
उमापति रमापति यमापति आठोंयाम ध्यावतरहतचा-
रफलके फरनहैं । पंकज वरण छबि छबिके हरणहठी
सुखकेकरन राधे रावरे चरनहैं १४ ॥

क० ॥ मन्दही चपत इन्द्रवधूके वरणहोत प्यारी के
चरण नवनीतहूते नरमें । सहज ललाई बरणी न जाय
काशीराम वाकी गति देखिदेखि मेरी मति भरमें ॥ एँडी
ठकुराइनकी नाइन गहतिजब ईगुरसो रंगदौरि आवै

दरवर में । दियोहै कि दीवेहै विचारै शोचै बारबार वा-
वरीसी कैरही महावरी लैकरमें १५ ॥

क० ॥ देखो शुभवला पद सुन्दर विशाला मानो ई-
गुरलजात जाके देखत बरणहैं । जलज गुलाब खिसि-
यात देखि कोमलाई सिरसहु पुहुप मन माहिं सकुचत
हैं ॥ ऐसेपगप्यारीके सकल छवि छीनि लियो छविनहिं
काहूकी पदन सरसतहैं । उपमान काहूकी सकल कवि
ढूढिहारे मधुप्रति जैसे प्यारी तेरे ये चरणहैं १६ ॥

क० ॥ सुन्दर सुरंग नैन शोभित अनंगरंग अंगअंग
फैलत तरंग परिमलके। बारनकेभार सुकुमारिको लचत
लङ्क राजेपरयङ्कपर भीतर महलके। कहैपदमाकरविलो-
कि जन रीभें जाहि अम्बर अमलके सकल जलथल
के । कोमल कमल के गुलाबनके दलके सो जात गाड़ि
पांयन बिछौना मखमलके १७ ॥

स० ॥ शीश जटाधरिनन्दनमें मुनि वृन्दनमें बहुकाल
बिताये । बल्कल चीर लपेटि शरीर महासुर तीरथनी-
र नहाये ॥ आठहू याम सही हिम घाम पुरन्दर धामहू
काम बढ़ाये । यों कलपद्रुम कोटि उपाय किये तुवपां-
य से पात न पाये १८ ॥

क० ॥ सुमन निकेत लाल जावक समेत कौन कौन
सुख देत मानकरत निहोरीके । ललित अनूपमविराजे
बलदेवकवि विमल सकल कमलनि छविछोरीके ॥ मेहँ-
दी सुरंग रंगे नख रुचि चन्द जगे पगे गजमणि गति
हंसनकी जोरीके । अंकुश पताका चारु रेखन ललित
लसै बसै मन मेरे युग चरण किशोरीके १९ ॥

नखशिखहजारा ।

६

स० ॥ वरषा अरु शीतहु आतपको निशि घोससहै सरही में खरे । कहूं सूखहूं जात कहूं हरियात रहै जल-जातयों ध्यान धरे ॥ रघुराज सुनो तपके बलयद्यपि राव-रेकेभल मेह परे । तवहूनलहै सरि रुक्मिणीके पदकी मधु व्याजहि आश परे २० ॥

स० ॥ विंव प्रवाल बंधूक जपा गुललाला गुलाबकी आभा लजावति । शंभु जू कंजखिले टटके किशलय ब-टके भटके गिरा गावति ॥ पाँव धरै अलि ओर जहां तिहिं ओर ते रंगकी धारसी धावति । मानो मजीठकी माठ दुरी एक ओर ते चाँदनी वोरति आवति २१ ॥

क० ॥ विम्बमें प्रवालमें न ईगुर गुलाब में न चम्प-करसाल में न नेसुक निहारे में । दाड़िम प्रसून में न मून धरातून में न इन्द्र की बधून में न गुंजा अधिका-रेमें ॥ कुसुम सुरंगमें न किंशुक सुरंकमें न जावकमँजी-ठ कंज पुंज वारि डारे में । राधे जू तिहारे पग अरुण समान ताको हेरिहारे कविता न आवत विचारे में २२ ॥

स० ॥ है इनकी उनमें अनुहास्यो न हास्यो न मान हिये में सकात हैं । कीचके बीच गड़े सरमें बड़े बेसर में जो फुलावत गातहैं ॥ भेंटतहीं कहूं या छवि सों रवि सों करजोरे खरे हहा खात हैं । राधे जु रावरे पाँव हों धोवति कौल धों काहे को ऐंठे से जात हैं २३ ॥

स० ॥ जिन सोहैं कहाचली पंकज की जो सकै स-म कै कहूं खाव में है । जब चंद नखावली देखि चप्यो तव ज्योति कित्ती महताव में है ॥ कमलापति प्यारीके पाँयनकी समता को नहीं कह्यु ज्वाव में है । तहँ आव

गुलाबकी कौन कहै न रही लखि ताव सहाबमेंहै २४ ॥

क० ॥ प्यारीके पगन पाई एती अरुणाई जामें मु-
गध बधून दिन साँझ करि भाख्यो है । वाग हवै कढ़-
ति जाके शिशिर लतानहूके किशलय तोरिवेको मन
अभिलाख्यो है ॥ चिंतामणि आये जाके चाँदनी वि-
छौना पर लाल मखमल को विछौना जनु नाख्यो है ।
चरण धरत जाके आँगन फटिक बन्द मानों लाल वि-
द्रुम दलानि बाँधि राख्यो है २५ ॥

क० ॥ तेरे पग बाल कैधों जावक दयो है लाल
कैधों पाँय पख्योहै सोहाग सौति जनको । कहै शंभुराज
कैधों किशलय ललित पर विछयोहै पराग आइ जपा
के सुमनको ॥ कैधों पाके कोहर बँधूक के दलन मूँदे
ताहू पर उपमा न आवै मन तन को । जानि निधि-
वास मेरे जान करि आश बख्यो कंज आस पास अ-
नुराग लुब्धन को २६ ॥

क० ॥ राधे के चरण युग अरुण अरुण रूप ला-
लमणिवलि ऐसी लालहू में होती है । कोमल सुमन-
हूते शोभा भरे शोभित है दाहन मरत जपा भये मानो
गौती है ॥ तामें सुधाधरसे विविध भांति राजत है
कहै मनीराम नख मिलै बनी ज्योती हैं । याते एक
उपमा अधिक भासी मेरे जिय पंकजके दल अग्रधरे
मानो मोती है २७ ॥

क० ॥ अरुण कमल नख चंद्र हैं समीप ताते
जोन्हको प्रकाश फैल्यो अद्भुत धरणिमैं । सौतिनके
भालको नखत रिभवार कहै देखे द्युति होत जात

विद्रुम वरण मैं ॥ चांदनी की चादर बनात के विछौना
होत चले अलवेली छवि छायाके परणमैं । भयो अ-
नुराग या सोहाग कैसो बाग खिलयो चलन सकत चित
चुभ्यो है चरण मैं २८ ॥

क० ॥ अरुण कमल अरुणोदय परममित्र तिनहूं
को लालीते लजावतहै अंगतू । उदैनाथ ईगुर गुलाल
गुड़हर लाल निदरत लाल ऐसे करत प्रसंगतू ॥ बाजत
न नूपुर कहत चरणन छूँ छूँ जामैं सुखपावैं हरिसोई करि
ढंगतू । पाँयनमें मेहँदी लगाई राधे कौन काज सहज
ललाईको विगारै जनि रंगतू २९ ॥

क० ॥ अरुणता एंडिनकी रवि छवि छाजतहै चारु
छविचन्द आभा नखन करे रहै । मंगल महावर गुरा-
ई बुधराजत हैं कनक वरण गुरु बनक धरे रहै ॥ शुक्र
सम ज्योति शनि राहु केतु गोदनाहैं मुरली सकल
शोभा सौरभ भरेरहै । नवोग्रह भाइनते सेवक सुभाइन
ते राधा ठकुराइनके पाँयन परे रहै ३० ॥

क० ॥ गंगाजूके जल मध्य कंठके प्रमाण पैठि पढ़ि
पढ़ि सुरमन्त्र आनंद बढ़ावहीं । केशोदास घाम जल
शीतसहै एकरस ठाढ़े एकपाँव कोटि कल्प नशावहीं ॥
कौमल अमलभये कमला निवास भये सुन्दर सुवास
मन यदपि भ्रमावहीं । पायोपद ब्रह्मसुत पदमिनि प-
दमिनि तेरेपद पदवीको पद पै न पावहीं ३१ ॥

क० ॥ मूल सुखमाके सुखमाके जाके सेवनते प्रचुर
प्रभाके पुञ्ज कैधौं मुकताकेहैं । कैधौं कल्पलताके लता-
डिवेके काज छाज यहतो चैतन्यताके वह जड़ताकेहैं ॥

नखशिखहजारा ।

६

कीरति पताके हेतु महानिखानताके वसु सिद्धिताके
अरु नवनिधि ताकेहैं । नाथ नेह जमाकेसे जहां के
तहांके धरे ऐसे पदभान वृषभान के सुताकेहैं ३२ ॥

क० ॥ एकही छमाके में छमाके मन मोहिलेत छमा
लतिकाके यूप श्याम ममताके हैं । पियाके मथाके टेके
थाके मान श्रीप्रियाके बलाके छलाके भरे नूपुर बलाके
हैं ॥ देव दयिताके अप्सराके कामके तियाके नागसुता
केहू नाहिंपद उपमाके हैं । अघ ओघ बाधिकाके दोष
दुखदाधिकाकेनाथ सुखसाधिकाके पदराधिकाकेहैं ३३ ॥

क० ॥ सोनेके सितून ब्रजराज मन मन्दिरके रचिवे
कौ चारु चतुरानन कहांकेहैं । कैधों रसराज महाराज
के निशान खरुभ कान्ह कहै कैधों सौतिमान भंजनाके
हैं ॥ कौन उपमाके अति राजै सुखमाके गजगजव
बिथाके राजहंस गतिनाके हैं । मोहन वनाके मन मो-
हवे के नाके खरुभ काम पलनाके कैधों पग ललनाके
हैं ३४ ॥ इतिचरणवर्णनसम्पूर्ण ॥

अथ पग आंगुरी वर्णन ॥

दोहा ॥

आंगुली चम्पककी कली जीवन मूरि प्रमान ।

तारा रविशशिसुमनमन नगगानिनखनिसमान ॥

कविता ॥ अरुण कमल पग पाँखुरीकी पांतिलसें स-
रस सघन शोभा मनके हरनकी । दीरघन लघुताई

पातुरी सुहावनी हैं देखे द्युति होतजात बिद्रुम बरनकी ॥
 नखकी निकाई नीकी आरसीसी सोहतिहै जामें देखी
 जाति शोभा सौतिके सरनकी । भरमी सुकवि कहिआ-
 वति न मेरी मति पाँगुरी भई है लखि आँगुरी
 चरनकी १ ॥

क० ॥ कैधों विधि जावकके रंगसों रँगिन करि सु-
 धासों सुधारि कलाराखी सुधाकरकी । शोभा के समुद्र
 मांझ बिद्रुमलतासी लसै पेखियत पल्लवप्रभा न पट-
 तरकी ॥ सूधी सूधी सुन्दर सुभाइहै सुरंग अंग कञ्ज
 कलिकासी शुभ शोभ सरवरकी । प्यारी तेरे पायँ युग
 आँगुरी बिराजैमानोपंकजनिषंग शरपांति पंचशरकी २ ॥

स० ॥ कैसी सुठार गढ़ीहै सुनार सो कोरदबाय दई
 चहुंघाकी । प्यारीके कोमल पायँनकी आँगुरीन रही ढ-
 रिरंचक बाकी ॥ कंजनकी पाँखुरीनचढ़ी जुहीमनो फूलि
 रही सुखमाकी । सान सयानसबै चुटकी न उठावति है
 चुटकी ललनाकी ३ ॥

स० ॥ कोमल फूल मनो अरविन्द दोऊ पद सुंदरि
 के रसभीने । ताकी अनूपम आँगुरियां छवि लेतसुवर्ण
 की मानहुं छीने ॥ आँगुरी लाली लखी पदमें जनुभूसु-
 तबैठि समाजहि कीने । उपमा रतिनाथ लखात नहीं
 निजहाथ रचे पद अंग विधीने ४ ॥

क० ॥ दसहूदिशाकी मानो देवतासी शोभियतकैधोंदिग
 पालनकी छरीहै सुहावनी । कैधोंदसौ इन्द्रिनके बांधिबे
 की कलदोऊ कैधों दस दिशाकी ये उपजी वसावनी ॥
 कैधों मन मथिवेकी मथनी बनाईकाम कैधों पदआँगुरी

है चित ललचावनी । कैधों काम मुकुट के शोभित कँगूरा चारु कैधों तरकस भरी तिकुली है भावनी ५ ॥
इतिपदअँगुरीवर्णनसम्पूर्ण ॥

अथपदअँगुरीभूषणसह वर्णन ॥

दोहा ॥

अरुण सरोरुहसे चरण अँगुरी अति सुकुमार ॥
चुवतिसुरँग रँगसी मनो चपि विछिया के भार १
राधापद अँगुरीनसम सुनिसरमाय डेराय ॥
आनिपरी पगतलदबी चंपकलीमुहँ वाय २
छिनक छिनक छुनछुनकरै पगविछुवाहरवार ॥
मनों जगावत मैनको रैनि पुकार पुकार ३
सुवरणअनवट चरणको वरणकरत यहमूल ॥
नवलकमलपर विमल मनुसोहत गेंदाफूल ४
ओटकरे नहिं जात है कैहूँ इनकी चोट ॥
बिधि याहीबिधिते धरयो इनको नामअनोट ५
सोहतअँगुठा पायँके अनवट जटित जराय ॥
जीत्योतरिवनद्युतिसुठरि पश्योतराणिमनुपाय ६
कवित्त ॥ गोरीगोरीआँगुरीन ऊपरअनूपछवि देखिये
दिनेशद्युति तनकतनककी । बीचबीच बीजनके उठेहँ
बलूलाकैधों रूपकीनदीमें रुचिराजति वनककी ॥ मोह
नीसी सबै मनमोहनके मोहिवेको सूधे चित येते सुधि
रहैनासनककी । करतकलोलै जब लालसंग डोलै यह
भनक मनकबोलै विछियाकनककी १ ॥

क० ॥ सहजरसीली गरबीली छनकीली अतिशीत
मेंसनीहैं करीसौते जिन पंगुलीं । पूरणकरनहार आस
पति शोभारास भूषणसमेतदेख निद्वैभई कंगुलीं ॥ भनै
रघुनाथ भरी भाग्यो सुहाग सदा जावकलगेते लसैं
लाल रंग रंगुलीं । अमल गुलाब कंज दलरंग लाजै
लखि नवलसोहाईदश तेरेपद अंगुलीं २ ॥

स० ॥ चम्पकली दलहूते भलीपद अंगुली बाल-
की रूपरसेहैं । शुभ्रसुवेश लसैंनखयो जनु पीतमकेदृग
देववसेहैं ॥ बांकेअनौट बनीबिछियान विभूषित जोति
जराव गसे हैं । केशव सोमसरोजनि ऊपर कोपि मनौ
तनत्रान कसेहैं ३ ॥

स० ॥ राधे के पायँनकी अँगुरी मेहँदीसों रंगी सो
भयेनवरातहैं । कैनृप शम्भुजू इन्दुबधूजुरि बैठी मिहीं
जेसरोजके पात हैं ॥ कैवटके टटके बरपानपै आरे के
फारे प्रबाल सुहातहैं । कैधौं चकोरन चांचचप्यो चिन-
गारीकेधोखे चुनीनचवातहैं ४ ॥

क० ॥ गोरी गोरी अँगुलीहैं अंगना तिहारी प्यारी
लघु मध्यदीरघ सुक्ष्म थूलकरकी । नखनकीद्युति कवि
जीवसो उदितशोभा हनूमान कैधौंहैंमथूषे कलाधरकी ॥
दशचक्रचिह्न दशदिशजीत्यो बीसोबीसकली कशमीर
कैधौं फली चामीकरकी । शक्ति पंचदेवनकी भारती है
लेखनीकी पंचपंचगांसीहै प्रपंची पंचशरकी ५ ॥

क० ॥ छलाछाप मंदरीविराजै करकंजतामें मेहँदी
केबुन्दनकी वृन्दउपमानीहै । कैधौंलिखै यंत्रमंत्र मोहन
केहनूमान बैठोभौम चन्दभौन संकुलित जानीहै ॥ कल

धौतपत्रगोत्रे बाघनवसनभौन इन्दिराकेआई इन्दुवधू
मोदमानीहै । दईहै विचित्र चित्रकीनो चित्र चित्रनीके
देखि चित्रनीके चित्त लालकोलुभानीहै ६ ॥ इति पद
आंगुरीभूषण सहवर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ पदनखवर्णन ॥

दोहा ॥

अरुणचरण आंगुरीनपर नखअवलीकी आव ॥
जनु कनेरकी कलिनपै पँखुरी लगी गुलाव १
राधापगनख निराखितुव नखत पनखतलजात ॥
निशिनिकसत थलथिरनफिरि भोरहोतछपिजात २
द्युति या उदित नखनकी भनै कौनकविईश ॥
पायँपरत छितिजाहिके भयो चन्दपियशीश ३
क० ॥ रूपकी अवधिमानों कंजकिशलयसद छवि
चितचीकनी न माखनकी ओटै है । पिय अनुराग के
निवासको नवीनभास आभाअरुणाई कांति मान कान
जोटैहै ॥ पांगुरीभई है मति आंगुरी निहारिचारु उप-
मानआन ऐसीबुद्धि योंचपेटैहै । देखिपदनखन उजाली
तेरी मेरीआली आज परीचांदनी धरणिपरलोटैहै १ ॥
क० ॥ कैधौं पदमराग रत्नजटित भरेहैं कुण्ड तामें
विन्दरोरीकी प्रकाशीप्रभा पानीने । कैधौं पगपंकज में
राजत रँगिलेनख जावकरंगेजे अलि सुमति सयानी-
ने ॥ भनैरघुनाथ प्राणपति मनमोहनको मोहनीदियेहैं

लिखि यंत्रवरवानीने । कैधोंमुखचन्द्रअमविचन प्रका-
शहेतु नजरकियेहैं लाल दशरथरानीने २ ॥

क० ॥ कैधों मन बेधन बनायमैन विधिनाहैंदेखिदस
दर्पण मोहे नन्दकेलला । हंसनके गोलककी तार तार
काननके कमल दलनपर स्वातिबुन्दकेखला ॥ अन्तर
कीआभा करबीरकोर कानिकोर बलिभद्रनिरखि सिहा
त नितहीहला । राकाचन्द्रमुखी प्यारी तेरे चन्द्रकीधों
कामके कलंबनकी भाल चन्द्रकीकला ३ ॥

स० ॥ कामबिरंचिके वेषबनाय किधों सुखमाके सो-
हात तिहारै । कंजदलीन के शीश किधों लसैं गग के
अम्बुके बुन्दकतारे ॥ सांची सुनो रघुराज किधों सजे
चम्पकलीन पै मोतिन हारे । कै पदके नख रुक्मिणी
के जिनपै कवि कोटि कलानिधि वारे ४ ॥

क० ॥ मानो अध गुंजकासे चंचुक चकोरचख चाबुक
चमक चीज बिद्रुम तमालके । चेटकके चिह्न कैधों ना-
टक के सुन्न कैधों हाटककेहुन्न देश दक्षिणके चालके ॥
जटित जराय मधिनायक अमोल मोल गोल गोल
मोती मानो मणि हेम पालके । आँगुरी अनीकी नीकी
कनककनीसी कैधों कासिनीके नखकै नगीना कामलाल
के ५ ॥ इति पद नखवर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ पगतल वर्णन ॥

दोहा ॥

तुव पगतल मृदुता चितै कविवरणत सकुचाहिं ॥

मनते आवत जीभलौ मत छाले पर जाहिं १
 तुव पद समता पदुमकी कही कवन विधि जाय ॥
 जिन राख्यो निज शीशपर तुव पदको पदलाय २
 प्यारी तेरेपगन सम किमि सरोज कहि जाहिं ॥
 कियो सरसरस हरि हियो प्रफुलितसदा सुहाहिं ३
 निरखि ललाई चरणकी रँग मैँजीठ सकुचात ॥
 अरुण मृदुल ऐसे रचे लखि जलजात लजात ४
 प्यारी के पग सुरँगरँग मग बढि परत अदाग ॥
 करत सकोमल पाँवडे हरि मन मनु अनुराग ५
 प्यारी पग पग धरत रँग सुरँग फैलि दरशात ॥
 ललितलाल मन मखमली परत पाँवडे जात ६
 कहि न सकै अँग और सुख सुखमासिन्धु तरंग ॥
 जावक जा पगि लागि लहै औरै ओप उमंग ७
 मनभावक जावक सखिन सवतिन पावक ज्वाल ॥
 शीश नवावक लालको तुव पद जावक लाल ८

क० ॥ अलकपै अलिवृन्द भालपै अरधचन्द्रभोंपै
 धनु नैननपै कंज वारों दलमें । नासाकीर मुकुर कपोल
 बिंब अधरन दाख्यो वारों दशनन ठोड़ी अंबु फलमें ॥
 कम्बुकंठ भुजन मृणाल दास कुचकोक त्रिवली तरंग
 वारों भौरनाभी थलमें । अचल नितंबनपै जंघन कद-
 लिखम्भ लाल मखमलवारों वालपगतल में १ ॥

क० ॥ शोभाके निवासकै प्रकाशके निकेत मंजुकैधों
 यह उदधिअमोघ यशभारीकैकैधों रसहासकेतड़ागया
 सुधाके सिन्धु सौतिमदहारी किधों यह सुकुमारी के ॥
 भनैरघुनाथ वसैहिये हमरे में सदा सब सुखदाता वृष-

भानकी दुलारीके । अरुण अमन्दचारु विमलसोहाग
भरे कमल गुलावरंग पगतल प्यारीके २ ॥

क० ॥ अँगुठाअनोटे छोर अँगुरी अरुणतोर भूसु-
त सोहात मानो नलिनी कलीकीजू । भनत दिवाकर
गुलावसों चरणमृदु वीयो जलजात चले बूजको गली
कीजू ॥ जावकके रंग जाको फीकीसीलगत पांयएंडीके
मलेते आसु भलका भलीकीजू।हंसकैसीचाल मग वा-
हीते चलतिकैधों भलीपगतल वृषभानकीललीकीजू ३ ॥

क० ॥ करजोरे किन्नरी तिलोत्तमा तँबोरलीन्हें चौर
चतुराननी करत छबिछाकी है । छत्रसेन छत्रपतिनीहूं
नचैरम्भा ठाढ़ी मकरपताका वारी कलपल ताकी है ॥
यमलाना राधिकासी कमलाहै हनूमान कौनकहैरसना
फणेशहूकी थाकी है । तलातल बितल रसातल महा-
तलकी अतल सुतलकीते पगतल ताकीहै ४ ॥

क० ॥ सातुकीसिताई रजगुणकी रताई मनुतामस
कोत्यागि सुखजन के सहाय के । कोमल अमल दल
मोहनीकी पुस्तककी राजत रुचिरविधि बरण सुभाय
के ॥ प्रेमदलदलकी सुप्रथभूमिसोहै किधों रहेखैंचिलो-
चनतुरंग हरिरायके । कैधों मीनकेतन तलप ताप
ताम रसदल बलभद्र तरुणी रघोछातेरे पांयके ५ ॥
इति पगतल वर्णनसम्पूर्णम् ॥

अथ एंडीवर्णन ॥

दोहा ॥

कोहरसी एंडीनकी लालीदेखि सुभाय ॥

पायँ महावर देन को आपु भई वे पाय ३

तुव अनुपम एँडी नलखि पकि कोहर सजिगात ॥

समता चहिनहिं लहित वहिं गिरिगलिजात भुरात २

पायँ महावर देनको नाइनि बैठी आय ॥

फिरि फिरि जानि महावरी एँडी मीजति जाय ३

जोहरि जगमोहितकरे सोहरि परे बिहाल ॥

कोहरसी एँडी नते कोहरि लियो नवाल ४

क० ॥ मृदुल मनोहर गुलाबदलहूँ ते अति कमल

प्रवालते सुरंग दरशातीहैं । कलित महावरसां ललित

लखेहीबने दाड़िमप्रसूनहूँ ते सरस दिखातीहैं ॥ भने

रघुनाथ बाल इंदुरी तिहारीवर सौतिनको शालती म-

नोज मदमातीहैं । चलत मरालचाल लाल बलिहारी

करे निकस मरीची चन्द्रभौन चढिजातीहैं ३ ॥

क० ॥ रजोगुण रंगवारी जावक सुरंगवारी आनँद

उमंगवारी स्वच्छ छवि छाकी है । सौतिगण भंगवारी

सखी सतरंगवारी नवलन रंगवारी अंगवारीताकीहैं ॥

गिरिधरकहैं सोहैसम्पुट सरोजवारी वशीकरण मंत्रवारी

यंत्रवारी वांकीहैं । पियमनवेड़ी अक्षलक्षण निवेड़ीवेस

उपमा न छेड़ी राजै एँडी राधिकाकी है २ ॥ इति एँडी

वर्णनसम्पूर्णम् ॥

अथ सुरवा भूषण सहित वर्णन ॥

दोहा ॥

रह्यो ठीठ ढाढ़सगहे शशि हरि गयो न सूर ॥

मुखो न मन मुरवानतें भो चूरन चपि चूर १
प्यारी ऊरुन की दिपति अम्बरमें न समाय ॥

दीपशिखा फानूसलौ न्यारे भलकति आय २

स० ॥ लखि लाजत जाहि मराल गते गजराज
तजें गत आतुरवा । द्युति देखत दामिनिहूं सकुचै दुर-
जात घनै घनके कुरवा ॥ रघुनाथ भनै मृदुचाल चलै
अतिप्यारे लगै सकरी चुरवा । मनमोहतहैं जगमोहन
को मनमोहनीके पग के मुरवा १ ॥

क० ॥ पायजेब घुघुरू घुमाउ देइ जेब पाव नूपुरके
रुनुक भुनक ललचायये । घूमि घूमि लालमन घुमत
गोलाइनमें चाइन वढाय जब जीव अटकायये ॥ भह-
रू दिवाकर भनत कोक पण्डितहै मण्डित पलंगपै
छटाको फैलायये । राधिका रसीली गरवीली तेरी मुर-
वाने सुरी वो परीके किन्नरीके कहरायये २ ॥

क० ॥ दिपट पटीजै नभ नखत जतीजै भौन चक्र
रतन पटीजै रटी टाटी चुरवानमें । मर्कत प्रमोल मध्य
सुक्री कैसो सुकृतहै साधु मन चमकत धुरनधुरवानमें ॥
पजन मरीचें अच्छ पच्छ चच्छ चकचौंध चमक चुनीन
जोर चारु चंचलानमें । रतिके मजेमें पग पग उर-
भेमें हाय देती ये जुजेबै पायजेबै मुरवानमें ३ ॥ इति
मुरवा भूषण सहित वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ गुलुफ वर्णन ॥

क० ॥ चरणकमल कर हाटक की शोभादेत परी

मणि मानो लट नागिनी उलुफकी । रंभातरु उलटि
कपूर पूर राखिवेकी कोठीसी युगल कम काम के कुलु-
फकी ॥ साजत सुदेश गांठि गिरीहै दिनेश कैधों रेशम
रसेकी रूप भूपके सुलुफकी । एंड़िनसों आडराजै पांयन
दुहूंविराजै अतिछविछाजै लाल गोरीके गुलुफकी १ ॥

क० ॥ शोभावान परमप्रकाशित लखेहौ बने किह
विधनाने निजहाथसों सँभारीहैं । मोहनकी मोहनीसु-
ठार मदमाती मैन देखतही सौतें मानछोड़ हियेहारीहैं ॥
भनै रघुनाथ राव स्वच्छ हैं प्रबालन ते युग महतावी
मनो मनसिजवारीहैं । रम्भाखम्भ अग्र कम्बुद्युति प्रति-
विम्बी किधों गहव गुलावी गोलगुलुफ तिहारीहैं २ ॥

स० ॥ बरगोल सुडौल बनेहैंअमोल ठरे मनोसांचे
सुभायनमें । असकोजगहै जिनको लखिकै नहिं होत
मनोजकेचायनमें ॥ कमलापति कामचितेरहूतौ नसकै
लिखि केहूंउपायनमें । अस पेखत प्यारीके गुलफनको
लगे कुलफ न कौन के पांयन में ३ ॥

क० ॥ करैगी कहातू दृगअंजनदौ राधे पगमंजनके
हरीबुद्धि नंदके दुलारेकी । लाल नख लाल अंगुरीन
लखि लीनभयो लालीलखिलाल वाकेचरणकिनारेकी ॥
तरवासुरंग एंडी ईगुरकेरंगरँगी छविहैतरंग अंगवारे च-
टकारेकी । गोरीतेरे गोरेगोरे गोल गुलफनपर नजरनि-
गोड़ीगड़ीजुलुफनवारेकी ४ ॥ इतिगुलुफवर्णनसम्पूर्णम् ॥

अथ पिंडुरी वर्णन ॥

क० ॥ सारघनसारलै केसर कनकचूर सानि सुधा
सलिल सँवारीहै किशोरीकी । चीकनी करजहीसोंकरी
है विरंचि पुनि ताते तैसीभईहै युगुति नाहि थोरीकी ॥
रम्भा छवि छीनलीन्हीं रम्भाछवि छीनकीन्हीं चिन्ता-
मणि तिलोत्तमा रति मति भोरीकी । जेहरिके उरबसी
जेहरिसों अतिलसी ऐसी गोरी गोरी गोल पींडुरी
हैं गोरीकी १ ॥

स० ॥ गोरी गुलारी सुठारसी साँचेकी देखत देहिन
कोमलकाकी । रम्भ कुसुम्भ किधौं है किधौं छविछीनत
कंचनके कालिकाकी ॥ कामगढ्यो बड़हीहैं किधौं रति
के रतिकीबेको पापलिकाकी । तोष विलोकि बिलोचन
भैनवस्यो बलि पींडुरी या मलिकाकी २ ॥

क० ॥ कीधौं वैसवेलिवेको बेलनबनाय विधि शोभा
धर सुघर सकल सुखदाईकी । कोमल अमल दलके-
तुकी के कलिकाकी केसरि कलाई मानों मनमथराई
की ॥ कीधौं बलभद्र शोधि सकल सोहाग गुन शुचि
रुचि रची सची पीड़ी द्वै बनाईकी । आभा सौति ख-
ण्डनकी ऐपनसोंमाड़ी ताते कीधौं पदमिनी तेरी पींडुरी
सुभाईकी ३ ॥ इति पिंडुरीवर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ जंघ वर्णन ॥

दोहा ॥

सघनजघनअतिगिलगिलीमनोथलीरतिराज ॥

जनु गाभे कदलीनके कीधौं शुण्ड गजराज १

शीश जटाधरि मौनगाहि खड़े रहे इक पाय ॥

एतो तप कदली कियो लह्यो न जंघ सुभाय २

गोरे ढारे जंघ तुव बोरे सुवरण माहिं ॥

कोरि निहारे नाह पै गये निहारे नाहिं ३

जंघ युगल लोयन निरै करे मनो विधि मैन ॥

केलि तरुन दुख देन ये केलिकला सुखदेन ४

क० ॥ भाये महानैन मनभाये मैन कुंभकार पाये

कोटिरंग अंग कंचनचमेलीके । सेवक भनत पट बाहिर

कढ़त आव महताव जाविधि फनूस रंगमेलीके ॥ वर-

णि न जाय अतिशोभनि सुभाय कढ़ी कालिंदी सों

न्हाय संग सोहनी सहेलीके । गौनको करति परगौन

को हरति ऐसे कौनैविधि कीन्हे जंघयुगल नवेलीके १

क० ॥ कदली दलहै सुऊषम सहित एतो एतो है

मयूषमय गुणहिततेरेहैं । जाकी कहुं रोमनकी पावैनर

मन रुचि मेरेजान रम्भाहूँके करम करेरेहैं ॥ रदमति

जिनकी दुरदकर जे कहत धुरकाम रथ उपमानते अ-

नेरेहैं । शोभाके सदनके कि काचे कलधौत खम्भ

कीधौं मृगलोचनी युगल जंघतेरेहैं २ ॥

क० ॥ मोहनके मनके अवलम्ब ये आली लखि

चित्रमें लिखे न जात चकित चितेरेहैं । कंचनके ख-

म्भनके दम्भ दूरिकरिबेको कीन्हेकरतार ऐसे कहुंकहुं

हेरेहैं ॥ रूपही की ईडुरी है पीडुरी दिनेश जामें लघुन

विशाललाल चाहि भये चरेहैं । सूखी सब सौति मन

शोचन सकौचकरि शोच मदमोचनयुगल जानुतेरेहैं ३ ॥

क० ॥ रूपरस आसनके काम के सिंहासन है केलि
कला कौतुक की जीत मन आनिये । सौतिन को गरब
गयो है देखि देखि जिन्हें कदली के खंभ दोऊ उलटे
प्रमानिये ॥ भरमी सुकवि गज शृंड सकुचन लागे
सौगुणी करभहूँ ते शोभा सर सानिये । सुघर सुठार
ये सवारे है बिरंचि कैधौ जंघ अलवेली के अनूप
युग जानिये ४ ॥

क० ॥ शोभाके निवास को लगे है किधौं स्वर्ण ख-
म्भ कैधौं चन्द्र स्यन्दन के युग धुर धारे हैं । रम्भा ख-
म्भ रम्य किधौं सुरतरु शाखा युग सुखद सदाही निज
प्रीतम को प्यारे हैं ॥ भनै रघुनाथ पीन अमल सुवर्ण
कंज दामिनिते अमित अमोघ युतिवारे हैं । कैधौं ये
सुधारस भरे हैं इक्ष दण्ड दोइ किधौं कामदण्ड जंघ
युगल तिहारे हैं ५ ॥

क० ॥ रतिहू की मति पतिहूकी ललचात अति मै-
नहू के नैन देखि लालच भरति हैं । सुन्दर सरस शुभ
सौरभ सहज सोहै करकश जानिकरी कर निदरति हैं ॥
शोभित सुभग कोऊ चोप घन कर तेरे जंघन युगल
मणिकण्ठजी हरति हैं । भाँय के उतारी कैधौं शोभा
साँचे ढारी छवि कनकके कदली की बदली परतिहैं ६ ॥

क० ॥ हाटक समान रम्भ खम्भसी लसत जानु
केलिमें निधानु मानों भानुराते प्रातके । भनत दिवाकर
वितुण्ड शुण्ड गोत रोल उपमा अतो ल रसराज कान्ह
घात के ॥ घनसार स्वच्छता सुवासता धसीसी जामें
एतौ मैन मानवी तो देववृन्द जात के । कौन कौनबात

की बड़ाई करों खोजि खोजि कामिनी के जंघ युग डार
पारजातके ७ ॥

क० ॥ सकुच समेत कैंके सुंदर समेति शुण्ड गाह-
तही रहत तड़ाग बन कोनेके । करभ कहानी कहां अ-
तिही असार सेत साने तरु कलिके लुकाने डरहोनेके ॥
भनत दिनेश अति कोमल युगल जंघ हेरतही होत
जैसे बशमन टोनेके । मोहनी महल सुख छावन के हेतु
मानों कारीगर मदन बनाये खम्भ सोनेके ८ ॥

क० ॥ कैधों मैन मंजिनी मतंगिनी की सकुच छानि
कैधों हंस हंसिनी विहारकी चलनि है । कैधों सुखसागर
थहावत मयंक मुखी कैधों नन्दलाल मन माणिक भू-
लनि है ॥ हरे हरे हेरि हेरि हटि हटि हरिन नयनी भूम-
त भुकत कैधों केशरीमलिन है । शिवनाथ कैधों अनुराग
में सुहाग बेलि फहरि फहरि फौलि फूलन फलनि है ९ ॥

क० ॥ कोमल कमल मुखी तेरे ये युगल जानहु मेरे
बलबीरजूके मनही हरत हैं । सौरभ सुभाय शुभ रम्भा
को सदन अरु केशव करभट्टकी शोभा निदरत हैं ॥
कोटि रतिराज शिरताज ब्रजराजकीसों देखि देखि ग-
जराज लाजनि मरतहैं । मोच मोच मद रुचि सकल
सकोच शोच सुधिआये शुण्डनकी कुण्डलीकरतहैं १० ॥

स० ॥ कंचनके कमनीयकिधों कदली अतने उलटे
करिराखे । मैन मतंगनके कै भले सित शुण्ड है पीन
अमीरस चाखे ॥ कै सुखमा तियके करके करभै जुमहें
सुखमा तरु साखे । विम्बविजय रसराजके कै किधों
रुक्मिणी जंघके काम दुसाखे ११ ॥

स० ॥ जानकिधौं है रती रतिनाथको सोनके त्रोन
रच्यो पंचवानुहै । बानहै फावत आनके मानहै की कद-
ली विपरीत उठानुहै ॥ ठानहै ऐसे नहीकरिके करतोष
चितै जिहिं कान्ह विकानुहै । कानकरै यह सौतिनके
पर प्राणसे प्यारी सुजानकी जानुहै १२ ॥

स० ॥ कै विधि कंचनगार शिंगार कै दीन्हें बनाय
अनूपम रंगके । कै कदली उलटे कै विराजत कै करि
शुण्ड दिखात उमंगके ॥ ऐसीलसै उपमातिनकी द्विज
भाषतहै इमि पाय प्रसंगके । प्राणप्रियाके सुराजत ये
दोउ जंघ किधौं है निषंग अनंगके १३ ॥ इति जंघव-
र्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ नितम्ब वर्णन ॥

दोहा ॥

लखि नितंब बरतुलसघन उपमा असहियहोय ॥

मनहुँ मैं मुरचानकी विरची बुरजें दोय १

तियनितंब अति पीनकी उपमा असरहि फैल ॥

जनु रतिसागर पारहित रची मैंधर तैल २

सुवरण सुवृत नितंब युग यों सोहत अभिराम ॥

रति रण जीति धरे उलटि मनो नगारे काम ३

वा नितंब युग जंघकी उपमा को यह सार ॥

मानो कनक तमूर द्वै उलटि धरे करतार ४

क० ॥ कैधौं द्वार मारजूके दोऊ चारु चौतराहैं कैधौं

चक्रवाक चितचोर सुरनीके हे । चामीकर चक्र चीन्हे
जात इहिं चितनाते चितये चपल नैनी जौन करनीके
हे ॥ रतिके सहायक हे तोष सुखदायक हे राखिवेको
लायक अंगर बरनीके हे । संवरारि रागीज के राजत
तमूरा कैधों मेनहीं के तम्बु के नितम्ब तरुनीके हे १ ॥

क० ॥ बाला बाल बैसके बिताइक किशोर कर्ण हर्ण
आतुरी के चातुरी के देनवारे हे । मत्तगजठवनि सिखा-
वन गुरु हे किधों प्यारे प्रेमरंगके सुवर्ण घट भारे हे ॥
भनैरघुनाथ विश्व विजय विलोकि मेन उलटि धरे के
संत कुम्भ के नगारे हे । कैधों प्रभापुंज स्वच्छ सुन्दर
गुलाब रंग प्यारी मृदु युगल नितम्ब ये तिहारे हे २ ॥

क० ॥ गानकर मदन तँवरन उलटि धरे कंचन वर-
न दोऊ लगत सोहायेहे । चीकने उठोहे मृदु बाल के नि-
तम्बवर महिमान कहिजात ऐसी छविछायेहे ॥ शोभाको
समेटि औ लपेटि सब उपमान चाग्रन सहित विधि
इनहीं बनाये हे । कैधों जगजीति रति आपनी दुहाई
फेरि नौबत बजाइ ये नगारे औंघाये हे ३ ॥

क० ॥ चहुँओर चितचोर चाकचक चक्रमणि सु-
न्दर सुदरशन दरशनहीने हे । दितिसुत सुखनि घटाइ-
वेको सुखरुख सुरन बढाइवेको केशव प्रवीने हे ॥ सब-
हीके मननि हरण करि हरिदूके मनमथिवेको मनमथ
हाथ लीने हे । रुचि शुचि सकुचि सकेलिके तरुणि
तरे काहू नये चतुर नितम्ब चक्र कीने हे ४ ॥

क० ॥ लाल रंगवारे घेरदार घांघरेसां धिरे नेक न
उघारे भारे सुखमा समूलहे । जगजीतिवारे पति प्रीति

रीतिवारे कैधों कामके नगारे उलटारे भूपे भूलहैं ॥
उपमा अतूल या पिछोड़ी मति भूल चेत मनसा कहे
तें करें कविन कबूलहैं । निरखे नितम्बनीके या नित-
म्बनीके मानों जंघ युग कदलीके थम्भ थूलमूलहैं ५ ॥

क० ॥ कैधों खरी खीन कटिनिकसी नितम्ब पीन
कैधों सतसमर प्रहारताके छालसी । भनत दिवाकर
कि मदन तमूरधरे मेखलाकेरव सोइ बाजतहै भालसी ॥
कैधों जातरूप युग हरिडका उलटि राखे होत जगमग
ज्योति सभावर जालसी । हरुवेबदन ताके थम्भनलगी
यों मानों सौतिउर शालतहै पेखि पेखि शालसी ६ ॥

क० ॥ अंगनि में कैधों जंघ अजब अनंग रचे गांठ
कुच गिरहित हेतु मद चालके । कटि रथचक्रकी आ-
कृत यामें पाइयत केलिकला बैठक ये रसिकरसालके ॥
विपरीत मण्डित जघन खम्भ निम्ब कैधों लाहकी गि-
रदगादी मैन महिपालके । अमृतसों सानी कैधों सोनेकी
सरस पीड़ी सोहतहैं सुन्दर सुभग श्रौनी बालके ७ ॥

क० ॥ तोतन मनोजहीकी फौज है सरोजमुखी हाव
भाव शायक रहेहैं शरमायकै । तापर सलोनी तेरे वश
है गोविन्द प्यारो मैनहूँके वश भये तेरे ढिग आयकै ॥
तिनहूँ गोविन्द लै सुदरशन चक्र एक कीन्है वश भुव-
न चतुर्दश बनायकै । काहे ना जगत जीतिवैको मन
राखै मैन दुर्लभदरश द्वैनितम्ब चक्र पायकै ८ ॥

क० ॥ पियरति समताके थमिवेकीठौर कैधों रूपके
नगारे मैन उलटिकैराखेहैं । कैधों काममालतीकी नाल
सी सिखत सिखी कैधों पीठिदेवी ताकेशुद्धर भाखे हैं ॥

कैधों चक्र चतुराई ताहीके हैं आगे धरे कोविदके मारि-
बेको नर अभिलाखे हैं । शोभा सबजगकी सँवारिकै धरी
हैं कैधों तरुणीके नीके ये नितंब रचिराखेहैं ६ ॥

॥ क० ॥ घन अतिजघन नितंबपृथु पेखियत कटिघटि
केहरिकुमार केसो माप है । विध्य कैसे शिखर उभरे हैं
उरोजउरमानों बलिभद्र अचरज केसोलापहै ॥ मिटे
वेदविधि बालापनके विनोद सब कलदई विज्ञरसनाको
अनुलापहै । श्रोणिनगुरुता सुलघुताई लंकभयो वारहे
बरष गुरुसिंहको मिलापहै १० ॥

॥ ११ ॥ त्रिबली तटिनी तटकी पुलिनाई कोऊ बहि
जाइ कवों फविमें । जनु चक्रकुंभार जुवाके थली छिपे
घांघरीबीच परेदविमें ॥ गतिमंदके पीडयो चहे रिसले
हरिसेवक मीडयोचहे नविमें । सुघराई सुकाम विरंचि
कीहै तिय तरेनितंबनकी छविमें ११ ॥

॥ स० ॥ लाडिलीके वरणे को नितंबन हरिरही रस-
ना कविजेतके । कै नृप शम्भुज मेरुकी भूमि में रेतके
कूराभये नदीसेतके ॥ कैधों तंबूरन के तबलारंगि आधे
धरे करिरम्भाके लेतके । कंचन कीचके माथे मनोहर के
भरना द्वैमनोजकेखेतके १२ ॥ इति नितम्बवर्णनसम्पूर्ण ॥

॥ ॥

अथक्षुद्रघंटिकावर्णन ॥

कवित ॥ रागिनीकी मण्डली रची है कामदेव कैधों
रागिनीसमेत रचना है चितचोरीकी । कैधों नाभि कूप

कीरहटघरी रूपभरी ठरी अनठरीहै विचित्रभांति भोरी
की ॥ कैधोंहै दिनेश अलि वेष कोऊ मोहनीको मोहन
को मोहमन बैनधुनि थोरीकी ॥ कैधों वरबाजन बिराजत
नितंबढिग बाजत छबीली क्षुद्रघंटिका किशोरीकी १ ॥

क० ॥ कैधों नाभिसरके निकटही सुधाके हेतु समर
खरेटी गुंजिरही मालसीगुही ॥ कैधों शम्भुराजके डमरु
के कमर बीच शैलतनयाकी बांधी घुंघुरु सुधामुही ॥
प्यारीजूके किङ्किणी को डोलनि बजनिसे बखानै जोड़
ध्यावै गणपति शारदातुही ॥ कलपलतापैवसी जानिकै
प्रभात मनो बोलिबोलि नाचती कनककी चुहचुही २ ॥

क० ॥ कैधों क्षुद्रघंटिका रतनकी ललितशम्भु राज-
त भलभलात राधिकाके घरपर ॥ घांघरो मढी के पर
किङ्किणी कनककी कलशतरलसैं कैधों रूपरूप घरपर ॥
चलत हलत कैधों पौनते डुलत ताते बोलिबोलि उठ-
तीहैं आय आप अरपर ॥ पींजरे जराऊटंगीं ॥ बुलबुल
जलमानौ भरलाय राखी है निकट नाभिसरपर ३ ॥
इति क्षुद्रघंटिकावर्णनसम्पूर्ण ॥

अथ कटिवर्णन ॥

दोहा ॥

सुनियत कटि सूक्ष्म निपट निकट न देखत नैन ॥

देहमध्य यों जानियत ज्यों रिसना में बैन ॥ १

विधि अनुमान प्रमाणश्रुति कियेनीठि ठहराय ॥

सूक्ष्मकटि परब्रह्मलौ अलख लखीनहिं जाय २
नि सूक्ष्मकटि वा बालकी कहौ कौन परकार ॥

॥ जाके तनक चितौतही परत दृगन में वार ३
लगी अनलगीसी जु विधि करी खरीकटिखीन ॥

प्रकिये मनौ वाही अकस कुचनितंब अतिपीन ४
लहलहातितनतरुनई लचिलगिलौलफिजाय ॥

लंगै लंक लोयन भरी लोयन लेति लगाय ५
लंक लकलकी पातरी तनक छिवाये हात ॥

छुई मुई सम लचकिके कमची लौलफिजात ६
कौ ॥ भूतकी मिठाई जैसी साधुकी भुठाई जैसी

स्यारकी ठिठाई ऐसी छीन छहूँचतुहै । धीरा कैसो हास
केशोदास दासी कैसो सुख शूरकैसी शंक अंकरंक कै-

सो वितुहै । समकैसो दानि महामूढ कैसो ज्ञान गौरी गौ-
री कैसो मान मेरे जान समुदितहै । कौने है सँवारी वष-

भानकी कुमारी यह तेरीकटि निपट कपट कैसोहितुहै ७ ॥
क ॥ कीन्हों कमलासन कलानिधि बदन तेरो स-

कुच्यो कमल सारवासर निसरिगो । भयो है उताल र-
चिवेको तिहिकाल बाल बाहस बिडरि वाको साहस नि-

सरिगो ॥ टेढ़ीकीन्हीं भौंहें कचकीन्हे कुटलोहें फेरि क-
लिका भयेतें वाको असन खिसरिगो । गोपजनि जानो

ख्याल जगत जनायो यह यातें वाको कटि को बनाय-
वो विसरिगो २ ॥

क ॥ लाजैजाहि निरख सुलंकलखि केहरहू पुनि
रतिरम्भाकै गुमान गुरहारोहै । तामें किङ्कनावल विशा-

ल सुरवारी बजै वरजरतारी लख्यो घांघरो घुमारोहै ॥

भनेरघुनाथ मंजु मृदु मखतूल तुल्य सौरभ गुलाब लौ
सुजान अलिधारी है । कैधों इन्द्रजालकी यती मेंहू नि-
काख्यो विधि कुन्दन तपायवाय सुकटि तिहारो है ३ ॥

क० ॥ सुमनमें बास जैसे सुर्मनमें आवै कैसे नाही
नै कहत नाही हांकह्यो चहत है । सरस्वती सुरसरी सुर-
तनयामें है जैसे वेदके बचन बांचे सांचे निवहत है ॥
इन्दुकला जैसे रहै अम्बर में परियाको परवाको लक्ष-
न प्रतक्षना लहत है । जैसे अनुमान ते प्रमान पारब्र-
ह्मजीको तैसे कामिनीकी कटि मीरन कहत है ४ ॥

क० ॥ लरकीलरकपर भौंहकी फरकपर नैनकीठरक
पर भरि भरि डारिये । हरिकेश अमलकपोल विहसनपर
छाती उकसनपर बेशक निहारिये ॥ गहिरोही गतिपर
गहिरोही नाभिपर हौन बरजति प्यारे नेक निरवारिये
एक प्राणप्यारीजूकी कटि लचकीली पर ढीली ढीली
नजर सँभारे लाल डारिये ५ ॥

क० ॥ सिंहनीकी करिहांते छीन कञ्ज नाल कख्यो
कञ्जनालहू ते नागबेलऊ न घटि है । नागबेलहूते छीन
जानी गुणवन्त गुणगुणहूते छीन बरवार कख्यो बठि
है ॥ वारहूते छीनतार चन्दन विचार कर तार मकरीको
रच्यो सूक्ष्म निपट है । मकरीके तारहूते चारु सुकुमार
अति करी करतार या तियाकी छीनकटि है ६ ॥

क० ॥ छहरति छवि क्षिति छोरनलों छूटि छटा बश
किये छैलन छकाये हिरलति है । छीरदकी छोहरी सी
छपासी प्रवीण बेनी छपामें छपाकरकी छातीमें लसति
है ॥ छला छाप छजत छराके छोर छिटकत छवनि छु-

वत क्षणद्युतिसी लसतिहै । छीन कटि छोटीसी छुबीली
ने छटांकभरी छाई छलछन्द क्षितिपालहि छलतिहै ७ ॥

क० ॥ तारसों तगासों वारलीकसों लोकंजनसों जादू
कैसो छंद कहिबे में छलियतु हैं । चितै न परति चौकि
जात है चितौन जहां नैनन की गतिको गुमान दलि-
यतु हैं ॥ पगन धरत धरकत हियो बलिभद्र डगन भ-
रत डगडग हलियतुहैं । कचकुचभार चीर वीरनके भारी
भार ऐसे खीने लंकपै निशंक चलियतु हैं ८ ॥

क० ॥ हारी हार भार उरभार त्यों उरोज भार यो-
वन मरोर जोर दावे दलियतु हैं । परग परग पर यहै
जिय होत शंकट्टि ना परत कौन पुण्य फलियतु हैं ॥
कोऊ कहै खरी खीन कोऊ कटि हीन मदनगुपाल ऐसे
चित्त धरियतु है । काहू की न मानें सांक कहतही आई
नाँक ऐसे खीने लांप पै उलांक चलियतु है ९ ॥

क० ॥ सारी जरतारी बूटी मोतिन किनारीदार किं-
किणी भनक नीबी छवि छहराति है । मनत दिवाकर
उरोज पीन भारनते विजन बयारि लागे अंग थहराति
है ॥ सिंहिनी सुनति कान आपने अधिकखीन दीन के
मलीनमन हिये हहरातिहै । राधिकाकी लंकवेलि परयंक
पर नीठिनीठि ईश्वर सी दीठि ठहराति है १० ॥

क० ॥ सुनियत कटि सोतो सूक्ष्म निपटतेही प्रकट
दरश कहां सपने न पेखिये । पचिहारे चतुर चितेरेहूं
विचारे सब वाको सही चित्र केहूं कुञ्ज न लेखिये ॥
कहै सो संदेह नाहिं देह में संदेह नाहिं गिरा अनुमान
ताते मन अत्रेखिये । भूठी गाहि न्याय रह्यो विधि लल-

चाइजाइ विधिहू न देख्यो ताहि कौनविधि देखिये ११ ॥

स० ॥ भंगिकी सूक्षमता को कहै कटि केहरिकी सम-
ता नहिं पावै । तार औ बार सेवार कतार बिचार किये
लघुही मन भावै ॥ देवकी सुत सुनो रघुराज सुरुविमणी
लङ्क अनूप सोहावै । ब्रह्मवसीठिधौ जीवकी प्रीठिधौ
दीठि है कीधौ न दीठिमें आवै १२ ॥

स० ॥ सूक्षक लंकविलोकत बालकी केहरि जायभयो
बनबासी । सूम को दान कि गौरिको मान सो छीनिछवो
ऋतु है विमलासी ॥ भूतनही चितयो चित चोरत
कादर की दृढ़ता जिमिनासी । कुचभारनते लचिजात
अजौ शिवनाथ भनै प्रिय मान छमासी १३ ॥

स० ॥ रंचक दीठि के भार लहे बहुवार विलोकनि
इठ अनैसी । टूटि है लागि है लोक अलोक तबै हठ
छूटि है जूटि है कैसी ॥ पौन बहै ब्रज देह में लागति
देखि परै नहिं आँखिन जैसी । तैसी है सूक्षम छामोदरी
कटि केहरि की हरि लंकना ऐसी १४ ॥

स० ॥ सिंह भ्रमै बन भाँवरी देत औ साँवरी भंगी
भई करि खेदै । शम्भु भनै चसमा चख दैकै विरंचि
रची विसराइकै वेदै । राधिका लङ्ककी शंकरौ जनि
शंकरहो नहीं जानत भेदै । जो मन है परिमान समान
निगोड़ी तऊ तिहिं में करै छेदै १५ ॥

स० ॥ है तनहीं में लखाति नहीं बर बूभिये जायतौ
हैं सब साखी । मानिलई सबही अनुमान के पेखी न
काहू प्रसारिके आँखी ॥ जानत साँची कै याते जहान
जो आगे ते वेद पुराणनि भाखी । ब्रह्मलौ सूक्षमहै कटि

राधे कि देखी न काहू सुनी सुन राखी १६ ॥

स० । जो कहिये विधिनाहीं रची शिखतें धर क्यों
पगको सँग लीन्हों । जो कहिये कि विरंचि रचीहै तो देखी
न जाति कितो दृग दीन्हों ॥ कीन्हें विचार न आवै मनै
नृप शम्भु भनै तब मो मति चीन्हों । जो चितचोर को
चित्त चुरावत राधे के लंक लो कंजन कीन्हों १७ ॥

स० । प्यारी के गात बनाइवेको विधि सांगि लई
द्युति देवन अंगकी । आनन में शशि राखि दियो हरि
वास कियो रचि भौंहनि भंगकी ॥ आपने आसन नैन
रचे नृप शम्भु जू बैन सुधा सब संगकी । भाग सुरेश
उरोज महेश बलाहक केश निलंक अनंग की १८ ॥

अथ नाभी वर्णन ॥

क० । कैधों यह परम अनूप रूप सरिताको भ्रमत
भँवर जोर भवै पियमान है । सहज शृंगारकी गुफा है
जहां मैन बैठ ऐसे मंत्र जपै शम्भु दम्भु दै विकान है ॥
कैधों मणि कण्ठ यह आनंद भवन गेह जाहि देखिवेही
प्रण सौति को निदान है । दारी हों तिहारी बड़े भागमें
निहारी ढारी कैधों प्राणप्यारी तेरी नाभी निरमानहै १ ॥

क० । शोभाकी तरंगनी के तोय के भँवर कैधों सोने
की भूमि मध्य सदन कीट कीन्हों है । पिय नैन गोलक
के खेलकी खलेल कैधों बलभद्र पारखी सुलाख काम
दीन्हों है ॥ राख्यो करि अचल सचलता विसारि सब

हेरि चित्त चंचरीक रंधरस भीन्हों है । नाभी तेरी तरु-
णी निवास कैधों मोहनी को मेरे मन मोहन को मन
हर लीन्हों है २ ॥

क० । सुखकी नदीमें कैधों परत गँभीर भौर धराको
तखत पिय लोचन अरथकी । कैधों बरषामें रोम राजि
रहै पन्नग की कैधों खानि खुली है जवाहिरके गथकी ॥
घासीराम कैधों सौति सुखन की भाकसी सी मान भई
खिरकी उरज गढ़ पथकी । एरी मेरी वीर तेरी नाभी रस
भरी कैधों दोत करतार की कै मथानी मनमथकी ३ ॥

क० । अंधकार मध्य सुनि मैनकी गुफाहै कैधों रूप
ठग काज हेरु बीच तम कूप है । साँवरी तमाल लता
को है आलवाल कैधों ब्याल को बिबर अति सुभग
सरूप है ॥ चिंतामणि कैधों नीलमणि की शुभ सोपान
वांधि भूमि ग्रह रच्यो मनसिज भूप है । अतिही गँभीर
रोम राजाके निकट कैधों तरुणी की नाभी कुण्ड लस-
त अनूप है ४ ॥

क० । शिशुता के भाजिबे को गहरी गुफाहै कैधों रस
की तरंगनि भें भौर मझधार को । लक्षण बत्तीसहू के
शोभाको भँडार यह सौतिन को गरब गयो है इकवार
को ॥ कैधों सुधा कुण्ड देखि गहिरे गई है मति उपमा-
न आवत न आवत विचार को । रूप को नगर काम
भूपने बसायो तामें नाभीरसकूप मनमोहै रिभवारको ५

क० । राजत गंभीर रोमावली बनतीर मनतीर पहुँ-
चे ते भूले त्रिवली डबर में । भूरि भीर भारी छबिछलक
भृंगार पानी कालिदास देखत भँवर क्यों न भर में ॥

ऊर्ची नेकही में डूबी गई लरिकार्ई ताते रही ये छिपाय
सखी बाहिर नगर में । चञ्चल गुपाल खेलेँ गोकुलकी
गलीबीच बड़ी करवर तेरी नाभी सरवर में ६ ॥

स० । रूप को कूप बखानतहैं कविकोऊ तलाव सुधा
हीके संगको । कोऊ तुफंग मोहारि कहै दहला कल्पद्रुम
भाषत अंगको ॥ बारही बार विचार कियो नृप शम्भु न
या मत मोमति संगको । शीशी उरोजन ते मद धार
रोमावली नाभी न प्याला अनङ्ग को ७ ॥

स० । क्यों मत मूढ़ छत्रीली के अंगनि जाय पख्योरे
ससा जिमि भीर में । ठानी अठान अयान जे आपु तौ
ताहीको आनि सकै पुनिनीर में ॥ योवन पूर विलास त-
रंग उठै मनमोद उमंग शरीर में । शैल उरोज कै कूदि
पख्यो मन नाभी प्रभानद भौर गँभीर में ८ ॥

स० । प्यारी कि नाभिही सो बरनै जो लगायोहै गोरी
के लाड़िले लाड़कै । रूप को कूप सरोवरसी उपमा कवि
लोग पुकारत डाड़ कै । रोम लता को कहै दहला
नृप शम्भु एहो बरनी नहीं चाड़ कै । धूरिको काट मनो
भो अनंग रह्यो गड़ि कंचन रेतमें गाड़ कै ९ ॥ इति
नाभी वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ उदर वर्णन ॥

क० ॥ कोमल अमल दल कमल नवल कैंधों की-
न्होंहै विरंचि सब छविको सहेटहै । उदित प्रभाकर की

क० ॥ पुरट शिलापै किधों सोहत सुधाको कुण्ड
तापै आहितीन कला अमृत पिवैयाकी । कैधों छवि
कूप नीलमणि मुख बन्धनपै रोमावली डोरचन्द्र सुजल
भरैयाकी ॥ भनै रघुनाथ स्वच्छ रुचिर गंभीर शुद्ध ह-
र्णहार हीतलसुजान ब्रजरैयाकी । दलत हमेशमानसौत
मन सालैबल त्रिवली संयुक्त नाभि नवलदुलैयाकी २ ॥

क० ॥ कैधों मैंन भूपतिके रथके सुचक्र चले तिनहीं
की लीकै उर भूपैजान तौनहै । कैधों मन ठगकी ये ग-
लीभली ठगिवेकी कैधों रूप नदीहै त्रिधार कियो गौन
है ॥ ऐसी छवि देखि तेरी मोहेमन मोहन जू यातेमैं हूं
जानी यही मोहिवे को भौनहै । एकवली सबहीको बश
करि राखतहै त्रिवली जो करै बश अचरज कौनहै ३ ॥

क० ॥ जंघ युग डोरि धरि लहरी सुरोम भोरि नाभी
के हलोरि भौर लम्ब कुच गही है । भनत दिवाकर
अन्हान रस वापी लखि भये अविनाशी ऐसी पुण्य
शुभ लही है ॥ कोक की कलान सोइ यश के समान
सब केलिके कथान सो निधान मंत्र कही है ॥ उदर
सुढार तेरोपानके समान प्यारी त्रिवली तरंग परलोक
सीढी सही है ४ ॥

क० । अमल अनंग के अनंद की उदधिभूमि जीति
पिय वाजी दगावाजी सी पसारी है । कनक के पान से
उदर में उदित द्युति त्रिवली तिहारी में निहारी मति
हारी है ॥ रूप गुण चातुरी सो सुर नर नागिनके जीते
मणिकण्ठ विधिसोहै रेखसारीहै । सौति सुखउतरेकोपि-
यप्रेम चढिवेको कुंदनकीप्यारी पैरकारीसी सँवारीहै ५ ॥

क० । अंग गोरे गोरे भांति देखि भिलिमिलीकांति
कछू उठी रोम पांति बेणीकी सी भांड है । रघुनाथ तन
मन मानों नित नित नई नैननकी कोर कान ओरलगि
आई है ॥ कञ्ज कली कैसे कुच अलि केशो कृश लांक
त्रिवली की तीनों रेख सरल सुहाई है । शिशुता उत-
रिबे को यौवनके चढ़िबेको मानों काम कारीगर सीढ़ी
सी बनाई है ६ ॥

क० । पान सो उदर तामें त्रिवली विराजमान कैधों
त्रैलोक हू की शोभामर्यादरी । नाभि की गँभीरता वि-
लोकि मन भूलिजात सुरसरि सलिल के भ्रमन ह्यवि
आदरी ॥ कोमल अमल द्युति गोरी की गोरार्इ वर हेरि
हेरि शिवनाथ नयनन सी आदरी । कैधों पार कूप ये
अवला उभकिर उठत तरंग कैधों हरत विषादरी ७ ॥

क० । मन हंस बसिबे को रूप की नदी में कैधों नि-
कसी पुलिन पांति कांति हेम लोने की । सै सब सों ल-
रिबे को यौवन महीप कैधों कीनी मेड़ मोरचे की साध
जीत होनेकी ॥ नैन बश करिबे को कहै कवि रघुनाथ
त्रिवली त्रियाकी कैधों तीन रेख टोनेकी । कुचभार धरि-
बे को देखि अति क्षीण कटि कैधों काम बांधी है वनाय
दाम सोने की ८ ॥

स० ॥ नैन विसासिनके सँग गो सुखमालखिवे तिय
के अंग अंगमें । ताही समय पट नाभि तटीको गयो उड़ि
सेवकपौन प्रसंग में ॥ हौसरही मनकी मनमें तितजाइ
पखो मदके उत मंगमें । बूड़िगयो मन मेरो भटू त्रिव-
ली बलि रूप नदीकी तरंगमें ९ ॥

स० ॥ उघरे पट देखिपरै त्रिवली गुनै सेवक श्याम
हुलास धरै । तियकी सम दूजोनहीं सुख सोइ त्रिरेख
लिरुयो विधि बास धरै ॥ तिरैबीच ये रूप नदीकी सु-
जो रस बैसत्रईको विलास धरै । हरनैनसों भीत मनोज
मनोसर तीनि सुगेह के पास धरै १० ॥

स० । प्यारी के अंग बनाचतही नृप शम्भु जू देव
भये अनमेखें । कंजके कणटक साल जम्यो भयो चंद
सलीन अजाँ लगि देखें ॥ लाजमई सुर वाम भई पछि
तान्यो स्वयंभू महा मन सेखें । दूसरी और बनाइवेको
त्रिवली खची तीन तिलोक की रेखें ११ ॥

स० । एकै कहें सुखमालहरें मनके चढ़िबेकी सिढी
यक पेखें । कान्ह को टोनो कह्यो कछु काम कवीश्वर
एकयहै अवरेखें । राधिका के त्रिवलीको बनाव विचारि
विचारि यहै हम लेखें । ऐसी न और न और न और
है तीन खंचाय दई विधि रेखें १२ ॥ इति त्रिवली द-
र्शन सम्पूर्णम् ॥

अथ रसराजी वर्णन ॥

क० । मेरु मध्य मदन मलंग को बसन नील कनक
की शिलापै भुजंगिनी विराजी है । मिठी मुगधार्ई ताकी
मध्य शेख रेख रही बुझी विरहागि कैधौं मग छवि छान-
जी है ॥ रसराज कैधौंवेर पूरवविचारि चित्तकाम वेधिवे
को हर आंग सांग साजी है । कैधौं कूच बिहंग शिकार

को तुफंगताने कैधों रमनीकी रमनीय रोमराजी है १ ॥

क० ॥ यौवन सरोवर में अलक भलक कैधों नेह नवबेली नाभि कूप ते विराजी है । खञ्जन नयन हरि बांधिवे की बच्ची कैधों राजत सुदेश महावांकी छवि छाजी है ॥ उदर अभूत निकसत श्याम सूत मुख महा अभिराम काम कीन्हीं कैधों बाजी है । राखी अवरख हिये मोहनी दिनेश देखि रोम रोम राजी ताते नाम रोमराजी है २ ॥

क० ॥ चिंतामणि चौकी श्याम मणि के मयूषन की भांई सी भलक तम शोभा एक साजी है । अंगन ते बालपन गुणन निकारे सोई आवनूस छरीकीसी छवि दिव्यछाजी है ॥ अमल रतन हार ज्योति उर नाभि गुफा पैठिवेको अंधकार धार मानो भाजी है । तैसे आभरन मणि दीपन के दीपति सी काजर की रेख सी विराजी रोमराजी है ३ ॥

क० ॥ पाग रस पतिकी बिनत नाभि कुण्ड बैठी मेहरि मनोभवकी परनिको तारु है । शरल अलपही की छाती है अलप कीधों भक्षत ते भागि वचो भोगिनी कुमारु है ॥ बालातन सदन सम्हारिवे को बलिभद्र धरि गयो रेखा सूत बांधि सूते धारु है । पात से उदरपर तेरी रोमराजी कीधों जमल उरोजन कोठाई मृदु वारु है ४ ॥

क० ॥ कैधों काम वागवान बोई या शिंगार बेलि सौचकैवढाई नाभीकूप मनमोहिये । कैधों हरिनैन खंजरीटनके खेलिवेकी भूमि केशवदास नख पंकरेख रोहिये ॥

कैधों चल दल पात पियको कपट ज्वर छूटिवेको मंत्र
लिखि लोचननि जोहिये । सुंदर उदर शुभ सुंदरी की
रोमराजी कैधों चित्त चातुरीकी चोटी चारु सोहिये ५ ॥

क० ॥ सोगीकरे योगी औ बियोगी सब भोगी करे
रोगी करे साधु ज्ञान धाम दयो वारिकै । खग मृगमीन
शम्भु नाग औ असुर सुर हारे तीनोंपुर सो सकल
जीते झारिकै ॥ तेरी रोमराजी मन मोहिवेमें राजीहोत
जाकी रुचि ताजी में मधुप रहे हारिकै । दैकै जगताप
निज भुजनि के दाप मानों राखी काम चाप पर पनिच
उतारिकै ६ ॥

क० ॥ जंग करिवे को ठान ठानी है अनंग राख्यो
अंगना के अंगनि सिलह खानो करिकै । नासिका तु-
णीर लखे केशरि के तीर शम्भुभृकुटी धनुष जेवै लेत
प्राण हरिकै ॥ शूल से नयन है नितम्ब चारु चक्र कैसे
ढालहैं उरोज राख्यो एक फूल धरिकै । रोमराजी सजि
ऐसी रची कछू अज मानों धरी गज करि कै तुपक
नाभी भरिकै ७ ॥

क० ॥ विषकी लतासी बिन पानि भानु दुहिता सी
आसी विष अलपासी भामिनी की भांति है । कुचचक
डोरी की कि डोरी मखतूल की कि ताकि अमी घटनि
चढ़ी पिपीलि पांति है ॥ जठर अगिनि आभा डोरी
नाभि कूप की कि चतुरचित्तौनि में चट्टाति अहटातिहै ।
अलप उदर पर तेरी रोमराजी कैधों बलिभद्र बानी की
विपंचीही की तांति है ८ ॥

क० ॥ कोऊ हेमसांगै चढ़ीवानि सकसीसे कहै कोऊ

नाभी वामि व्याली विषम कढ़ीसी है । कोऊ छवि सा-
गर ते सरिता शिंगार वारी तरल तरंगे चारु सुखमा
बढ़ी सी है ॥ उपमा रसीली रोमराजी की रसिक छवि
छीलि छीलि कवि मति हाथन गढ़ी सी है । लिखी हेम
पट्टिका पै पांति मंत्र मोहनी की जादूगर काम घने फूँ-
कन पढ़ी सी है ६ ॥

क० ॥ गवनि गयंद गूजरेटी गुरु गुनन की गली
में गिली ज्यों देखिबेको तरसानो है । कहै रघुनाथ वाके
मुख की मरीची आगे चिलक जुन्हाई कीन चन्द सर-
सानो है ॥ चारु कुच कलित ललित रोमराजी राजी
साजी कवि समता त्रिनोद बरसानो है । उर छवि सा-
गर में सिंधुर धरयो है मैन बूढ़ि गयो धर कर कुम्भ
खुल्यो मानो है १० ॥

क० ॥ कैधों यह पान पै बशी करण मंत्र लिख्यो
देखि छवि मोहै कोन विद्या पंचशर की । हृदय सरोवर
शिंगार रस जल कैधों उमड़ि चलयोहै नाभि कुरिडका
गहरकी ॥ छोटे छोटे आखरन अबला लिखाये याते
आपनी सबलताई सूरति समर की । जिन्हें देखि ने-
नन की गति मति भाजी यह तेरी रोमराजी कैधों वा-
जी वाजीगरकी ११ ॥

क० ॥ कैधों काम चोपदार केसरि की भूमिपर छरी
आवनूस की धरी है प्यारी जीयकी । कैधों मंत्र मोहनी
की पांतिहै सुवेष कीधों मरकत रेखपाटी कंचनजरीय
की ॥ कहै कवि रघुनाथ वसत नरेशकारी डारी है जरीव
नापिबे को रसरीयकी । हीय धरछोड़ि लरिकारि भागी

ताकी राह राजतिहै नोखी रोमराजी कैधों तीथकी १२ ॥

क० ॥ सोनजुही चम्पक कनक की बनकरंग कुम-
कुम तनक भाव लिये जाके अंगको । शम्भु राज राधा
रक्षी रूपही की निधि याहि विन करि सके सुरतरु
मान भंगको ॥ बड़े बड़े मोतिनके हारन के बीच बीच
रोमराजी लसति बखानै वहि रंगको । मानों बढ्यो दि-
नन अगाऊं फूटि कढ्यो एक अण्डन के मण्डलन बा-
लक भुजंगको १३ ॥ इति रोमराजीवर्णनसम्पूर्णम् ॥

अथ रोमावली वर्णन ॥

दोहा ॥

आल बाल वर नामि अलि रोमलता शृंगार ॥
फलितसुफलकुचसरससुख दरसपरसदातार १
प्यारीतुव रोमावली इमि मोहिं परति जनाथ ॥
बसेहिये हरिरंग सोई भूलकत ऊपर आय २
रोमावलिरसलीन तिय उदर लसतियहिभांति ॥
सुधाकुम्भ कुचहित चली जनुपिपीलिका पांति ३
लसत उदर रोमावली अति विचित्र बारीक ॥
लिखी कनककी भूमिपर मृगमदकी जनुलीक ४
शैल उरोजन बीचते कढी कलिन्दी धार ॥
मन तरिवो चाहत लहां बहत न पावत पार ५
नाभीबामीते निकरि रोमावलि अहि जोय ॥
चली इन्दु आनन अमी रसजनु चाखनकोय ६

क० ॥ लागे लाल चौकीमें विराजे हरीरामकहै रो-
मावली दण्डहै अकाल दिया कामको । कैधों जलधर
एकधारासो विराजतहै कैधों कवरीकी परछाईं भाईं
वामको ॥ कैधों गजशुंडि नापि कुण्ड जलपानकरै कैधों
कामदेव लिख राख्यो रति कामको । कैधों कुचभूप
सीमा बांटिलीन्हों आधोआध कैधों है पिपीलिका की
पांति चली धामको १ ॥

क० ॥ कारे सुकुमारे पन्नगीके रूपधारे वीर कैधों
फोरिपर्वत कलिन्दजा के धारेहैं । भनत दिवाकर विरं-
चिभाल भाग लिखि करते छटकि मानो मसीके पनारे
हैं ॥ कैधों जलभौर सुधा कुण्ड पैरिवेकेकाज कीरके वि-
नोदजात बांधिके कतारे हैं । कृष्ण करभाईके भलक
भलकारे कैधों उदर रोमावली नवेलीके विचारे हैं २ ॥

स० ॥ पारसी पांतिकी पीपर पत्र लिख्यो किधों
मोहिनी मन्त्र सुहावली । तोष किधों अधरा रसको
चली नाभीथलीते पिपीलिका आवली ॥ कोऊक काम
किसानबई सो जमी किधों बेलि शिंगार की साँवली ।
हावली बावली सौतैं भई लखिरी लड़ बावली तेरी
रुमावली ३ ॥

स० ॥ योवन फूल्यो वसन्त लसै तेहिअंग लता
लपटी अलि सेनी । नाभी बिलोकत जात सुधाको थकी
मुख देखत नागिनी येनी ॥ राजत रोमनकी तन राजि-
व है रसबीज नदी सुखदेनी । आगेभई प्रतिविम्बित
पाछे बिलम्बित जो मृगनैनी की येनी ४ ॥

स० ॥ मनोहर अंगकी भाठीरची शिशुताई जराई

अनंग कलार । भनैनृप शम्भु जू दीपत ज्वाल अंगार
से राजत लाल के हार ॥ लसैं शिर बार ज्यों धूमकी
धार वन्यो तरे भाजन नाभी सुठार । रुमावली कंचन
कुंभ उरोजन ते मनो च्वै चली आसव धार ५ ॥

स० ॥ जो रतिनायक कोह भरो हठिनैन हुताशन
ज्योति जरायो । सो तुव नाभी सुधासर में निज अंग
अंगारन आय बुझायो ॥ तामधि ते मृगलोचनी मे-
चक धूम समूह उठ्यो मन भायो । सोई रुमावली को
छलपाय दुवो कुच कुंभन के बिच आयो ६ ॥

स० ॥ बैठीमलीन अली अवली कि सरोज कलीन
सोंकै विफली है । शम्भुगली बिछुरीहीचली किधों राग
लली अनुराग रली है ॥ तेरी अली यह रोमावली कि
शृंगार लता फल फैलि फली है । नाभि थलीते जुरे
फल द्वैक भली रसराज नली उछली है ७ ॥

स० ॥ कनकाचल कंदर अंदर ते निरवात शिंगार
लता लटकी । तिय रुमावली किधों शकर द्वैलखि बाल
भुजंगिनि है ठठकी ॥ चकवा तकि कै कविलाल मुकुंद
जू मीर शिकार दई फटकी । किधों मैन मतंग चढ्यो
थलि तुंगजंजीर अरीन परै भटकी ८ ॥

स० ॥ योवन बाहिर आयो नहीं तन भीतरही बढी
आभा अपारसी । ज्यों नृप शम्भु जू काँचके कुंभधरी
कछु चीज लखी परै वारसी ॥ आमिल मानों उरोज
कढ्यो चहै सायत कामधरे शुभ सारसी । ऐसी रुमावली
देखी परै ज्यों घरी परै अंजन रेत की धारसी ९ ॥

स० ॥ रूपके राशिकी रूप रुमावली यंत्रके मंत्र के

तंत्रकेतारसी । प्रेमज प्राणतेप्यारीलगी अंधियारीलगी
अंधियान को आरसी ॥ मालवनी नवली अवली पिक
वेनी त्रिवेनी के वेनी के वारसी । कंचन के गिरिकंचन
भूमि पै धूमरी धूमरी धूम की धारसी १० ॥

स० ॥ कै निधिधीरके बीचमें जाय कलिंदीको नीर
नयो भरको । नृप शम्भुजू कैधों मरालकी मालके बीच
भुजंग लग्यो सरको ॥ वड़े मोतीको हार लसै कुचहू पै
रुमावली ते तरको लरको । किधों गंग के संग सुमेरु
शिला बहि पातरो लाग्यो जटा हर को ११ ॥

स० ॥ प्रेम के कूपको हेत कलोल कढी यक पन्नगी
कैधों विराजै । इन्द्र मतंगके दान के छिद्रमें भौरन की
अवली किधों छाजै ॥ भारती भौरमें कैधों कलिंदजा
धारकी लीक सुधारस भ्राजै । नाभिके ऊपर कै रघुराज
सुरुक्मिणी रोमावली रुचि राजै १२ ॥ इति रोमा-
वली वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ हृदय वर्णन ॥

क० ॥ सुमति सुशील अम्बुसरवर शोभावान कैधोंप्रिय
प्रेमको पयोनिधि सुनीतिहै । बिम्बकुच बीच रोमराजी
अति सोहतिहै मेरुते प्रकाशी मनोभानुजा पुनीत है ॥
भनै रघुनाथ चारु हीरनको हार गंग लालनकी माल
वहै शारदा प्रतीतहै । तेरेतन तीरथ प्रयाग में त्रिवेनी
तट प्यारी उरमाधवको मन्दिर पुनीतहै १ ॥

क० ॥ लालगुणमुक्तासी सुरसरि सरस्वती बीच सुर
सुता रोमराजी सुखदेनी है । शुद्धभये न्हाय करि नयन
हरिरायजूके बलिभद्र सकल अदान केरी छैनी है ॥ रस
पतिहास अनुराग रसरसकोकि पटुप पट्टुम मुखपट्टुम
नसैनी है । रजतम सतकी त्रिरेखा हृदय मैनीकी कीधों
तियतेरे उर त्रिविधि त्रिवेनी है २ ॥ इति हृदय वर्णन
सम्पूर्णम् ॥

अथ कुच तरहटी वर्णन ॥

क० ॥ घनकी घटासी नील कंचुकी चहकि रही
मोतिनकी माल सुरसरी ठाठ है ठटी । कवि मकरन्द
रोमपांति यमुनाकी भांति धसीनाभी कुण्ड हवै सुदीठि
देखिकै लटी ॥ परम पुनीत भूमि रची है विधाता यह
ऋषिराज कामदेव तपकाज है डटी । कुचनिके नीचे
नीचे कैसी छवि छाजति है जैसी कछुराजति है मेरु
की तरहटी १ ॥

क० ॥ अटके ललन रूपहटके सकोचनमें लटके
विरतरीभि बूभियों परतहै । छविसों छबीली डीठि
चितै हरिओर फिरि चातुरीकी डोरी चक्रडोरीसी भरत
है ॥ नीलकंठ अंगरात अंचलके फहरात छवि छतिया
में कछु ऐसी उघरत है । गंगाजल भीतर सुमेरु के
समीप कैसी मेरेजानि कनक की भूमि पसरत है २ ॥
इति कुच तरहटी वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ कुच वर्णन ॥

दोहा

घटि बढिबढि घटितिय अँगनि नाप जोख सबकीन ॥

राजगीर मनसिज मनौ कुच साहुल धरि दीन १

त्रिय उतंग कुच की प्रभा कढि बढि गडी करेज ॥

जनु सहाव के कुंभ भरि धरे मैन रंगरेज २

त्रियकुच द्युतिके लखतही होति चखन चकचौंधि ॥

मनो मदन जग जीतिके दिये दुंदुभी औंधि ३

जब तें ये कुच रावरे हरि देखे अति पीन ॥

खान पान भूषण बसन सुधि बुधि तनक रहीन ४

खरे करेरे चीकने ऊंचे गोरे गोल ॥

मोहन जोहन मन हरण कंचन वरण अडोल ५

चलननपावत निगममग जगउपजी अतित्रास ॥

कुच उतंग गिरिवर गह्यो मीना मैन मवास ६

उठि यौवन में तुव कुचन मो मन माख्यो धाय ॥

एक पथिक द्वै ठगन तें कैसे कै बचि जाय ७

कठिन उठायो शीश इन उरजन यौवन साथ ॥

हाथ लगावे सवन कों लगै न काहू हाथ ८

क० ॥ अचल चक्र की कली है कोकनद की सी
दाडिम जैभीरी कैधों फटिक के पौआ हैं । श्री फल सो-
हाये किधों कोकनि के शावक हैं शृंग गिरि शङ्कर की
कञ्चनके लौआहैं ॥ कंजकी कलीहै कै सिधोरा रूप रा-
शि भरे यौवन के मग किधों पकेसे बटौआहैं । अतिही

कठिन है बखाने नाहिं जात क्योंहूं प्यारी की पयोधर
कि काम के बटौआ हैं १ ॥

क० ॥ अमल कठोरे गोरे चीकने उतंग भोरे बरबस
मरोरे मन नेक ना डरोलये । शीश पै भिलम डारि ब-
दत न काहू सूघालय साल करै घाव कठिन करोलये ॥
एँडिकै अड़त आनि खेत रस जूझहूं में टरत न टारे
भारे रतिके हरोलये । अड़ाअड़ी परेतें अँचलापै चलाय
दल कवि शिवनाथ छीन मैन के सरोलये २ ॥

क० ॥ आजु अलबेली अलबेले संग रंग धाम रति
विपरीत पूरी प्रीति सों करतिहैं । उभकि उभकि भुकि
भुकि लचकीली लंक अतिही अशंकअंक प्यारेको
भरति है ॥ गिरिधरदास उभय उरज उतंगसोहै उपमा
कहत बनि लाजही धरतिहै । मानो द्वैतुम्बराखि छाती
केतरे तरुनिसूरत समुद्र बेप्रयासहि तरतहै ३ ॥

क० ॥ आंगिराति ललितवनत चहुंओरलागी कार-
चोपढैंगी उमगत उमगाइके । श्रीपति सुकविअबिसांचे
केभभरठारे कारीगर यौवनसँवारे चितलाइके ॥ जाहि
देखि भभरि भजतदुख खलदल भूपरूप हरषित सुख
सों अघाइके । जीतिकै सकलजग उरज विजय नगारे
मदन नगारची धरेहै आँधाइके ४ ॥

क० ॥ अरुण अनार ऐसे नारंगीसुठार ऐसे उलटे
नगार ऐसे कंचनके तारसे । त्रिपुरारि वारऐसे श्रीफल
सुठारऐसे चकवा जुरारऐसे मारप्रतिहारसे ॥ कंजकेकु-
मारहार सरके करार ऐसे तोषको उदार अति सुखद

अपारसे । पर्वतअगार तेरे उरज गोरार मेरे मोहन के
प्यार खरबूजा टोपीदारसे ५ ॥

क० ॥ कैधों जगजीति मार दुन्दुभी उलटिदीन्हें
कैधों पीन श्रीफल छिपाय उरराखे हैं । भनत दिवाकर
गयंद मणिहार गंग चक्रवाक तीरमें सिकोरबैठिपांखेहैं ॥
कैधों हेम कलश पियूष रस भरि भरि काले रंग मुखपै
सुआधे रंग दाखे हैं । तुंग कुच रुद्रसे करेरे गोत्त गोरी
पूजन करे में मन काको नाभिलाखे हैं ६ ॥

क० ॥ कैसे रति रानी के सिधोरा कवि श्रीपति जू
जैसे कलधौत के सरोरुह सँवारे हैं । कैसे कलधौत के
सरोरुह सँवारेकहि जैसे रूप नटके बटासे छवि ढारेहैं ॥
कैसे रूप नटके बटासे छवि ढारे कहि जैसे काम भूपति
के उलटे नगारे हैं । कैसे काम भूपति के उलटे नगारे
कहि जैसे प्राणप्यारी ऊँचे उरज तिहारेहैं ७ ॥

क० ॥ कञ्ज की कली से उपमान हूं भली के सोहे
सुखमा थलीके लखि सौतिमति छरिकी । कोक युगनीके
पीके हीके मोहिवे को करी हेम कुम्भ गाम करतूति
निजकरकी ॥ गिरिधरकहै कुचनीके कामनीके इमि तापे
मुक्तानिमाल छाजै छविवरकी । मानो शम्भु शीशते
भगीरथकेसाथकाजनिकसीअपारयुगधारसुरसरकी ८ ॥

स० ॥ कोऊ कहै कुच कंचन कुम्भ सुधारस से भर
राखेहै ओऊ । श्रीफल शम्भु सुमेरु समान मनोज के
गेंद कहै कवि कोऊ ॥ मो मनमें उपमा अस आवत
भाषतहों पुनि होउ न होऊ । जीति सबै जग आंधि
धरेहै मनोज महीप के दुन्दुभी ढोऊ ९ ॥

स० ॥ कंचुकी माहँ कसे उकसे परै कामिनी ऊंचे उरोज तिहारे । दत्तकहै जनु विश्व विजयकरि मैनधरे उलटेकै नगारे ॥ जोवन जोर कढे हिय फोरकै औरही ते यकठोर निहारे । गंदकै गुंमज कै गिरिकै गज कुम्भ कै गर्व गिरावनहारे १० ॥

स० ॥ कंजसे संपुटहैं पै खरे हियमें गाड़िजात ज्यों कुंतल कोरहैं । मेरुहैं पै हरिहाथ ना आवत चक्रवतीपै बड़ेई कठोरहैं ॥ भावती तेरे उरोजनमें गुनदास लखे सब औरही और हैं । शम्भुहैं पै उपजावे मनोज भुवि तहैं पै पर चित्तके चोरहैं ११ ॥

क० ॥ कैधों विविनीलकंठ बसत सुमेरुपर मधुकर माते कैधों संपुट सरोजहैं । उलटे अछिद्रताल श्रीफल रसाल कैधों यौवनके बाले युगजने एकरोजहैं ॥ पिय चुगानके निशान कैधों तारा कवि तूबा तरुणार्इ सिंधु तरिवेको चोजहैं । कुंजर के कुम्भकै कलश युग कंचन के मदन के मठ कैधों कठिन उरोजहैं १२ ॥

क० ॥ कैधों उर आनंद के मंदिर शिखर बिन्दु कैधों काम कीरति लताके कन्दजानेमें । कैधों चितचाहके चुगल कढ़ि हियमेंते यौवन जवाहिरी के सम्पुट समानेमें ॥ येरी तिय तेरे अति उन्नत उरोज कैधों दुंदुभी युगल धरे भूपतिके थानेमें । कैधों शालढांपे हेम कुंभद्वैगुलाबभरे मदननवावजू के आवदारखानेमें १३ ॥

क० ॥ कहै रघुनाथ कैधों कंचन पटा पै बैठे केशर वरण दोऊ देवता है टोनेके । त्रिय हिय घर चतुराई आयवे को कैधों मैन धरे कलश सगुन शुभ होने के ॥

सुमति नटी के ये बटी के फेरिवे के बटा कैधों कुच छवि
की छटामें योग जोनेके । जोवन जवाहिरके राखिवे कों
लौने कैधों सम्पुट बनाये काम सोनी गोल सोनेके १४ ॥

क० ॥ कैधों मनोहर मनिहार दिति सुत खेलै यौ-
वन कलश कुम्भ शोभन दरसहें । मोहनीके मठ कैधों
इन्दिराके मंदिर की इन्दीवर इन्दुमुखी सौरभ सरस
हैं ॥ आनँद के कन्द कीधों अंग द्वै अनंगही के वादत
ज केशोदास वरस वरस हैं । येरी प्राणप्यारी सुकुमारी
तेरे कुच कीधों रूपअनुरूपजात रूपके कलस हैं १५ ॥

क० ॥ कैधों रतिजंगके सुभट युगराज सोहैं कंचुकी
सुरंगकसे उन्नत अमानेहैं । दृग कमनैतके कटाक्ष शर
छांडिवेको मानो ये बिरंचि रचे रुचिर निशाने हैं ॥
कैधों द्वै कलिन्दी कूल कोक शुभ शोभ कीधों उरजउ-
तंग लखि कान्ह मनमानेहैं । जोवन महीप अंग आ-
गम सुगमजान मदन फरास कैधों तम्बू युगतानेहैं १६ ॥

क० ॥ कैसे कहों कोक वे तो शोकमेंही रहत निशि
ये तो शशिमुखी सदा आनँदसों हेरे हैं । कैसे कहों
करि कुंभ वे तो कारे करकस येतो चारु लीकने सुहार
हीसों घेरे हैं ॥ कैसे कहों कौल वे तो पकरे विथुरिजात
ये तो गोरे गाढ़े आछै ठाढ़े आप नेरे हैं । याहीहै प्रमाण
तोष उपमा न आन प्यारी तरुणाई तरुताके फल
कुच तेरे हैं १७ ॥

क० ॥ कैधों काम महलके कनक कँगूरेपूरे कैधों सर
शोभाके सरोज कलिकावहें । कैधों बाल यौवनकेमोदक
हैं लाल लाल कैधों ताल हाटकके उलटे उपावहें ॥

मदन महीप की सिफर के सुमन कैधों कीधों छवि छो-
हरा के कन्दुकजरावहैं । सुखमा सदन प्यारी उपमान
आवै तोष तेरेकुच कविनके मानस प्रभाव हैं १८ ॥

क० ॥ कैधों विविसुन्दर सुहाये चक्रवाक बैठे कैधों
आप शिवही सरूप द्वै प्रकासे हैं । कैधों चारु श्रीफल
धरेहैं सम भूमि कैधों मदनके खेलिवेके कन्दुक सुखा-
सेहैं ॥ कैधों श्याम भ्रंपनदै कंचन कलश धरे कामिनी
के उरमें उरोज ऐसे भासेहैं । कामकेतुकासे कोकनद
कलिकासे स्वच्छ पुरटबटासे गुमठासे चहुँधासेहैं १९ ॥

क० ॥ कैसे करि कुम्भ जैसे कंचन के कुम्भ कैसे कं-
चनके कुम्भ जैसे गिरिशृंग ओजहैं । कैसे शृंग ओज
जैसे शम्भुराज योग कैसे शम्भु राज योग जैसे काम
मठ खोज हैं ॥ कैसे मठ खोज जैसे श्रीफलके चोज कैसे
श्री फलके चोज जैसे चक्रवाक मोजहैं । कैसे चक्रवाक
मोज जैसे है सरोज कहो कैसेहैं सरोज जैसे प्यारी के
उरोजहैं २० ॥

क० ॥ नैन रखवारे निशिदिन निरखत रहै दिन दिन
दीन हवै न उतरन पायो है । कहै नीलकण्ठ केते देखे
अनदेखे पैन काहू रूपवती निजरूप दे छुड़ायो है ॥
निपटकठिन ठौर फावत न जापै जोर ऊँचो चहुँ ओर
काहू मारग न लायोहै । कौनसी गुनाह प्यारी मेरोमन
मनमथ तेरे कुचगढ़ ग्वालियर पे चढ़ायो है २१ ॥

क० ॥ मदन महीप कुच गुम्बज उठायउर भृकुटी
कमान बंक मारत निशाना है । भनत दिवाकर सुरेश
नर नागलोक धिरता विहाय सब अंग थहराना है ॥

करत विचार लोग अबना वचेंगे जान आंखिनके सान
मानों वीररस साना है । यौवन उरोजवर सुन्दर उतंग
बाम अजव अनोखो बाण काको न समाना है २२ ॥

क० ॥ मौनी विवि गंगा कूल करत तपस्या कैधों
कामके तुकासे लागे उठन उठोनाके । यौवन नरेश
चौगानके निशान कैधों श्रीफलते सरस सलोने फूल
दोना के ॥ आलम कहत कलधौत के कलश कैधों
आनँदके कन्द के मनोज रस होनाके । श्वेत कंचुकी
में कुच ढापे नँद नन्द प्यारी फटिकके सम्पुटमें द्वै स-
रोज सोनाके २३ ॥

क० ॥ मुकुल सरोजके द्वै उलहे हियेमें कैधों उपजे
मनोजहीके चोजये कञ्जुक से । कञ्चन कलश करी
कुम्भहू कहाहै कोक आनन्द भरेसे आछे कविन के
तुकसे ॥ कैधों महामोहनीके मठही बनाये विधि हेरिभो-
चकित चित्त सुर मुनि शुकसे । अबही दुल्हैयाजूके ने-
ककर लावतही कंदुकसे उरमें उरोज आनिउकसे २४ ॥

क० ॥ महा मञ्जु नाभीसर रूपहै सलिल वर रो-
मावली नालपर लसै भांति भली है । उदर रुचिर
भांति सोतो बरणी न जात शिरपर श्यामता मधुप
द्युति रली है ॥ वासना बलित अति ललित परसयेको
पिय मनमोहनकी मनसाहू चली है । जीवन नवीन
देखे दृगहोत लीन नवनागरीके कुच कैधों कञ्चनकी
कली है २५ ॥

क० ॥ मंगल कलश भरे मकरंद बलिभद्र कैधों
सम दुंदुभी सहोदर समर के । कैधों रहे शंकि सूरसुता

के शरण शोचि चकवा के शावक सताये शशि करके ॥
मैनके मवास मन मोहिबेको मोदककी विमल श्रीफल
है कि फल शोभातर के । ओपे बिन कामिनी पयोधर
की आवै ओप ऐपनसों माड़े आड़ेपियधौरहरके २६ ॥

क० ॥ श्यामताई जटा जाल सुरसरी मोती माल
शशि कलाभाल नख ब्यालकेसकाले हैं । मलय वि-
भूति श्याम कंचुकी सो रघुनाथ फटी कफनीके गज
खालगरे घाले हैं ॥ बनक बिलोकि बाँकी बरणे कहांलों
पर एतिक कहत सेवै ताके बड़े ताले हैं । पाले है मनो-
ज इन्हें प्रेम करि आले प्यारी संकर सों तेरे कुचशं-
कर निराले हैं २७ ॥

क० ॥ सोहत सुरंग मुख रंग में दुरंग सोहै जिन
रंग सोहै रंग कोहै नारंगीप के । सुकवि रतन सरबसी
भरे उरबसी तरबसी करै उरबसी के समीप के ॥ चम-
कन चीकने कपूर मणि कैसे ओपे लोपत बिलोकत बि-
वेक ज्ञान दीप के । सरस सरोज सुखी तेरे ये उरोज
मूंगाभीर मसनंदी मानौ मदन महीपके २८ ॥

क० ॥ सम्पुट कमल तापै राजत प्रभात द्युति श्रृंग
है सुमेरु कैधों धरे ओस औनाके । कैधों सुरसरी धर
मौनी सुरसरी तीर राजत विभूति अंग बैठे दोउ कोना
के ॥ आलम सुकवि कैधों भोडरके पीजरा में चकई के
वाल कैधों पियचित टोनाके । ढापेनंद नन्द प्यारी श्वे-
त कंचुकी में कुच फाटिक के सम्पुट में है सरोज
सोना के २९ ॥

क० ॥ सोने के सिधौरा कैधों श्रीफल सरोज कैधों

सोने ही के कलश पियूष रस भरे हैं । कैधों करि कुंभ
कैधों शम्भु युग श्याम कैधों कनक के तर ये उतार
विधि धरे हैं ॥ सोहत सुमेर ये सुभग विवि कञ्चन के
कञ्चन की फूली बेलि कञ्चन के फरे हैं । सूरज वि-
मोहीं ये गुरुज से उरज देखि मोहिं कौन गनै मुनिहू
के मन हरे हैं ३० ॥

स० ॥ सोई हुती पलंगा पर बाल खुले अचरानहिं
जानत कौऊ । ऊंचे उरोजन कञ्चुकी ऊपर लालन के
चरचे दृग दोऊ ॥ सो छवि प्रीतम देखि छके कवि तो-
ष कहै उपमा यह होऊ । मानों मढ़े सुलतानी बनात में
शाह मनोज के गुम्मज दोऊ ३१ ॥

स० ॥ सोने के चूरन में चमकै किरचै सी उठै छवि
पुंज भवाके । हाथन लेत विरीलटकै मखतूल के फूल-
न जोर जवाके ॥ गंग बड़े बड़े मोतिन के संग सोहत
थोरे थोरे कुच वाके । अण्डनि के मनो मण्डल मध्य
ते द्वै निकसे चकुला चकवाके ३२ ॥

क० ॥ श्रीफल शरीफा किधों दाड़िम नरंगी रूप
कैधों स्वर्ण सम्पुट विशाल छवि वारी के । कैधों यह
गिन्दुक गुलाब अनफूले कञ्ज गुञ्जत मलिन्द मनो
आशरस भारीके ॥ भनै रघुनाथ हेम कलशरती कृतके
पतिनट नागरके बाट खिलवारी के । रसप्रति वास के
निवास द्युति शोभा धाम आसन हैं काम के उरोज
प्राण प्यारी के ३३ ॥

स० ॥ श्रीफल कञ्ज कलीसे विराजत के विविमो-
नी बसे ढिग गंग के । कै गिरि हेम के सम्पुट सोने के

राजत शम्भु मनो रस रंग के ॥ कै युग कोक कै शोक
विमोचन कैधों शिली मुख मैन निषंगके । कैधों रसाल
केताल फले कुच दोऊ महा लजगीर अनंगके ३४ ॥

क० ॥ श्री फल सरोज कैधों कोमल करारे कुच क-
लिका कुसुम कैधों भरेरस मैनके । आनंदके कन्द कैधों
योवन के भैया बंधु नारंगी सुरंग कैधों शम्भुसुख
दैनके ॥ कंचनके ढार कैधों सोने के पहार परे चकवा की
ताक कैधों छत्र पति मैनके । गाढे गढिलंक कैधों शोभित
हियाके बीच दौलतयती के कैधों मौनी दिन रैनके ३५ ॥

क० ॥ रूप की नदी ते निकसत मन्द मन्द कैधों
योवन गयन्द रूप शोभन सरसहैं । दुंदुभी दिनेश करि
कञ्चनके कारीगर उलटि धरे हैं दोऊ देखत दरसहैं ॥
सुमन के गुच्छन के स्वच्छ दुति दोना कैधोंकाम काञ्ची
धरे प्राणप्यारी के परस हैं । उन्नत उरोज कैधों मुद्रित
सरोज युग शिखर सुमेरु के कै सोनेके कलसहैं ३६ ॥

स० ॥ रूप अनूप बनी सखी आजु सुता बृषभान
की पानसी भूपर । पूरन भाग महा मणि कण्ठ सोवारी
कहा इन मोहनी जूपर ॥ शीभि रंग्यो अँचरा कुसुंभी इ-
मि डोलत बयार लगे कुच दूपर । लाल ध्वजा मकर
ध्वजकी फहराति मनो गज कुम्भन ऊपर ३७ ॥

क० ॥ गौनको नवेली तू भवनते नबाहरहो कुचतेरे
कंचन मनोजद्युति हरिहैं । फूल ऐसीमाल औ दुकूल
ऐसी चपलासी ललितन देखे चिलकनसी नजरि हैं ॥
कहैद्विजनंद प्यारी पूतरी छपायचलो अबतो ये नयन
तेरेरी पधानकरिहैं । ऐसीकसवाती तूतो नेकन डिराती

काहू छाती न दिखाउ कोऊ छाती फारि मरि हैं ३८ ॥

क० ॥ बालपन दूरिकरि बालतन मध्य आइ योव-
न प्रबल गुण आपते प्रकासे हैं । चिंतामणि ठौर ठौर
आपनी दुहाई फेरि अंगी प्रतिपक्षक ते सिंगरे उड़ासे
हैं ॥ नूतन वहिक्रम से नूतन प्रगट भये उरमें उरोज
ऐसे सुखमा सों भासे हैं । निधिसे निरखि चिह्न अनु-
पम लक्षभरे मानो विवि कंचन के कलशानिकासेहैं ३६ ॥

स० ॥ वे धरें अंग भुजंग के भूषण येहू भुजंगरहें हिम
धारे । वे धरें चन्द्र सर्कारिके भालमें येऊ नखक्षत चंद्र
सर्वारे ॥ शम्भु की औ कुच की समता कवि कोविद भेद
इतोई विचारे । शम्भु सकोप है जाख्यो मनोज उरोज
मनोज जगावन हारे ४० ॥

क० ॥ उठेहैं उठान करि उरज उचौ हैं दोऊ सुधरे
गोलारे गेंद वारेगात गोरेमें । कैथीं हेम गुम्बज बनेहैं
भांति याछिनके आछेफल श्रीफल कमल मुख मोरेमें ।
उपजो अचंभो येपरी है पहिंचान धोखे चकित विरा-
हिम कहत सब ओरेमें ॥ मेरेभुज भेंटिवे को भाग कहां
देखियत जाके महादेव जू विराजमान कोरेमें ४३ ॥

स० ॥ उरमें उलहे मुलहे द्वै उरोज सरोजकरें गुण
दासवके । नृप शम्भुजू कुम्भीके कुम्भ कहा समकीजे वैधे
रहैं पासव के ॥ फल श्रीफलके कहे आवति लाज कहा
गिरिशृंग हैं वासव के । सु मनो छवि अंग अनंग धरे
उलटाय पियाले द्वै आसवके ४२ ॥

क० ॥ पारद के गुटिका सर्वारे काम सिद्धजने धातु
वेधिवे की कहा गात वेधि जातहै । नेकहू छुयेते अंग

अंग रंग औरै होत दोऊ गुणपूरण सुरूप सरसातहै ॥
भरमी सुकवि कोऊ धनितू रसाइनी है जाके उरविद्या
फल ऐन दरशात है । तेरे कुचदेखे रुचि मोहनके बा-
ढतिहै भेरेजानि आली तेरोरूप उफनातहै ४३ ॥

स० ॥ जगजीवनको फल जानि पख्यो धनि नैननि
को ठहरैयत है । पदमाकर ह्यौ हुलसै पुलकै तन सिं-
धु सुधाके अन्हैयतहै ॥ मन पैरतसो रसके नदमें अति
आनंदमें मिलि जैयत है । अब ऊंचे उरोज लखे तिय
के सुरराजके राजसो पैयत है ४४ ॥

स० ॥ ठाढ़ेरहैं दृग आसनकै कुटी कंचुकी के पटखो-
लतना । माल सुगंध प्रवाह बहै तिहिमें उठि नेकु क-
लोलतना ॥ कारेभये करि कृष्णको ध्यान डुलायेते
काहूके डोलतना । ये तपसी द्वै गरूर भरे दुनिया ते
दयानिधि बोलतना ४५ ॥

क० ॥ इन्दिराके मंदिर अमंद द्युति कंदुक से बंधु
रविमोद भरे युग धौं बिरदके । तारापति ललित लता
के स्वच्छ गुच्छ कैधौं श्रीफल सुफल भये आनि अन-
हदके ॥ कैधौं चक्रवाक आन बैठे ऊंची भूमिपर तुम्ब
के परनतीर वासी नाभि नदके । सुभग सरोजसे उरोज
तेरे ओझ भरे कैधौं मीर फरश मनोज मसनदके ४६ ॥

क० ॥ हारे करी कुम्भ तो लपेटेझार बन बसे हरक-
हा शम्भु जो न मूरति धराधरी । कमल सकंटक बि-
लोकै शशिक्षीण छवि कहा कोक कोकी निशि बिरह
जराजरी ॥ श्रीफल सुमेरु कुम्भ सम्पुट सुमन गुच्छ
दुन्दुभी दुरित छवि निरखि दरादरी । भूमि गहि मारै

उरधारैमहँ शंककरैगेंद दईमारे उरजनकीवरावरी ४७॥

स० ॥ हूजे न आतुर हू अवहीं वहजानै कहा रति
की परपाटी । खेलतसाथ सहेलिनके फिरै आँगन मो
नहिँ अवघट घाटी ॥ बूझिपरै कविराज अब्रूअव मैन
महीपकी लागी है सांटी । योवन जामत यों उकसै छ-
तियां क्षिति ज्यों गुण आंकुर माटी ४८ ॥

स० ॥ योवन ज्योति जगामग होति श्रृंगार प्रभासर
सावतहै । रीभि रहैं लखि लालके लोचन मोद हिये
भर आवत है ॥ सोहत टीको जराय जख्यो तियभाल
महाछवि छाजत है । मानहुं चन्दके मण्डल में दिन
नायक शोभा बढ़ावतहै ४९ ॥

क० ॥ योवन नृपति जाके परसपुनीत भये दरस ते
जाके सरसत चित चेत है । कालिदास आस पास
अमल अनूप सोहै पानिप को पुरो महाछवि को निकेत
है ॥ दिन दिन दूनी भई ओपकीउमंग हेरिजाकी रच-
नाकी रचिबेको हरिहेत है । तनकसी गुटिकासे कनक
कलश भये आली तेरो उर कैधों सांचो कुरखेतहै ५० ॥

क० लाल लाल रेशमकी डोरसों बनाय जाल बांध्यो
तकसीर बन्द जानिकै सरासरी । फटिकके भूमि मांह
दै दै माख्यो बार बार ज्यों ज्यों वा उझारे त्यों त्यों शीश
पै परापरी ॥ तऊ ऐसो निलज विचारै नहीं हार जीत
कुचनकी समता में नजर खराखरी । नैननिसों हेरिहेरि
कहतहैं बेर बेर गेंददई मारे फेरि करी है वरावरी ५१ ॥

स० ॥ लाड़िली के कुच देखतही शिरनाय सरोज
लखाय विसूरत । दाड़िमको हियरो फटिजात जबे कहूं

कंचुकी ओरको घूरत ॥ शम्भु सतावत है जगको है
कठोर महा सबका मदतूरत । कूहकै के करमारै मही
लखि कुम्भन वारन छारन पूरत ५२ ॥

क० ॥ आली ऐंडदार बैठी ज्वानीके तखतपर नैन
फौजदार खरे लखैं चहुँ ओरा है । द्वादशहू भूषण के
द्वादश वजीर खरे सोरह शृंगार भूप लखैं दृग कोराहै ॥
रूपको गुमान शीश मुकुट है छत्र चौर जेवरकी नौव-
ति बजति सांभ भोरा है । कहैं कवि केशोदास आली
वरणी नजातियोब नकोजोरामानौवादशाहीतोराहै ५३ ॥

क० ॥ कुंदनसे भलकै खलक बशकरैं मानौ पलकै
बुलाइ लेत सहित दगासेहैं । नवल नवीन मन छीनि
लेत मनसिज पीन जु बटोरेते पियारे खूब खासेहैं । धी-
र धरधासे मैन कासेते उमंग भरे काम रंग रासे शुचि
जोहत प्रभासेहैं । कामता प्रसाद उरप्यारी के उरोजसो
हैं कोक कोकनद गुमटासे घनघासेहैं ५४ ॥

क० ॥ गोरे गात गेंदसे गसेहैं गदकारे गोल गजब
गुजारत वै गोरीके उरोजद्वै । सफरी सुमेरु शृंग श्रीफर
सरीफा कैधों संपुट सरोजरोज दूनी द्युति रहीकैं । भ-
नत दयालकी गुरीद गोलगालिबहै कनक कलसि नी-
ल मणिते जटेहैकैं । काम चक्रवैके कसे कंचुकी नगारे
कीधों कुंदरेके सिंधौराके सुधर नटबट्टाद्वै ५५ ॥

क० ॥ कंचनके घट नट बटहु युगुल मठ कमठ क-
ठोर अरु सुभट मनोजके । शुक प्रिय श्रीफल लंगूरको
क संपुट त्यों उलटे नगारे ज्यों मंजीर केत चोटके ॥ त-
म्बु कम्बु शम्बु कर कुम्भ रूप छत्रपती कवि हनुमान

कहै शिखर सरोजके । बीजभरे मौजभरे रोज सुखदायी
श्याम घेतो उपमा अधीन सुन्दरि उरोजके ५६ ॥

क० ॥ संपुट सरोज कैधौं शोभाके सरोवरमें लसत
शिंजारके निशान अधिकारीके । कविपजनेस लोलचि-
त्त वित्त चोरिबे को चोर इक ठौर नारिग्रीव वर कारीके॥
मंदिर मनोज के ललित कुम्भ कञ्चन के ललित फलि-
त कैधौं श्रीफल विहारीके । उरज उठौना चक्रवाक न
के झौना कैधौं मदन खिलौना इस लोना प्राण प्यारी
के ५७ ॥ इति कुच वर्णन सम्पूर्णम् ॥

कुचअग्रलालिमा व श्यामतावर्णन ॥

दोहा ॥

पीन कुचन मुख अरुणई इमिशोभित उरवाल ।

मनो कनक संपुट अमी भरि ढकना दिये लाल १

ये तेरे कुच मदन रस मोदक धरे अदोस ।

मूंदे मरकत हेमके सजि सुन्दरि सरपोस २

युगुल कुचनके मुख विषे रही श्यामता द्वाय ।

मनों कमलके फूल विच मधुकर रहे लुभाय ३

गोरे कुचपै श्यामता दृगन लगति इहि रूप ।

कंचन घट पै जनु धरे मरकत कलश अनूप ४

कुच युग कंज खिले नये आनन इन्दु उजास

तदपि अलि कलीन पर बैठे लेत सुवास ५

स० ॥ योवन छत्रपती के मनो सर कंचन छत्रसों आ-

नि छये हैं । कामके त्रास मनो शिव के शिर कामिनी सुन्दर बुन्द दये हैं ॥ श्रीफल में मनो कोऊ बिहंगम कौलन के दल तोरि गये हैं । लाली अली कुच अग्रन की लखि नूर सु लालन चूर भये हैं १ ॥

क० ॥ शरद के धनमें ज्यों अरुण उदोत द्युति स-
तो गुण माँझ रूप राजसको छलकै । फटिक पहारन
में सन्ध्यासी भलक रही सुरसरी माहिं शोभा शारद
के जल कै ॥ भीनी श्वेत कंचुकी में अरुण उरोज आ-
भा जाहि देखि पूखी मन लालनको ललकै । कैधों
हांस अंतर अनूप अनुराग राजै कैधों श्वेतसारीमें कु-
संभ रंग भलकै २ ॥

क० ॥ कैधों उदयाचल उदोतराका योवनको अस्ता
अस्त कैधों शिशुताई भानुगतिहै । अंतरकोराग कीधों
बाहिर प्रगटभयो कैधों मुख रागकी भलक भलकति
है ॥ कैधों बंद बंदनकी बंदन गयंद कुंभ कैधों उभय
भालराजै शिवकी शक्तिहै । कैधों बलिभद्रजामी मूरि
द्वै सजीवनकी ऐसीकुच अग्रताकी लालिमा लसतिहै ३ ॥

क० ॥ शंकर के मुखमें हलाहलकी डरी मानौ करि
कुम्भ मधु हेतु भौर लपटानो है । सोनेके बटामें श्याम
मणिसी जरी है मानौ योवन बुरुजमें शिंगार कैसो था-
नोहै ॥ नील कौल पांखुरीको रंचक सुभग भाग मुख
चकवान के सनेह करि भानोहै । तेरेकुच अग्र ऐसी
श्यामता लसत नीकी शिखर सुमेरु पिय मन को
निशानो है ४ ॥

क० ॥ अवलम्ब अलिन नलिनहीके कोरि काकी

अमी कुंभ ऊपर अनंग आपदीन्हीं है । कैधों सिति कण्ठ २ राजति गरल द्युति कनक गिरिन मणि मंजरी नवीनी है ॥ शिशुताकी तनुता तनक तनधरितन तामसकी रीति ते तरुणि तेज कीनी है । श्यामाके अनूप कुच अग्रनकी श्यामताई कैधों बलिभद्र रसराज छवि छीनी है ५ ॥

क० ॥ कैधों गिरिराजके सुहाये विवि शृंग कैधों सुधाके कलश भरे कञ्चनके रंगके । कैधों शम्भु राज फूले श्रीफल ललित कैधों एँठेमद गलित सिपाही रति जंगके ॥ कैधों प्यारी कुचन पै श्यामता लसत कैधों मरकत मणिके कलश उंचे शृंगके । कैधों कञ्ज मञ्जु पै मधुप आइअरे कैधों शरअर गड़े भट लटू ह्वै अनंगके ६ ॥

क० ॥ कैधों तेरेकुचन पै श्यामता सुहाई प्यारी कैधों सिद्धजुरा बांध्यो वारन समेटिकै । कैधों शम्भु श्रीफल में विषके कनूका धरे कैधों कञ्ज ऊपर मधुप रहे भेटिकै ॥ कञ्चन कलश कैधों सारसरपोस मूँदे चाहू तैं सरस लसै उपमा न भेटिकै । कैधों रोमराजी तार दृढ़कै चढायो मञ्जु स्वरन मिलायो चारु खूँटिन लपेटिकै ७ ॥

क० ॥ सुंदर सजीले पर लम्ब सहजीले राधे परम लजीले शुभ काजन कजीले हैं । बेलिन बसीले अलि बेलिन हँसीले आदि रस में रसीले रूप यशमें यशीले हैं । नेह रस सीले नेह पर सीले अनु नयन वहकीले चटकीले मटकीले हैं । तेरे कुच नीले छूटि छवि से

छर्बाले मानो पन्नग रँगीले मै न मंजु बतकीले हैं ८ ॥

क० ॥ कैधों पिये कालकूट बैठे शम्भु जटाजूट निशि
के नलिन पै अलिन बास लीन्हों है । चामीकर कुं-
भन पै मर्कत कठोरधरे रति रणवीर युगटोप शिर दीन्हों
है ॥ प्यारी कुच श्यामताकी डीठिगड़ी श्यामताकी कहै
हनूमान इन काहू को न चीन्हों है । तपिन के तप जीते
जपिन के जप जीते ताते चतुरानन बदन कारो कीन्हों
है ॥ इतिकुच अग्रलालिमा और श्यामता वर्णन संपूर्णम् ॥

अथ कुच कंचुकी सहित वर्णन ॥

दोहा ॥

जालदार आंगी विषे यों कुच दीपति होति ॥
भंभरीके तुम्बन लसै ज्यों मसालकी जोति १
सोन जुहीसी जगमगति अँग श्योवन जोति ॥
सुरँग कुसुंभी कंचुकी दुरँग देह द्युतिहोति २
विधु बदनी तुव कुचनकी पायकनकसी जोति ॥
रँगी सुरंगी कंचुकी नारंगी रँग होति ३
भई जु खवितन वसन मिलि वरणि सकत सुनबैन ॥
अँग ओप आंगी दुरी आंगी आँग दुरैन ४
हरि ताँगी बूटा सुरँग ओप उरोज अपार ॥
मनु प्रफुलित हरिहित वने उखन कुंज सुठार ५
सबुज कंचुकी में लसतयो त्रिय कुचकी छांह ॥
मानो केसरि रँग भरयो मर्कत शीशी मांह ६

हरित चिकनकी कंचुकी पाय कुचन पै थान ॥

हरत हराई ते हियो वूटन लूटत प्रान ७

कुच उतंग आंगी सबुज जाबिच वूटी लाल ॥

जटित लालमणि ते मनो मरकत कुंभ रसाल ८

सबुज कंचुकी के विषे इमिकुच छविछहराति ॥

मानहुँ पुरइनिपातछिपि चक्रवाक दरशात ९

लसति मढीसी कंचुकी हिय मुक्तावलिसेत ॥

गंगातट कुच सुनि तपै हरि मिलिवे के हेत १०

कुच उतंग सित कंचुकी कसी लसी इमिओप ॥

मनो मदन महिपाल के तम्बू तने सचोप ११

श्वेत कंचुकी अतिलसी कसी कुचनपर आनि ॥

भरे धरे घट कनक के मनमथ तम्बू तानि १२

दुरत न कुच बिच कंचुकी चुपरी सारी सेत ॥

कवि अंकन के अरथ लौ प्रगट देखाईदेत १३

क० ॥ कैधों शिशुताईके पयान सामियाने ताने सुंदर

सुधार पट कुटिका है लाज की । कोकशाला रूप की कि

कामहीकी सुख शाला बलिभद्र कोमल कुलहवाज काम-

की ॥ मोहनीके डारीहै अंध्यारी मनमथ मानों ऐसिही वि-

राजै कैधों योवन गजराजकी । गोरेगोरे गोल कुचतेरे

नलि कंचुकी में पहिरे सिलह रति रणके समाजकी १ ॥

क० ॥ कैधों गिरि शृंगनि में तासके वितान तने

जरीवान पोसमूदि राखे खरबूजासे । कैधों विविश्रीफल

कनक कटोरा ढांपे कंचन मठनके करत शम्भु पूजासे ॥

पद्मके पात कैधों पीरेभे परागलगि ताके तर दविरहे

चक्रवाक चूजाके । कुचनपै कंचुकी करेरीकरि कसी

कैधों कनक के कागद न काम कंद कूजा से २ ॥

क० ॥ कोऊकहै लाजन ते कंचुकीमें कुचमूंदे कोऊ
कहै बांधिराखे बटाहै मलयके । कोऊकहै कुंभिनकेकुंभ
पै अंध्यारी डारी शम्भुराज भारीजे अवधिहै बलयके ॥
कंचनके सम्पुटन मंदेहरकहैं कोऊ पहिरे सिलाहके ये
भट है दलयके । जैसे शिवतीजोभाल नैनमूंदि राख्यो
मेरे जान कानमूंदे बिबिलोचन प्रलय के ३ ॥

क० ॥ आई जलकेलिकै नवेली रतिरंग भरी अंग
अंग भूषण अनंग रंग रसतें । कहत किशोर मुखधोय
पोंछि आंचर सां ठाढीभई तीरपै छबीली उरजलतें ॥
भुज उलटाय कै कंधापर है आंगीबन्द गहि रहिगई
देखि लाल लाजबसतें । सनमुख सबलबिलोकि रणधीर
मानों खैंचत सुभट बीर तीर तरकसतें ४ ॥

स० ॥ असराफ असीलखुमानीखरे जिनको परदेकी
सदा सरमें । उबटे चुवरे रंग केसरिके जिनकीसमता न
चमी करमें ॥ उरपै अति खासी खुली अंगिया कवि
साहब रामलगे भरमें । मिरजादे मनो खूब सूरत से
शिर टोपी दै बैठिरहे घरमें ५ ॥

क० ॥ घनकी घटासी पट बिज्जुल लतासी आव
छबिके छटासी उचटत अंग अंगतें । अमीकीसी भीन
तमीपतिके बरणबेल विवरणहोत सुवरणतन अंगतें ॥
प्रातके पहर अलसानी ठाढी मंजनको जागी सब रैनि
सुखपागी पिय संगतें । कंचुकी के बन्द त्रिय खोलतिहै
आपकर मानों पंचशर शर खैंचत निषंगतें ६ ॥

स० ॥ लोचन नीरज देखि नये छबि दन्तन दामिनि

को दफनी । बेणीवनीसो मनोमणिकाज पखोशशिपै फण
फाट फनी ॥ पीनपयोधर ऊपरकै दरकी अँगिया उपमा
उफनी । राजसो लूटिकै मैन नरेश महेशको मानो दई
कपनी ७ ॥

स० ॥ रजनीमधि प्यारीने गौनकियो निरखी अँखि-
यां पिय रंगभरी । कवि आलम रंभनको ललकयो रति
लालचकै हियलायहरी ॥ खरी खीन हरेरँगकी अँगिया
दरकी प्रगटी कुच कोर सिरी । अरुभे युगजार सिवा-
रन में चकवान की चोचैं मनो निकरी ८ ॥

स० ॥ सजनी मिलि द्वै अवलोकिकहैं अतिही हरि
राधिकाके बसरी । कहिकैसे धौं कुंज विराजत हैं कवि
आलम औरकहा रसरी ॥ उरभीनी सी आंगी फुले-
लभरी कसकी सब ठौर कसे कसरी । छवि प्रात सुमेरके
देश मनो जितही तित औस पखो पसरी ९ ॥

स० ॥ जीतिबे को रतिकेलि हरौलसे आये मनोज
महीपतिके ह्वै । देखत बाढ़े कठोर महा जिन्हें कातर-
ताई कहूं न गई छ्वै ॥ बीचहरीमणिकी किरणें न हथ्या-
रन की सनि ज्योति रही च्वै । जाली कि आंगी कसी
यों उरोजनि मानों सिपाही सिलाह किये द्वै १० ॥

स० ॥ मधुराका कि राति सखी जुरि राधिके उज्ज-
ल भूषित नूपुर लौ । अवली सवरी चकफेरी फिरै न
फरै डिग पाइत सूपुरलौ ॥ अँगिया भुनकारी खरी
सितजारीकी सेद कनी कुच टूपरलौ । मनो सिन्धु मथे
सुध फेन बढ्यो सो चढ्यो गिरि शृंगानि ऊपरलौ ११ ॥

क० ॥ मानो काम लतासी सवाँरी कामिनीहै नूरनू-

तन अनूप ताके पात सरसतहै । कैधौं शिव शीशपर
अंकुर सरोरुहके सदा दिन रैन चैन काम बरसत है ॥
निपट कठोर मानगढ़के समान कुच तिनके कँगूरनकी
छवि परसत है । कंचुकी के ऊपर बिराजत है बंदकीधौं
मदन महीपके निशान दरसत है १२ ॥

क० ॥ प्यारी सुकुमारी ताके उरज बढ़त आवैं सुख
सरसावैं सुकुमार जल जत्ताके । कंचुकी कसत तैसी
सुखमा लसत ताते कहै कवि तोष घनश्याम मनरत्ता
के ॥ नीके हैं बरोरु बड़े वाह कस जोरु तन अतिही
कठोरहैं बधैया काम कत्ताके । शिशुतागनीमके निकासि
बेकेकाजआयेटोपीदार एलची सु योवन चकत्ताके १३ ॥

क० ॥ पियमन कामना को शंकर बिराजमान देखि
ये कठोर ताके श्री फल सिवारे हैं । चित हित खेलिवे
को गोला चौगानकेहैं चंचरीक चोपिवेको पंकज विचारे
हैं ॥ कहै शिवदीन मोहिबेको मन बचक्रम कंचुकी के
संपुट रतन उरधारे हैं । धारे हैं सु व्रत गर्व सौतिन वि-
दार रहैं ऐसे छवि धाम बाम उरज तिहारे हैं १४ ॥

स० ॥ प्रात समय वृषभान सुता चलि आवतही
यमुना जल न्हायें । नीरसों चीर लग्यो सबदेह में दूनी
दिपै छवि आप बढ़ायें । दरियाइ कि कंचुकी में कुचकी
छवियों छलकै कवि देत बतायें । बाजके त्रास मनो च
कवा जल जात के पात में गात छिपायें १५ ॥ इति कु
कंचुकी सहित वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ हार वर्णन ॥

स० ॥ आज गुपाल लखी वह बाल प्रभाकी मसाल सी काम गढ़ी है । अञ्चल खोलै न कञ्चुकी अंग सों शम्भु कहै द्युतिदूनी चढ़ी है ॥ मोतीके हार लसैं कुच बीच रोमावलीतें मिलि ज्योति बढी है । मानो सुमेरुहि भंगकै गंगलै भानुतनूजा को संग कढ़ी है १ ॥

स० ॥ दाने मनोहर सान धरे बहु दीपति ताकी कहा कहै वारिकी । शम्भु जू मञ्जु गुहे गुणसों उर डारत औरै बढी द्युति नारिकी ॥ लालके हार लसैं उर यों कै रोमावली बेलि लखीहै उजारि की । मानो सुमेरुके शृंगन तें उतरी दरी आवति पांति द्वारि की २ ॥

क० ॥ भूमि भूमि आये घूमि घने घनश्याम आली कूकै काक पाली काम पाली वरसातके । मन स्फटिक चन्द्रक्रांत सुच हीरा हेर मोती मीन वंसज वराड बड़ दामा के ॥ भनै रघुनाथ वही साजत रसीली ग्रीव कैधों यह शोभा सिंधु सीव तन कामा के । कैधों गंगधार गरे हेम गिरि आई यह राजत है कैधों चन्द्र हार उर श्यामाके ३ ॥ इति हार वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ भुज वर्णन ॥

दोहा ॥

चलत हलत तुव बांह नित देत रसिक जियदान ॥

यातें सब जग कहत है सुधा लहरि परमान १
 सुधा लहरि तुव बाँह के कैसे होति समान ॥
 वा चखि पैयत प्राण को या लखि पैयत प्राण २
 कित दिखाय कामिनि दई तैं दामिनि को बाँह ॥
 तरफराति सी तन फिरति फर फराति घन माँह ३
 सुव्ररण बाजूबन्द युत बाहुँ लसत इहिं भाय ॥
 मनु दामिनि पै चाय कै नखत वसे हैं आय ४

क० ॥ कञ्चन लता सी चपला सी नाह नेह फांसी
 मदन विलासी काम केलि बेलि बाढी है । परसत को-
 मल अमल मखमल हू ते दरशत लागत दिनेश द्युति
 गाढी है ॥ हीरा मणि लाल की अँगूठी अँगुरिन राजै
 मोहन के साथ महा मोहनी सी ठाढी है । भुजन नि-
 हारि अनुमान लै मृडालन की सुभग सर्कारि कै मनोज
 जनु काढी है १ ॥

क० ॥ कैधौं हैं ये कमल की ललित मृडाल नाल
 पिय मन फांसिबे को कीधौं यह पास है । सौतिन सौं
 सुहाग दण्ड लीबे काज मेरे जान ताकी बाहु दण
 विधि कीन्हीं शोभा रास है ॥ कैधौं रूप लता भार रस
 के लरकि आई नूरजामें खञ्जन नयन को सुपास है
 नागर नवल लाल जब तैं निहारी नेक तब तेन प्रा
 की परति कछू आस है २ ॥

स० ॥ कैधौं सुधा के सरोवर के ढिग सोहै मृडा
 उभय अति भाये । कैधौं मयंक पियूष के पानको पन्न
 पति द्वै ऊरध धाये ॥ भाषै मुनी रघुराज किधौं युग हे

के दण्ड अखण्ड सोहाये । कैधों लसे सुखमाकी लता
किधों रुक्मिणीके भुज द्वै छवि छाये ३ ॥

क० ॥ तन तरुवर की उभय शाखा बलिभद्र सुंदर
सुडौल अति गोल समतूल हैं । सांचे भरि ढारे विधि
दामिनी के दोऊ टूक दमकति द्युति नाही दुरत दुकूल
हैं ॥ सुखके सरोवरके पोषे हैं मृणाल मानों फूलेकर अग्र
कोकनद कैसे फूलहैं । काम कुंदहेरे भाय कुंदन कनक
दण्ड कैधों भोरी भामिनीके गोरे भुज मूल हैं ४ ॥

क० ॥ प्रीतमको मन तेरेहाथन लग्योई रहे अंक
उरभौनी रसबेलि सरसत है । कोकनद नाल दोऊ रूप
के सरोवरमें देखि २ सौतिनके मनतरसत है ॥ भरमी सु-
कवि जांचि विधिने बनाईतोकों व्याकुलसचेत होत नेक
परसतहै । बाहँकी भुलनिमांभ डोलैमन मुनिनके जग
वशकर तेरेभुज दरसत है ५ ॥

स० ॥ भोरहि भोरहि श्रीवृषभानके आय अकेलहि
केलि भुलानो । देव जू सोवतही उत भावती भौनो
महा भलिकै पट तानो ॥ आरसलै उधरी इकवांह सो
वा छवि देखि हरी अकुलानो । मीड़तहाथ फिरैउमह्यो
सो मह्यो उहि बीच फिरै मड़रानो ६ ॥

क० ॥ भूप मुखचन्द ताके सोहैं गल तकि यामें
उदर अमल द्वार उलटे कलसहैं । कैधों रूपमणिरासि
राखी करि दोऊअोर योवन सरितके करारेके सरसहैं ॥
कैधों पिय मनके मनोरथ की बैठकहै ऊंचे २ आसन
बनाये करि यशहैं । तेरेभुज मूल तूल तरुणी न कोऊ
भूल तातें लाल लालची रहत प्यारी वशहैं ७ ॥

क० ॥ हरनेन आगि जरे मैनको जिआवैं येतो वेतो
विरहीको देखे मरनके दानीहैं । अतिही अमल अंश
सूल इनकोहै वेतो पंकमें भयेहैं यह सबजग जानीहैं ॥
वाम बाहु बदन सुधाधर मरीची सींची कनक सरूप
कामलता मैन मानीहैं । कैसे करि सरिपावै उनकी मृ-
णालवेलि बिषजल पोखी बिषलता जो बखानीहैं ८ ॥

क० ॥ हलत चलत कैधों छीरनिधि की लहरि भाई
सो भुज नन्दलालन लोभायगो । गोरेसे अमल ये कमल
कीसी कोमलाई हेरिहेरि सौतिनको मुख कुम्हिलायगो ॥
ऐरापति करकीसी तरासरी शोभियत चोभियत चित्त
माहँ ऐसी छवि छायगो । कण्ठके बसैया कैधों आनंद
दिवैया शिवनाथ बरसैया रस लोचन अघायगो ९ ॥

क० ॥ गोरी २ गोल २ भामिनी की बाहुनेही रूप
रस सानी दोऊ विधिना बनाई है । चलत हलत कोटि
कोटि प्राणदान देत सुधाकी लहरि पटतर ताते पाई है ॥
कान्ह काम मूरतिके कंधे परहोत जब तब कहै पुहुप क
मान सी चढ़ाई है । ताकी उपमाहै कीन्हीं कविन जो
मेरेजान याहीते मृणाल नाल लाजन नवाई है १० ॥

स० ॥ गिरिराज उरोजन की सरहद विराजत कंच-
नकी भुवभासी । हार हमेल तरंगन संग सुमेल सुधा
रसकी सरितासी ॥ गोरी सुभायही भाय उतारी स्वरूप
महा ठगकी जुगफासी । काम महीप धुजाकी भुजा तुव
कोमल बाल मृणाल लतासी ११ ॥

स० ॥ दूरिते दीपति देखतही प्रतिपच्छ बधून के
होत रुजा हैं । बार पयोधि घटानके बीचजुरी विजुरी

कीमनो तनुजा हैं ॥ याछवि सों सरसात मनोहर राधि
काकी अँगिराति भुजा हैं । कान्हके कन्ध अलंकित
अंकित मैनकी मानों विजैकी धुजा हैं १२ ॥

स० ॥ जोशन बाजू विजायठ भूषित दामिनिसी दम
कैअति गोरे । भट्ट दिवाकर बांह डुलाय दिखाय के
लाल लियोचित चोरे ॥ अमृतकी लड़रीसी लगे जब
लेत छिपाय करेजन तोरे । नाकमें पेखेनये सीसुरी रति
रम्भा परी को दिमाक विलोरे १३ ॥

क० ॥ राधिकाके भुजनकी भूरि दुति लखोलाल सब
ते विशाल जाकीजीति यों रही है कै । केसरि कनक सो
न जुही चम्पा कौन काज शम्भु राज जाको रंग देखत
चलत च्यै ॥ कोऊ कहै शाखा हरि चंदन की चंदनकी
मंदन की मति याकी उपमा सकत है । मेरे जान रस
की तरंगिनी के तरिवे कों कञ्चन की तरिनी में बांधी
किलवारै है १४ ॥

क० ॥ केशव दास गोरे गोरे गोल काम मूल हर
भामिनी के भुज मूल भाँडसे उतारेहैं । शोभा सुख वर-
सत माखन से परसत दरशत कञ्चन से कठिन सु-
धारे हैं ॥ बलय बलित बाहु देखि रीभे हरि नाह मानों
मन पासिवे को पासी यों विचारे हैं । मलिन मृणाल
मुख पंक में दुराये दुख देखौ जाय छातिन में छेदकरि
डारे हैं १५ ॥ इति भुज वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ करतल बर्णन ॥

दोहा ॥

कर पल्लव पखुरी अरुण सुरंग हथेरी बाल ॥
 रूप सरोवर में खिले भुज अम्बुज सह नाल १
 पेखि पाणि पाणिप सुरंग पल्लव नीले होत ॥
 फूलकञ्जकुँभिलातलखि लजि तजिमानउदोत २
 दीप हथेरिन की दिपति यों मेहँदी के संग ॥
 लाली सावन सांभ में ज्यों सूरज को रंग ३
 बड़े कहावत आपु तो गरुवे गोपीनाथ ॥
 तौ बदिहौं जो राखिहौं हाथन लखि मनहाथ ४

क० ॥ कमल की शोभासी समाइ रही प्यारी सुनि
 लाली नव दलन की आनि सरसाई है । रेखा गन
 गनित की गनिहाथ करी छवि अंग अंग नित्त शोभा
 भावती को भाई है ॥ करिकै परेखो कहा बैठति है पीठ
 दै दै साहिबी सोहाग की लिखाइ नूर लाई है । सौतिन
 के आगे यों श्रृंगार जनि करै प्यारी जगत की शोभा
 सब तेरे हाथ आई है १ ॥

क० ॥ कञ्चन के पल्लव में छोटी बड़ी लीक मानों
 लिख्यो है उचाट मंत्र विधि मोह सों भयो । सुधा को
 खवत मनि मानिक लसत सोहै आंगुरी किरण ज्यों
 प्रभाकर उदै भयो ॥ मेहँदी रचित नख कैधौं मैन पंच
 वान खरसान धरे सोनी पानी तिनको दयो । आँचर
 की ओटते अचानक ही डीठ पख्यो तेरेहाथ देखे मन
 मेरो हाथ ते गयो २ ॥

स० ॥ करतार करे यहि कामिनी के कर कोमलता कलता लुनिके । लघु दीरघ पातरी थूली नहीं सु समाधि टरै सुनिके मुनिके ॥ तिनमें मेहँदीनके बुंद घने यह तोष कहै उपमा गुनिके । सखि मानों सरोजके पान मनोज विसाती बिछाई चुनी चुनि के ३ ॥

क० ॥ कैधों प्रीति प्रीतमकी सनद लिखी है विधि लेखनी विचित्र चित्त हरण मुनीन के । अमल सुधा सों भरे ताल युग सोहै बाल विचरन काज किधों प्यारेमन मीनके ॥ भनै रघुनाथ किधों सुरतरु तेरोतन शाखा भुजपत्र यहीनायक प्रवीनके । दर्पण दिव्य यों सुधानिधि सी प्रभापुंज प्रफुलित कंज कीधों तारेकर पीनके ४ ॥

क० ॥ कैधों अर्थ धर्म काममोक्ष फल दाता वृक्ष स्वच्छ दक्ष दान भृत्य पक्षको अथोरी के । रम्भा ते सुठार चारु उज्ज्वल मृणाल दूते पंकज गुलाव रंगरति मद मोरीके ॥ भनै रघुनाथ रिद्धसिद्धके निवास कैधों परम प्रकाशवान पिय चित्त घोरीके । सुकृत जरुरेपति पदरत रुरेयह दीपति प्रपूरेकर कीरति किशोरीके ५ ॥

क० ॥ ईगुर अग्नि जैरै कंज अरुणाई ढरै गिरि गिरि परत बँधूक समताई को । विद्रुम कटावत गहावत उपाय ओप सानहू चढेते यकरतन ललाई को ॥ देखिदेखि देखिलाली उर दाड़िम दरकिगयो तवहू न पायो नेकरंगहू कलाई को । ऐसेतेरे करन की कौन पटतर दीजै जपाविम्ब सोहै जासु पावै मलिनाई को ६ ॥

क० ॥ पावैजो परस ताकोहोत है सरस भाग पावन

दरस जाको जानो अनुसार है । रमनीय बेषन कीली
लाधर पेखन की ललित सुरेखन की प्रगटी पसार है
वहिक्रम बूढ़ीकरि चिंताचित गूढ़ीकरि रचनाऊ दूढ़
विधि विविध विचार है । कथन कथेरी लोक चौदह
मथेरीपर तेरी या हथेरी की न पाई अनुहार है ७ ॥

क० ॥ नूतहू के नूतन सरस सुकुमार पात जात
लजात जेवै निपट ऊपर के । कोसम की को सम कर
किसलय कहा होत न बराबरी नवीन पात बरके ॥ क
शम्भु राज दूजो सम कौन देख्यो और पेखि पेखिरेख
सो ललित प्यारीकरके । जावक सरस विधिपारसी ह
फ लिखे कज्जके दलन में प्रबंध पंच सरके ८ ॥

क० ॥ लालकरताल करगहिकै नवेलीके सुदेखत स
हेलीकोऊ परमसयानी है । कालिदास कौनसके सुयसव
खानिकर इन्दिरा की खानि सो तो हमपहिचानी है ॥
तिको न गेह लिख्यो श्याम सों सनेह सुनि सखीकेबच
विधुमुखी मुसुकानी है । एरी ठकुराइनि सु तेरी
हथेरी बीच सौति चेरी लिखीसब रेखनिते जानीहै ९

स० ॥ लाड़िलीके करकी मेहँदी छवि जातकही ना
शंभुहूजूपर । भूलिहू जाहि बिलोकतही गड़ि गाढ़े र
अतिही दृगदूपर ॥ इन्द्रबधू बटके टटके दल वै
विद्याइ ज्यों कंचन भूपर । बांधी मनो रंगरेज मनो
सुचूनरी नीरज पातके ऊपर १० ॥

स० ॥ राधिका रूपनिधानके पाननि आनि म
छिनिकी छवि छार्ड । दीह अदीहनि सूक्ष्म थूलनहै द
गोरीके दौरि गोराई ॥ मेहँदीवुंद घनीतिनमें मनमोह

के मन मोहनी लाई । इंद्रबधू अरविंदके मंदिर इंद्रिरा
को मनो देखन आई ११ ॥

स० ॥ बैठी मथे दधि राधा उतै कहूँ डोलत नन्द-
लला चितचायकै । बंक विलोकति भ्रांकति त्यों कोउ
जानत नाउँ धरैना बनायकै ॥ काढ़त माखन ताखन में
मेहँदी करबुंद रही छवि छायकै । क्षीर समुद्रमें डोलै
मुमारख इंद्रबधू ज्यों सुधासों अन्हायकै १२ ॥

क० ॥ सुंदरि छवीली प्यारी तेरेकरतल येतो लिखे
हैं बिचित्र विधि लेखनी सुरेखसों । कंचनसे दरशत
माखनसे परसत भरेहैं सोहाग सब भागहीकी रेखसों ॥
कमल कलीसे प्रेम नेम नीके बंधपाय रूपके अभासित
मिलेहैं मानों वेषसों । बांचत रहत नित नाहके नयन
बुध बलिभद्र लगत न नयन निमेष सों १३ ॥

स० ॥ देनलगी मिहँदी दूलही कर बैठि तिया इक
नागरी नेरी । होय लटू गई बाल विलोकि ललाई अ-
लौकिकै वाकरकेरी ॥ देइ न दूरिकरै नधरै न टरै टकते
न हलै चितचेरी । योंचुभि डीठिचलै न उतै इतैचाहि
रही लिये हाथ हथेरी १४ ॥

क० ॥ हाथ हाँसिदीन्हों भीति अंतर परसि प्यारी
हाथ साथ छकी मतिनायक प्रवीन की । निकस्यो भ-
रोखा ह्वैकै विकस्यो कमल जैसे ललित अँगूठी तामें
चमक चुनीन की ॥ कालिदास तैसी लाली मेहँदी के
बुंदन की चारु नख चंदन की लाल अँगुरीनकी । तैसी
छवि छलकत छापकी छलानहूकी कंचन चुरीन की
जराऊ पहुँचीन की १५ ॥

क० ॥ गोरीके हथोरी शिव कवि मेहँदीको बिंदु इंदु
तीको गण जाके आगे लगे फीको है । अँगुठा अनूप
छाप मानो शशि आयो आप कर कंजुके मिलाप पात
तजि हीको है ॥ आगे और आंगुरी अँगुठी नीलमणि
युत बैठो मनो चायभरो चेटुआ अली को है । दबिकै
छलासों कोमलाईसों ललाई दौरि जीतत चुनीको रँग
छोर त्रिंगुनी को है १६ ॥ इति करतलवर्णनसम्पूर्णम् ॥

अथ कर अँगुरी वर्णन ॥

दोहा ॥

अँगुरी दिपति मरीचिका चंद्र हथेरिन साथ ॥
तुमसवतिनजनठेलिपियजियचकोरकियहाथ १
योंअँगुरी त्रियकरनकी लागति नखन समेत ॥
औषधीस गुण अमिय जनु जीवन मूरिन देत २
मोहन सोखन बसिकरन उन मादन उचटाय ॥
मदन सरन गुण तरुणिके अँगुरिन लये छिनाय ३
चंपकली करगहि कुँवरि हुतीसखी कों देति ॥
वह बौरीधोखे परी अँगुरी गहि गहि लेति ४
चंपकली समकरअली अँगुरी किमि कहि जाय ॥
रसिक श्याममन मधुप बसिलेत सुरसनअघाय ५
करअँगुरिन हेरत हारेहि भूख प्यास कछु हैन ॥
मनमोहन गुणकन भरी छवि छीमी छीजैन ६
तियप्रति अँगुरिन कलिनपै त्रयत्रय पोर सुहाय ॥

तीनलोक वशकरन को बीजवये जनु आय ७
 विविध कनक मणिमुँदरी बलया बलित विचित्र ॥
 कीतुवकरभूषित क्रिये हरिगुण करि शशि मित्र ८
 छाप छला मुँदरी लला सोहत हथ हथफूल ॥
 कनक लता फूली मनो भांति भांति रँगफूल ९

क० ॥ कैधों कल्पतरुवर शाखा यह सोहावनीहैमन
 लालचावनी सदाही निज वरकी । जगमग होतज्योति
 नख मखतावलकी पदिक प्रकाशके मरीची हिम करकी ॥
 भनैरघुनाथ किधों कुसुम कली है भलीपुरद फली है कै
 पतीके मनहरकी । कैधों यह अँगुली तिहारे करपंकजकी
 कैधों अनी कामके प्रसून पञ्चशरकी १ ॥

स० ॥ कैकिशलयमें लगी फली मूंगकी कोमल मञ्जु
 महामुददानी । पञ्चदली किधों फूले सुकञ्ज सुगंध स-
 नेह सुख मान के खानी ॥ पञ्चशरै सरपञ्च किधों
 जड्या कंचन पीठ पै शोभा अमानी । कै रुक्मिणि के
 पाणिलसै रघुराज सुकीर्ति कवीन बखानी २ ॥

क० ॥ फूले मधुमालती के पुहुप पुनरभव मानों
 बलिभद्र पञ्च शाखा देवतरकी । केसरि कली सी
 कलिधौत की कली सी कीधों कली भलीभांति कञ्ज
 लता कामशरकी ॥ कोमल अमल अग्र दश चक्र
 चिह्न राजै जीती शोभा दिशा दशरुकी सुरनरकी ।
 तेरे तन बसत तनक तन धरि तंत कीधों कर पल्लव
 किशोरी तेरे कर की ३ ॥

क० ॥ सोना की कली पै कैधों भौरा लपटिगयो कैधों
 काले रंगन लाय लाय चूरी है । भनत दिवाकर कमल

से अमल अति देखि द्युति विधुने बिहायसमय मूरी
है ॥ दीपकीसी खासी चपलासी चंद्रकासी खासी युगल
हथेरी रंग मेहँदीकी दूरीहै । विद्रुमकी बेलिसी नवेलीके
सुअँगुरीपै नखतके पांतिसों नखनमानों पूरी है ४ ॥

क० ॥ गोरी गोरी आँगुरीन रातेसे रुचिर नख और
अति पैने पैने रचि रुचि कीनेहैं । रति जय लिखिवेकी
लेखनि सुरेख किधों मीनरथसारथीके नोदन नवीनेहैं ॥
किधों केशवदास पंचबाणजू के पंचबाण सकल भुवन
जिन बश करिदीनेहैं । कंचनकलित मणि मूंदरी लालित
मानो पिय परिजन मन हाथ करिलीनेहैं ५ ॥ इति कर
अँगुरी वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ नख मेहँदी सहित वर्णन ॥

दोहा ॥

सोहत कर अँगुरीन पर भूलक नखनकी कांति ॥
बैनी विद्रुम बेलि पै जनु उड़गन की पांति १
वारह मंगल राशिगुन सो सब जनु मिलि आय ॥
उभय हथेरी दश नखन मेहँदी भये बनाय २
यों मेहँदी रंग में लसत नखन भूलक रसलीन ॥

मानो लाल चुनीन तर दीन्हीं डाँक नवीन ३
क० ॥ कोमल अमल करकमल बिलासनि के र
पचि कीन्हीं विधु सुंदर सुधारी है । राजत जराऊ अँगु
रीनमें अँगूठी पुनि द्वैद्वै बला द्युतिराखि पोरऊ सँवार

है ॥ मेहँदी की बुन्द यों विराजति है बीच लाल सेना-
पति देखिपाये उपमा विचारी है । प्रातही अनंद ते
अरुण अरविंद मध्य बैठी इन्द्र गोपिन की मानो पां
ति वारी है १ ॥

क० ॥ कैधों पद्मरागन में मीनावर हीराजड़े कैधों
कंज पातन में बुन्द ये सुधाकेहें । कैधों अमीकुण्डनमें
तारागण केलिकरें देखे मुखचंद महामोद छविछाकेहें ॥
भनै रघुनाथ किधों हास्य रसहीके भौन कैधोंयश विस्म
किधों महल प्रभाकेहें । कैधों दिव्य दीपति के धाम हैं
अनूप किधों दश नखनीके अँगुली में राधिकाकेहें २ ॥

क० ॥ सुंदर सुरंग गोल शोभाकर पल्लव कि कैधों
इन्दुगोप आनि बैठी बीचवालके । कैधों लोल कुंदन
की अधिक अमोलता में स्वाती कीसी बूँदें बहरानी है
रसालके ॥ कैधों नगपांतिन की कांति द्युति सोहति
की मदन की माल हुस्न दक्षिण की चालके । भरमी
सुकवि छवि वरणी न जातमोपै कामिनीके नखके नगी-
ना कामलालके ३ ॥

क० ॥ मानोअधि गुंजिकासे चंचुकचकोरचख चावुक
चमक चीज विद्रुम तमालके । चेटकके चिह्न कैधों
नाटक के सुन्न कैधों हाटक के हुन्न देश दक्षिणके चाल
के ॥ जटित जराय मधिनायक अमोल मोल गोलगोल
मोती मानो मणिहै बियाल के । आँगुरी अनीकी नीकी
कनक कनीसी कैधों कामिनी के नखके नगीना काम
लाल के ४ ॥

क० ॥ देखे अनदेखे हरि तजत न अड्ड तेरो वि-

मल मयंकमुखी मोहे कोटि निबलों । कालिदास रीभि
रीभि करत सराह प्यारो क्यों न यह छवि लागै बैरनिको
विषलों ॥ लाल कुरबिंद अरबिन्द इन्द्रबधू वारो वि-
द्रुम ललाई नीचे करि राखी इखुलों । तेरे करनख की
बनक को बिलोकि उठै सौतिन के अनख की आगि
नखशिखलों ५ ॥ इतिनखमेहँदी सहितवर्णन संपूर्णम् ॥

अथ कलाई वर्णन ॥

दोहा ॥

कौन कलाई तैं करी भे वै रहित विवेक ॥
लखी कलाई जबहिं ते पुनि न कलाई नेक १
लालन के मन दृगनको रही चोप यह आनि ॥
पहुँची बनि पहुँची कबै प्यारी के पहुँचानि २
सुरँग रंग करमें लसै बलया अति रँगदार ॥
नाग छौन लिपटे मनो मलयागिरिकी डार ३
गडि बैठी गोरे करन श्याम चुरी यहि भांति ॥
सोनजुहीकी मालमें लपटति ज्यों अलिपांति ४
स० ॥ चुरियानहूं में चपि चूर भयो द्वि छन्द प-
लिन घाँई कहूं । मनु मै न कुम्हार सुकंचन की सृति
लै सुमांत्रि बनाई कहूं ॥ हरिसेवकें ज्यायो चहै तौ सु
यदि सौंधी सुधा जिय ज्याई कहूं । लखि पाई कला
तेरी जबते तबते उनको न कलाई कहूं १ ॥
स० ॥ दीठिपरी नँदलालै कहूं वृषभानलली

सुएक कलाई । ताछिनते तजि खान औ पान सुहाय
री हाय यहै जकिलाई ॥ ऐसी दशा लखिके उनकी समु-
भायो रसीले तबोना कलाई । घूमत है ब्रज वीथिन में
रटलाय रहे हैं कलाई कलाई २ ॥

स॥सुंदर सूधी सुगोल रची विधिकोमलता अतिही
सरसात है । त्यों हरि औध जराव जरेखरे कंचन कंचन
के दरशात है ॥ चूरी हरी विलसें जिहि में तिहि देखि
हियो सबको हुलसात है । ऐसी कलाई लखे विकलाई
भई कलाई नहीं दिन रात है ३ ॥

क० ॥ गजरा विराजै गजमोतिनके अति नीके जिन
की अजीत ज्योति केशवदास गाई है । बलय बलित
कर कंचन कलित मणि लालकी ललित पौंची पौचिन
वनाई है ॥ सेत पीत हरित भलक भलकति लाल
श्यामल सुमिलि मेरे श्याम मन भाई है । मानो सूर
सोमकी कला सकेलि आपनी औ आपनी सखी को
सुख पाइ पहिराई है ४ ॥ इति कलाई वर्णन संपूर्णम् ॥

अथ पीठ वर्णन ॥

दोहा ॥

जोरिरूप सुवरण रची विधि रचि पचि तुव पीठि ॥
कीन्हीं रखवारी तहां व्याली वेनी ईठि १
इकतरु दुइ दल होत हैं यह अचरजकी बात ॥
द्वै तरु कदली जंघ में पीठ एकही पात २

नहीं पनारी पीठि तुव कीन्हीं दीठि विचार ॥

धसकि गई यह भारते बेनी के सुकुमार ३

क० ॥ आरसी विमल परनारीसी सँवारी कैधों रूप
के प्रवाह कामभूप चलयोजातहै । कैधों कलधौत कीसी
भूमिसुरमारग में मान को सुभाव कैधों कदलीके पात
है ॥ कैधों यह भोड़रके तबक तिलौछिधरे भरमी सुक-
वि कोऊ उपमान आतहै । सरस सुघाट सुख आनँदकी
गाट कैधों प्यारी तेरीपीठि देखि डीठि न समातहै १ ॥

क० ॥ कैधों ये त्रिगुण रूप कनककी पाटीलिख्यो
कैधों काम भूप रथ सावगी सुभाई है । कैधों यह बेनीजू
को वार पार देखियत कैधों केलि कामनाकी सीव सुख-
दाई है ॥ कैधों मैन मूरति यहकियो है बिचित्र चित्र
कैधों मैनकाकीदेह थापना सुहाई है । कैधों यह गोरी
की जुसेज शुभ राजति है पीठि केलिपत्र द्युति तम
की दुहाई है २ ॥

क० ॥ कैधों यह केश भेश रसको नरेश वाके देश
की सुदेश भूमि शोभा रसभीनीहै । कैधों यह मदन की
पाटी मंत्र पढ़िबे की सूरत सुकवि बनी हाटक नवीनी
है ॥ जोवन के मंदिर की भीतहै सुठार कैधों राज रति-
राज रुचिसो बयान कीनी है । येरी मेरी तेरी यह पीठ
नेक डीठपरी देखतही ईठ सबही को पीठ दीनी है ३ ॥

क० ॥ कंचनकीपाटी तामें सोहन कस्योहै कैधोंमोहनी
के मोहनको मोहनको वानरी । कैधों बेनी भारते पनारी
परिगई प्यारी देवन कुमारी बलिहारी छवि कानरी ।
कुशल सिंह हेरि हेरि हाहा करि खोलि खोलि बोति

बोली दीन्हीं वै अदीनी भरी मानरी । नीठि नीठि पीठि
प्यारी परसत परन पाणि मानि मानि नेह कीन्हीं प्रेम
पहिचानरी ४॥

क० ॥ बेनी छूटि शीशते लटकि भूमि भूमिकरना-
गरिके धंसिके पनारी पीठ ह्वै गई । भनत दिवाकर
पुरट पात रंभ कैसे ऐंचि कर आंचर चटाक चित्त लै
गई ॥ ताछिनतेलाल खान पान नादुकूलसुधि अंगअं-
गसात्विक अनंग बीज वैगई । राधिका रसीली तेरी क
हांलों बखानों छवि गण उपमा अनूठीसों अथैगई ५॥

स० ॥ मृगनैनीके पीठि पैबेनी लसैयों सुगंध सनेह
समोय रही है । अति चीकनी चारु चुभी चित्त में सो
सुकेश सुकेशन जोय रही है ॥ कवि देव कहा कहिये
उपमा रविकी तनया तन तोय रही है । मनोकंचन के
कदली दल ऊपर साँवरी साँपिनि सोय रही है ६ ॥

स० ॥ मानो मनोजकी पाटी लिखी हितमंत्रन की
परि पाटी बसीठिहै । जाति उनै उनै काँतिके भारनि
जाति दुनै दुनै जोपरै दीठिहै ॥ गोकुल बालके अंग
बिलोकिहौ और न की तव प्रीति उबीठि है । कंचनके
कदली दल ऊपर सोवति साँपिनी बेनीन पीठिहै ७ ॥

क० ॥ जोवन महीपतिको सेवक मदन तोहिं तियतन
बसिवे को जगह बनाई है । चिन्तामणि जानतसोनन्द
के कुमार जाते भई अंग अंगमें अनंगकी दोहाई है ॥
रूपकी सँवारी चारु राधिका की पीठपत्र ताते बेनाविर
वरनावली दिखाई है । दुहूँ और वाके डिग पारस र-
हत ताते मेरेजान सोनेकी सोहाई दरशाईहै ८ ॥

स० ॥ दास प्रदीप शिखा उलटीकी पतंग भई अव-
लोकति दीठि है । मंगल सूरति कंचन पत्रकी मैन रची
मन आवत नीठि है ॥ काटि किधौं कदलीदल गोभको
दीन्हों जमाय निहारि अगीठिहै । काँधते चाकरी पात
री लंकलौं शोभित मानौ सलोनी की पीठिहै ६ ॥

स० ॥ शोभा सुमेरुकी संधितटी किधौं मैन मवास
गढीश की घाटी । कैरसराज प्रवाह को मारग बेनी
प्रवाह सी यों दृग ठाटी ॥ काम कला धरि ओप दई
किधौं पीतम प्यारे मढावन पाटी । राधिका पीठि लखें
घन आनंद आनन आन की होति उचाटी १० ॥

क० ॥ साँचे तेनिकारी भरि प्यारीकी ललित पीठि
नीठि बिध ईठि की सुधारि करि गढीहै । कैधों तोष
पुरट की पाटी है अनूप जामे परम प्रवीणताई पंच-
बाण पढीहै ॥ तैसी छवि बरनी न जात सुख करनी के
हरिनी नयनपर जेती छवि बढी है । तैसी सुखदेनी
बेनी भली है रली सनेह मानो नागलली कदलीके
दल चढी है ११ ॥

क० ॥ केशव कुंवर देखी राधिका कुंवरि आजु
सोवत सुभाय सैज जननी जनक की । बेनी में बनाय
गुही काहू अली भांतिभली कुंदनकी कली तन तन-
क तनककी ॥ पीठमें तिनकी प्रतिमूरति बिलोकियत
परत नयन युग सूरति बनककी । हरिमन मथिबेको मा
नो मनमथलिखे रूपके रुचिर अंकपट्टिकाकनककी १२ ॥

क० ॥ हीराके कतार बीच नालिकाके डौलमनोता
माहिं चोटी नीलमीकेसे चमाकेहैं । बेणी यमुनाके रं

पीठ गंगाके तरंग लाल धागाके सुढंग रूरे शारदा के
हैं । कैधों मृदुकेराके सुपत्ताके विचोही बीच मुखचंद
सुधा कैधों माते अहि जाकेहैं ॥ कामके कलाके सीखि-
वे को पटाकेशरीके कैधों दृगदीठ पीठरूप राधिकाके
हैं १३ ॥ इति पीठ वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ ग्रीवा वर्णन ॥

सुरंग स्वच्छ ग्रीवा ललित मनो रूपको कंबु ॥
॥ तलकत मन विरहीनको जनु वहिको अवलंबु १
॥ जव मोहे तिहुंलोक सब तिहुं ग्रामलै ठीक ॥
॥ तबदीन्हीं तुवकण्ठविधि यह त्रयमोहनलीक २
॥ कंबु कण्ठपर धरत यो कनक चोलरी ज्योति ॥
॥ चतुरमाल मनुदीपकी जगमग जगमगहोति ३
॥ प्रथम हुती हीरानसों जटित गुलीबंद ज्योति ॥
॥ गरे परे गौरीन के चिलक चोगुनी होति ४
॥ पहिरतकी गौरे गरे यो दौरी द्युति लाल ॥
॥ मनो परसि पुलकित भई मौलसिरी की माल ५
॥ खरी लसत गौरे गरे धसति पानकी पीक ॥
॥ मनो गुलीबंद लालकी लाल लाल द्युतिलीक ६
॥ मुकुत जटित चंपकली तरे रहे बहु गुंद ॥
सहस किरण रविते मनो चुयत सुधाके बूंद ७
॥ सप्तस्वर तीन ग्राम रागनको धाम धन्य मू-
र्च्छना सुताने श्रुति ग्रहमति पैनीको । कैधों चंद्रमण्डल

को परमअधार शुद्ध उज्ज्वल अनूप स्वच्छदच्छ पिक-
वैनीको ॥ भनै रघुनाथ शील शोभाको निवास यही
प्रीतम की प्रीतिकी प्रतीति करदेनीको । कंबु ते सुदार
रुम्भचार है कियो तहूँ ते रुम्भा रति कण्ठ ते सु कण्ठ
मृग नैनीको १ ॥

क० ॥ सुन्दर सुडौल आञ्छीभांति सों सुधारि करी
हरि कर कंबु शोभा चारि फेरि डारिये । कोकिल पारा-
वतहूकरि न सकत सरिजगमें न और उपमानसों वि-
चारिये ॥ शोभाकीसी सीवनूर कहिबरणत भेवरातोदिन
पीतम रहत चितधारिये । जाके कण्ठमध्य पीठद्युति ऐ-
सी सौहियत जैसे शीशी माहिं रंग जावककोठारिये २ ॥

क० ॥ सुखको सदन देखि मदन मुदित होत वारिज
बदन शुभ नालसी विशेखिये । चारोरीति नवोरस हाव
भाव की प्रतीति छबिसों लपेटि हेम पींडी के उरेखिये ॥
कैधौं मणिकण्ठ तीनिलोककी तरुणि जीति द्युति तेही
भांति भांति तीनों रेख लेखिये । कनकके कंबु कमनीय
ताके अंबु भेंटे आनंदकी सीवकै अमोलग्रीवदेखिये ३ ॥

क० ॥ सुन्दर सुवेष रुचि राजत त्रिवेष युत कूजत
दिनेश कल कोकिल बखानिये । अंग अंग छबिकी तरंग
नि में मेरेजान माधुरी की ललित लपट लपटानिये ॥
जोहनी लगत मनमोहनीकी अखियन मोहत मनहिं
मोहनीहै जगजानिये । कण्ठ छविआगे शंख सण्ठलागे
लघुताई कैधौं बाहँ नाहकी रहति उरभानिये ४ ॥

स० ॥ शंख जड़े माणि माणिक सों शुभ गोतकषोत
विलात है सीवा । भट्ट दिवाकर रेख बरेखि केमोहे सुरा-

सुर मानुष जीवा ॥ माल हुमेल जगामग ते उपमानहिं
तालत लाखव दीवा । स्वच्छ मनोहर चम्पकली अत्र-
लीनके संग में शोभित श्रीवा ५ ॥

स० ॥ कोकिल कण्ठकी त्योही कमोजकी कीरहुकी
कलकांति नकासी । कारीगरी करि कामहुँ जो रचै कंबु
सुधा निधि को छविरासी ॥ भाषै मुनी रघुराज तऊ
सति मानिये तीनहूलोक विलासी । पावै न गो समता
रुक्मिणि के श्रीवकी सो सुठि मोद प्रकासी ६ ॥

स० ॥ कंबु बिलोकतही जिहिको दुख्यो जायके दूर
कहूँको उतालहे । सौतै बिलोकि भईहै बिहाल कपोतन
के कोकहै जसहालहे ॥ जानि परी द्विजको उपमातिहिं
भाषतही मन होत निहालहे । पानकी पीकलसे धिय
कण्ठ मनो पोखराज सिसी रँग लालहे ७ ॥

स० ॥ किधौं रूप सरोवर में ते कढ्यो लसै कम्बु
भख्यो सुरसात कोहै । किधौं सांवरे जू गुण रावरे के या
कपोत फँयो बड़ी जात को है ॥ अमरेश ज कीधौं सु-
कोकिला को सुर साधि धख्यो विधिहान को है । वर कंठ
में गोरी के कण्ठा लसै सुकतारनतारन कांतिको है ८ ॥

क० ॥ तेरे मुख गावत गोपाल जू के गुणगणि शा-
रदा जू रहति है उर में उरेखिये । जिनके वे मण्डन
फटिक माल हार हाँस हिये पर तेई वे शिंगार करि ले-
खिये ॥ तेरे नेक बोल सों तो सुरको सुहाग कोऊ मीठा
राग सुनि रोभू रोभू करि लेखिये । तोरि डारी तीनों
तांति मेरे जानि वीन की तैं प्यारी तेरे गरे में ये तीनों
लीक लेखिये ९ ॥

स० ॥ लचकै जिमि चारु कंबूतर कण्ठहि रेख वि-
राजत कम्बु कलासी । देखि कपोलन फांसिदई उर जानि
यहै छवि भानु मलासी ॥ हंसनके चित चौप भई विच-
रहिं करि आठहुँयाम तलासी । यों शिवनाथ बनी नव-
ला कमला गृह कञ्चन की लचलासी १० ॥

स० ॥ लाखिकै वहि प्राणपियारी के कण्ठ को कम्बु
लई सुधि तालन की । तिहुँलोक की सुन्दरता लै त्रिरेख
दई विधि ज्योति के जालन की ॥ कमलापति कौन ब-
खानि सकै छवि छिनत साणिक मालन की । इसि गोरे
गरेलसै पीक मनो द्युति लाल गुलुबंद लालनकी ११ ॥

क० ॥ सुरनर प्राकृत कवित्त रीत आरभटी साखिकी
सुभारती की भारती यों भोरी की । किधों केशवदास
कलगानता सुजानता निशंकता सों बचन विचित्रता
किशोरी की ॥ बीणा बेणु पिक सुर शोभाकी त्रिरेखरुचि
मन वच क्रमन कि पिय मन चोरीकी । अम्बुसाई कीसों
मोहै अम्बिकाऊ देखि देखि अंबुज नयन कंबु ग्रीव
गोल मोरीकी १२ ॥

क० ॥ लेति मोल लालको अमोल चित्त गोल ग्रीव
लोल नैन देखि देखि जात गर्व भागिकै । उग्रामश्वेत
पीत लाल कंबु कण्ठ कण्ठ माल जाति नाहिं नेकही
रही जु ज्योति जागिकै ॥ केशवदास आस पास बासकै
रहे मनो समेत रागिनीनि रागराज रंग रागिकै । सुर
के निवासते प्रकाश सोमजू कख्यो अनेक भांति की
किधों रही मयूष लागि कै १३ ॥

क० ॥ गुण जो कपोत ताके उपमाके पोत गये सुरा-

ही सुराही भरी ताके दोष ताकेहैं । पिक भीके भाठे
 भुठे भूमि घूमि ओट आम किल शिशु कोकिल के
 किलके चुपाकेहैं ॥ वांसुरी सुरीन याके एकहू कला के
 आगे किये हीनताके वीनताके गुणजाकेहैं । नाथपुरी
 अखिलाके रंग अनमिलाके से कैधौं उतकण्ठताके
 कण्ठ राधिका केहैं १४ ॥ इति ग्रीवावर्णनसम्पूर्णम् ॥

अथ मुख वर्णन ॥

लजितचंद्र आनननिरखिखिभक्त सदा अरविंद ॥
 मुख सुखमा केहिविधिकहैं हिय जानत गोविंद ॥
 सूर उदितहू मुदित मन मुख सुखमाकी ओर ॥
 चितै रहत चहुं ओरते निहिचला चखन चकोर ॥
 नवल नारितुव बदनकी समता करै लु कौन ॥
 तैं जीत्यो मृदु हांसही इन्दु इन्दिरा भौन ३ ॥
 पत्राही तिथि पाइयत वा घरके चहुं पास ॥
 नित प्रति पून्यही रहै आनन ओप उजास ४ ॥
 कनको ज्योति नयनन लगे वा सुंदर मुख तूल ॥
 जा दीपति ते होत है चंद्र चांदनी फूल ५ ॥
 नहिं मयंक भू अंक यह नहिं कलंक रजनीश ॥
 तुवमुखलखि कारोकियो घसिघसि कारोशीशद ॥
 कहा ज्योति महतावमें कितीव आव गुलाव ॥
 प्यारी मुखसम कैसकै कहा चन्दकी ताव ७ ॥
 चन्द नहीं यह बालमुख शोभा देखन काज ॥

वारी कारी रयन में महताबी द्विजराज ८
 प्रगटतपेखि मयंक महँ सखि कलंकदिखरात ॥
 तेरेमुख ते हारिकै मनौ हलाहल खात ९
 कीने पट घूँघट लखै तियमुख सुखमा कन्द ॥
 राजतहै घन बीच जनु पूरण शारद चन्द १०
 छप्यो छबीलो मुहँ लसै नीले आंचर चीर ॥
 मनौकलानिधि भुलमुलै कालिन्दीके नीर ११
 लसतश्वेत सारी छप्यो त्रियमुख इमिउपमेश ॥
 मानौ सुरसरिता सलिल जगमगातराकेश १२
 रँगेलहरिया चीर मैं गोरे मुख को देख ॥
 मानौ कला अशेष शशि बैठयो है परिवेख १३
 इहि विधि गोरे बदनपर लसत डोरिया श्वेत ॥
 मनौलहरिलौं शरदघन शशिपर शोभादेत १४
 क० ॥ आनन अनूपछवि छलकी छटासी होत ज्यो-
 ति जोन्हनि दै निशिकर चंदनीको है । देखत चकोर
 से न मुरत सुनेश मन ममता मदादि तम करै खण्ड
 नीको है ॥ व्यास सनकादि वेद विदित विरंचि हरि
 शम्भु से ब्रिवेकी जासु करै बन्दनी को है । कामता प्र-
 साद कला सोरहो अखण्ड मुख चन्दहू ते नीको वृष-
 भान नन्दनी को है १ ॥

क० ॥ आनंद को कन्द वृषभानु जाको मुख चन्द
 लीलाही ते मोहन के मानस को चोरै है । दूजो तैसो
 रचिवे को चाहत विरंचि नित शशिको बनावै अजौ
 मन को न मोरै है ॥ फेरै है सान आसमान पै चढाय
 फेरि पानी पै चढायवे को वारिधि में बोरै है । राधिक

के आनन के सम ना बिलोकै याते टूक टूक तोरै पुनि
टूक टूक जोरै है २ ॥

स० ॥ कै सुखमा के सरोवर को विकसो अरविन्द
अनूपम भावै । रावरे आनन देखिवे को कीधों आरसी
आनंद की छवि छावै । केशव की तुव नयन चकोरको
रूप सुधानिधि इन्दु सोहावै । भाषै मुनी रघुराज किधों
मुख रुक्मिणी को सुखसिन्धु बढावै ३ ॥

क० ॥ कोऊ कहै है कलंक कोऊ कहै सिन्धु पंक
कोऊ कहै छाया है तमोगुन के भासकी । कोऊ कहै राहु
रद कोऊ कहै मृगमद कोऊ कहै नीलगिरि आभा
आस पास की ॥ भञ्जन जू मेरे जान चंद्रमाको छिलि
विधि राधे को बनायो मुख शोभा के विलासकी । ता-
दिन ते छाती छेद भयो है छपाकर के वारपार दीखत
है नीलमा अकास की ४ ॥

क० ॥ कहां मृदुहास कहां सुखद सुवास कहां नित
को उजास कहां सबहीको मोहनो । कहांमृदुवैन पुनिकहां
ये लजिले नैन कहां नेह भरी सैन कहां मुरि जोहनो ॥
छवि की निकाई और जोवन जुन्हाई कहां उपमालजाई
जैसे मणि कौड़ी पोहनो । आनंद को कंद जिन मोहे नंद
नन्दनको कहां चंद मंद कहां तेरो मुख सोहनो ५ ॥

क० ॥ कोमलता कंजते गुलावते सुगंध लैके चंदते
प्रकाश लैके उदित उजेरो है ॥ रूप रति आनन सों
चातुरी सुजाननसों नीरलै निवाजनसों कौतुक निवेरो
है ॥ ठाकुर विचारकै बनायो विधि कारीगर रचना नि-
हारि को न होत चितचेरोहै । सोनेसों सुरंगलै सवादलै

सुधाको बसुधाको सुख लूटिके बनायो मुख तेरोहै ६ ॥

क० ॥ कैधों अरबिंद प्रात वापी में प्रकाश भयो
कैधों सोनजुहीपै गुलाब फूल फूलोहै । अनत दिवा-
कर न ताब महताब आव देखत सिलाब आफताब
ओप भूलोहै ॥ सारीइवेत घूघुटते सुखमा दिखात कैसे
मानो जल जाहनवीमें कंज भुल भूलोहै । शरद मयंक
राधे ताराकेसमूह साथ तापै तेरी मुखके न जोट
सम तूलो है ७ ॥

क० ॥ कैधों सप्त ऋषिन के मखन कीबसिद्धि पुंज
है सहस चखन के मणिनकी ज्योतिहै । चपल चमक
की चहुंधा चकचौंधे कौंधे नेक हँसे दाडिम दशन द्युति
होत है ॥ जगर मगर जागे मगर बगर चारु चाहि
चाहि चकित चकोरनको गोलहै । द्विगुणो दिनेशते चतुर
गुणो चन्दहूते हनुमान प्यारी तेरो आनन उदोतहै ८ ॥

क० ॥ कैधों शिवनाथ उदयाचल उदितभयो सोरहौ
कलाते परिपूरण मयंकरी । लौचन चकोर ये चलन
लागे चारोंदिशि भरिभरि पियूष रसपीवत सशंकरी ॥
सोतेरे ये कमलनयनी सकुचि नमितमुख गई मुरभायि
फीकीपरी छवि पंकरी । राधेको बदन येरी सदन सुधाहू
को तिल औ डिठौना सोई कठिन कलंकरी ९ ॥

क० ॥ प्राणिप प्रहमकी बदन अलकत द्युति रूपकी
तरंगतामें प्राणतानियतुहै । योवनकी ज्योति जगसगत
प्रभासी मानो अजिर उदोत ताको उर आनियतु है ॥
मुकुरते अमल बनाये हैं विधाता विधु बलिभद्र यहै
उपमा मानियतु है ॥ मेरेजानि आई अलकत तेरे

आननकी ताहीको उजेरो जग ज्योति जानियतुहें १० ॥

क० ॥ पायजेव जेहर जराऊ जरी जोरी हठी मणि
मुक्तान हीराहार उरधारे हैं । सल्लान समुद्र कढी रमा
रमणीय ऐसी अंगन सुगंध पाय भूमै भौर भारे हैं ॥
वैठीहै तखत खोल बखतपियारे जूको मानो कामबामपै
सुहाग चमर ढारेहें । दैकैमृगु बिन्द कीन्हीं जोन्ह ज्योति
मंद राधे तेरे मुखचंद पै अनेक चन्द वारेहें ११ ॥

क० ॥ परम प्रकाश रतिराज को निवास कलासोरह
प्रकाश प्रतिभास भास भीनोहै । हिय को हुलास कुव-
लयको विकास अंधकारनको नाश नैनप्यास हरिलीनो
है ॥ तेरे मुखसुखमाकी उपमाकोहै न तऊ यातेअपिजात
छिनछिन छबिछीनो है । बेगही गगन गहि भाजिगयो
चाहे चित याही ते मयंक नेह रंग रथ कीनो है १२ ॥

स० ॥ दृग भौरसे हवैकै चकोरभये जेहिठौरपै पायो
बड़ो सुखहै । लहरैं उठैं सौरभकी सुखदा मन्यो पून्यो
प्रकाश चहुँ रुखहै ॥ ठगिसेरहे सेवक श्यामलखे सपनो
है किधौं यह सौतुखहै । बन अंवरमें अरविंद किधौं
शुचिइंदु कै राधिकाको सुखहै १३ ॥

स० ॥ दिन रैनमें भावनके रचे गोत उदोत मयी
नित जान्यो परै । हरिके टिग अंग अनंगमदें सुखसंग
पै कोकमें सान्योपरै ॥ हरिसेवक भावतीको मुखये श्रुति-
वन्तहवै चोर पिछान्यो परै । भोसुधा छविशिंधुते अर-
विंदु सो इंदु सो कैसे बखान्यो परै १४ ॥

क० ॥ भृकुटी तनी को लट नागिनि फनीको देव
प्यारे लाखि नीको लगै फैल्यो कंज फीकोहै । मैन कम-

नी को नैन बाणकी अनीको चोखे चैन रजनीको है
हुलसनि नीकोहै ॥ रूप रस नीको कहां रमा रस
को गज गति गमनीको सीव जीव मुरनीकोहै ।
वन्दनीको रुख हांस मंद नीको मुख चंदहू ते न
वृषभान नंदनी को है १५ ॥

क० ॥ खरी खण्ड तीसरे रंगीली रंग रावटी में त
ताकी ओर छकि रह्यो नैदनंद है । कालिदास बी
दरीचन कै भलकत छबिकी मरीचनकी भलक अ
है ॥ लोक देखि भरमै कहा धौं यह घरमें सुरंग म
जगमग्यो ज्योतिन को कंद है । लाल की माल है
ज्वालनकी जाल है कि चाभीकर चपला कि रवि
कि चंद है १६ ॥

स० ॥ फूलेइ फूलनको तुममोहिं पठावती फूले
सतपात हैं । फूलसी जातिह्वै होंहूँ तितै करतोरत
ल न मेरे अघातहैं ॥ राधेजु ताको कहा होंकरौं
शोचन मेरो तो कांपत गातहैं । फूलेइ फूलहौ ल
तीहौ मुख रावरो देखि कली भयेजातहैं १७ ॥

क० ॥ छहरै छबीली छटाछूटि क्षितिमण्डलपै
गि उजोरी महाओजके उबकसी । कवि पजनेश
मंजुलमुखीके गात उपमाधिकात कल कुंदन तबकस
फैली दीप दीप दीप दीपति दिपति ताकी दीपमालि
की रही दीपक दबकसी । परत न ताव लखि मुख म
ताव आव निकसी सिताव आफतावके भभकसी १८

स० ॥ सूरसों मांगि प्रभाप्रति पून्यो कि क्षीरस
में जाइ अन्हातहै । उज्ज्वलकै करनी अपनी रघुन

किये रंग लाल विभात है ॥ रोज की हारि चितै शशि
प्यारी सों जीतिवै को कितनो ललचात है । कौन कथा
कहिये मुखदेखत न्यायसों चंद्र सुफेद कै जातहै १६ ॥

क० ॥ सुधा के पयोधि करि मज्जन अरुण अंग के-
सर के रंगकी बनक जब गहैगो । सुकवि धुरंधरसकल
रूप सागरकी शोभाको सकेलि कामकेलि पुनिलहैगो ॥
सोरहो कलानि पूरि पूरण कलंकविन निशि दिन सदा
एकरूप जब रहैगो । येरे चंद्र शरद के राधेके वदन सम
तब तोसों कोऊ कवि कहैगो तो कहैगो २० ॥

क० ॥ सुंदर वरण राधे शोभा को सदन तेरो वदन
बनायो चार वदन बनायकै । ताकी रुचि लेनको उदित
भयो रैनिपति राख्योमति मूढ़ निजकर वगरायकै ॥ कहै
कवि चिंतामणि ताहि निशि चोरि जानि दियोहै सजाय
पाकशासन रिसायकै । याते निशि फेर अमरावती के
आसपास मुखमें कलंक मिसकारिख लगायकै २१ ॥

क० ॥ सूर मैं हीन होत उगत नवीन कैंके कुहूमैं
क्षीण होत शोभा दर्ईदियो है । कालिमाको अंक नहीं
पूरण कलंक विनु रहत निशंक अमी अमरन पियोहै ॥
विनुपग मृगरथ अचरजकीहै हृद लग्यो नहीं राहुरद
ऐसो रमनीयो है । भंजनजू इंदु एकअचरज पेखियत
कनकके लतापर उदय आनकियो है २२ ॥

क० ॥ सोरहो कलाकलित जानत जगत वैतो सुख
रूप इनमें वतीस कलाछाई है । पुनि हमें पूरण प्रकाश
को निवास होत येतो सदा पूरण प्रकाश अधिकाईहै ॥
सुधाको श्रवण कनसूक्ष्म उहांते इहां वचन सुधाकी

धार अति सुखदाई है । आनंदको कंद सुनि हेरी नंद-
नंद प्यारी चंदते अधिक मुखचन्द छवि पाईहै २३ ॥

क० ॥ सुखमाके सिंधुको शिंगार मनमंदिरते मथिके
सरूप सुधा सुखसों निकारेहै । करिउपचारताकी स्वच्छ-
ता उतार तामें सौरभ सुहागयुत हासरसडारेहै ॥ कवि
रसरंग ताको सार जोनिथाह्यो तासों राधिका बदनवेश
विधिने सँवारेहै । सुघर सँवारिके जो हाथधोइडारे सोई
यमभयो चन्द हाथ भारे भये तारेहै २४ ॥

क० ॥ घूँघट खुलतअवै उलटकैजैहै देव उद्धत म-
नोज जगयुद्ध जूटिपरैगो । ऐसीनसरोक सियाको कहै
अलोक बात लोकतिहूलोककी लुनाई लूटिपरैगो ॥ दै-
यन दुराय मुखनतरुतरैयनको मण्डलते मटकि चटा-
छूटिपरैगो । तो चितै सकोचि शोचि मोचि मृदुमूरि
हवै छारते छपाकर छतासो टूटिपरैगो २५ ॥

क० ॥ गोरमुख गोलहरे हँसत कपोल बड़े लोच
विलोल लोल लोनीलिये लाजपर । लोभालगे ला-
लखिशोभाकहै देवकवि गोभासे उठत रूप शोभा
समाजपर ॥ बादलाकीसारी दरदावन किनारी जगमग
जरतारी भीनी भालरिके साजपर । मोतीलगे को
रन चमक चहुँओरन त्याँ तोरन तरैयनकी तानी द्वि
जराज पर २६ ॥

क० ॥ जाकोलय सारदेश करतहै गंधवध ऐसो वा
सहजही गंधहै चमेली को । अंगमानो नारंगीके
लनकी रास अंग अंगनि में विमल विलास अलबे-
को ॥ चिन्तामणि पंकज कुसुम दाम अभिराम दिठ

रूप कामकला आनंद की केली को । जाके अवलोके
सब दूरिहोत दुखसी है नैनन को सुख मुख कमल
नवेली को २७ ॥

क० ॥ राजत रँगीली रंगभौन रस भाती तहां
भाँकत भरोखन ते जोतन को चंद्र है । ज्वालामुखी
मंदिर प्रसिद्ध सो दिखात वहां कैधों स्वर्ण शैलकी गुहा
में प्रभा कंदहै ॥ भनै रघुनाथ लोग लखत विचारै मनो
तारागण चंद्र है कि भान है कि छंद है । चंद्र ते हैदू-
नो दीप्ति कन्द सदापूर्नों सम होत है न उनो मुखवाला
वाल चंद्र है २८ ॥

क० ॥ मुख रुख सुखही के सुखमा सरोवरसों आ-
नन दिनेश चाहि चित ते न टारिये । हास को प्रकाश
और विविध विलास आगे मैलो लागै मुकुर निकर
वारि डारिये ॥ भख्यो करतार सुधासार पानी पानिपमें
मनसे तरत युग नैनन निहारिये । चंद्रमा न सर और
सकै कौन करि प्यारी तेरे मुख ऊपर कमल कोटि
वारिये २९ ॥

क० ॥ मोतिन की बेदी वर कनक जराव जरी पाटी
विच मांग मेरे मनको गोह्यो करै । भारे कजरारे अनि-
यारे वे तिहारें नैन रैनदिन मेरे हियरेई को गह्योकरै ॥
मीठे वे सुअधर कपोल मुसक्यानि लीन्हें मंद मंद मोहिं
कछु वातसी कह्योकरै । जितै जितै लखौ तितै तितै सुनु
चंद्रमुखी आनन तिहारो आंख आगेई रह्यो करै ३० ॥

क० ॥ बेनीनैन रोमावली यह रंग कालिमाहें कहत
कलंक मृग जेतो भेरे वारेहैं । तरवा अधर नख अरुण

वरण एतो सांभसमय प्यारेलालदेखियेउघारेहैं ॥ चाहि
कहा रहेहो अकाशमें प्रकाश हरि चाहौ किन जाहि
जाने जग उजियारेहैं । प्यारी को बनाय बिधि हाथ धोये
ताको रंग जमि भयो चंद हाथ भारे भयेतारेहैं ३१ ॥

क० ॥ वहजो प्रकाशमान लागत विभासरीमें येतौ
आठोयासहू विसल ज्योति धारिये । वाके अंकराजत
कलंक रंक रावसदा याके हृदयामेंवसै मोहन मुरारिये ॥
वाको वपु क्षीण दिनप्रति अवलोकियत याकेअंग पूरण
प्रभासो प्रेमप्यारिये । कहैकविराम छविधाम प्राणप्यारी
येजू राधे मुख चंद पै शरद चंद वारिये ३२ ॥

क० ॥ ग्रहनि में कीनो गेह सुरनि दै देख्यो देह शिव
सां कियो सनेह जाग्यो युग चाख्योहै । तपन में तप्यो
तप जलधि में जप्यो जप केशवदास वपु मास मास
प्रति गाख्योहै ॥ उडुगण ईश द्विज ईश औषधीशभयो
यदपि जगत ईश सुधा सां सुधाख्यो है । सुनि नंद नंद
प्यारी तेरे मुख चंद सम चंद पै न भयो कोटि छन्द
करि हाख्यो है ३३ ॥

क० ॥ कञ्चन खचित भूमि पद्मन प्रकाश चारु
राजति अनूप ओप देखिये प्रभा भरे । भानु कुल कम-
ल दिनेश सम शेष राम निमिद्वंश कैरव सुसोम से
सुधाभरे ॥ गंगाधर युगलकिशोर वर आसन पै तेज
के मरीचिनके वीर्यम परापरै । रूपके सड़ाका मुखचंदसे
जलूसजाति छूटिके छपाकरके ऊपर छरापरै ३४ ॥

क० ॥ केसरि को कञ्चन ने कञ्चन को चम्पक ने
चम्पक को जीत्यो प्यारी रूप ने असंद है । गजगति

छीने भूप भूपगति छीने हंस हंसगति छीनिवे को तेरी
गति मंद है ॥ सब हारे बानन ते वान पञ्चवानन ते
कृष्णलाल तोहि देखि शीभे नंद नंद है ॥ गजमुख मूंदे
कञ्ज कञ्ज मुख मूंदे चन्द चन्द मुख मूंदिबे को तेरो
मुख चंद है ३५ ॥

क० ॥ अवनि अकाश के प्रकाशित बनाये पला दिश-
नकी जोती कान्ह ओज अति ऊरोभो । मारुतकी दंडि-
का बनाई सुघराई सुघर सोनार चतुरानन सुरुरोभो ॥
तोपै सुनु राधे या अनोखी तौल तौलीगई गयो वह
ऊंचे यह नीचे आनि भूरोभो । तारागण यदपि चढ़ाइ
समुदाइ दीन्हे तदपि न चंद मुखचंद भरिपूरोभो ३६ ॥

क० ॥ शोभासिंधु निरखि चकोर उठे चौक चहूं
जाने कियो शर्द चन्द्रमाको मुख फीकोहै । सोहै चारु
चंद्रिका समेत वर वेंदाभाल अमित प्रकाश आसपास
दामिनी को है ॥ कहिरघुनाथ दामिनी को द्युति देखि
दबी मान मिटो रोहिनी सुभान भामिनीको है । कीकौ
कहौं टीकौं तीनलोकको विलोक्यो हम जैसो मुखनीको
घनश्याम कामनीको है ३७ ॥

क० ॥ विमल विलक्षण विचित्र चपलाते अति कैधों
यह सिंधु सुधासिंधु जामनीको है । कैधों है शिंगार जा-
मनीको धरनी को भाग कैधों यो सुहाग शिवाशम्भु भा-
मिनी को है ॥ कहि रघुनाथ है रमाको अनुराग किधों
कैधों यों विभाग आदि ब्रह्म स्वामिनी को है । कैधों
मानसर सुखमा को कै क्षमाको धाम कैधों मुखनीको
घनश्याम कामिनीकोहै ३८ ॥ इतिमुखवर्णनसम्पूर्णम् ॥

अथ सुख सुवास वर्णन ॥

दोहा ॥

मदन जीविका सुखजननि मनमोहनी विलास ॥

निपट कृपानी कपटकी रतिसुखमा सुखवास १

क० ॥ कैधों भयो उदित अनंग जुको अंग उर
सुरभित अंगराग दाहेदेह दुखको । कैधों चितचातुरी
चमेली चारु फूलिरही फैल्यो बास केशव प्रकाश कर
सुखको ॥ कैधों परिमल प्रेम पूरन वतंसनि को कैधों
वरवानी मनमालाके वपुषको । कैधों पाइ प्राणपति हृदय
कमल फूल्यो ताको गंध बंधुकै सुगंध सुखमुखको १ ॥

क० ॥ पूरि पूरि मल मलयाचल उरोजनि को निज
निरहारी है कमल पद पानिको । धुनि धुनि तपनहै गंध
फली नासिकाको अधिक अमोद रद कुन्दकलिकानि
को ॥ धूपलौ अनूप आवै बोलेते बदन बास बलिभद्र
दई तैं मधुप सुखदानि को । सोंधे भीजी भारती गुलाब
से प्रसेद कन तेरोमुख दीपत सुगंधनिकी खानिको २ ॥

क० ॥ याही सुखवास कमलनकी प्रतीतिदेति याही
सुखवास केतकी सो मधुमंत है । याही सुखवास बेलि
मालती को मारै मान याही सुखवास कामी होत जन
संत है ॥ याही सुखवासन नवेली तन कैसी फूली याही
सुखवास सखी सोहती अनंतहै । तेरे सुखवासही सो
सकल सुवासिरह्यो वारहौ महीना भौरमानत बसंतहै ३ ॥

क० ॥ सोने में सुरंग सब वैसई लसत अंग जगमग
जीवन जवाहिरसों संगतास । रूपतरु कण्ठ काम कंदुक

से सोहै कुच चंद्रमासे अनिन अमंद युति मंद हास ॥
शोभाकी निकई देवकामकी निकईहूते नीके भये भूषण
भ्रमर भ्रमै आसपास । चौगुनी चटक तनचीरकी चटक-
हूते सौगुनीसुगंध तेहै मुखकी सहज वास ४ ॥

॥ स० ॥ सुगंध प्रवाहवहै अबलामुख ज्यों मलयगिरि
गंधप्रकासी । चस्पचमेली गुलाब जुहीजुही कुंकुम केसरि
पाई सुवासी ॥ चंदन औ घनसारहि पैठि कियो इतवैठि
बडो ताप्र कासी । भूतलते भरि मैत्र विलोकहि मुक्तभये
लहि नाकके वासी ५ ॥ इति मुखसुवासवर्णनसम्पूर्णम् ॥

तिसिद्ध की विद्याया — नाम । विद्याया प्रदीपके

॥ ४ ॥ अथ शीतलादाग वर्णन ॥

विद्याया प्रदीपके विद्याया प्रदीपके विद्याया प्रदीपके ॥ ४ ॥

श्रीक० ॥ शीतलाके दाग साधि शुभलगन मुहूरत अ-
वधवांधि त्रिभुवन जीतवेको चक्र उपजायेहै । कैथोंपाति
लालनकी लागी विधुमंडलमें मंडल अखंडलके तन मन
भायेहै ॥ योवन दिनेशके उदयमें खुल्यो कंजनाल तापे
मनोओसके कनूका विथरायेहै । मोहन वशीकरके यंत्र
लिखिराखे कैथों दाग शीतलाके मुखऊपर सुहायेहै १ ॥

क० ॥ चन्द्रकी मरीची कानतेरि विथराय दीन्हों
कैथों हीराफोरिके कनूका धरि धरिगये । कैथों काममंदिर
की अंभरी वनाई विधि कैथों सोनजुहीके पुहुप भरि
भरिगये ॥ कामिनी मनोरथ आलवाल शिवनाथ मेतक
मतंगमाले बेलि चरि चरिगये । अमल कपोलनपैदाग
नहीं शीतलाके डीठिगडि गडिगई गाइपरिपरिगये २ ॥

क० ॥ भिलमिले कपोलनपै कुण्डल सुडोलनपै

कोकिला सुवोल्नपै वारिवारिकीजिये । लालमुख पान-
नपै चंद्रमासो आननपै कमलपत्र काननपै प्रेमरस पी-
जिये ॥ कोरदार नैननपै चित्तचोर सैननपै माधुरी
सुवैननपै अमृतरस पीजिये । भागभरे भागनपै कैके
अनुरागनपै शीतलाके दागनपै लागनमन दीजिये ३ ॥

क० ॥ पूरण मयंक कैधों मेटिकै कलंककियो अंकमें
समेटिकै नखत बडभागहै । कैधों रंगरेज मैन बांधनू
विचित्र बांध्यो कैधों रूप क्षीरमें उफनिआयो भागहै ॥
कैधों नये शोभाके ब्येहै बीज रचि रचि कंचनकी भूमि
में जडित पुष्परागहै । नाथ अनुरागहै कि फूल्योमैन
वागहै कि सौतिको सुहागहै कि शीतलाके दागहै ४ ॥

क० ॥ भागभरे आनन अनूप दाग शीतलाके देव
अनुराग भियासे भमकतहै । नजर निगोड़िनकी गड़ि
गड़ि गड़िपरे आड़ेकरि पैनडीठ लोभ लमकतहै ॥ योवन
कृशान मुखखेत रूप बीजबोयो बीजभरे बूदन अमंद
दमकतहै । बदनके बेभेपै मदन कमनैतीके चुटारे शर
चोटन चटासे चमकतहै ५ ॥

क० ॥ कैधों स्वेद अहर विचारिकै बनायो विधि
कामकी कटोरी कैधों धोय धोय राखीहै । मनत दिवाकर
नखत व्योमउडि कैधों आननपै बैठिकै सुधाके स्वाद
चाखी है ॥ कैधों श्यामसुंदर डिठौना गड़ेगाडभये जुही
के प्रसून छवि देखि देखि माखीहै । शीतलाकेदाग राधे
मुखमेंलखात कैसेसांवरो प्रसंगकेप्रस्वेदसाथ साखीहै ६ ॥

क० ॥ कंचनबदन तेरो तामें दाग शीतलाके कैधों
नेन जरियाने चूनी जरिधरीहै । कोमल कपोल कैधों

श्रमके पसीजे भीजे आनंदके कनक कैधों ब्रवीछीटै परी
है ॥ वारिडारों रति बलिहारिडारों रतिपति सुखकीघटा
ते मानों प्रेमबूँदैकरीहै । छोटी छोटी गोटी तेरेमुखपै सु-
घरप्यारी मानों लावा लाखन नखत ज्योति हरीहै ७ ॥
इति शीतलादाग वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ मुखराग वर्णन ॥

दोहा ॥

अरुणोदय राजीव में अंगराग अनुराग ॥
रूप भूप रतिराज सो राजत सुखमुख राग ३
क० ॥ कैधों अनुराग राग राजसको रूप निज कैधों
प्राण पंकज पराग द्विज न्हाये है । तन तरुणाई की
अरुणता उदोत कीधों श्री के गेह शिरीखण्ड कुसुम
विछाये है ॥ शोभा तीतें शोभियत देखि मन मोहियत
तीनों लोक नारिन निरखि नैन नाये है । त्रिय तेरे वदन
तमोल रुचि राची कैधों बलिभद्र वाणी को बसन
पहिराये है १ ॥

क० ॥ कैधों कमलाके गेह कमलकी लाल माल दि-
वाकरताकी ताकि भलकत रंगहै । कैधों अनुराग रह्यो
फैल बानी रानीजूको जब काहू काहूप्रति करत प्रसंग
है ॥ कैधों आली तेरे लालओठनकी लालीछाई मनभाई
मेरेबनमाली जूके संगहै । मोहत अनंग कैधों शोभाको
सुभग अंग कैधों प्यारी तेरेमुख पाननको रंगहै २ ॥

क० ॥ केशवदास राग रागनीन को कि अंगराग

कैधों द्विज सेवतहै संध्या भली भोरकी । अरुण रदन
 बहु रतनकी खानि कैधों तिनकी भलक छलकनि चहुँ
 ओर की ॥ कैधों रेखा भूषणके मणिन की चाक चक्र
 चारे लेति चित्त चाल तेरे चितचोर की । लागि रह्यो
 अनुराग कैधों नाह नैननि को कैधों रुचि राची ते
 तरुणी तमोर की ३ ॥

क० ॥ हरी सारी सोहति किनारी वारी नेह भीनी
 देहके वरण सुवरण द्युतिपीरीकी । कलानिधि उदी आं-
 गी कुच उचकन आबी कंचनके भारलचै कटि ज्यों
 भभीरी की ॥ सासेहीकी नथ गजमुकता तमासेही के
 नासिका वनक कसकीर छविकीरीकी । लहलहीलाली
 आली अधरन पाननकी फावीरी निकाई तेरे दशनन
 वीरी की ४ ॥ इति मुखरागवर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ दशन वर्णन ॥

नेक हँसोही बानि तजि लख्यो परत मुख नीठि ॥
 चौका चमकनि चौध में परति चौधि सी दीठि १
 लाल चलति तेहि ठौर वा बाल दशन की बात ॥
 श्रवण सुनत ही सीप लौ मुकुतन ते भरि जात २
 मोल लेन को जगत जिय विधि जब हरी प्रवीन ॥
 राखे विद्रुम के डवा लैद्विज मुकुत नवीन ३
 दशन भलक में अरुणई लखि आवत मन मांह ॥
 परी रदन पर आय कै अधरन रँग की बांह ४

अरुणदशनयुत शुभलसत सुदती मुख इहिभांति ॥
 वैठी जनु विच कमल के इन्द्रवधुन की पांति ५
 अरुण दशन तुव वदन लखि को नहिं करै प्रकास ॥
 पुहुमी सुत आये पढ़न विद्या वानी पास ६
 दशन माहिं कैसी वसी घड़ी मिसी की नीक ॥
 कली चमेलिन में मनो गुलसोसनि की लीक ७
 क० ॥ कैधों कली बेलाकी चमेलीसी चमकपरै कैधों
 कीर कमलमें दाड़िम दुरायेहै । कैधों मुक्ताहल महावर में
 शखेरंग कैधों मणि मुकुर में सीकर सुहाये है ॥ कैधों
 सातों मण्डलके मण्डल मयंक मध्य बीजुरी के बीज
 सुधा सीचिकै उराये है । केशवदास प्यारीके वदनमें रदन
 छवि सोरहौ कलाको काटि वत्तिस बनाये है १ ॥
 क० ॥ कैधों दाने दाड़िम के पांति पांति राजत हें
 कैधों इन्द्रवधू की जमाति जमि बैठीहै । भनत दिवाकर
 सुस्वच्छता कहाँलौ कहाँ श्वेत अनुमान मुख तारागण
 पैठी है ॥ कैधों विधि हीरा खरसानपै खरादि शुभ्र साधि
 साधि सुन्नते गोल कील ऐंठी है । राधिका तिहारे
 दंत दामिनि विलोकि व्योम समता न पावै याते दूरि
 दूरि सैठीहै २ ॥
 क० ॥ कैधों पद्मरागनकी पंगति विशाल कैधोंहरिन
 के जालकेप्रवाल अलबेलीके । कुंदकलिकाहै पुंजकुसुम
 जपाहै कैधों दाड़िमकेबीज कैधों पुहुपचमेलीके ॥ भने
 रघुनाथ शुभ्र स्वच्छ शुचि शोभावान तापैलसैपानलाल
 रंग रसरेलीके । मोहतिहै कंत यो दुरंति द्युति सौतिनके
 अति द्युतिवंत दंत निरखि नवेलीके ३ ॥

क० ॥ कैधों कली बेलाकी चमेलीकी चमक चोका
कैधों अनवेध मुक्ताहल बसाये हैं । हीरनकी खानि यह
जानिये कुशलसिंह कैधों मणि मरकतके सीकर सुहाये
हैं ॥ हंसनके छौनाये पढ़नआये बाणी पास कैधोंयश
बीज प्यारीमुखही जमायेहैं । दामिनीचमक कैधों धसी
है दर्शनआनि सौरहौकलानि काटिबत्तिसौबनायेहैं ४ ॥

क० ॥ कैधों कुन्द कलिकाकी अवली अनूप कैधों
बाणीकी विपंचिके सुधारि धरे सारिहै । श्वासाके सदन
शशि शिशु आये श्रीकेकाज कीधों मुख वारिजमें वारि-
जके वारि है ॥ भलकनि रुचिर बतीसीहीर बलिभद्र
चमकत चारु बिज्जुरीके अनुहारिहै । अमृतके कणतपो-
धनके विमल मन तरे ये रदन चंद्रबदन मँभारिहै ५ ॥

स० ॥ कामके बाणनकी कल कान्ति भरी कैधों कुंद
कलीदरशाही । कै सुखमाके सुसीपके ये सुकुमार कुमार
लसैसँग माही ॥ कै मनहारी अनंदके खानकी हीरनकी
युग औलि लखाही । भाषै मुनी रघुराज किधों रद
रुक्मिणी के हृदशोभा सोसाही ६ ॥

स० ॥ कोवरणै उपमा कविगंग सु तोहीमें हैं गुण
ऊरवसीके । जादिनते दरशे मुसुकानिसो काहभयेब्रश
तेरी हँसीके ॥ चन्दसे आननपै छबिछाजत ऐसेविराजत
दंत मिसीके । फूलनकी फुलवारिनमें मनो खेलत हैं
लरिका हवसीके ७ ॥

क० ॥ कैधों मित्र मित्रमें बसाईहै किरण ताते फल्योई
रहत अनुमान यह पायोहै । कैधों शशिमण्डलमें भाई
उड़ मंडलकी कैधों हासरस निज नगर बसायोहै ॥ द-

शनकी पांति कुंदकलिनकी भांति आशी सोहतहै कांति
गुण कोविदन गायोहै । मानहुँ विरंचि तेरी वानीको
चतुर रानी दोलर कै मोतिन को हार पहिरायोहै ८ ॥

क० ॥ कैधों मुकताहलहै पहलके आवदार जावक
रंगाय अरविंद मुख भरे हैं । कैधों लालविद्रुम अमोल
मणि माणिक के दामन जवाहरी डत्रासे खोलि धरेहैं ॥
दाड़िमके बीज कैधों सुधामें सिराये हंस सदन सुधाकर
के मंदिर में भरे हैं । राधेको रदन कैधों कामके सदन
माहँ मदन जरीयाने जवाहिरसे जरहैं ९ ॥

क० ॥ कैधों द्विजराजी द्विजराज जू को सेवत है कै-
धों यहशारदा स्वरूपदरशतहै । कैधों इन्दिरा के चारु
हारकी अरुण मणि चिन्तामणि इंदिरा के घरमेंलसत
है ॥ कैधों विधुमण्डलमें दामिनी विराजतिहै ऐसी कळू
सुखमा समूह निकसतहै । विमल वदन बीच दन्तनकी
द्युति कैधों कमल के कोस बीच दाख्यो विलसतहै १० ॥

क० ॥ फूलि फुलवारी रही उपमा न जात कहीं कैसे
कै सराहों तामें ज्योति अधिकानी है । आलम कहत
हैरी मोतिनकी पांतिधरी हीरन की कांति छवि देखिके
लजानी है ॥ दाड़िम दरकिगये इनके सम न भये रवि
की किरण कैसी चमक बखानी है । तनक हँसनमें दशन
ऐसे देखियत दिपत नक्षत्रमानों दामिनी दुरानीहै ११ ॥

स० ॥ अलि कामकला करि काहुके संगते कामिनि
भोर उठी भलकै । छविसों अरसाय ऐंड़ाघ चले लटि
कै सुखदायकही अलकै ॥ जमुहातहि दंतन सोने की
सेव मयूषन सों मुख में भलकै । सुप्रभाकर देखि

प्रफुल्लित है निकसी मनो कंज कली जलके १२ ॥

स० ॥ दाडिमके दाने आनि भुलाने मुखही लुभाने
छवि छलकी । कैधौं मुक्ताहल खाय हलाहल भये को-
लाहल लखि भल की ॥ भौरनके छौना करत बिछौना
करतनगौना पददलकी । शिवनाथ नरीची रतनकरीची
चंद्र मरीची बलबलकी १३ ॥

स० ॥ दाडिम देखि तपोवन सेवत माणिक सिंधु
समाय गयेहै । मंगलके कुलके मनो बालक नूरकहेये
अकाश छयेहै ॥ तूतरुनी रंग दंतनते सुसुनीनहूके मन
मोललये है । लाल कहा उपमा बरणे रदलाल लखे
रदलाल भयेहै १४ ॥

स० ॥ पांयधुवावतही नंदलालसो ऐंठिअमेठन रंग
भरीसी । चारु महाछविकी कवितासी लसैरसमें दुलही
उमहीसी ॥ सीवीकरै सो भ्रानके भांपत देहदिपै दिन
नेहयो शीसी । दंतनकी छुति बाहिरहवैकर जाहिरहोत
जवाहिर कीसी १५ ॥

स० ॥ वारिजमें बिलसैं अलिपांति किधौं अलि अ-
क्षर मंत्रवसीके । मैनमहीप्र शिंगारपुरी निजबांह बसाई
है मध्य ससीके ॥ आनंदसों दरशी दशनावलि श्याम
मिसी मिलि ऐसी लसीके । फूलनकी फुलवारिन में
मनो खेलतहैं लखिका हवसी के १६ ॥

स० ॥ घूंघुट भीने दुकूलकी भूलैं भुकै दृग बंकित
काननकै । युग भौंहन बीच थकयो मन गोहन ओठन
लाल रह्यो रंग चवै ॥ मंदहंसै रुख नागरिको मुखचोपन

की उपमा तब है । तिमिरावली सांवरे दन्तनके हित
मैन धरे मनो दीपक है १७ ॥

क० ॥ सुधाको समूह तामें दुरेहें नक्षत्र कैधों कुंदकी
कली की पांति वीन वीन धरीहै । आलम कहत ऐन
दामिनी के बीज बये बारिजके मध्य मानों मोतिन की
लरी है ॥ स्वातिहीके बुंद विवि विद्रुममें वासलीनो ताकी
छवि देखिमति मोहनकी हरीहै । तेरेहँसे दशनकी ऐसी
छविराजतिहै हीरनकी खानि मानो शशिमाहिं करीहै १८ ॥

क० ॥ सूक्ष्म सुवेषसुधी सुसन बतीसी मानों लक्षण
बतीसहूकी मूरति विशेषिये । रातीहै रतीक रुचि श्वेत
सब किधों शशिमण्डलमें सुरनकी सभा अवरखिये ॥
किधों पिय युगति अखंडताके खंडिवेको खंडनके केशवं
तरंककुल लेखिये । दीनी दूनी कला विधि तेरेमुखचंद्र
को सुन्यायही अकाशचंद्र मंद द्युति देखिये १९ ॥

क० ॥ किधों सातौं मंडलके मंडन मयंकमधि बीजुरी
के बीज सुधा सींचिके उगायेहैं । किधों अलवेली की
चँबेली की चमक किधोंकीर कमलमें दाड़िमदुरायेहैं ॥
किधों मुकताहल महावरमें राखे रँगि किधों मणिमुकुर
में सुधर सुहाये हैं । केशोदास प्यारी के बदनमें रदन
छवि सोरह किरण काटि बत्तिस बनायेहैं २० ॥ इति
दशन वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ रसना वर्णन ॥

दोहा ॥

रसना कोमल वरणिये कोविद अमल अमोल ॥

केशव देवी रसनकी रसहि श्रवत मृत बोल १

क० ॥ कमल बदन मध्य कमलाके काज छवि राखी है कमलदल तलप सुधारी है । कीधों बलिभद्र षट तंत्रन की लिपिय है कैधों षट स्वादन की परखन हारी है ॥ ललित तमोर रंग गुणकी कसौटी मनो मंत्रन की मूरि परमारथ की प्यारी है । रसिक रसीली प्यारी तेरी मृदु रसनाकी पंद्रहौ रसनकी रसानन्द कारी है १ ॥

क० ॥ कैधों विधि रसनाकी रची है कसौटी यह अरुण वरण अचरज मनमें गह्यो । कैधों तेरीवानी ठकुरानी मनमानी ताकीरतेफूल तेजरंगजानत कछूकह्यो ॥ सूरत सुकैधों बोलरतन अमोल दानदैदे सबही को सुख दुख सबही दह्यो । नेकदूबखानिसकै काहूको सो वसना जोरस तेरीरसना सो रसना कहुंलह्यो २ ॥

क० ॥ कोक कला पढिबेकी पोथी सी बनाई काम कैधों नवों रसनकी भूमि उपजाई है । परम प्रवीनरूप भारती है मेरेजान कंठते निकसि मुख बारिजमें आई है ॥ प्रेमकीसी जंत्र है मयंक मुख सम्पुटमें पूछे कहि बोलै नूर एती प्रभुताई है । रानी षटरसनकी सुबरन उरझानी एतो रससानी तऊ रसना कहाई है ३ ॥

स० ॥ मणि पारस ज्यों हरिसम्पुटमें मणिभवन दिवा जनु साजतु है । तिहिकी समता न चढ़ै चितपै जिहि देखि रमारति लाजतु है ॥ रघुनाथ भनै पिय प्राणप्रिया द्युति दामिनसी छवि छाजतु है । मृदुबैन पियूष श्रवै जिहते रसना मुखचंद्र विराजतु है ४ ॥

क० ॥ शारदाकी सेज कैधों सुखकी सहेली सोहै रस

कीसी रानी कैधों कवित विधानी है । कोमल अमल अमी अंशही चुराय कैधों कमला कलासी चारु चन्द्रहि छिपानी है ॥ हरिसों कहत बैन हाँसरस रीति प्रीति नीति निपुणाई कैधों निगम न धानी है । कुशल सिंह कैधों अरविंद में निवास कीन्हों विधि की वरंगना सरस वरदानी है ५ ॥

क० ॥ सप्तस्वर सागरकी नौकासी बनाई विधि कैधों सुधारस पानकरै की पतूषी है । आगम निगम इतिहास औ पुरान सत्र काव्य व्याकरण कों बखानत विदूषी है ॥ विद्या गुण धन भयो चुपतारा लग्यो तहां खोलिबेकी तारी जीभ उदर पियूषी है । नूरकहैयाही सब अंगकी शिरोमणि है सदा हरियश भाषे मधुर मद्दूषी है ६ ॥

क० ॥ गूढ़ गुण ग्रंथके प्रकाशकी करन हारि भूठ सांच कहेदेत सबके मनसकी । नादवेद भेदके उचारि देत आंखरिन कोमल रसाल जात वसुधाके बसकी ॥ भरमी सु कवि पिय मनकी हरनहार सुधासों सुधारी जान गानहार जसकी । रसनाकी उपमान होत कोटि रसनासों मनकी सचौटीकै कसौटीवत रसकी ७ ॥

क० ॥ ईगुर गुलालहूकी हारी प्रभुताई और जेती हौ गनाई अरुनाईको तुमनसों । रोरी लाल फूल जाकी समतान तूल इन्हें कहापरी भूल भयो विधिको कुमनसों ॥ शम्भुराज कहे याकी उपमा कहालोकहौ ध्यानहूके खोजे नहीं पावत है मनसों । आनन अमल बीच रसना विमलदेखो मानहुं कमलकोस जपाके सुमनसों ८ ॥

क० ॥ देखी ना परतिदेव देखिवेकी परीवानि देखि
देखि दूनी हियसाध उपजति है । शरद उदित इन्दु
विन्दुसो लगत लखे मुदित मुखारविंद इन्दिरा लजति
है ॥ अद्भुत पियूषसी मधुरवानी सुनिसुनि श्रवननि सुख
होत भूखसी भजतिहै । मंत्रीकख्यो मैन पर तंत्री कख्यो
वैननि को बिनातार तंत्री जीभजंत्री सी बजति है ६ ॥

क० ॥ देखतहीं आधापल बाधी जाति बाधा सब
राधाजू की रसना सुरूप कीसी रानी है । आछी आछी
वातन की जननी जगमगात रसनकी देवी किधों पचि
पहिंचानी है ॥ केशोदास सकल सुवास कीसी सेज
किधों सकल सुजानता की सखी सुखदानी है । किधों
मुख पंकज में शक्ति कौनो सेवें द्विज सविताकी छविता
की कविता निधानीहै १० ॥ इति रसना वर्णन संपूर्णम् ॥

अथ बार्गावर्णन ॥

दोहा ॥

वानी बीना वेनु अलि सुख पिक किन्नर गान ।
शोभन शुभवहु अर्थ मय केशवदास बखान ॥

क० ॥ अमित लजीली शील सुमति सजीली सुच
सुरस शृंगार में रंगीली सुख दानी पै । बदन सुधा
करते कढ़त सुधासनी सहित सुवास रूपरास ब्रज
रानी पै ॥ भनैरघुनाथशुद्ध सारथ सदेव सुनै रभा रति
सकत न वातकर स्थानी पै । वारों बरवानी बीन को-
किल कहानी कहानागरी नवेलीकी सनेह मृदुवानीपै १॥

स० ॥ आजुलखी ललना पढिबे में कहा कहौंहूँ

भयो अनुरागी । वारक तो पहिले सुनिलेत है सुन्दर
बोल गुरुते सभागी ॥ अक्षर द्वे मुँहते सुनिये उचरे
फिरि बोल सुधारस पागी । सोहतयोसु पढावन हारको
आपुही मानो पढावन लागी २ ॥

क० ॥ केकीपिक कोकिला अवाजन पै गाजपरै कै-
लिया लजाय छोड़ि सौरभ पराई है । मनत दिवाकर ति-
लोत्तमा न ढूँढेको कोउ रुरेराग सुने सबसरी शरमाई है ॥
कैधों आय शारदा निवास कियो रसना में बातनकेव्याज
बोली भरत मिठाई है । राधिकाकी बानी कैधों सानीहै
पियूषरस देत बरदानी ऐसी वेद मुनिगाई है ३ ॥

क० ॥ कामकी दुहाई की सुहाई सखी माधुरी की
इंदिराके मंदिर में भाई उपजतिहै । सुरनकी सुरीकैधों
मोदकी महोदरीहै चातुरीकी मातु ऐसी बातन सजति
है ॥ राग राजधानी अनुरागनकी ठकुरानी मोहे दधि-
दानी केशो कोकिला लजति है । ऐरी मेरी ब्रजरानी
तेरी वर बानी कैधों बानीही की वीन सुख मुख में
बजति है ४ ॥

स० ॥ धुनि कैधों विराजि रही मन मोहनि मेंन के
वीन वे वेसवनी । विधि रावरेके वशकी बेलिये विरच्यो
बसीमंत्र कैधों अवनो ॥ रघुराज कहै कियो रागमयी
प्रकटी सुर साजहुकी सजनी । मृदु रुक्मिणिके मुख
चन्द्रते कैधों कढे वरवानी सुधासों सनी ५ ॥

स० ॥ मीठी अनूठी कढे बतियां सुनिसौतिनकी छ-
तियां दरकी परे । कोकिलकुकनिकीका चली कल हंसन
हूके हिये धरकी परे । प्यारी के आनन तेरो कढे तिहि

की उपमा द्विजको फरकी परै । धार सुधार सुधाधरते
सुमनों वसुधा में सुधाढरकी परै ॥

स० ॥ फूलनसी भरि शूलहरै हरि जीवन मूल है
श्रौनके ईठी । दूरिलौ दौरत दन्तनकीद्युति ज्यों अधरा
उधरै अतिनीठी । तोष भरी मुसका हट मोद सुहोत
है सौति सबै लखि सीठी । ऊख पियूष मयूष की भूख
मिटै वा त्रिया बतियां सुनिमीठी ७ ॥

क० ॥ जाके एकअंश हंसबाहिनी प्रशंसतिहै किन्न-
रीसु कौन जाकी नहीं सरकरि है । और कोकिला सौ
कोकलाहूं एक जाने नाहिं सूरत सुकवि गनतीमें कौन
धरिहै ॥ बनिबेन तबलौं बजाय लीजै प्यारेलाल फेरि
तुम्हें उनहूं की चरचा बिसरि है । सुधि बुधि सकल
हिराय जैहै जानौ यह जबैमेरी रानीजूकी बानी कान
परि है ८ ॥

क० ॥ विमल वरणहीकी कैधौ यह पुष्पदाम आख-
रअरथ कैधौ आलय पयूष है । दर्पक दुरेफहूकी पंख-
निकी सुरधुनि सुरन की माधुरी की मधुर मयूष है ॥
पियमन साधिवे को कहौ अनहद धुनि बलिभद्र जाहि
सुनि भूलीनींद भूखहै । प्रेमरस सानी तेरी सुखकी नि-
धानी बानी रागनि की रसना की रसहीकी ऊखहै ९ ॥

क० ॥ सहज भरोखा मांभ बोलत रसीले तेरेसुधा
कीसी धार धौराहर में धसतिहै । नीचे खरे सुनत प्रवी-
णलोग वीणजानि कहतगबेले इहां कोकिल बसतिहै ॥
कालिदास मुखते वरण मुकता हलसे निसरत जबै रस
रंग बरसति है । येरीमेरी रानी हरिजूके मन मोहिबे

को नेहकी निशानी तेरी बानी विलसति है १० ॥

क० ॥ सोतिनको होत दुख सखिनको सुखसुने होत
गुरुजननि को गुनको गुरुरहै । कहैकवि देव लाखलाख
भांति अभिलाख पीकेउर उमगत प्रेमरस पूरहे । तेरो
कल बोलकल भाषनिहै स्वाति बुन्द जहां पायपरै तहां
तैसोई सरूरहै । व्यालमुख विष और पियूषज्योंपपीहा
मुख सीप मुख मोती मुख कदली कपूरहै ११ ॥

क० ॥ सुधाके समुद्रकी लहरसी कढ़तरहै याही को
सुनाय लाल कीनेतें अधीन है । वन उपवन बैठि आप
को दुरावै याते मेरेजान यहै कलकण्ठ कण्ठ हीन है ॥
बलदेव ऐसी न रचीहै न रचेगो विधि सोतिनकी उपमा
करन लागी क्षीनहै ॥ कमलके कोषपैठि गुंजरत भौर
कैधों बानी मांभ बानीजू बजाई मानो वीन है १२ ॥

क० ॥ ऐसो नीको बोलिवो सिखायो सखी कौने तोहि
सीखवे को होत सरस्वती हूकी मतिहै । कुधरें कुहुकि
सबहीते सरकस पिक पर्योवरकस करकस अति रति
है ॥ केकी कोक कलरव लागति विकलरव अलिअल-
खोहै धुनिसुनि भये नतिहै । येरी मेरी रानी रीभू मोहे
दधि दानी तेरीबानी आगे वीनाहूं कमीनासी लगति
है १३ ॥ इति बाणी वर्णनं सम्पूर्णम् ॥

अथ हासी वा मुसक्यान वर्णन ॥

क० ॥ हासी वा मुसक्यान वर्णन दोहा ॥

अधरनविस मुसक्यानि तुवतजीन प्रकृति निदान ॥

ज्यों कृपान अमृत धरे तऊ सारि है प्रान १

सुदती के मुसक्यात यों अधरन आभा होति ॥
 मनहुं मानिकन पै परी आय दामिनी जोति २
 दंत कथा वा दशनकी और कही नहिजात ॥
 फूलभरीसी छुटत जब हँसि २ बोलति बात ३
 पियत्रिनोद युतबातसुनि ललकिहँसी सुखकंद ॥
 भइ राका रजनी शरद चंद्र चांदनी मंद ४
 बचनरचित हँसि माधुरी गुनसों गूथि रसाल ॥
 पहिरावति तिय पियमनहिं मनोसुमनकी माल ५
 विहँसिवचन प्यारी कहति सुधा नहीं समतूल ॥
 मनो कमलके कोशते भरत मालती फूल ६
 क० ॥ ओठनके बीच छवि दंतनकी भलकत कमल
 के कोश चपलासी चारु लसीहै । मंद मंद जोति होति
 उदित अनेक भांति कला कलानिधि मुखमानो लौटि
 बसीहै ॥ ऐसीसेत अंचलमें नीकी छविलसैनूर शरदके
 चंद्र ऐनचन्द्रकासी रसी है । कैहै बतराने कहा कौन
 जानै एरी वीर नेक मुसुकानेभई सौतिनकी हँसीहै १ ॥
 स० ॥ अधरानहिमें मुसकी वह बाल बिलोकत प्रात
 को बारिजलाजै । दंतनकी भलकी छविनेक सो दाडिम
 दामिनको मदभाजै ॥ माधुरता बरसै शिवनाथ सुधाधर
 सी परसी छवि छाजै । आनंदकंद सपूरण चंद्र मनो
 सुखरूपी विनोदन साजै २ ॥

क० ॥ कोमल अमल कोश कमला बसत ताके भू-
 षनकी जोति कैधों जगत प्रकासीहै । कैधों चपला के
 चखचौंधिवेको दयानिधि कीन्ही तुव नैननि जुगति
 अति खासीहै ॥ कैधों महिमोहनीके मोहिवेको मोह

मई चतुर विरंचि नई चातुरी निकासीहै । कामको सुधा
सी चल चित्तनको फांसी कीधों एरी प्राणप्यारी या
मधुर तुव हांसीहै ३ ॥

क० ॥ कोकनद कली जैसे खिलत बयारिलागे मंद
मुसक्यान उसकान है चमेली की । आरसी में भानुके
प्रकाशको उजासहोत जैसे दीपमालदिपै दीपति हवेली
की ॥ भरमी सुकवि द्युति दामिनीसी कौंधति है चांदनी
सी चहूँ और बातमें सहेलीकी । चंदकी चमक चकचौं-
धति दशन द्युति पियमन बसन हँसन अलवेलीकी ४ ॥

क० ॥ कैधों द्विजराजनकी तपस्या को तेज ये है
कैधों रसन अग्रकीरतिको वासुहै । बलिभद्र ताकीछवि
रंग शुभ्र देखियत कीधोंसर आपगाको आनन में वासु
है ॥ सुरनकी ज्योति सुरगनकी मरीचकाकी विचका
सुबीच चतुराई को प्रकासुहै । पियपाय पारनको कैधों
निजचन्द हासु सुखके सुमनके कृशोदरीको हासुहै ५ ॥

क० ॥ पूरत पियूषयो प्रकाशत प्रकाश पुंज पूरण
करण कान प्राणपति साधाकी । सुखद सदाही मिल सिं-
धुकी कलोल कैधों हरण हमेश कृष्णचन्द रतवाधाकी ॥
भनै रघुनाथ कौन कौन उपमादे कहीं कौन समताहै रूप
सुरति अगाधाकी । चौगुनी सुचन्द चन्द्रिकाते सौगुनी
है यह हांसी चंचलताते है हजारगुनी राधाकी ६ ॥

क० ॥ मदन महीपतिकी कैधों जयकीरति है कैधों
प्रिय प्रेततरु अंकुरकी सीचिका । कैधों मुखचन्द चारु
चंद्रिका प्रकाशमान कैधों रूप कुण्डल के रसकी उली-
चिका ॥ कैधों अतिचारु सुधारसके सरोवरकी योवन

समीर कै परम मृदुवीचिका । भारती बसन सुखरास
विलसन सुख राजे मन्दहँसन सुदशन मरीचिका ७ ॥

क० ॥ क्षीरघिकी खीर कैधों नीरसर आपको है
कैधों हीरहारन की हाटही सम्हारी है । हंसनकी पांति
कैधों गुनकी है भांतिभली कीरति को साति कैधों शार-
दकी सारी है ॥ अम्बुज कहत बसुधामें कै सुधाकी
धार कैधों हासरसकी हरौल भीर भारी है । चंद उ-
जियारीकी बिहारी की बसीकरन सीकरन वारें कैधों
हँसनि तिहारी है ८ ॥

क० ॥ हँसि हँसि ब्याल ख्याल करत सखीनहू सों
भरि भरिपरत कैधों मालतीके फूलरी । कण्ठ लकलकी
तीनों ग्रामसे फिरतजात शब्द भनकर सोतो सुर अनु-
कूलरी ॥ चौकाकी चमक देखि तड़ित लजाय जाय घ-
नन दुशाय रही उठी उर शूलरी । फूलभरी छुटत कैधों
छुटत चित शिवनाथ कुतट शीश सौतै जानिसुख
निरमूलरी ९ ॥

क० ॥ लुरि लुरि दुरि दुरि भुकि भुकि रीभि रीभि
आधिघेवरन कहत किलकारीसों । सुनत सोहात नेको
समुझिपरत कैसो चुंभकिचिबुक गाड़परत हाहाहीसों ॥
खैंचि खैंचि पीतपट लचि खचि गात उर अम्बुक उमगि
अरुणारीसों । ढीली ढीली भौहन रसलीखवि शिवनाथ
देदै करतारी प्यारी हँसै गिरिधारीसों १० ॥

स० ॥ बोलत बात प्रसूनकरै छहरै छवि होठनकी
सुखथाला । भट्टदियाकर प्रेम कपाटन ठाटनलोहकी खो-
लति ताला ॥ राजतिहै गजरा गरमै घरके चमकै जनु

दीपके माला । खगगके धारनते द्विगुणी मुसुकानि लगे
नवला तेरी आला ११ ॥

स० ॥ नयननकी गति कोरनलों अरु कोरनकी गति
कानलों जानो । काननकी गति जीभलों है गति जीभकी
कण्ठ तरेलों बखानो ॥ कण्ठतरेते गिरा गति है यशवन्त
सदा रसनालों मानो । है रसना गति होठनलों गति हो-
ठनकी मुसक्यानलों जानो १२ ॥

स० ॥ गहि हाथसों हाथ सहलीके साथमें आवतही
वृषभानलली । मतिराम सकाति न आवततीर निवार-
ति भौरनकी अवली ॥ लखिके मनमोहनसो सकुची कि-
यो चाहत आपनी आँट अली । चितचोरलियो दृगजोरि
त्रिया मुखमोरि कछू मुसक्याय चली १३ ॥

क० ॥ गुल गुलकंदके सुमंदकरि दाखनको देखहु
दुचंदकला मंदकी कमाईसी । कहेंरदमाकर त्योंसाहवी
सुधाकी सबै ब्रजवसुधामें सोकहांधों परीपाईसी ॥ खारिक
खरीको मधुरीको माधुरीको स्वच्छ सरदसिरीको मिसिरी
को लूठिलाईसी । सांवरी सलोनीके सलोने अधरानही
में मंजु मुसक्यान भरी मंजुल मिठाईसी १४ ॥

क० ॥ रसना ललित कलवानीजको आसनहै दशन
लसन कौन सकत बखानिहै । कालिदास लाल अधरन
पै वारी लाल लसति अमोल सृदुबोलनकी वानिहै ॥
सुंदर गोविंदके रिभायवेको इंदुमुखी रची एकरचना
अनंग विधि आनिहै । केसी सुखमाहिं खुली सुखमाकी
खानि जहां महामोहमयी निरमयी मुसकानिहै १५ ॥

स० ॥ रंगभरे बहु विद्रुमके विच मोतिनकी सुखमा

दरसी है । फूली मनोहर सांभके मांभ सुधाकरकी किरणें सरसीहैं ॥ छायरही अनुरागके अंतर कामकी कीरति आन बसीहै । गोकुलचंद्र सदानंदनंदन रावरे आंठन मंद हँसी है १६ ॥

क० ॥ शिवशिर गंग जैसे जलकी तरंग जैसे उडुगण भंग जैसे करतपयानहै । मोतिनकी माल जैसे दामिनिकीधार जैसे ओपीतरवार जैसे तजत मियानहै ॥ दीपनकी माल जैसे पावककी ज्वालजैसे मोहिबेको लाल मन निपटसयान है । तार जरजरी कैसे फूल फुलभरी कैसे जुगनूज्यों जरी कैसे तेरी मुसकयान है १७ ॥

स० ॥ शारदकी कैधों पारदसी दिपै दामिनी दीपति मोद करी है । कैधों सबे नखतानिकी ज्योति अकोति विरंचि बटोर धरीहै ॥ भाषै मुनी रघुराज की नेक सो दाडिम मञ्जु मरीचि भरी है । कै रुक्मिणिकी हास छटा सुखमाकी किधों महताब बरी है १८ ॥

क० ॥ कैधों मुख कमलमें कमलाकी ज्योति होति कैधों चारु मुख चन्द्र चन्द्रिका चुराईहै । कैधों मृगलोचनि मरीचिका मरीचि कैधों रूपकी रुचिर रुचि शुचि सों दुराईहै ॥ सौरभकी शोभाकी दशन घन दामिनीकी केशव चतुर वितहीकी चतुराई है । येरी गोरी भोरी तेरी थोरीथोरी हासी मेरेमोहनकी मोहिनी कि गिराकी गुराईहै १९ ॥ इतिहासी वा मुसकयानवर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ अधर वर्णन ॥

दोहा ॥

तेरसि दुतिया दुहुँन शशि एकरूप निजठानि ॥
 भोर साँभ गहि अरुणई भयेअधर तुवआनि १
 अधरमधुर रसचाखिकै कहौ सकल जगजोइ ॥
 ऊषमयूष पियूष में इतो मिठास न होइ २
 लिखन चहत रसलीन जब तुवअधरनकीवात ॥
 लेखनिकी विविजीह बाँधि मधुराई ते जात ३
 जीते कटक कटाक्षशर जपतपसुधि बुधि ज्ञान ॥
 अब अधरनको कौन पै दीन्हे प्यारी पान ४
 तरुणीअधरन अरुणपर यों रँग धरत तमोल ॥
 ज्यों रँग जेठो कुसुमको राजत लाल निचोल ५
 जान्यो रँग तमोलको दीन्हों अधरन वाल ॥
 कीन्हों विद्रुम सुरँगपै मानौ मीना लाल ६
 क० ॥ अरुणसे अमल कमलकीसी कोमलाई अ-
 धरन देखि विम्बा प्रलापये । जाके रूप आगे रूपवि-
 द्रुम बरंग होत शोचि शोचि मोचि दृगभरत अलापये ॥
 खीने हैं न थूले भूले देखिकै कुशलसिंह देवतानहूँ के
 मन सुखद कलापये । अमीरस माते ताते चढ्यो है
 उन्माद उर द्वैजके युगल चंद करत मिलापये १ ॥
 क० ॥ अमल अरुण अरविंद विम्ब आभादेत
 सहज सुवास रीभे माधुरी समरहें । सोति कोतिवारी
 पिय मति मतवारी होत पूजे नयवारीसो सर्वाँरी शोभा
 धरहें ॥ मणिकण्ठ सूक्ष्म सुरेखहैं बधूक फूल बरुणीके

चिह्न पिय लोचन डगरहैं । कैधों लीक शिशुगाते दीने
त्रिधि कोककला सुन्दरि सुलोचनीके शोभित अधरहैं २ ॥

क० ॥ कैधों विधु ऊपर बधूकके कुसुम धरे कैधों
विम्ब पाके परे योवन जनाये है । विद्रुम बरणा विंवि
खारिक दिनेश कैधों पल्लव प्रसूनके कि शोभा सर-
साये है ॥ अध अनुराग भाग ऊपर सुहाग रूप राजत
रुचिर कैधों अमृत कनाये है । योवनके रंगके प्रसंग
लाल विधि दोऊ अधर मधुर सुधासारसो बनायेहैं ३ ॥

क० ॥ कुसुमके सार कैधों काशमीरी केसरिसों पूजे
न हियेसर मजीठ होडहारी है । पाहन भईरी यहदाहन
पवारी रति रति यो उतारी रही रती मुखकारी है ॥ करि
छविहार चूरभयेहू न पूजे जात्रकके नेक देखे कान्ह बाँ-
सुरी त्रिसारी है । वीरबधूवारी हरिहृदय विहारी देखि
यह अधर लाली तौ गुलाली यो उतारी है ४ ॥

क० ॥ केसरि निकाई किशलय कीरताई लिये गाई
नाह जिनकीधरत अलकत है । दिनकर सारथीते कैसे
नीके देखियत अधिक अनारकी कलीते अरकत है ॥
लालकी लसनि तहां हीराकी हँसन राजे नैन निरखत
हरखत आसकत है । जाते नगलाल हरिलालहि ठ-
गततेरे लाल लाल अधर रसाल अलकत है ५ ॥

क० ॥ लाले मृदु उथले सुथले फल कुंदुरू से तामें
रंग पानछवि दुगुनी बढ़ायो है । भनत दिवाकर यों
सुमन नवीन कैसा कोमल रसाल दल देखिके लजायो
है ॥ विद्रुम वेरंग होत हारत उदोत पेखि कुसुमके रं-
ने निरेखि ललचायो है । प्यारी मुख चंद्रते पियूष र

चवड चवड अधर अमल मानो ऊपर में छाये है ६ ॥

क० ॥ लाल रंग राचेहै प्रवालते अनोखे अति विं-
वा फल हाल ते विशाल द्युतिवारे हैं । उज्ज्वल अनूप
अमीकूपके किनारे किधों ऐसे शची रम्भा रती कौन
के निहारे हैं ॥ भन रघुनाथ वा विधाता चतुराई धन्य
जानेसब शोभाको समेटकेसवारे हैं । निज प्रिया प्यारेको
मनोहरन वारेवने मधुर अपारे प्रिया अधरतिहारेहैं ७ ॥

स० ॥ लालनके मन ते जिनको छिन एक न नेकु
छुट्यो विसरामहै । विद्रुम से तिन आँठन जो वरणे रस-
राज सुतो मति छाम है ॥ मोमति सानि सुधा जल ते
हरिको अनुराग महा रुचि धामहै । ढारिके द्वैज सुधा-
धर साँचे रच्यो विधि ते अधरा अभिराम है ८ ॥

क० ॥ गुलगुले कंदके सुमंदकर दाखनको देखहु
दुचंद कलाकंदकी कमाईसी । कहै पदमाकर त्योसाहित्री
सुधाकी सबै ब्रज वसुधामें धों कहां धों परीपाईसी ॥
खरकखरीको मधुहूकी माधुरीकोशुभ सरदासिरीको मि-
सिरीको लूटिलाईसी । सांवरी सलोलीके सलोने अध-
रानमें सुमंद मुसक्यानि भरी मंजुल मिठाईसी ९ ॥

क० ॥ डाम कैसे चीरेआठ अलपसुरेख अति सुंदर
सुरंग इंदुनारि कैसो तनुहै । मधुर मधुर रस नारंगी
कलीकी काक धरीहै सुधारि शुद्धसुधाकोसदनहै ॥ सुघर
सुपंकु विम्बुलीने शुकचंद गोद महामोहनीको यह धनु
है । बंधुजीव विद्रुम अनार कालिकाकेदल तेरे अधरन
की अरुणताको अनुहै १० ॥

स० ॥ दाड़िम फूलके द्वे दलकी किधों कंचनत्रेलि

में विम्बु सोहावै । कैमधुसागरके द्वैप्रवाल सेंदुर द्वैलीक
धौं इंदुमें भावै ॥ की अरविंदमें इंद्रबधू तति द्वै रघुराज
प्रमोद बढावै । रावरेके अनुरागके ऐन धौं रुक्मिणी
आँठ किधौं छवि छावै ११ ॥

क० ॥ दावि दावि दशननि रसके सवाद कैके अधर
मधुरखान सुधारसको हँसै । कालिदासरीभे मुकताहल
के योग हरि सुधि बुधि भूलिगई वेई मनमें बसै ॥
लाल नग जवाफूल कैसे करिकीजैतूल कोकनद वि-
द्रुमकी छविनी चलैबसै । देखि आरसीलै शशिबिंब से
बदन तेरेआँठ प्रतिबिंब परतीत बिंबसे लसै १२ ॥

क० ॥ जपाके कुसुमताकी छविके चतुर मणिमाणिक
केमीत अतरोचक कलीवके । विद्रुम के दलद्वै विराजै हे-
मसम्पुटमें राजत अनूप काहजनकेनसीवके ॥ भावतीके
अधरपियूषके धरनहार कहै परसराम रसदानी प्राणपीव
के । विम्बनके बदीअनुरागके सौ प्रतिबिम्ब नायकर-
जोगुणकेबंधु बंधुजीवके १३ ॥

क० ॥ जाकी मधुराईलै सुधाई सुरलोक छपी ऊखको
छप्यो हैरी पियूष अपरानिमै । देखतही विद्रुमभयेहै
जडरूप अरु विम्बमतिहीनभये जिनके डरनिमै ॥ पान
अंग पातरो भयोहै तबहींतेपेखि एरीब्रजरानी अबरहै
को शरनिमै । सूरत सुकवि तिन्हें सकैको बरणि प्यारी
तेरे अधरनकी न उपमाधरनि में १४ ॥

क० ॥ विम्ब औ प्रवालहू बँधूक कवि बरणत सोतो
यह उपमा न मानों काहू के दिये । जपा रोरी ईगुरकी
गुरुता सकल मली दाड़िम कलीनहू के मान भंग को

किधे ॥ ललित ललाटहूते लटैयों लरकिरहीं दुहूंआर
अधरके कोरनको हैंछिये । मेरेजान तापत ललित लाल-
हीको शम्भु गुहयो मखतूलसों विराजै शशिकेहिधे १५ ॥

स० ॥ बर विद्रुम में कहां लाली इती कहां कोमल-
ता जपा ऐसी गहै । कहां लाल में लाल प्रकाश इतो
समताकहा बापुरो बिम्बलहै ॥ कहां ऊषमयूष में एती
मिठास पियूषहू ना हरिऔध कहै । जिती चारुता
कोमलता सुकुमारता माधुरता अधरा में अहै १६ ॥

स० ॥ बैठि बिचारि विरंचि कियो रचि अंग सुढंग
सवै उपमानको । हेरतही विरहानल व्यापिहै को पुनि
थापिहै प्राण प्रमान को ॥ है वसुधामें न औषधि आन
सुमेरु हरी सुभख्यो सुखदानको । चन्दचहेटि समेटि
सुधारस कीन्हों तवै त्रियके अधरान को १७ ॥

क० ॥ अधर अरुण अति सुबुधि सुधाकेधर को-
मल अमल दलद्युति छीनि लीनी है । केशव सुगन्ध
मन्दहासयुत कौन काम विद्रुम कठोर कटु बिम्ब मति
हीनी है ॥ सूक्ष्म सुरेख अति सूधी सूधी सविशेष चतुर
चतुर मुखरेखा रचि कीनीहै । मानोंमैन गुरुहरि नाहके
नयन गति गनि गनि लेवेकहूं विद्यागनि दीनीहै १८ ॥

क० ॥ चन्दन में वन्दन में हैंन अरविन्दन में कुरु-
विन्दमैन भानु सारथी वरनमें । मोहर मनोहर में कोहर
में हैंन ऐसी गुंजनकी पीठि में मजीठि अवरनमें ॥ जैसी
छवि प्यारीके निहारी में तिहारी सौंह लाली यह चरण
करन अधरनमें । हैंन गुलनारनमें गुलाब गुड़हरहू

में चन्द्रवधू मैन बिम्ब नारंगी फरनमें १६ ॥ इति अधर वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ अधर गडहा वर्णन ॥

क० ॥ कीधौं द्विजराज मुख तर्पणको भाजनहै कैधौं प्राण तर्पक चोरा पियदानको । तपस्या स्वरूप ताको तपसा को तपकुण्ड शोभाको सलिल कुण्ड सुरन के न्हानको ॥ राजरूप कंदरा कि सुंदरि शरण ताकि बलिभद्र थिरहवै बसोहै अरिथानको । तेरेत्रिय ऊरध अधरकी पनारी मधि कैधौंपियलोचनपियालोमधुपानको १ ॥

स० ॥ कैधौं गुलाबकी पाखुरीहै यह छांड़ि प्रसूनहि आनि बसी है । कै यह मोहनी की मरयाद है काहूके प्राणन पैठि नशीहै ॥ गाड़परो तियके अधरापर कै शिवनाथ बुलाक धसीहै । कै हरिके उरको तजिके भृगुको पदचिह्न सो आनि धसीहै २ ॥ इति अधर गडहा वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ ठोढी वर्णन ॥

दोहा ॥

ठोढी गोरी गुदगुदी चिबुक गाड़ सुख दैन ॥

गड़ेरहै निशि दिन तहां रसिक प्राणपतिनैन १

डारे ठोढी गाड़गहि नैन बटोही मारि ॥

चितक चौध में रूप ठग हाँसी फाँसी डारि २

तो लाखिमोमन जोलही सोगति कही न जाति ॥

ठोढी गाड़ गड़्यो तऊ उठ्यो रहत दिन राति ३

फूलत फूल गुलाब तुव चिबुकदेखि लजिजाय ॥

फूल भाव ताजि टूटि दल भरि सेवत तरपाय ४
 कुच गिरिचढ़ि अतिथकितकै चलीदीठ मुखचाड़ ॥
 फिर न टरी परिये रही गड़ी चिबुक के गाड़ ५
 मन पारा दृग कूपते उफनि बाल मुख आहिं ॥
 परयो चिबुक के गाड़ में केहूँ निकसत नाहिं ६
 ललित श्याम लीलाललन बढी चिबुकछविदूना ॥
 मधु छाक्यो मधुकर परयो मनो गुलाब प्रसून ७
 अंध भवन जलमें धसे जे हरि केलि निधान ॥
 तीय चिबुक तिलके परे लागे चुबकी खान ८
 स० ॥ आरसी अंकुर नोक श्रृंगारसी बीचरही पर-
 कार निशानी । कै विरहीन के हायको दाग अहे वरु
 नीलकनी अनुमानी ॥ बीजके वृन्दमें है तमब्रन्द कलि-
 न्दजाबुन्द लसै दरशानी । नेह मई तिल ठोड़ी कि
 गाड़में पेरिदई मनो प्रेमकी घानी १ ॥

क० ॥ कैधों अरविन्द मकरन्द रसपान माते ढिग
 अलिबार रहे कैधों अलसाय कै । कैधों पिय प्रेमको
 पियूष भरो नारंगीमें वेदी श्याम सुमन निशानसी व-
 नाय कै ॥ कैधों है श्रृंगार रसमगन मनोजमन लालच
 ललकि मणिकण्ठ लाग्यो आयके । सौतिनके विरह सु-
 हागसोहैगोदनाकीलेत चितचोरतेरोचिबुक चुरायके २ ॥

क० ॥ कनक वरण कोकनदके वरण अरु भलक-
 त भाई तामें बसन रदनकी । कीनी चतुरानन चतुर
 ऐसी रचि पाचि अलपसी चौकीचारु आसन मदनकी ॥
 अंग लसेवाके उपमानकी अवधि सब सुमिलि सोपान
 मानो श्रियके सदनकी । सुन्दर सुठारहे चिबुक नव-

नायकाकी कैधों बलिभद्र बादशाही है वदनकी ३ ॥

॥ क० ॥ कंचनके खानेमें जटिल नीलमणि कैधोंसम्पुटमें
सूक्ष्म सरूप श्याम लोनाहै । सुमुख सुखेत रसबीज
बोड़ होनाकैधों केलिसमय कामजूको खुलतखिलौनाहै ॥
रामकहै तिय मनमोहनके मोहिबेको कठिन कुहूमें पढ़ि
राख्यो ठीकटोनाहै । कमल कलीपै अडिबैठयो अलि
छौना कैधों कामिनी तिहारो चारु चिबुकडिठौनाहै ४ ॥

स० ॥ ज्ञानभयो जबते तबते तिय एक लखी मणि
आप अतूलमें । दामिनी ज्यों यमुना प्रतिबिम्बित यों
भूलकै तन नील दुकूलमें ॥ देखतही सुख देखे बिना
दुख जायपरी कितले उत भूलमें । ठोड़ीपै श्यामल विंदु
गुपाल मनो अलिबाल गुलाबके फूलमें ५ ॥

स० ॥ प्यारी कि ठोड़ीको विन्दु दिनेश किधों विस-
राम गुविंदके जीको । चारु चुभ्यो कनिका मणि नील
को कैधों जमाव जम्यो रजनीको ॥ कैधों अनंग श्रृंगार
को रंग लिख्यो वरमंत्र बशीकर पीको । फूले सरोजमें
भौर लसे किधों फूल शशीमें लसे अरसीको ६ ॥

क० ॥ प्रीतसकी प्रगट प्रतीत प्रीति भूरीभरी दिपत
प्रपूरी प्रभा सुरस अतोड़ी है । गाढ़ है गुनीली किली
रस पतकीली मनो कैधों कली कुंजकी मलिन्दनी बिथो-
ड़ी है ॥ भनै रघुनाथभूप रसवशावासीभयो कैधों श्याम
वंदिया रीतिकी मति मोड़ीहै ॥ करत न होड़ीभई सवति
निगोड़ी मनो बाल तुव ठोड़ीकी न जोड़ जगठोड़ीहै ७ ॥

स० ॥ मैनके मंजुल ऐनके वागकी आवभरी धों
गुलाब कली है । सीतहि जानि मनोज किधों रचिदीनी

सौ चन्द्रहि चौकी भली है ॥ भाषे मुनी रघुराज किधौ
अनुरागकी आसटिकोरी ढली है । रावरे प्रेमकी नारंगी
धौ लसै रुक्मिणि ठोढी प्रभानवली है ॥ १० ॥

क० ॥ मदन के रूप कैधौ रूपके तलाव मञ्जु स-
लिल प्रसेद नील नीरज फुलायो है । भनत दिवाकर
गुलाब फूलि फूलि फूलि तूली नहि तूल मूल साख ते
सुखायो है ॥ कैधौ बैन तौल तौल बोल के विरंचि मुख
लालमणि छांटिके सुपलराल गायो है । चिबुक तिहारो राधे
श्याममनपरो आई ऊवि ऊबि डबत विकूवतंध कायो है ॥ ११ ॥

क० ॥ चिबुक प्रकाश कैधौ इन्दिराको मन्दिर है कैधौ
मैनसर जल भौर छवि छाई है । कैधौ ठोढी काटि के
बनायो विधि रति मुख ताहीते पखो है गाड़ लगत सुहाई
है ॥ कैधौ हरिकण्ठ मणिताको प्रतिविम्ब जानि कैधौ
भवकूप नरलोगन बनाई है । राजसुख यज्ञताको कुण्ड
हैय है शिवनाथ शंका समधि पाइ आहुति बनाई है ॥ १० ॥

क० ॥ चन्द्रके चरणपरि उवरो तनक तमकियौ तम-
गुणही को पदु अतिखीनो है । लगिरहो लोभ मकरंद
काज बलिभद्र शारद मधुप कोकि मनुहरि लीनो है ॥
मानो कलधौत पीठिवैठो रसनायक है पिय लोचनन को
परम सुखदीनो है । काम रंगरेज बाध्यो चूनरीको चिह्न
एक कैधौतिय चतुर चिबुक चिह्न कीनो है ॥ ११ ॥

क० ॥ गाड़पखो कैधौ यह मदन मतंग मात्यो कैधौ
चंचरीक अरविंद रस पाग्यो है । कैधौ श्यामघटा को
कनका टूटि गड़िगयो रस बरसावन सरस अनुराग्यो
है ॥ करतविहार बैठि बालके बदनपर कुशलसिंह देखो

यह रूपमद् दाग्योहै । नैन ठगहाँसी फाँसी डारि मारि
रसिकमन ताहींतेचिबुकगाड़कालिमासोलाग्योहै १२ ॥

क० ॥ चंचरीक चेटुवाको लागोहै चरण चुभि अग्र-
भाग तग्रमृदु मंजुकंज ठोड़ीको । प्रतिबिम्ब श्याम तिल
मैनके मुकुर कैधों देखियतताको तन मधुगति छोड़ीको ॥
रूपको शिथिलतल बूड़िगो सुआगर बीच पजनप्र-
खात फल कोकिलकी मोड़ीको । तमको तमोज तमवपुर-
ज गोद लीन्हे गोदनाके गोरीगोरे मुखतेरी ठोड़ीको १३ ॥

क० ॥ शोभन शृंगार रसकीसी छीटिसोहै फाँक काम-
शरकीसी कहो युगतनि जोर जोर । राहुकेसो रदन रह्यो
है चुभि चंद्रमाहिं तमीको सुहाग कैधों डारो तृणतोरि
तोरि ॥ चतुर बिहारीजी को चित्तसो चिहुँटि रह्यो चितये
ते केशव दास लेति चित चोरिचोरि । तनक चिबुक ति-
लेतेरेपर मेरीसखी वारोंडारि तरुणी तिलोत्तमासीकोरि
कोरि १४ ॥ इति ठोड़ी वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ कपोल वर्णन ॥

दोहा ॥

त्रिमल कपोल सो गोलकी उपमायहै अतोल ॥

मनौ मैन हीरानके बिरचे मुकुर अनमोल १

शशि मण्डलसम भिल मिलै गोरेगोल कपोल ॥

माखनके गोला किधों किधों मुकुर अनमोल २

वरनवास सुकुमारता सब विधि रही समाय ॥

पँखुरी लगीगुलाव की गालन जानी जाय ३

अमल कपोलन स्वेदकनदृगन लगत यहरूप ॥

मानौ कञ्चन कम्बुमें मोती जड़े अनूप ४

क० ॥ मदन महीपके मुकुरद्वे सोहातगोल माखनके गोल कैधों हाथे चिकनाईहै । भनत दिवाकर की रूप के समुद्र मांभ रतनके रुरे युगसफरी तराईहै ॥ कैधों स्वर्ण शील चारु चांदीकी कलाई दैके सुखमा विरंचि रचि हाथसे बनाई है । कैधों आसमानते मयंकद्वे देह होय राधिका तिहारे ये कपोल ठहराई है १ ॥

क० ॥ मुकुरसे मंजुल झलकिरहे माणिक ज्यों हँसत परत गाड़ अमल अमोलये । कमलकी कोमलाई लागत न नेक जामें रसभरे चीकने लटसे बने गोलये ॥ गदगदे गोरे भोरे कठिनई थोरेथोरे अरुणाई बोरेचोरे चितहि विलोलये । अधरनके प्यारे कैधों मानहूँके तारे शिवनाथ छविबारे चंद्र निरखि कपोलये २ ॥

क० ॥ हरी अच्छ लच्छ करतलनि समान स्वच्छ राजत रुचिर ताते नार्हीं टारियतुहै । चंद्रमा से चारु अति कोमल कमलहूते दुखन दिनेश देखि मीड़ मारियतुहै ॥ ऊपरसुहाग ढिगभाग अनुराग रूप विनादेखे दृगनि उपास पारियतुहै । लागिये रहति मुसक्यान ताते लोल दोऊ विमल कपोलपै मुकुर वारियतुहै ३ ॥

क० ॥ चपलाके ऐसे चारु चमकै है छवि पुंज छेद निसरत भीने घूँघट निचोलहै । कालिदास आसपास तरन तरौनकी ज्योति किरणावली ललित अतिलोल है ॥ काँह अथलोकत वदन प्रतिविम्ब निज कनक सरूप मानो मुकुरअमोलहै । लेतमनमोल करै दृगनकी तोल ऐसे गोरे गोरे गोल स्वच्छ प्यारीके कपोलहै ४ ॥

स० ॥ नहीं जानिये कौने विरंचि रचे समता कहां
 माखन गोलनकी । किमि कामके दर्पनकीहों कहां सुख-
 मा इनके संग तोलनकी ॥ कमलाप्रति देखि छकेसे रहे
 सुधि नेकुरही नहीं बोलनकी । तब कैसे के भाषिसके
 उपमा अनमोल ये गोल कपोलनकी ५ ॥
 क० ॥ सुरभ सुवर्ण जासु पुहुप गुलाब कंज आदर
 समाजे मनो मदन धनेरेहैं । डोलत सुलोलगोल गोलक
 अमील भलके मानो प्रभा ताल नील कमल बसेरेहैं ॥
 भनै रघुनाथ दीतराशहै प्रकाश पुंज आसन मनोजके
 सदा सौ मेरेहरेहैं । पियमन लोल मोललैन केलिवास
 कीधौं गोल गोल असल कपोल तिय तेरेहैं ६ ॥
 क० ॥ सुखमा भरतभरे प्रेमकैसे सांचे ढरे सुधालौं
 सुधारिधरे दर्पन सुदेशहैं । आभाकी निकाईहै कि केदार
 कैधौं क्रांतिनके तीनोंपुर रूप परिजनके नरेशहैं ॥ रप-
 टत लोचन चिलकदेखि बलिभद्र भलकत चौधे किल-
 कानिके नतेशहैं । गोर गण्डमण्डल अखण्ड ज्योति-
 वन्त तेरे छविके छपाकरके द्युतिके दिनेशहैं ७ ॥
 स० ॥ शोभाकी सांचसै मनकी ढारी लसै युग आ-
 रसी आनंद खानकी । सबरे डीठिके वैठिबे को किधौं
 फाविरही फरसै फटिकानकी ॥ भाषै सुती रघुराज किधौं
 सरसी युग सोहिरही सुखमानकी । रुक्मिणीके कि-
 धौं गोल कपोलपै राजै करै उभयचन्द्र प्रभानकी ८ ॥
 क० ॥ सोहत है चिन्तामणि नगन जाटित दिव-
 केचनकी विली कैसे सुंदरिनवेलीके । सकल जगतमा
 एक सुकृतीहौ तुमि नायक नवल ऐसी नायिका नवेली

के ॥ एक ठौर देखौ छवि आपनी और उनकी जू प्रति-
विम्ब है आप रूप आनंद की केली के । सुवरण आरसी
से शीशे से अमोल कैसे गोरे गोरे गोल हैं कपोल अ-
लबेली के ६ ॥

स० ॥ केसरि के सने चन्द के बीच रचे मनो लाल
गुलाल चुनी गन । यों उजराई पिराई ललाई मलाई-
हूके न मुलाईमी है तन ॥ लोने सलोने से सोने से
शोभित होने न ऐसे विधाताहू के धन । बोलत नाहिने
डोलत लाल सुगोल कपोलन मोल लयो मन १० ॥

क० ॥ कैधों नैन नटुवाके नाचिबे की रंगभूमि शोभा
गृह आंगन अनंग अंग लोल है । कैधों है अनंग
अंग बेलिके विषद खेत देखे सुख देत द्युति अमल
अमोल है ॥ पिय मन मल्ल के अखारे कैधों नीलकंठ
वारे जिन ऊपर मुकुर गोरे गोल है । कैधों कौलमुखी
मोह मंत्र ते कलित श्रौन भूषण फलित तेरे ललित
कपोल है ११ ॥

क० ॥ केसरि कपूर कंद कीन्हे द्युति मंद अति आ-
नंद के कंद होत चंदहूने जंग है । अमल कमल दलहू
ते अति कोमल जे राजे बीच बीच इंदुगोप कैसे रंग
है ॥ प्रेमसौरहत नित पुलकित मुलकित अलकत अल-
कत छवि श्रुति संग है । गोरी तेरे लोल लोल ललित
कपोल तामे लाल इवेत पीत बहु रंग के तरंग है १२ ॥

क० ॥ कैधों रूप धरणी में राजत युगल खरड कैधों
मीन केतन के मुकुर सुढारे हैं । कैधों हरि लोचन तुर-
गन को लीला थल कैधों सरसीरुह के दल है निहारे

हैं ॥ परसराम कोमलमधुकसे चंपकसे चारु चीरचन्द्रमा
को कोरिकै निकारेहैं । प्यारीतेरे गोल गोल ललित क-
पोल स्वच्छ नीठ नीठ रचिकै बिधाता करभारेहैं १३ ॥

क० ॥ कैधों हरि मनोरथ रथकी सुपथ भूमि मीन रथ
मनहू की गतिन सकत छवै । कैधों रूपभूपतिको आस-
न रुचिर रुचि मिली मृगलोचन मरीचिका मरीची कै ॥
कैधों श्रुतिकुण्डल मकरसर केशवदास चितयेते चित
चकचौधिकै चलत चवै । गोरेगोरे गोल अति अमल
अमोलतेरे ललित कपोल कैधों मैनके मुकुर द्वै १४ ॥

क० ॥ मुनि मन मंजु मौज मिश्रित मजेजदार पजन
प्रत्यक्ष देत द्युति महताबीजे । रद छद छिद्रधर अधर
तमोर दाग चुंबन सरस रोस रसिक किताबीजे ॥ विधु
मुख वरण सुवर्ण पीक पानन की भासित जिन्हों में विधि
निधि दिखलाबीजे । भलक भलान भला भल भल भ-
लकत अलि अमल कपोल गोल गहब गुलाबीजे १५ ॥
इति कपोल वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ कपोल गडहा वर्णन ॥

स० ॥ कोरें हिये दृग कोरहीरावरे कासों कहौ कोउ
होत न आड़ै । खेल खरीहु मेटै डिये भौहैं रहै हमसेनित
रारिसी माड़ै ॥ काहेको काहूको दीजै उराहनो आवैइहां
हम आपनी चाड़ै । पै पलमें मुसकान समयहमें लेती
हैं मोल कपोल की गाड़ै १ ॥

स० ॥ चन्दमुखी चपलासी लली लखि लाल मनोज
की मौजन बाड़ै । द्वै रस हासके कूप किधों पति प्रेम

के पूरन को यह खादें ॥ योंरघुनाथ विलोकै लसै मुस-
क्यातही देती सुधा जनुकादें । मोहती मोहनके मन को
मन मोहनी किये कपोलकी गाढ़े २ ॥

स० ॥ नैन गड़े तो गड़े उनमें छवि मैनके वानन की
सरसातिहै । जो कुचकोर कठोर गड़े तो गड़ो वह तो
कठिनै दिनराति है ॥ कै अलबेलिपने अलबेली जवै
इतको मुरकै मुसकाति है । कौन अचंभोकहौ यह याके
कपोलकी गाढ़ हिये गड़ि जातिहै ३ ॥

क० ॥ भँवर परत जल योवन के जोर कीधौं जामें
छवि बूढ़त सकल प्रमदान की । निकसि सकैन बल
करिहारे बलिभद्र नैनन गनायवेकी श्रोदीविधिवानकी ॥
उदित नवीनहोत रचित भरतमानौ रूपको निवासकीधौं
कुण्डी सुखदान की । पियमन पारिद अटकिवेकी गाढ़
कीधौं गाढ़ गएड मएडल सृदुल मुसकानकी ४ ॥ इति
कपोल गड़हा वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ कपोल तिल वर्णन ॥

दोहा ॥

धँघुट जालरु दंड भ्रू नयनन मुलह वनाय ॥
खँचत खग जग दृग तिया तिल दानो दिखराय १
तिय कपोल तिल लसन को में यह जान्यो हेत ॥
रूप खजाने की मनो हवशी चौकी देत २
बिमल अमोल कपोल पै लसत गोल तिल श्याम ॥
मनो शरद के चंद्र पर राजत शालिग राम ३
तियजु कपोल अमोल तिल माणि वरणत मनमोद ॥

गई कहूं धरि नागिनी कुँवर इंदु की गोद ४
गोरे मुखपर तिल लखौ मेटत है दुख दंद ॥

देखि परत जनु भानुसुत रह्यो गोद है चंद ५
पानिप भरे कपोल यह सुरसरि सम जगदीश ॥

तिल नहिं तामें देखिये बूडत मन को शीश ६
तिय कपोल कंचन तुला इक पलरा तिल डारि ॥

तौलन को सम कोउ नहीं रह्यो विरंचि विचारि ७

क० ॥ अमल कपोल पै अमोल गोल इयाम रंग
आय के अनंग कैधौं पुतरी समाई है । भनतदिवाकर
निशाकर कलंक कैधौं चंद्रमा के धोखे मुख मण्डल में
आई है ॥ कैधौं कमलासन सँवारि छवि आनन के न-
जरि न लागै याते कालिमा लगाई है । कैधौं कील
नीलमणि राधिका तिहारे तिल कैधौं कै सबील जादू
लाल को लोभाई है १ ॥

क० ॥ कैधौं रूप राशि में शृंगार रस अंकुरित कैधौं
तमकन सोहै तड़ित जुन्हाई में । कहै पदमाकर किधौं
काम कारीगर नुकता दियो है हेम फरद सोहाई में ॥
कैधौं अरविंद में मलिंद सुत सोयो आनि ऐसो तिल
सोहत कपोलकी लुनाई में । कैधौं पखो इंदुमें कलिंदी
जलविंदु अरु गरक गोविंद कैधौं गोरीकी गोराई में २ ॥

क० ॥ कैसोसुधा सरसांभ फूल्योहै कमलनील जैसो
बंकअंकमें मयंक मुखहेरोहै । कैसोबंक अंकमें मयंक
सुखहेरो कह्यो जैसोमैन मुकुरमें मोरचा करेरोहै ॥ कैसो
मैन मुकुर में मोरचा करेरो कह्यो जैसो अलि कमलमें
गहत बसेरोहै । कैसो अलि कमलमें गहत बसेरो

कह्यो जैसोरी कपोल पै अमोल तिल तेरोहै ३ ॥

क० ॥ शोभन शिंगार रसकीसी छीटसोहै फोंक का-
मशरकीसी कह्यो युगति न जोरिजोरि । राहुकैसो रदन
रह्यो है चुभि चन्दमाहिं तमीको सुहाग कैधोंडारो तृण
तोरितोरि ॥ चतुर विहारी जूको चितसो चिहुंठि रह्यो
केशवदास लेत चितयेतेचित चोरिचोरि । तनिककपो-
ल तिल तेरेपरमेरीआली वारोंडारितरुणि तिलोत्तमा
सी कोरिकोरि ४ ॥

क० ॥ फटिकशिला में नीलमणि इक मुद्रितहै कैधों
खेत रजित सनेह बीज बोयो है । कैधों रसहास्य में
शृंगारने अगार कियो कै तू जस जाल डाल अग्रशहि
गोयोहै ॥ अनैरघुनाथ कैधों यह तिल तेरो गोल गोल-
ही कपोल पै अमोल पीत मोयोहै । कैधों क्षीरसिंधुमें
गोविन्द यह राज्यो किधों मन्द आन चन्द में आनन्द
मन सोयोहै ५ ॥

क० ॥ फूले पारिजातमें लखातहै मधुप कैधों सुखमा
सरोवर में रसराज पैठोहै । रतिके मुकुर पै धरीहै नील
मणि कैधों कामिनी के वदन परम छवि जैठोहै ॥ श्री-
पति रसिकराज सुन्दर गुलाव बीच मृगमद विन्दुरूप
परम परैठोहै । कोमल कपोलनपर तिलहै अमोलमानो
पूरण मयंक में निशंक शनिवैठोहै ६ ॥

क० ॥ बांकीभोंहैं सोहैंबांकी चितवनि मनमोहै बांको
मोती बेसर अधरपर फरको । कहैं कविगंग तेरेउचकि
उचकि कुचगत्तिन रहत निरखत भसभरको ॥ आनन
की उपमाते सकल विकलभई भली शोभा लेरह्योतिल

कपोलपरको । पंकजकेबीच आली अतिगो समाइतहां
मानोरी बिछुरि छौना बैठ्यो मधुकरको ७ ॥

क० ॥ बदन सरोरुह के संगही जनमजाको अंजन
सुरंग समतान परसतहै । महारूखे मुनिनको मन चि-
कनायजाय सेनापति याही जबनेक दरसतहै ॥ रूपहि
बढ़ावै रसिकनहूं के मनभावै नेह उपजावै पै न आप
बिनसतहै । आली बनमाली मनफूल में बसायो तेरे
तिलहै कपोलसो अमोल बिलसतहै ८ ॥

स० ॥ रूपकी राशिमें कै रसराज को अंकुर आनि
कढ़्यो शुभहोना । कै शशिने तम ग्रासकियो तिहिको
रह्यो शेष दिखात सो कोना ॥ प्यारीके गोलकपोलनपै
द्विजराजिरह्यो तिल इयामसलोना । कै मधुपान पख्यो
अलमस्त किधौं अरविन्द मलिन्दको छौना ९ ॥

स० ॥ लखी आज अचानक इंदुमुखी चलीसामुहें
आवतिही कढ़िकै । उघख्यो पट धूधुट पौन प्रसंगगेनै-
न चकोर तहां मढ़िकै ॥ कमलापतियों तिल शोभित
होतहै गोलकपोलहि पै चढ़िकै । जनुसुंदरिको मुखइंदु
लसै तिल एकमयंकहूते बढ़िकै १० ॥ इति कपोलतिल
वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ श्रवण भूषण सहित वर्णन ॥

दोहा ॥

सीप श्रवण या रमनि के कैसे होयँ समान ॥
इहिप्रसंग तजि मुकुत गन यामेंवसे निदान १
मुकुत भये घर खोइकै बैठे कानन आय ॥

अब घर खोवत औरके कीजे कौन उपाय २
जटित तखोना श्रवणमें इहिविधि करत हुलास ॥
पितातरनि कीन्हे मनो पुत्र करन घर वास ३
जटित श्वेतमणि सोलसै तरल तखोना कान ॥
हलत चलतमेंभिलमिलै दिनकरकिरणिसमान ४
लसत श्वेत सारी ढँप्यो तरल तखोना कान ॥
पखोमनो सुरसरि सलिल रवि प्रतिविम्ब विहान ५
शालति है नट शालसी केहूँ निकसति नाहिं ॥
मनमथ नेजा नोकसी खुभी चुभी मन माहिं ६
भीने पटमें भुलमुली भलकति ओप अपार ॥
सुरतरुकी मनु सिंधु में लसति सपल्लव डार ७
करनफूल द्युति धरनदुहुं करन लसत इहि भाय ॥
मनो बदन शशिके उदय नखन दुहुं दिशि आय ८

क० ॥ कंचनके पत्र कैधों मुक्ता जड़ाय दीन्हे प्यारी
के बदन मैन मदसो उयोपरै । वारिज दलन ओसकन
से बिराजमान शिवनाथ मंजुलकपोलन ह्युयोपरै ॥ बीच
बीच शीतलाके दागनमें टुरिरह्यो जुरिकै उमड़ि आनि
कंचन दुयोपरै । राहुकेरदनके छदनबीच चंदनते छल-
कि छलकि अमीबुंदन चुयोपरै १ ॥

स० ॥ कीधों सुधाधर जू दुहुंओर सुधारधरे सुसुधा
के द्वै दोनहै । कैधों निशान ये लोचनवानके भौंहकमान
के कामके त्रोनहै ॥ कोनहै जोनहिं मोहही देखि किधों
सर्वज्ञ है तौनही मौनहै । भौनहैज्ञानके मानके दोन है
श्रौनहै तीयके जीयके रौनहै २ ॥

क० ॥ कीधोंहै अतिथि पियवचनके रसरज कीधों

मित्र लोचनके विमल विशेखिये । सोनेकैधौंदोने रति
कामअंगकीबेकाज सुधाधर आसपास धरेसोई देखि-
ये ॥ पूरणमुदित शिवपूजनकरत चंद्र कनक अरधताके
दुहूं और पेखिये । तीक्ष्णकटाक्ष शरगत अवरोधकीधौं
सुंदरीके सुंदर श्रवण युगलेखिये ३ ॥

क० ॥ कैधौं सुर परिडत असुर गुरु दोऊ दिशि
शशिके श्रवणलागे मंत्र मतकातहै । कैधौंले सुरद्रुमके
सुमन समेटि प्रभा सुंदर कपोलपर कला कतरातहै ।
कैधौं रविछील सुधाबुंददै जमायो कैधौं छबिके कमल
कैधौं नवल सुहात है । कैधौं मनभावनकी साखी ले
करनराखी प्यारीके करणफूल कीन्हों मनमात है ४ ।

क० ॥ काननमें कुंदन के नगन जटितसोहैं अम्ब
छपाये बहुंतोल महागथके । कालिदास ललित कपो
लनके योगलसै कैसे बरणत घनइयाम सहजथके ।
पाछे पश्यो राहु ताते छपे हैं कुरंगदृग अनुमान हो
हिये अनुमानपथके । छबिआई आननमें काननतरौना
वाके सोहत सुहाये मानों चाकचंद्र रथके ५ ॥

क० ॥ जटित जराय जगमगत सहसकर बलिभद्र
वृषकि कुमारकाके भानहै । धरत विधार हैं अपारखत
नैननिके तीरचा अनंग आनरोप्यो सरसानहै ॥ उपमा
अनंत मनरंचन विहारी रती ताण्डवके तार जिन्हेंजा-
नत सुजानहै । चंद्ररथ चरणकी कामचक्रवैके चक्र कैधौं
तियतरल तरौना तेरे कानहै ६ ॥

क० ॥ सीपके समानकान रंचक लखात प्यारी कैधौं
जेवधूरी काम धाम में लगायो है । भनत दिवाकर सुवि-

कस्यो सरोज कैधों रूपके तलाव में चटकके फुलायो है ॥ तरकी जटित ज्योति भलक वसन श्वेत रविके मयूष मानों जाहनवी में छायो है । कैधों है वजीरतारा चन्दके नजीक बैठो कैधों है फनूस ढिग गादी के धरायो है ७ ॥

क० ॥ बदन प्रयाग गंगधारवर वन्दी वेश पाठोंकेश यमुन सुभाल सुखदेनीके । शारदा सुछूटीलरी माणिक मणीननकी टूटी शशफूलते कपोलपिकवैनीके ॥ भन रघुनाथ कर्णराजत सुदेश युग्म सहित सुगंध चन्दनाद मृग नयनीके । कैधों कंज एक एक दोनों ओर फूलिरहे अलियुत राजें तटयुगल त्रिवेणीके ८ ॥

स० ॥ बसि वर्ष हजार पयोनिधि में बहु भौंतिनशीत की भीतसही । कवि देवजूत्यों चितचाहघनी शुचिसंगति मुक्तनहू की गही ॥ इहि भौंतिन कीन्हो सबैतपजाल सुरीत कछूक न बाकीरही । अजहूनइते परसीपसवैइन कानन की समता न लही ९ ॥

क० ॥ पियगुन आसन सरोजके सिंहासनहै कीधोंवि-
विवासन सनेह रसभरेहैं । साँच भूठ तौलिवेकोतुलाके पलाहैं कैधों किंशुक के पातसे लपटिपाछे परेहैं ॥ कैधों विविचक्र सह चक्रके सुधारे कैधों कुण्डलकलाकी निधि विधिकर धरेहैं । करनके छिद्रके अछिद्र छविगायेकवि कंचनके सीप मानो मुकतासेजरेहैं १० ॥

स० ॥ प्रेमकथा रसपीवनको युगकंचन प्याल कियों भल भावैं । आयके वैन अन्हायवे को कियों वावली है अति मोद बढ़ावैं ॥ भाषै मुनी रघुराज कियों सुखमा के समुद्र की सीप सोहावैं । रावरे के गुण के

किधौं भौन सो रुक्मिणी श्रवण किधौं छवि छवि ११ ॥

क० ॥ रूपके अनूपम की राखी है ध्वजा उतारिसारा
काम यंत्रकी कि कंचन के योतहै । पियकेबचन स्वावद-
न की सीप युग सुनतही मोदमुक्ता हलतनोतहै ॥ लोच-
न कुरंगनको कीन्हों है परिष धारबलिभद्र आँपे न भँपत
लोल होतहै । सुसके सुमनहै श्रवण तेरे सुन्दरी किदरी
है सोहाग राग शारंग किसोतहै १२ ॥

स० ॥ दास मनोहर आनन बालको दीपति जाकीदिपै
सब दीपै । श्रौन सुहाये बिराजि रहे मुकताहल संयुत
ताहि समीपै ॥ सारी महीनसो लीन बिलोकि विचारतहै
कविके अवनीपै । सोदर जानि शशीहीमिली सुत संग
लिये मनो सिंधुमेंसीपै १३ ॥

स० ॥ हेमसो अंग हियो हुलसै हरिनाछी सुनेहनयो
मन बंधै । ठौरही ठौर जगी मदनधुति ताहिर प्रेम के
शायक संधै ॥ बीरी न होय बिराजत कानन जानन को
मन लायक धंधै । लेकर आंभवजावन को सुचढयो
मनो चन्द सुमेरुके कंधै १४ ॥

क० ॥ करन करीहै जैसी करनी करन दोऊ चरन
विचारि दीन्होंकंचन को दानिये । औरऊकरनएकपिता
प्रतिपाल कीन्हों बाँहको सुनी है हमकथा मृदु बानिये ॥
कामिनी करन दोऊ करतसो घटिनहीं करन बिहार समै
सेज सनमानिये । वे करन पिता भक्त मन बच कै शिव
नाथ ये करन पतिके बचन भक्ति जानिये १५ ॥

क० ॥ रागानिके आगर विराग के विभाग कर मंत्र
के भँडार गूढ़ खूढ़ के खनहैं । ज्ञान के विवर कैधौं

तनकतनक तन कनककचोरी द्वारि रस अचवनहैं ॥ श्रु-
तिनके कूप कैधों मनके सुमित्र रूप कैधों केशवदास
रूपभूप के भवनहैं । लाजके नयन कैधों नयन सचिव
कैधों नयन कटाक्ष शर लक्ष्यके श्रवनहैं १६ ॥

क० ॥ खुटिला खचित मणि सोहत वनकवनि कनक
कलश रुचि रुचिर रवनहैं । तनक २ तन तीतरी
तरल गति मानहु पताका पीत पीडित पवनहैं ॥ कालिं-
दीके कूल २ जात जल केलि कहैं कालिही सराहै मेरे
कालीके दमनहैं । केशव दास सुन्दर श्रवण ब्रज सुन्द-
रीके मानों मन भावते केभावते भवनहैं १७ ॥

क० ॥ पहिरे करणफूल देखीहै कुमारी एक सुनहु
कुंवर कान्ह शोभै सुख दानिये । तिनके तनकीज्योति
जीते ज्योतिवत सब केशव अनंत गति कैसेउरआनि
ये ॥ मानो कामदेव वामदेवजूके बैर काम साधै शर
साधना निलक्ष्य उर मानिये । दुहूँदिशि दुहूँभुज भृकु-
टी कमान तानिनयन कटाक्ष बाणवेधतन जानिये १८ ॥

क० ॥ रूप सिंधु ताके युग सीप गडहाके युत कैधों
हिम शिखरगुहाके द्वार बाँकेहैं । अष्टादश जो पुराण
कथा केहू थाके बलताते विधनाके युगनव अंकटाकेहैं ॥
कैधोंमन मन्दिर सुशालाके विशाला कैसे भरोखेधोंमु-
ख कंज दल अलगाकेहैं । यशताके नित्यताके पताके
सेदोऊ जाकेनाथकुल कानताके कानराधिकाकेहैं १९ ॥

क० ॥ कंकन खनक पग नूपुर ठनक कटि किंकिनि
भनक घनी घूम घहरातहैं । अंककी तचक परयंककी
मचक लघु लंककी लचक हिये हारहहरातहैं ॥ मनकवि

मान विपरीत की भ्रूलक डुलै बेसरि अलकछबि छूटि
छहरातहैं। सुन्दरिकेकाननमें पानयोंतरफरात मानों पंच-
वानके निशान फहरात हैं २० ॥ इति श्रवण भूषण
सहित वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ नासिका भूषण सहित वर्णन ॥

क०। केशवसुगंधश्वाससिद्धिनकीगुफाकैधोंपरमप्रसिद्ध
शुभ शोभन सुकासिका । कैधों मन मथमन मीनकी
कुवेनी कैधों कुन्दनकी सींव लोल लोचन बिलासिका ॥
मुकता मणिन की है मुकुत पुरीसी कैधों कैधों सुर से-
वत है काशी की प्रकासिका । त्रिभुवन रूप ताको तुंग
तोयनिधि ताकेतोयकी तरंगकै तरुणि तेरीनासिका १ ॥

क० ॥ कीर कैसे ठौर पेख परम प्रकाश मान सुरभि
समीर के भकोर भहरातहैं । भनत दिवाकर बुल्ला श्वेत
मोती संग कैधों पंचवान के निशान फहरातहैं ॥ कैधों
बेध वायो बेध रूप अति बेध हेतु कैधोंटूटेचंचरीकतुण्ड
दरशातहैं । बेसरि के वेसता बखाने कवि कौनराधेनाक
के निहारे प्यारे श्याम तरसात हैं २ ॥

क० ॥ कुन्दन लै बिरंचिने नकासी मनो ताके बीच
दीन्ह्यो जड़ कुलिश दुतिन्द्रका । ताके आसपास सजे
शशिमणि चन्द्रकांत तारागण वृन्दमें बिराज्यो नखति
न्द्रका ॥ भन रघुनाथ रमारति लखिमोहे जाहिलजतन
नाहिं देखिभामिनी सुरिन्द्रका । दृबिन धनिन्द्रकानमोल
सम जाके यह कृष्णचंद्र मोहन किशोरी शिरचंद्रका ३ ॥

स० ॥ कुण्डल रूप अनूप बिराजत ताबिच मोती

की ज्योति प्रकासी । सो जगदीश विलोकत आनिगड़ी
हिय में नहिं जात निकासी ॥ जाहि लखे ते फँसे मुनि
कौशिक एक बच्यो जो रह्यो अविनासी । राजति प्यारी
की नासिका में यह नत्थ किधों मन मत्थ की फाँसी ४ ॥

क० ॥ कैधों पिय नेह मई कीरति हसन लेंकै भूले
हेम भूले भूले ध्यान समरथके । कैधों मति मन खग
फन्दा तामें मित्रवश बैठि कवि कुंज सो मथा पै मन
मथके ॥ ऐसी भाँति देखियेरी मोहे मन मोहनजू सूरत
बखान करौ कहां लौ अकथ के । भूले ज्ञानगथ के औ
लोकलाज पथके सुकौन नैननथके निहारे तेरीनथके ५ ॥

क० ॥ कोऊ कहै नाक हासी कोऊ मनमथ फाँसी
कोऊ कहै देवमाया चक्रसों बनायो है । मुकताअनूप
लाल चूनीछवि रूपनथ कंचन के तार ताको सुगढ़
गढ़ायो है ॥ दीप जीत शुकजीत चंपक कलीको जीत
नासिका विजय जय कवि पै पठायो है । शीलको सु-
यश तीन लोक को सुहाग निज तेज में परोय मेन
भूषण दिखायो है ६ ॥

क० ॥ कैधों प्रेमरंगको तड़ागहै तरंग भरो कैधों सु-
धा सिंधु प्रीति मंदिर घनीको है । श्लेमको झलासो मेन
फन्दकी कला सो किधों रति कमला की मति करन सो
फीको है ॥ भन रघुनाथ मान सौतिन को मथन निषंग
पंच बाणन की तीषन अनीको है । वेधनीय हीको भौन
रसनूपजीको जुलमकरत सुतीकोनीको वेधनथुनीको है ७ ॥

स० ॥ शालत है नटशाल हियो सरशाल विनिंदित
तीक्षण ताई । देखतहीमन भूलिरह्यो कहिये किमि ना-

सिक ब्रेध सुहाई ॥ यों शिवनाथ विराजत गाजत लाजत
मोतिन ब्रेधि निकाई । जानि बड़ो बित कामना ओर
मनो कमलागृह सन्धि चलाई ८ ॥

क० ॥ सुनि चितचहै जाके कङ्कन की भनकार क
रत है सोईवात होत जो विदेहकी । शेश भनि आजुहै
सुकालिह नाहीं कान्ह जैसी निकसी है राधेकी निकाई
कछू नेह की ॥ फूल कीसी आभा सब शोभालै सकेलि
धरी फूलि ऐहौलाल भूलि जैहौ सुधि गेह की । कोटि
कवि पचै तऊ वरणी बनै न फवि बेसरि उतारे छवि
बेसरि के बेह की ९ ॥

क० ॥ शोभा सुख सदन को बातयन बलिभद्र मानो
महा मोहनी पिपीलिका को गेहहै । मैन पंचबाण को
छवीलो छिद्र छाजत है देखिबे को देहमें अदेहजू को
देहहै ॥ पियमन रोकिबेको निडर किलीको रन्ध्र सुखमा
मधुर को रुचिर जासों नेहहै । मैनके मवास में धनुर्द्वर
को मोरचाहै कैधौं वाम नासिका में बेसरिको बेहहै १० ॥

क० ॥ सुन्दर सहज सुमनन की सुगंधन की निरमो-
ल नासिका निकाई ते सँवारी है । प्रीतम शरीर माहिं
धीरन धरत देखि सकुच की भीर कीर विपिन बिहारी
है ॥ कैधौं कलधौत महामुनि के कुसुम जीति मैन चैन
सिंधु सुखसेतसी निहारीहै । मुकताललितकैवलितमनि
कंठ मनि छविकी तरंग थिर नासिका तिहारी है ११ ॥

क० ॥ शोभाको सकेलि ऊंची बेलि बांधी बलिभद्र
राख्यो सम लोचन कुरंगनि को रोस है । दीपति को
दीप मुख दीप को सुमेरु यह मृदु मुख सारस को सिफा

कंद जोस है ॥ कल्प तरोवर की कली किधौं गंध फली
उपमा अनूपनि को विविध निसोस है । तिल को सुमन
है कि नासिका तरुणि तेरी सुरन की शरण की सौर-
भको कोस है १२ ॥

क० ॥ सुरपति तीकी द्युति फीकी होत जाहि देखि
रहत रतीक ना गरूरता रतीकी है । तीनलोक की क-
हौं जीकी होय चाते अति नाहिमें निकाई द्रौपदी की
नाक नीकी है ॥ भन रघुनाथ चारु अमल सुदार वेश
अति सुखदान कान्ह प्राणपति हीकी है । वर शुभ ना-
सा ते बुलाक नथ बासा मंजु परम प्रकाश पुंज नासा
लाडिली की है १३ ॥

स० ॥ तीनहूं लोककी दीपति संचि रच्यो करसों
तिल फूल धौंमार है । कै युग अम्बुज के मधि सोहि
रही भल चम्पकली सुकुमार है ॥ मारके कीरकी तुण्ड
किधौं किधौं काम को तूणरच्यो करतार है । भाषे मुनी
रघुराज किधौं रुकमीनकी नासाविराजै अपार है १४ ॥

क० ॥ तिलको कुसुम ताकी सम कहा कीजियत
कहांसौज दीजियत कीरफल मूजी की । कामकेतु नीर
कोऊ खाली वरनत आली ताकी कहा चाली जाकी
बात विन पूंजी की ॥ शंभुराज कहै लाडिली के अंग
वरणत पावतन थाहहोति गिरागति लूंजी की । मानो
रूप निधि सो वदन रचि विधिराखी नासिका सुलुफ दे
कुलुफ विवि कूंजी की १५ ॥

क० ॥ लगी जव आस तव उतख्यो अकाश हीते
सिंधु जलजंतु आस कीनो सुख चीन्हो है । बड़ो हित

कार वाको उदर बिदारि कढ्यो चढ्यो मोल भारी बांस
सम्पुटन लीन्हो है ॥ कहत किशोर भ्रम्यो देश दिशे
ओर लह्यो ब्रज चित चोर जिय वारि फेरि दीन्हो है ॥
उरकै सुलाक मोती नासिका बुलाक भयो बढ्योई चलाक
पै हलाक मन कीन्हो है १६ ॥

क० ॥ नीचे को निहारत नगीचै नैन अधर दुब्रीचै
परै श्यामरुन आभा अटकन को । नीलमणि भागकै कै
विद्रुम सुराग पुखराग कै रहत बिध्यो छटा छटकन को ॥
देव बिहँसत द्युति दंतन जुड़ाति ज्योति निर्मल मुकत
हीरालाल गटकन को । थिरकि २ थिर थामै पटतानै
तोरि बानै बदलत नथ मोती लटकन को १७ ॥

स० ॥ नासिका चारु बिलोकत ही बनजाय समो-
हन कीर छपाने । बेसरि को मुक्ता छवि देत मनो कमला
गृह तोरण ताने ॥ इवासन ते उस कै पुटवाल कहै कबि
कोमल होत पषाने । लै सिसकी मुसुकावत भायन
घ्राण सुगन्धन की पहिचाने १८ ॥

स० ॥ बनवासी किये शुक पीठि निवासी तुणीर जो
वीर बिलासिका है । तिल सून प्रसूनहू खेत गिरे गुहा
सेवक सिद्ध निवासिका है ॥ भुव तेत सुनैन के बाण
लिये मति बेसरि की सँग पासिका है । बहु भावनि की
परकासिका है तुव नासिका धीर बिनासिका है १९ ॥

क० ॥ वदन सुराही में छबीली छवि छाक्यो मद
अधर पियाले छिन २ में गहत है । अलसाय पौढत
कपोल परयंक पर कबहूँ गजक जानि चाखन चहत
है ॥ प्रेम नग्रसाथी येतो सदारहै अंकभरे छक्योई रहत

कोऊ कठूना कहत है । भुक्तिपरै बात के कहते अन-
खात न्यारो बेसरि को मोती मत वारोई रहत है २० ॥
क० ॥ आड्योजल सागर विंधायो तन आप आय
अधर के बीच रह्यो और नाचहत है । विधि के संयोग
बश आनि पख्यो बेसरि में वन्यो है वनाव शोभा अद्भुत
गहत है ॥ पूरण प्रताप चंद्र पायो है मुखारविंद एतो
कहां लहे कंत जितो तूलहत है । प्यारी के बदन पर म-
दनजूको मदपिये मोतीमतवारो सदाभूमत रहत है २१ ॥
क० ॥ प्यारीतन भूमि तामें रूपजलसागर है यो-
वन गंभीर भौर शोभा को धरत है । दीपत तरंग नैन
वारिज से डोलैं तहां उरग सी बेनी जिय देखत डरत है ॥
आलम कहत मुख कहर गहर राजै तामें मन मेरो यह
दौरिके परत है । बेसरि को मोती मानों कर है सिकंदर
को वार २ भूमि २ मनै सो करत है २२ ॥

क० ॥ राधिका के नथकी अकथ कथा सुनि जाहि
नेकहू बिलोके को न मुनिहोत बस में । कहे शम्भुराज
लसै मुक्ता विशाल एक ताके बीच लाल दुरी भूलत
अरस में ॥ बिलि फूल चाप मूठि कली दे गुलाब सर
केशर को फर गाड्यो यमके सुयस में । कुचजानि हर
भेरेजान पंचशर तक काल तीर तानि राख्यो नाशा
तीरकस में २३ ॥

॥ स० ॥ मदमाती मनोज के आसव सों अंग जासु
मनों रंग केसरि को । सहजै नथ नाकते खालि धरी
कख्यो कौन धां फंद या सेसरि को ॥ कमलापति हेरि
हिराय रहे लख्यो और नहीं इहि कीसरि को । करि कौन

उपाय वचों हे दई मोहिं बेधत बेधया बेसरिको २४ ॥

क० ॥ केशव दास सकल सुवास को निवास सखि
कैधों अरविंद मधि बिंदु मकरन्दको । कैधों चन्द्रमण्ड-
लमें शोभित असुर गुरु किधों गोद चंद्रजूके खेलै सुत
चंदको ॥ बाढैरूप कामगन दिनदूनो होत कैधों चंदफूल
सूघत है आनंद के कंदको । नाक नाइकानि हूं ते नीको
नकसौतीनाक मानों मन उरभिरहयो है नंदनंदको २५ ॥

क० ॥ सुंदर सीधा पनाके विधुबदना के भाव कैधों
एक अंक रूप अद्वितीय ताके हैं । सरल मृदुताके मानों
एकही स्वरूप सौरभ सुगंधताके खान समताके हैं ॥
कैधों कामदेव ताके इत्र दान पात्र ताके रेख छेक छेके
करै अप्रमाण ताके हैं । एक ही कलाके रूप कला टारै
चंद्रमाके कहै नाथ नासिका सुवासिका प्रियाके हैं २६ ॥

इति नासिका भूषण सहवर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथनेत्रवर्णन ॥

कंजन खंजन मीनमृग मद गंजन युग नैन ॥
रतनारे कारे चपल अनियारे सुख दैन १
कारे कजशरे अमल पानि पधारे अैन ॥
मत वारे प्यारे चपल तुव डबरारे नैन २
चम चमात चंचल नयन बिच घूघट पटभीत ॥
मानहुं सुर सरिता विमल जल उछरत युगमीन ३
अमी हलाहल मद भरे अ्याम अ्वेत रत नार ॥
जियतमरत भुकि भुकिपरत जिहिचितवतइकवार ४

दृगनलगतवधतहिमहि विकृतकरत अंगथान ॥

अन्येतेरे सवते विषमई क्षण तीक्ष्ण यान ५

साधत इक छूटत सहस लगत अमितकैजात ॥

अर्जुन सम बाणावली तेरे दृग करिजाते ६

अनियारे दृग बाणकी रस निधि बाँकीचोट ॥

रुकत न रोके कैसेहूँ धीरज डालनओट ७

ज्योंबँदूक दारु दवे सहस गुनो द्वैगोन ॥

ज्योंदृगलाज दवेन की चोट सँभारे कौन ८

कसक वनी तब ते रहे बँधतन ऊपर खोट ॥

दृग अनियारेन कीलगी जबते हियमें चोट ९

तेगा दृगतिय रावरे पानिप वार सुघाट ॥

अंजन बाढदिये विना करत सौगुनीकाट १०

ज्योंद्वि पावत है अरी अंजन अजित नैन ॥

सरसबाढसैफन धरी जनुसिकलीगरमैन ११

नरेमनरीति विचित्र यह तिय नैननकी चेत ॥

विषकाजरनिजखायके जिय औरेनकेलेत १२

फिरिफिरि दौरत देखियत निचले नेकरहेन ॥

कीकरत कजाकी कौनपै ये कजरारे नैन १३

तुरंग दीठआगेधरे वरुनी दल के साथ ॥

तेरेचखमखकैजगत कियोचहत है हाथ १४

मदमें कल तिखुलत जब तेरेदृग गजराज ॥

आयतमाशे जुरत तहँ नही नैन समाज १५

क० ॥ अलक अमोल अलवेसी की अनोखीआं

खिअति अलसात ओप अजब असेजेमें मन्दमुसि

क्यान मांगसीती मोहनीके लीके सोदमदमातीमनमदन

मजेजेमें ॥ यौवन जलूस ज्योति जोयकैनरायणजू सक
ल शृंगार नख शिखते सहेजेमें । चन्दमुखी चंचल
चलांक चंचलासी चारु चसक लगायगई कसक
करेजे में १ ॥

क० ॥ आवदार अजब अनोखी अनियारी अल
वेली ऐसीआखें ऐन ऐननसे रूखीसी । भोजभनैयौवन
जलूस में न जागै ज्योति ज्योति जोम जुलुम जुलाहल
में पूखीसी ॥ ताकिजाती तीक्षण तिरीछीतरुणाई पर
तेरी दृगनोकें तेज तीरन ते तीखीसी । बैन सढिजाती
चारु चौख चढिजाती हियो फोरिबढिजाती चढिजाती
साफ सूखीसी २ ॥

स० ॥ आईहों देखि सराहे नजातहै याबोध धंधुट
में फरकेहैं । मैंतोयोंजानी मिलेदोउपौछे कैकान लरुयोवि
उन्है हरकेहैं ॥ रंगन ते रुचिते रघुनाथवेचरुकरे क
ता करके हैं । अंजन वारे सही दृग प्यारी के खं
प्यारे बिना परकेहैं ३ ॥

क० ॥ अंजन सुरंग जीते खंजन कुरंग मीन नैक
कमल उपमा को नियरात हैं । नीके अनियारे आ
चंचल ठरारे प्यारे ज्योंज्यों मैं निहारें त्यों त्यों
चातहैं ॥ सेनापति सुधासे कटाक्षन बरषि ज्यौवै जिन
निरखि हियो हरषि सिरात है । कानलौ विसाल का
भूप केरसाल बाल तेरे दृग देखेमेरोमनन अघातहै ४

क० ॥ अबलख रंग अंग सुंदरता जीनतापै काजख
पाखर सुआपहाथ साजीहै । लाजहै लगाम चितवा
गाम चालमानों भृकुटीकुटिल तापै कलंगीसी डाजीहै

पूतरी सँवारिशुभलिये चाहचाबुकसी देखिके कटाक्षखुरी
भयेलाल राजीहै । नाचैमुख कंचन की थारीमें सुभारी
अतिप्यारी तेरेदोउनैत मैनभूपवाजीहै ५ ॥

क० ॥ आनंदके मंदिरमें कैधोंरुचिमाणिककी कैधों
अनुरागलता अंकुर विराजही । कैधोंरतिनाथजूकेहाथ
कीछवीली छरी जाके इतमाम ते तमाम दुख भाजही ॥
कैधों तरुणाई अरुणोदय किरणराज तारे कारे घन
चपलासी सुखसाजही । लालमन बांधिवेको कैधोंलाल
रंगडारे कैधोंलालडारे तेरेनैनमें छाजही ६ ॥

क० ॥ आननकी द्युतिआगे चंदद्युति मंदहोत ओ-
ठनकीपांतिपै पवारि छविवारीहै । उभरोहे उरजपैआंगी
श्वेतफवी संगीकानन कनक मणि गरमाल न्यारी है ॥
ऐसी बालआजुलौ न देखी नंदनंदन में मैनमन मानि
रुचिरतिकी विसारीहै । लालडारे नैननमें ऐसनीकेलागं
मानों खंजन चपल फंदे काम फंदवारी है ७ ॥

क० ॥ अति अनियारे तारे कजरारे रेकभारे ऐसे
उजियारे जैसे दिया वारियतहै । रूपरतनारे मतवारेप्रेम
प्यारेजीके कमल करारे हारेई निहारियतहै ॥ धूंधट
उघारते निहारे नेकतारा कवि टरत न टारे चित कैतो
टारियतहै । धूगहें वेदगजोई मृगदेखि रीभतहै ऐसे
दृगदेखे मृगछौना वारियतहै ८ ॥

क० ॥ आछे अनियारे चटकारे कारे कजरारे मृग
दृगकारे थेरीयेतो रतनारहैं । चंचल छवीले रंगजावक
रंगीलेचारुदीरघरसोले रसरते सुकुमारहैं ॥ मैनमदमाने
से उनीदेसे रहत नित भुकिभुकि उघरत चंकमतवारे

हैं । अजब अनूठे नैनदेखे प्राणप्यारीजीके जहां जहां
देखे तहां जीतजीत डारेंहैं ६ ॥

स० ॥ कानन लौ अंखियाँ हैं तिहारी हथेली हमारी
कहां लग फेलि हैं । सुंदव तौ तुम देखतीहौ । पर कोर
तिहारी कहां लौ सकेलि हैं ॥ कान्हर हूं कहँख्याल इहै
तिनको हम हाथन हूं पर भेलिहैं । राधे जी मानों बुरे
कि भलो अँखमँदनो संग तिहारे न खेलिहैं १० ॥

क० ॥ कमल न फीकेहैं सँवारे सुधरीके हैं जु सुंदरता
सीके हैं सती के हैं रती के हैं । खंजन अनीके हैं कि
गंजन मनी के हैं किरंजन धनीके हैं कि भंजन अमीके
हैं ॥ ऐसै हरनीके हैं न ऐसै हरिनीके हैं न राज रमनी
के हैं न काय कमनीकेहैं । नैन मैत जीके हैं कि बैन बैन
जीकेहैं कि शोभा मूलहीकेहैं कि प्यारे प्राणपीकेहैं ११ ॥

क० ॥ कज्जल कवचकिये बरुनी केसरलिये भौहंधनु
ताने जैत वार जग ऐनहैं । बाँकी सुधी चितवनि दोऊ
तरवार बाँधे करें आधी आधिप्राण मारत डरै न हैं ॥
इनकी कजाकी आगे कछुन कजाकी चलै दोऊ हाथ
मल्लै येतो बाहूदुख देंन हैं । उधव कहत ऐंठे गँठे से
रहत नित काम पातसाह के सिपाही तरै नैनहैं १२ ॥

क० ॥ कंजन असलता में खंजन चपलतामें छलता
में मीन कलता में बड़ेऐन के । प्रेम में चकोर चोर नेम
के निवाहिबे में कहै रघुनाथ ठग ठगिबे में सैनके । ड-
सिबे को भौर डीठि फँसिबे को बंसी चैन गसिबे को यं-
त्र हेत चैनहूँ अचैन के ॥ यामें झूठी है नप्यारे ही में
आइलगिबेको प्यारीजूके नैनऐनतीखे बानमैनके १३ ॥

क० ॥ कैधों रूपसागर के रतन युगुल कीधों भूपमी-
न के तनके केतन सुयस के । नेह भरे मदन सदन के
प्रदीप कैधों रसराज चाखिवे को चखकसरसके ॥ सुन-
त सुदेश के सुबस से महीप कैधों बसकीवे काज इ-
न्दिरिन दिशि दसके । लगे हिय ऐन कसकत दिन रैन
कैधों प्यारी तेरे नैनतीर सैन तरकसके १४ ॥

क० ॥ करत कलोल श्रुति दीरघ अमोल लोल झुये
दृग छोर छवि पावत तरोना हैं । नाहिन समान उपमान
आन सेनापति छाया कछु छुवन त्रकित मृगछोनाहें ॥
श्याम है वरण ज्ञान ध्यान के हरण मानों मूरति ज्यों
धारे बशी करन के टोना हैं । मोहत है करिसैन चैन के
परम ऐन प्यारी तेरे नैन ऐन सैनके खिलोना हैं १५ ॥

क० ॥ काजरते कारे अनियारे डारे मतवार कमल ढ-
रारे कैधों अमृत के दौना हैं । खंजन सँवार कैधों खंज-
खरसान धारे कैधों मनमोहन के मनके हरौना हैं ॥ रूप
जल भारे रसवारे डगमगत हैं नवल दुलारे कैधों मृगन
के छौना हैं । मदन निहारे पछी सीख देनहारे आली
तेरे नैन ऐन मानों सैनके खिलौना हैं १६ ॥

क० ॥ कंजद्युति भंजन हैं खंजनके गंजनहैं रत्नकरत
जन मंजन सँवारे हैं । शोभा के सदन कोटि मोहत म-
दन मीन मदके कदन मृगदूरि करि डारेहैं ॥ लाज गूण
गेह नेह मेह वरसै अछेह देहन सँभारे जात जवत नि-
हारे हैं । कारे कजरार अनियारे भूपकारे मितवारे रत्न-
नारे प्यारी लोचन तिहारेहैं १७ ॥

स० ॥ कंज सकोच गड़े रहैं कीचनि मीननि वोर

दियो दहनीरनि । दासकहै मृगहूको उदास कै बास
दियोहै अरन्य गंभीरनि ॥ आपुसमें उपमा उपमेयकै नैन
येनिंदत हैं कविधीरनि । खंजनहूको उड़ायदियो हलके
करदीन अनंग के तीरनि १८ ॥

स० ॥ कंजन खंजन गंजन हैं अलिअंजन हू मद
भंजन वारे । एकजरारे ढरारे पियारे विसारे न जा
विसारे विसारे । अंचल ओट अखारे में खेलते तारे
निहारेहैं चंचलतारे । शोभसुधा सरके मधिडोलतमान
मीनभये मतवारे १९ ॥

स० ॥ कीसुखमाके समुद्रके सोहिरहे युगमीन अने
कलाकरि । की छबिकी रचि पिंजरी कामदियो तेहि
युग खंजनको धरि । भाषैमुनि रघुराज किधौं बिधुवा
कुरंग कै लीन्हों मुदैभरि । आपके पन्थमें लागे सुप्रेम
पागेकिधौं रुक्मिनी दगैहरि २० ॥

क० ॥ कैधौं खंजरीटनकी चपलताई छीनीहै कैध
चंचरीकनकी कजरारी छाइये । कैधौंप्रात कंजनकी स्व
च्छता निवास कीन्होंलाजको समेटि बिधिलोचन बना
इये ॥ चतुर चलांके बांकेसैन उभाकि भांकेपैन ईखर
कैधौं मैनसरपाइयेहंसिहांसि हेरिहेरि फेरिफेरि शिवना
हरिसों हरिण नैनीनेक न दुराइये २१ ॥

क० ॥ कारे कजरारे रतनारे अरविंद सम च
दराज अनियारे सुखकारी हैं । भनत दिवाकर कुरं
वान खंजनको गंजनकरति इयामअंजन किनारी हैं ।
भुकि भुकि भांकति भरोखा लागिसानभरे लागेवन
माली मानोंलोहकी कटारीहैं । मोरिमोरि लेत मुसका

दृगध्रुवटमें मारिके फिरतज्यों शिकारकोशिकारीहैं २२॥

क० ॥ हरिण हिरानिकहूं हारनमें हेरिनयन मीनहूं
समाने जल कंज खंज फीके हैं । रूपकेवजार मदपीके
मतवारे भयेकैधों हुदेदारहैं अनंगकी अनीकेहैं ॥ नंदराम
कैधों ये कटार हैं कटाकरके आँकरके अंत के विभाग
वरखीके हैं । सानपै धरेहैं खरसानपै उतारे खूबकैधों पंच
वाणयह ओपे ओपिनीके हैं २३ ॥

क० ॥ हियहरिलेतहैं निकार्ड के निकेत हैंसिदेत हैं
सहेत निरखत करिसैनहैं । झोनाहरिनीकेहूते दृगअति
नीके राजें हरत दरद्यों करत चितचेतहैं ॥ चाहत न
अंजन रसिक मनरंजनहैं खंजनसरस रसरागरीति ऐन
हैं । दीरघ ठरारे अनियारे रतनारे प्यारी कंजसे निहारे
कजरारे थारेनैनहैं २४ ॥

क० ॥ हमहीमें रहें पैनकहे में है दहेंदेह विरह अ-
गिनिऊक आनिउर डारती । दईहैं बनायविधि अविधि
की बैरनेपै अमरेश इन्हें मारिहमहीं तौ हारती ॥ होत
न निवाह जो रिसायनेक राखेंमूदि उघड़े निगोड़ी दूनों
मगपग धारती । लाजको न राखें लोकलीक गहिदूरि
नाखें वरवश आंखेंहमें परवश पारती २५ ॥

स० ॥ प्राणपियारी शृंगार सर्वाँरि लियेकर दर्पण
रूपनिहारै । चंद्रसे आननकी द्युति देखतपूरि रह्योउर
आनंदभारै ॥ अंजनलै नखसों रमणी दृगअंजित उप्य
मयों अनुसारै । चीरकेचोच चकोरनकी मनोचोपसों
चंद्र चुगावत चारै २६ ॥

क० ॥ पाटल नयन कोकनद कैसे दलदोऊ बलि-

भद्र वासर उनींदी देखी बालमें । शोभाके समुद्रमें है
 आभा बड़वानलकी देव धुनि भारती सो मेलपुण्यकाल
 में ॥ कामकैवर्त कैधौं नासिका उडुपबैठयो खलतशिकार
 तरुणीके रूपतालमें । लोचन सितासितमें लोहितल-
 कीर मानोवीभे युगमीन लालरेशमके जालमें २७ ॥

क० ॥ पलकें अमोल तापै बरुनी भूवा लसत ला-
 ज वारी करैं पग परम सुढंग हैं । श्रीपति सुकवि लोने
 पाखर बने हैं कोने रचि पचि विधिना सवारै सब अंग
 हैं ॥ जापै चढ़ि रूप के सुभट प्रेम राज काज बिरह गनी
 मन सौं जीत लेत जंग हैं । दिनरैन पियमन वीथिकामें
 नाचत हैं प्यारीतरे नैन कैधौं नैनके तरंग हैं २८ ॥

क० ॥ प्रेम रंग मगे जग मगे जागे यामिनीके यौव-
 न की ज्योति जगि जोरउमगत हैं । मदनके भातेमतवारै
 ऐसे धूमत हैं भूमत हैं भुकि २ भँपि उघरत हैं ॥ कहै
 कवि आलम निकाई इननैनन की पाँखुरी पहुम पै भँव-
 र थिरकत हैं । चाहत हैं उड़िबे को देखत मयंक मुख
 जानत हैं रैनिताते ताही में रहतहैं २९ ॥

क० ॥ पीके प्राण प्यारे प्रेम परम सुजान जीकेनीके
 नये नैननकी आव्र अबऊचीहै।कान्ह कमलेक्षणकी मानो
 मनमोहनी है काम कमलेक्षण की हुकुम हबूचीहै ॥ तरल
 त्रियेनी की तरंग युग जाहिर है यौवन जवाहिर की
 अजब अजूचीहै । मीनन की सदी डूबी बदी डूबी कंजन
 की भौरन की भूल खंजरीटन की खूबी है ३० ॥

क० ॥ पाइये न खोज खंजरीटन में रंचकहू लोचन
 तिहारे ये छिनैया गति मीनके । कंज दल गंजन कुरंग

मान भंजन ये रंजनहैं रंग मन रसिक प्रवीनके ॥ मधु-
विचारे हिय हारेही रहत वन अति सुख दायक सहायन
सखीनके । तीखे तीर कावके न देखे काम वामके गनावे
को परीन के नरीन किन्नरीनके ३१ ॥

क० ॥ पानियके पानिय सुवर्ताई के सदन शोभा के
समुद्र सावधान मन मोज के । लाजन के वोहित पूरे-
हित प्रमोदनके नेह के नकीव चक्रवर्ती चित चोजके ॥
दयाके दिवान पतिव्रतहू के परधान नैन ये मुवाश्क
विधान नव रोजके । मृगन के महाराज सफरीके शिर-
ताज साहब सरोज के मुसाहब मनोज के ३२ ॥

स० ॥ पंकज के दल द्वे पर द्वे भँवरी रस लालच
हेत लगी हैं । हैं नटनी सुरनायककी निरतें कल हाव
सो भाव पगीहैं ॥ बालके नैनकी पूतरियाँ निशि वासर
लालके हीमें खगी हैं । कंचन की भाव रूपड़ वीनमें
खोल धरी मनोनीलनगी हैं ३३ ॥

क० ॥ परम प्रवीन मीन केतन के मीन कीधों सुख
के सरोज हैं फुलाये पिय भान के । शरद के खंजन
मिलेहैं मुखचंद्र कोकि जोरे हैं कुरंग रथ वाहन समान
के ॥ बाल तेरे नैनकी विशाल शाल सौतिन के बलिभद्र
साने हैं सोहाग सरसान के । मुनिन के मन उपजावत
अनेक भाव मेरेजान येईहैं विधाता पंचवान के ३४ ॥

क० ॥ पतिव्रतता के मंजु मंदिर मजाके किधों लखि
मृग थाके चारुसर सुखमाके हैं । कैधों छेम छोके हैं
अमंद भौन भाकेहैं न ऐसे रमा रम्भा के उमा के और
काके हैं ॥ भनै रघुनाथ धाम कैधों शीतलाके प्रेमसागर

के मीन नैन बाँके राधिकाके हैं । पिय मुददाके बशीकर
वसुधाके कीधौंसुधासिंधु मण्डलमेंकुण्डद्वै सुधाकेहैं ३५ ॥

क० ॥ गुंजा गिले खंजन की भौर भय कंजन की
वारिविधु मंजन औ अंजन समेत हैं । नेहभरे सागर
सनेह भरे दीपक से मेहभरे बादर सलोने लखि लेत
हैं ॥ तरल त्रिवेनी के तरंगन में ताराकवि मानो शाल-
ग्राम स्नान के निकेत हैं । मृगमद लागे शाखामृग दृग
दागे मैत्र छाजन में पागेनैन ऐसे शोभादेत हैं ३६ ॥

स० ॥ रूपसने बहुरूप दिखावत देखेबनै दृगशील
सचोहै । ज्योतिधरे मुक्ता से ठरे कै सुरंग सरोज से रंग
रचोहै ॥ खंजन मीन मधुव्रतसे सो कुरंगनु रंगसे मान
सचोहै । इयाम सुधानिधि पान न चाहत होतहै चार
चकोर निचोहै ३७ ॥

स० ॥ रैनजगी रतिप्रेम पगी उरही सों लगी विधि
की अवरैखी । लाज लजीली कटाक्ष कटीली रसाल
रसीली विशाल विशेखी ॥ खंजन मीन मृगीन लजावन
पीत सरोज समान कलेखी । कान्हरकी सों री तेरीसों
राधिके तेरीसी आंखि न आंखिन देखी ३८ ॥

क० ॥ रातिके उनींदे अलसाते मदमाते राते राजें
कजरारे दृगतेरे ये सुहातहैं । तीखीतीखी कोरन अँकोरे
लेत कादिजिय केतेभये घायल औ केते तलफात हैं ॥
ज्यों२ लै सलिल चखसेख धोवैवार२ त्यों२ बल बुंदन
के वारभृकि जात हैं । कैवर के भाले कैधौं नाहर नहन
वाले लोहूके पियासे कहा पानीते अघात हैं ३९ ॥

क० ॥ रसभरे जसभरे कहै कवि रघुनाथ रंगभरे

रूपभरे खरे अंग कल के । कमला निवास परिपूरन
सुवास आस भावते के चंचरीक लोचन चपल के ॥ ज-
गमग करत भरत द्युति दीह पोखे यौवन दिनेश के
सुदेश भुजबल के । गाइवे के योग भये ऐसे हैं अमल
फूले तेरे नैन कमल अमल बिन जलके ४० ॥

क० ॥ राजें रतनारेहग ऊपर उजारे भारे प्रेम मत-
वारे पियमैन सुखदैन हैं । गंजन कमल मृग मीनमद
भंजन हैं अंजन लखे तेन रहत उरचैन हैं ॥ नंदन सु-
कवि नन्द नंदन पै दुरेनेक रोसभरे देखे याते कहे कछु
वैन हैं । ऐसी देखेनैन मैन बानसे बिराजे ऐन प्यारी तेरे
अजब गुलाबीरंग नैन हैं ४१ ॥

क० ॥ राजत अमीके मदझाके कालकूट किधों चं-
चल उरंगकी समाये ये नकाके हैं । पीके हियराके मृग
मीननके थाके किधों सौति सालहीके सुखमाके ऐन काके
हैं ॥ परम कहत देखि खंजनहूथाके किधों श्याम श्वेत ताके
लाल आभा साधिकके हैं । छत्र छपाकरके भूपाल के
छलाके चारु चंचल चलाके नैनवाँके राधिकके हैं ४२ ॥

क० ॥ खंजन नवीन मीन मानके उमाहेदेत नाकेदेत
मृगमद कंजके तहांके हैं । ठौर २ भँवर भ्रमत जाके
ताके संग साखन चकोर कहै चंचल चलाके हैं ॥ ऐसे
ना रमाके न उमाके ना तिलोत्तमाके प्रवल हरौल पंच
वाण प्रीति नाके हैं । हैं न मंजुघोपाके बखाने मैनकाके
मैन ऐन सुखमाके नैन वाँके राधिकके हैं ४३ ॥

क० ॥ खंजन चकोर मीन मृग शिशु सारमयो वारि-
ये कपोत हू अनूप कहि गोरी के । तीखे तीर खंजर कटा-

री तेग नेजनतैं बाँक बिछुवाते हैं बकैत वरजोरीके ॥ भनै
रघुनाथ हैं लजीले ललचोहैं लाल पंकज गुलाब रंग
रति मद मोरीके । ललित विशालयों रसाल कजरार
लोल मृदु रतनार नैन नवल किशोरीके ४४ ॥

क० ॥ खंजनके प्राण पिय बिरह तिमिर भान मीनन
के मान धनवान मनमथके । शोभाके श्रृंगाररूप थारके
डरार मोती शील सरदार फौजदार प्रेम पथके ॥ श्रीपति
सुजान लोने लोचन गुमान भरे सुधर पहलवान रति-
रानी रथके । रस बहु रंग जाल ज्योति के कुरंग माल
कंज से विशाल सहिपाल मनमथके ४५ ॥

क० ॥ खंजन खिजात जलजात हू लजातहेरे हरि-
नो हिरात मुकतान ठहरातहैं । पंच शर कीनेरद भौरन
केभूले मद नट से विचित्र चित्रहीमें हहरात हैं ॥ दीपक
मलीन छीन मीन लागें मेरे जानभीने तीन रंग यालैं
अति इतरात हैं । परवश प्यारे प्राणप्यारी जू तिहार
दृगमारतनिशंक नकलंकहिडरात हैं ४६ ॥

स० ॥ भौर सरोज तेशोजजुरे नचकोरनहू मदमोद
परीहै । प्योमन रंजन अंजनहू बिनखंजन कांतिको
खीनकरीहै ॥ काहूकहा कहिये केहिमानत येती अनूपम
ओप भरीहै । जानतहों बिधिलै सबदेशकी आँखिनही
छवि आनिधरीहै ४७ ॥

क० ॥ भूपतिहै प्रेम लालडोरेहैं निशानतेई चंचल-
ता चतुर तुरंग भीरभारीहै । देखिबे अनेकभाँति तेई
असवार खरकाजर समोइकरी कोरसीसँवारीहै ॥ बरुनी
बंदूकन की पाँतिसी लई है पिय बिरह गनीम मारि-

बेको पैज धारी है । सूरत सुकवि स्वच्छ इयामरंग वागे
बने प्यारी तेरे नैननि में नकी असवारी है ४८ ॥

क० ॥ भारेकजरारेदोऊ काजरसौलालडारे सेंदुरसों
चीतेअतिराजतसुपथके । मतिजूकहत पाँयवरुनीजँजीर
डारि करत कटाक्षगति डोलहूलनथके ॥ पूतरी महावत
विराजै आड़ नासिकासों प्रीतमके प्यारे हेलिये याजग
गथके । मोहन के मोहनहैं सोहैं तीखे लरिवेको नैनातेरे
दोउ गजमाते मनमथके ४९ ॥

क० ॥ भृकुटी कुटिल राजें मूठिसी विराजै वरपलक
मियान पुंज पानिय रसालहैं । कज्जल कलित दोऊ
कोर में दुधारे धारे डारे रतनारे जेवजौहरके जालहैं ॥
गोकुल विलोकि निजनाथक सनेहसनी स्वच्छहैं कटा-
क्ष काट करत करालहैं । कमनीय कामनीके रमनीय
नैन कैधों कामिनके मारिवेको काम करवालहैं ५० ॥

स० ॥ भूत परेत कोफेरोवचै यह नैन को फेरोहियो
तोड़िडारे । तीरचलै तलवारि चलै अरुशम्भुकोवाण
छुटै अतिन्यारे ॥ वज्रको फेरोवचै तोवचै अरुप्राणवचै
नरसिंह हुंकारे । कालको फेरो वचै घड़ि द्वैक वचै नहिं
नैन चपेट के मारे ५१ ॥

क० ॥ सफरी से कंज से कुरंग कर साचल से आम
कीसीफाँकें सब कहत सुजानहैं । नटुया से नटसे तुरंगम
से खंजन से बालक हठीले जैसे ऐसे ठने ठानहैं ॥ देखों
टेढ़ीकोरें मानो नखनैया छोरके हैं वान ऐसी अनीपैनी
लागेलेन प्रानहैं । ठग वटपारे मतवारे कवितुच्छ मति
इतनेही नयननके कहे उपमानहैं ५२ ॥

स० ॥ सुन्दरी साज श्रृंगार सुधारति सौतिके गर्वहि
गंजनको । गंगलिये करसार सुतामन मोहनके मनरंजन
को ॥ कज्जल चारुदिये अंगुरीतिहिमें मेहँदीरंग अंजनको ॥
ऐसीजचीहियमें उपमा मनोगुंज चुगावतखंजनको ५३ ॥

क० ॥ सुखमाके घर पूरेपानिय के सरवर आसन
अनूप हररूप विशरामके । चातुरी के चारकला केलिके
अपार हावभाव के भँडार पाय इन्दीवर दामके ॥ रतिके
रतन जाल मोहन के मूलमाल राजत रसालहैं विशाल
नैन वामके । मीनके महीपति हैं खंजन प्रभाके पतिमृग
के सलामत सलावतहैं काम के ५४ ॥

क० ॥ सुखमा मालिन्द के अलिंग अरबिन्द हैं कविन्द
हैं नरिन्द के लगेहैं बरयसके । श्रीपति प्रवीन रूप सरके
ललित मीनहरिन नवीन नेह कानन सरसके ॥ ऐरीमेरी
प्राणप्यारी लोचन तिहारे प्यारे सुरज सिखारे पिय बिरह
तमसके । रतिरन बीरहैं श्रृंगार गुनवीर हैं सँवारे आछे
तीरहैं मदन तरकस के ५५ ॥

क० ॥ सोहत सजीले सित असित सुरंग रंग जीन
शुचि अंजन अनूपरुचि हेरे हैं । शीलभरे लसत अ-
शील गुनसाज दैकै लाजकी लगामकाम कारीगर फेरे
हैं ॥ घुंघुट फरसतामें फिरत फवीले फूले लोककवि
गवाल अवलोकि भयेचेरे हैं । मोरवारे मनकेत्यों पनके
मरोरवारे त्योरवारे तरुनी तुरंगदृगतेरे हैं ५६ ॥

स० ॥ भूमैं भुकेँ उभकेँ फिरि भूमैं महामदमाते
खरेईरहैं । टारेटरैन मदांधभये फिरिठौरही ठौर अरेई
रहैं ॥ कुंजरसेहग तेरेसखी मुखके गुणमालगरेईरहैं । खू

नकरें सब आलमको फिरलाजके आंठू परेइरहें ५७॥
 क० ॥ भूमत भुक्त उभक्त फेर भूमतहें भूमि
 भूमिभूमि उठे काजरसे कारेहैं । ऐंड़ालमऐंड़दार ऐंड़त
 अड़त अति अगड़ परेतें नेक टरत न टारेहैं ॥ गहगहे
 गुननगहीले गरबीले महा श्रीपति सुजानमैन परमसु-
 खारेहैं । पियप्राणप्यारे सब भांतिन सुधारे प्यारी
 लोचन तिहारे कैधों गज मतवारिहैं ५८॥
 क० ॥ भूमत भुक्त भरे मदके अरुणतेन मानो
 मैनतूनहैं कढत जातेसरहैं । हावकिल किंचित् स्वरूप
 धरेनाथ कैधोंमोहन वशीकर उचाटके अमरहैं ॥ कैधों
 मीन पैरत सहावके सरोवरमें मानिक जटित भूमि
 खंजन सुधरहैं । कैधों अनुराग को लपेटि के शृंगार
 बैठो कैधोंकोल पांखुरी में डोलत भँवरहैं ५९॥
 क० ॥ मीनकै कमीने परे पानीमें निहारे द्वारिहारिके
 चकोर तातेचुगत अँगारेहैं । भूपति भनत मंजकंजन
 के खंजनके गंजन गरवकरि डारे कै निकारेहैं ॥ डारे
 रतनारे तारेकारे औ सितारे श्वेत उपमा सितसित
 तरंगिन में भारेहैं । प्यारीतेरे मानदग पानिपरसान
 धरे कैवर कसीसे वै कमान वारेवारहैं ६०॥
 क० ॥ मृगकैसे मीनकैसे खंजन प्रवीण कैसे अंजन
 सहित सित असित जलदसे । चरसे चकोर से की चोख
 खांडे कोरसेकी मदन मरोर सेकी मातेराते मदसे ॥
 नवीकधि ऐनासेकी और नैन वैनासेकी सिधरेलमोना
 सेकी अडि मृगमदसे । पयसे प्रयोधि सेकी और सौधे
 सौधसेकी भारेकारे भारसे कि प्यारेकोकलदसे ६१॥

० सं० ॥ मनमोहनी सुरति राधिकाकी लखि मोहन के
 मन प्रेमपग्यो । चहुं औरते फैली है चंद्रकसी मुखकी
 छवि नंदकुमार रग्यो ॥ दुहुं नैननबीच में काजर रेख
 विराजत रूप अनूप जग्यो । रविको तजि चंद्रसों नेह
 कियो अरविंदन मानो कलंकलग्यो ६२ ॥
 ० क० ॥ नैनमद छाके राजै मोहन कलाके । ऐन कंज
 उपमाके दैनचैन भरताकेहैं । पट अंचला के चाटकरन
 निशाके चाके काम चंचलाके नाके देखतही भांकेहैं ॥
 सुंदर प्रभाके भरे मधुर सुधाके मीनमृग भेंवरा के गुन
 क्षीनवाके पाकेहैं । ताके समता के हेरि थाके पैनताके
 कहूँताके नैनवाके वृषभानकी सुतकेहैं ६३ ॥
 ० क० ॥ महा कजरारे मृगशावक ते न्यारे दूरि खंजन
 विडारे निरखे जाहि चैनहैं । कैधों अलिकारे कैधों
 भूमि मतवारे कैधों ताम रसवारे कैधों खंजरके ऐनहैं ॥
 कैधों युगमीन बसे सुंदर सरोवरमें कैधों कामखरसान
 चढ़े तीखेपैन है । और अंगअंगनकी शोभामानकहा
 कहै देखो श्यामसांवरीके कैसेनीके नैनहैं ६४ ॥
 ० क० ॥ मोतिनते सीरे और ईगुरते सते राते काजर
 तेकारे भारे पानिपके पान है । भालिके कटारी से औ
 दामिनि डरारीसे औ लागतहैं कारीसे जुमलमेरे जान
 हैं ॥ डाकाके परैया कैधों मनके लुटैया और बशके
 करैया और चोखनकी खानहैं । मंत्रमनमोहनसे अधिक
 धरोहनसे औ मनके सोहनसे पारथके वानहैं ६५ ॥
 ० क० ॥ नैन अरसीले सरसीले अतिरसभरे विवश
 वसीले औरंगीले रंगमगेसे । निपट हठीले अरवीले

रस कीले जनु गुणन गसीले गरवली रस पगसे ॥ कछु
मुसको हे तिरछो हे सकुचो हे कछु होत जाननो हे मन
मोहै पग लगे से । ललित ललो हे कछु लाललचजो
हे जनुयाचक यँचो हे ढिग डोलें डग मगसे ६६ ॥

क० ॥ नैनको कमल कहौं वेतो मुरभाय आली जो
तो कहौं मृगनैनी वेतो सब कारे हैं । जोतो कहौं मीन
जल वेतो नहीं आवें तीर जोतो कहौं खंजनवे श्वेतरंग
सारेहैं ॥ चपल तुरंगकहौं धायक वे पायकसे दीपककी
ज्योतिकहौं वेतोरैनजारहें । शशि ऐसेशीतल कहौंवेकला
हीन आली तेरे नैन जीतिवे को तीन लोकहारहैं ६७ ॥

स० ॥ चख चंचलयों चमके तियके दृग अंचल में
न रहै हटके । पुनि सैननि चित्त चुरावत श्यामको वाम
को ये टुटिका बटके ॥ अति लोल कपोलन डोलतहे
ढपना पट घूँघट में सटके । चट यों पट भेद दिखावत
हैं जैसे भाव चले गुटका नटके ६८ ॥

स० ॥ चंचल चौखे से चीकने से चटकारे से चोग
ने रूप भिरामके । सान सगे से विखान लगे से सयान
पगे से रँगे से ललामके ॥ माजे ममारख दे विप अंजन
सीधे से बीधे हटै घन श्याम के । वान चित्त दृग तेरे
पियारी रहे शर काम के एकौन काम के ६९ ॥

क० ॥ देखे अरुणाई करुणाई लगे कंजन पे मृग-
न गुमान तजि लाज लहिवे परी । तोपनिधि कहे अग्नि
खंजनहू छीनताई मीनन अर्धनिहवे गरीबी गहिवे परी ॥
चरचा घकोरन की कोरन सां कोरि डारी कविन कयी
सता कीहार कहिवे परी । आई चंचलाई जवरथिकाकी

आँखिन में खासे खंजरीटन खराबी सहिवे परी ७० ॥

क० ॥ दूरहीते सोहीचार अचल हैसोही बड़ी भौ-
हन के संग सोही सुभग नवेली की । आयो जबठिग
तबसुवरन वेलीपरलीन्ही अनुहारहै सुखंजयुगकेलिके ॥
पुनि अधखुली इंदीवरकी कलीसी दीसीपरीहै तिरीछी
डीठि बचिके सहेली की । विविध कटाक्षभांति मैनशर
पांतिपांति बनीं ऐसी आँखियां अनूपअलवेलीकी ७१ ॥

क० ॥ दीरघ ढरारे आछेडारे रतनारे लागे कारेतहां
तारे अतिभारे जे सुरंग हैं । कहै कविगंग जनुदूधहीसों
धोये पुनिकोये बिकसित सित असित दुरंग हैं ॥ पारद
सरिस चीर थिरमें थिरकिजात तिरछे चलत मानो कू-
दत कुरंग हैं । खँचेन रहत अनुरागहू के बागवर प्यारी
जीके नैन कैधों मैनके तुरंग हैं ७२ ॥

क० ॥ जीतेजिन तोमरस अलिकुल मीनकुल कारे
कजरारे सोहैं पियसुख दैन के । जीतेजिन खंजन औ
मुक्ता ढरनि जीती जीतेहैं चकोर कैधों दीपकहै रैनके ॥
कमल ढरारे कैधों प्रेममद मतवारे तेवन सुहायधरे
जागे सुखसेन के । मृगहै भँडैत कैधों पायक खँडैत
दोऊ प्यारीतेरे नैन कैधों योधा ऐन मैन के ७३ ॥

क० ॥ यौवन प्रवाह तामें छविकी तरंगउठै भौहकी
मरोरन सों भौर मतवारे हैं । बालमकी मरति मलाह
माँझ वैठिरही छूटे लालडारे तईगुन रतनारे हैं ॥ पूतरी
हलनिसोई पतवारी ऊधोराम लाज बादवान चंपवरुणी
सर्वारे हैं । रूपके सरोवर में तीरतीर डोलत हैं आँखियां
न होई चेतोकाम के निवारे हैं ७४ ॥

क० ॥ ऐसेनेन मेनके नदेखे ऐन सेनके जगेया दिन
 रैनके जितेया साँतिसीनके । कमल कुलीनके मुकलित
 करनहार काननकी कोरन लौ कोरन रँगिनके ॥ भनत
 कविंद्र भावतीके नैन चायक से देखे मेन पायक से
 नायक नवीनके । सींचेहें अमीनके अमीन मानो मीनके
 वखाने को मृगीनके खगीन पशुगीनके ७५ ॥

क० ॥ एकही भ्रमाके मैं क्षमाके मनमोहे दृग ऐसे
 मा रमाके न उमाके न रमाके हैं । दशहू दिशाके मनसा
 के फलदेनहारे करन निशाके इमि जाकी और ताके हैं ॥
 जाय के जहाँके तहाँ मीनजल ढाँके गये हरिण हहाके
 ऐसे कमल कहांके हैं । सदनसभाके सुखमाके उपमाके
 चारु चंचल चलाँके नैनवाँके राधिकके हैं ७६ ॥

क० ॥ ऊबीसी रहत अरविंदन की आभा महवृवी
 मृग छौनन की छाम करियतु है । दूबीवन वीथिन च-
 कोर चारुताई मन सूवी तुरगन की तमाम करियतुहे ॥
 डूबी जल जोरन साँ मान वरजोरी शोभ भोर मग रूरी
 वदनाम करियतु है । देखि देखि तेरी अँखियाँन की अ-
 जूबी प्यारी खूबी खंजरीटन की खाम करियतु हे ७७ ॥

क० ॥ छवि बाल वरसील साहबके घर पिय मन
 मीन सर सर काम देवतनके । चातुरीके पारके श्रृं-
 गारके कुमारके धौं खंजनके अवतार रंजन अवनके ॥
 रथ मनोरथहीके वाहनसे ऐन मेन नीलकंठ ऐसेनेन
 को सकै वरनके । भोरनके भूप चार चक्र वै चकोरन
 के हरिनके हाकिम कुटुम्बी कमलनके ७८ ॥

स० ॥ लसे वीरै चकासी चले श्रुति में भृकुटी जुवा

रूप रही छवि छवै । अलकावलि डोरी कसी नृप शम्भु
जुसूत अनंग दई छरी छवै ॥ तम साँवरे रंगहि जा
नत है हठि पीछू परे हैं चलै जित कै । कर छालत
आवत नैन किधौ ये सुधा करके रथके मृग द्वै ७६ ॥

क० ॥ लालची लज्जिले लोलि ललित रसीले लखे
लोगनि ललकि लैलै लूट लँगराके है । छिनमें छलित
चित्त छैलन को क्षोभै छरै छरै छरकिले सो छवीले छवि
छाकेहै ॥ मनसा कहत डेरा डौडीके न डाडे डांका डारत
डगर डग डारत में डांके है । ऐसे और काके मैनका के
अवला के मैन बानत ते बाके नैन बाके राधिकाके है ८० ॥

क० ॥ वारिज विकाने लखि खंजन खिसाने मृगमी-
न मुरभाने वनहून बहरत है । भौर भहराने आन
उपमा न आने कवि हेरि हेरिहार मानि हियेहहरतहैं ॥
अतिही विशाल बाँके प्यारीके अनूप दृग कहत कछूपे
रोमरोमथहरतहैं । मेरे जान आनंद सांचारों चक्रजीति-
वे को भूप मकरध्वज के ध्वजा फहरतहैं ८१ ॥

क० ॥ बरुणी बघम्बर में गूदरी पलक दोऊ राते को
ये बसत भगों हे भेष अँखियाँ । बूडी जलही में दिन
जामिन हू जागति हैं धूम शिरझायो विरहानलविलखि-
याँ ॥ आँशू त्यों फटिक माल लाल डोरे सेली सजे भई
है अकेली तजि चेली संग सखियाँ । दीजिये दरश देव
कीजिये संयोगिन ये योगिन हवै बैठी है वियोगिनकी
अँखियाँ ८२ ॥

क० ॥ बंधु विधु कोर में चकोर कैसो जोरा बैठ्यो
कैयों मृग मीन बाल हित कै बढ़ाये हैं । कैयों काम राज

के युगल मीन जंग जुरे खंजरीट राखि मानो पीजरा
पढायें हैं ॥ मिलत जियाइवे को विहुरत मारिवेको वानि-
कपियूष विषवोरिके कढायें हैं । केशों विधि पूरण मयंक
मुखपूजाकरी अलिन सहित मानोललिन चढायें हैं ॥ ३ ॥

श्लोक ॥ श्रीजी चपलाई तामें मैन असवार गाढो तर
कस वन्द वर पलकें सुधारि हैं । ताहीते कटाक्ष वान
भरे विई नोकदार जाकेतनी लागैसोई लगन विचारि
हैं ॥ कहै द्विजराज भौहें चापसी चढावे जनिकह्यो मानु
प्यारी एतोअधै बटपरिहैं । घूंघुट नखोल तेरेनैनहैं निष
टवांके धरिक में धेरिकाहू घायल करिडारिहैं ॥ ४ ॥

श्लोक ॥ पियमन दूतकेशों प्रेमरथ सूतकेशों भँवर
अभूतवपु वासके सुरंगहैं । चित्तवत चहुँअर प्रीतमके
चित्तचोर चन्दके चकोर केशों केशव कुरंगहैं ॥ वानमद
भंजन के खिलिवे के खंजन किरंजन कुंवर कामदेव के
तुरंगहैं । शोभा सरलीन मीन कुवलया रसभीन नलिन
नवीन केशों नैन बहुरंगहैं ॥ ५ ॥

श्लोक ॥ कीरति पताके काम देवताके पावताके प्रेमके
पताकेदेनहार हितताकेहैं । सँचेसुखमाके सुखमाकेजा-
के जोहेहोत मादक ताकेसे प्यालेअले रसताकेहैं ॥ पतरी
धनीनाके सँकोचहैं निगीनाकेसे ताकेकाज जड़ित मुडोल
डिवियाकेहैं । जसकरता के सान तसकरताके वाननाथ
येकजाके बाँके नैन राधिकाके हें ॥ ६ ॥

श्लोक ॥ मीनहेतु दानताके क्षीनताके हीनताके शरमा
के भयेतरियाके दरियाकेहैं । खंजन विडितताकेमारफिर
मारैमारै तीतली भलीसी लहीनहीं थिरताकेहैं ॥ जल

भँवराके भँवराके जल डूबेहोस विधि दँवराके मारेरहे
भँवराके हैं । पक्षी पक्षताके गुण अक्षताके खोयबैठे ना-
थये चलाके बाके नैनराधिका केहे ८७ ॥

क० ॥ उड़िगे चकोर मोर खंजसिली मुख्यजोर जंग
लगे उरग तुरग मृग द्विपनाह । भ्रषमारि मनहारि
कंजकारि बूडेबारि ऊपर परीनकी परीनकी परीनआह ॥
श्रीध अवकलयो बहालहरि हाललाल सौतिसाल बो-
लचाल बाहुबाह आहआह । लखत सखत दसखत ये
तखत भाव बखत बलंद प्यारी तेरे नैन पातशाह ८८ ॥

स० ॥ द्युतिदेखत दन्तनकी हिय हारत हीरनके गन
दाड़िमहै । वसुधाविच चारुकुधाकि मिठाई सुधाधर
सोधर सालिमहै ॥ अनुनैन बनी भुकुटी कुटिले कलमैन
के चापसो आलिमहै । जंगजाहिर जोरजनाइसके अ-
खियाँ यमराजसो जालिमहै ८९ ॥

क० ॥ कोयनकी कुरसीमें करिके कुमाचबैठी बरुणी
वरीषवीर बिलसनि बेरेहै । पूतरी प्रवीण तेई पातुरे
बिलोकियत पलकन प्यादनके पेखियत फेरेहै ॥ चारु
चंचलाई चोपदारहै हमेशवेश कहै परमेश डीठि भौह-
न केडेरेहै । आवमहतावभरे किस्मति कितावभरे मानत
न दाव येनवाव नैनतेरेहै ९० ॥ इतिनेत्रवर्णनसम्पूर्ण ॥

अथ सैन वर्णन

क० ॥ कीधौंश्रितिमण्डल कुवेनी देखि तारागण होत
मीनके तन केमीन सरकस है । मित्रनसों कहैसुखहीकी
वात बलिभद्र पूछत कीमन्त्र मुनिन सों बरकस है ।

लक्ष्मीतर वरनि कोछूटैघृत चतुरनि विशिख विसारे पाथे
काम कम करसतहै । उज्ज्वल सरल चक्र चहतहै रैन
दिन अक्षके अपागनके आछे तरकसहै १ ॥

स० ॥ केशव वाकी चितौन कीकौन कलाकहों जाति
कही कछुनाहीं । यद्यपि सूधी सुधारसपागी विकार वि-
वरजित सोहे सदाहीं ॥ तद्यपिजाय परैजहँ ओचक
नेकौ स्वभाव हतेज्यहि घाहीं । चेतनहोत जड़ैजड़चेतन
केतन को निरख्यो दृगमाहीं २ ॥

क० ॥ नेकही निहारे नैन नायका सुकीयानरि मुनि
नके मन मनसिज सौतनौतहै । बिनही कटाक्ष काटे
लाजहीके कवचन काजर नयेते कोटि कामके उदोतहै ॥
जोहै निर्विकारतौविकारकरै औरनको छँडैक्यों कुलान
स्वभाव जैसे जाकेगोतहै ॥ वाकी चितवनमें करैगी कहा
बलिभद्रसूधी चितवनमें असाधुसाधुहोत है ३ ॥

स० ॥ वाजकीबैठक लैउचकी पुनिवेधि कहीपर
धूँघटभीनो । उड़िजाय कुहीजिमि दूरिदुरी बहुरो गति
आनि करीलकीलीनो ॥ तानत काननलों चखलालसो
साननमें भरवानर कीनो । शालत देव अदेवनहू वरु
पारथको पुरुषारथ छीनो ४ ॥

क० ॥ चंचल विशाल मीन खंजन मृगाते वेपताक
न तिरीछी भईजवटग जूटीकी । मृदुमुसक्याय रूपभ-
लकदिखाय फेरिमोरिमुखदीन्हों जोरडोर प्रीति टूटीकी ॥
भनैरघुनाथ भरी आनँदअटूटी लखिछूटी मानवान
कान्ह सहित रतवूटीकी । लूटी सौत सानआन मेंड

सबफूटी देखि नेजा मैनबूटी सैननवल बधूटीकी ५ ॥
इति सैन वर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ तारे वर्णन ॥

क० ॥ फटिकके संपुटमें सोई सालग्रामशिला कमल
दलनिपर भौरसे निहारेहैं । मृगमद बिंदुके लसतप्रति
बिम्बकैधों दीपत दृगन पर कज्जल केवारेहैं ॥ कैधों
मरकतमणि सुकुत सुकुतपर कैधों रति नायकने शायक
बिसारेहैं । पियमन तारिवेको अवतारेतारे भारे बरुनी
के बारमानो तरुनीके तारेहैं १ ॥

स० ॥ पंकजके दल द्वै परद्वै भंवरी रस लालचहेत
खगी हैं । कैनटिनी सुरनायककी निरतें कलहावसो भाव
पगी हैं ॥ बालके नैनकी पूतरियां निशिबासर लालकेही
में लगी हैं । कंचनकी भूखरूपडि बीनमें खोलधरी म-
नोनील नगी हैं २ ॥

क० ॥ पयभरे भाजनन पैयत मधुप मध्य कीधोंक्षीर
निधि मध्यदीप युग कारेहैं । बसन बिसद बीचसोधही
के बिंदु कीधों देखिवेको मैनमुख दर्पण सँवारेहैं ॥ छाती
धरे क्षिति जीतिवेके काजबलिभद्र तमकी रसकैतरुणी
तेरे तारेहैं । कमल दलनपर मणिमयदेव कीधों पियमन
द्विज पूजिवेको पांयधारे हैं ३ ॥

क० ॥ कैधों रूपसागरमें आंच बडवागिनकी विरह
विसाल ज्वाल जामधि बिकासीहै । कैधों दलपंकज के
ऊपर अरुणरेखें कैधोंनेह दीपककी अरुण शिखासी
है ॥ गोरी तेरे नैननिके बीच लालरेखें तेतो रेखें अनु-

रागहीकी प्रगट प्रकासी है । कैधों अनियारे अति कारे
बट पारेइन तारेनकी फांसी पियजिय के निकासीहै ४ ॥

क० ॥ तामरससोहै तरुणीके बरनैनवीर तामें तम
निशाकी बसीठी मानो आयोहै । कैधों अनुराग जाल
डाख्यो मैनसैन सरगोलकहें ताकेताको ऐसोभाव भायो
है ॥ खंजन धरेहैं मुख जम्बूफलमेरे जान उपमान आन
नूरऐसो ठहरायोहै । तरुणीके श्यामतारे ऐसे में निहारे
लाल चंदपै चकोर हलाहलसो खायोहै ५ ॥ इतितारे
बर्णन सम्पूर्ण ॥

अथकटाक्ष वर्णन ॥

क० ॥ कामकी कमानतेरी भृकुटीकुटिल आली ताते
एती तीक्षण येतीरसे चलतहैं । घूंघुटकी ओटकोट करिके
कसाई काममारे विनु कामकामी केते ससकतहैं ॥ तोरे
तेनटूटे ये निकासेते न निकसत पैन निशिवासर करेजे
कसकतहैं । सेनापति प्यारीतेरे तमसे तरलतारे तिरछे
कटाक्षगडि छातीमें रदतहैं १ ॥

क० ॥ तेरीभौहैं धनुष धरत करकोप आप चंपक के
आपके हूं खंचत खटातहैं । तेरिये अलक तामें ललित
कलित गुणमधुकर मयगुण कथत डरातहैं ॥ केहेनील
कंठ सबतेरे अंगअंगहेरि नातर अनंगसे समर समु-
हातहैं । जग जैतवार कोटितेरिये कटाक्ष नातो पांच
पांच बाणसों जहाँन जीते जातहैं २ ॥

क० ॥ हरिन निहारि जकिरहे हियेहारि मानिवारि
चर वारिजकी वानिक विकतीहै । हातीहोति तियापडि-

ताती कर छातीदौदै धीरमन रंचनके खंजन जमातीहै ॥
 देवेको समान उपमान आनदृगनकी कबिनके मनकी
 उकति अधिकातीहै । प्यारीके अनोखे अनियारेई छ-
 नानि छूवै छूवै तीक्षण कटाक्षनते कटिकटि जातीहै ३ ॥
 स० ॥ भीषम कर्ण कृपा अभिमन्यु दुयोधन सोम
 सोभरिश्रवाके । अर्जुन भीम युधिष्ठिर धृष्ट बिराट बली
 सहदेव प्रभाके ॥ सो शरव्यर्थ भये इनहूँके कहाकहिये
 निरदीन दयाके । तेरे कटाक्ष बचैन मुनीशहु हैं कबिसो
 शरकीसमता के ४ ॥ इति कटाक्ष वर्णन सम्पूर्ण ॥

अथनेत्र तिलवर्णन ॥

क० ॥ राजैवाम लोचनीके तिलवाम लोचनमें ताकी
 छबि कहिवेको कौनके सयानहै । जहांतिल तहां नेहयहू
 न सनेह जानि चित चिकनाईको बिचास्यो अनुमानहै ॥
 शिशुताके भायते रुखाई दरशाई ताकी एकै युक्तिआई
 जियप्रीतमा सुजानहै । नाहक चतुर मनदीन छीनलेत
 नैनतिल न लग्योहै ताकोपातक निशानहै १ ॥

क० ॥ शिशुतामें यौवन निक्राई कछुदेखी तातेचरण
 सरोजगति धीरता गहतहै । घांघरे पै ओढ़नी बिराजै
 तामें चोटीचार ता छबिके देखे वे मनोज उमहत है ॥
 दीरघ दृगनबीच पूतरी समीपतिल ताकी उपमाको जो
 सुजान सो कहतहै । अमल कमल बीचअलि अलनी
 सों मिलि करै मकरन्दपान आनंद लहत है २ ॥ इति
 नेत्रतिलवर्णनसम्पूर्ण ॥

अथ वरुणी वर्णन ॥

क० ॥ झुवतही कोमल सिरस कीसी प्रांखुरीहैं खिन खिनखरि खरकति जाति छाती हैं । निपट अंध्यारानेक होतनहिं येतेन्यारी अजौ अटमालकी अनीसी अहटाती हैं ॥ मण्डल तिलौंछी असिकाक्षर करौंछी अति अंकुश शिंगारकीजईसी उलहातीहैं । नैनमैन तारनकी फोंकसीतरेरी तीषीतरुणीकी वरुणीयेवरणी नजातीहैं १

क० ॥ नजर परेतेउ लहत उर आनंदहै लसत समूह सो कटाक्षन सफेद है । कालिदास लोचन पियारे अवलोकत ही प्रीतमके अंग २ पसरद सेद है ॥ दोऊ हित कारी करि मोहत मुरारीजी को छकेई रहत लखे विरत अखेद है । चरणमें एकगुण भेदनातौ तरुणी के वरुणीमें वारुणीमें और कछूभेद है २ ॥

क० ॥ लिख्यो मन नायक वनाय रसराज मसी कैधों महा मोहनी के मंत्रके वरन हैं । कैधों नैन चोरन के हाथकी अनूप असी कैधों श्याम अंगनके रंगनके कन हैं ॥ कैधों ये पचास कूट सीवन की सारसुई कैधों कारे तारनके किरणके गन हैं । कैधों रूप पंकजके ऊपर ये पंकरेखें कैधों नैन तरुणी कि वरुणी सघन हैं ३ ॥

क० ॥ सूर सुरमाके सैन काम जंगजीते हेतु साजे दृग अँखकोर कोरन सँवारे हैं । भनत दिवाकर सुधाकर नलेश जामें चकित सुरेश झोंड़ि आसन सिधारे हैं ॥ बैठिकै नजीक चारु चमर डुलावें फेरि हेरि जोड़िदारन के करत इशारे हैं । उपमा विलोकतहू लोकमें न आवे

प्यारी बरुणी विलास जैसी राधिका तिहारे हैं ४ ॥

क० ॥ तेरे युग्म नैननकी बरुणी योंवनी घनी मनो
द्वै मीनन की कनी कनके लुंज हैं । शीलके टुकूप चक्षु
पलमुख बन्धन पै कंचन कंगूर ये मनोज रंच मुंज हैं ॥
भनै रघुनाथ कैधों शोभा द्वै सरोवर पै सुवर बंधानन
पै नर द्रुम कुंज हैं । पूतरी मनोहरन पातुर के चैलछोर
कैधों नयन सुभट सुधारे संपुंज हैं ५ ॥

स० ॥ ओप अनूप है आनन की अँखियाँ विन का-
जरहू कजरारी । रैनदिना बिसरैसी रहै बिसरो करिये
विसरैन बिसारी ॥ नैनन जो निरखै अवला निकसैउर
बेधि अनी अनियारी । भागिनि की भरनीद भरी बरणी
न परै बरुणी भपकारी ६ ॥

क० ॥ कैधों दृग सागरके आसपास श्यामताई ताही
के ये अंकुर उलहि द्युति बाढ़े हैं । कैधों प्रेम क्यारीयुग
ताके ये चहुंधारची नीलमणि सरनिकी वार दुख डाढ़े हैं ॥
सूरत सुकवि तरुणीकी वरुणी न होयँ मेरे जान आये ये
विचार चित्त गाढ़े हैं । जेई जे निहारे मन तिनके पक-
रिबे को देखो इननैनन हजार हाथ काढ़े हैं ७ ॥

क० ॥ काम के केदारन की आयस की कीन्ही वारि
श्यामल सघन कमला करके कूल हैं । लोचन अनन्त
द्वै की रसना सहर चारि काजर की कौरँ युग रहरान
कूल हैं ॥ पलक अनंग कर तल्लन के पल्लव हैं कीधों
चितचोरे हैं हजार भुज मूल हैं । तरुणी की बरुणी
विराजै ऐसी बलिभद्र मोहनी पटनवारे ओरमखतूल हैं ८ ॥
इति बरुणी वर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ पलक वर्णन ॥

क० ॥ सुन्दरि के सुन्दर पुरन्दर पियाले अति नहिं
नै सुसुन्दर यों पक्ष सुरनारीके । काम की तराजू के अ-
मोले पला कंचन के कैधों क्षेम धाम छत्र पूतरी सुखारी
के ॥ भनै रघुनाथहैं मनोहरपियाके सदाकैधोंयुग सम्पु-
ट हैं रतन अपारीके । परखत भैनत्री लगावै न पलक
नैन ऐसे हैं सुखैन नैनन पलक पियारीके १ ॥

क० ॥ पातुर पूतरी पहिरे पवित्र पीत वास कीधों
ये सकल सुख वासना के धान हैं । पिय रूप पीवे को
अधर आछे बलिभद्र सौतिन को एको पल कलन नि-
दान हैं ॥ पिंजर की खंजरीट कनके सम्पुट हैं तिनमें
बसत प्यारे प्रीतम के प्राण हैं । कामतुला पलाहै पलक
तेरी पद्मिनी कि त्रियाके कपाट कीधोंतारे न जानहें २ ॥
इति पलक वर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ अंजन वर्णन ॥

दोहा ॥

बेष शिंगार रस तूलतम पूरे पातक लाज ॥

मन रंजन अंजन सबै वरणत हैं कविराज १

क० ॥ कंचनके कन्द परिखंजन तलफ कीधों बांधे
युगमीन नागफाँस सों मदनहै । कामके कसारन की
कूलन की कूपिका कि अहिख तिलक के शृंगारके स-
दनहै ॥ विशिख पुलिंद मन भाजे हैं प्रदीपनसों ब-
लिभद्र मुनिनके मनके कदन हैं । काजरकी रेखे अवरखी

युगलोचन कीने चित चोरनके मेचक बदन है ।

स० ॥ अंजनकोर दृगंचल राजत के मुनि नर
आनि चुभीवै । कैदुमुही यह नागिनिकी शिवनाथ
रसनाति लसीवै ॥ चंदहि चाहि चढीफहरात कपोत
कूल असीरस पीवै । देखतही विष आयगयो उर का
ही कहौ कैसेके जीवै २ ॥

स० ॥ खाय हलाहल औरन मारत आली अ
म्भव बात सरीहै । नेकदया जियमें धरिये यह ते
ऊपर पाप परीहै ॥ काहेको अंजन देइ सँवारत
हिये उर शाल करीहै । कोजग नाहिं भयो अभिम
अरी इन नैनन बाढि धरीहै ३ ॥

क० ॥ कैधौं रसराज रस रसित असित कैधौं
लित विशिख विष बलित सुमाल के । कैधौं जगर्ज
वेको राजा रतिनाथ हाथ बाहन बनाये केशव त
चल चाल के ॥ बृतघात पातक कि चित चोरिवे
तम देखिवे को नन्दलाल लालिकरै काल के । लागि
लोकलाज खंजन नयन कैधौं पियमन रंजन कि अं
है बाल के ४ ॥ इति अंजनवर्णनसम्पूर्ण ॥

अथ भृकुटी वर्णन ॥

दोहा ॥

भृकुटी कुटिल विलोकि यों होतहिये अनुमान ॥
विनुरोदा की द्वैधरी मानहुँ मैत कमान १
अडांडी काँटा तिलक पलचख पुतली बाट ॥
तौलति मूरति मित्रकी नेह नगर की हाट २

तुव भौहें सोहें सरस ऐंचि विना जिह वान ॥

वेधिलेइमन विकलजन किमिसम कहोंकमान ३

तजि सिंहासन राजअरु डासन रंक विशेष ॥

छुटैन आसन कौन को भौह शरासन देख ४

ऐंठेही उतरत धनुष यहअज गुतकी तान ॥

ज्योंज्यों ऐंठे भौहधनु त्योंत्यों चढत निदान ५

वरुणी वाण समान के भौह धनुष विचतान ॥

लगत शूर घायल गिरै भरे गरूर महान ६

नासा मोरि नचाय दृगकरी ककाकी सौह ॥

काँटेसी कसकति हिये गड़ी कटीली भौह ७

क० ॥ अमल कमल पर गुंजत भँवर युग प्रेमके

तुला की शुभ डांडी जोहियतु हैं । कैथों मणिकण्ठ हाव

भावके वकीलयेहै कामकी कमान पियमन सोहियतु हैं ॥

तनक मयंक अङ्ग लोचन चपल गति ऊरध को अंजन

की आड रोहियतुहैं । शोभा रसभासन शृंगारशर आ-

ननकी कैथों मन भाँवती की भौहें सोहियतु हैं १ ॥

क० ॥ कैथों अली पक्षको पसारि बैठे दर्पण में

कैथों ऐ कमान काम गोसाकी नवाई है । कैथों के सोनार

मार नारिरूप जोखत हैं पोखत गिराय फल डंडी थिर-

काई है ॥ भनत दिवाकर नचाय दृग बोलति जो खोलति

कपाट प्रेम नाभीमें समाईहै । वंकअविकाई काम धनुहन

पाई ऐसी राधिका तिहारी जैसीभौह की निकाई है २ ॥

क० ॥ कैथोंचन्द विन्धमें प्रकाशी मन्दरेखा विन्धके

धौरूप सिंधुमें विकासे नील अरविन्दु । कैथोंशील ताल

के बँधाये मणिनीलमैन कैथोंपंचवाण कोकमान जगडाख्यो

निन्दु ॥ भनैरघुनाथ किधौंशोभारस जानतुन्द नयन
कंजमानवसे मुदितमने मलिन्दु । कैधौरतिराजकी परा
जैकेकाज आज धनु जगसाजलै समाजरहयो राजइंदु ३ ।

क० ॥ कुटिल अनूपसोहै मानीकीसी गतिजामें भंग
नकी इयामता सरस छबिछाईहै । कामके शरासन ते
त्रासनअधिकदेखो आसन मुनिन इन्द्र शासन चलाई
है ॥ कासन कहौरीयोगीडासन तजत जगो शासनभरत
रोगीभये सुरभाईहै । तानमें तुरंग मन पाई ऐसीबंकता
ई जैसी शिवनाथप्यारी भौंहवनियाई है ४ ॥

क० ॥ कैधों रतिनायक कोकुटिल कृपाण कैधों विरह
भुजंगमके अंकुशाबिमलहैं । कैधों बालअलिनकी अव-
ली ललितलसै रङ्गरसभयो पियो आननअमलहैं ॥ कै-
धोंनेन चातिकपैऊनीघटा अम्बुदकीलालमन छलिवेको
कैधों छलबलहैं । कैधोंभोरी भामिनी की भृकुटी बिराजै
बंक कैधोंयेश्रृंगार बेलिहीके दोऊदलहैं ५ ॥

क० ॥ भृकुटी निहारिकोसँभारि सकै धीरगहि कैधों
कंजवैठी अलिपाँतिमोहै मतिहै । कैधोंमीत चन्दको सु-
न्योहै राहुसँयकाम तातेदीन्ही धनुहियाँमांभ अतिरति
है ॥ सूरतिसुकवि हावभाव फलबेलि कैधोंकहालों बखा
नौ छविकहीनपरतिहै । सोहनहौखात येरीजोहनमें दे-
ख्योकहुमोहन कीरीतितेरी भौंहमेंअरतिहै ६ ॥

क० ॥ सौरभ सुगन्ध वास चम्पकली नासिकाको
कैधोंअलिऊरधते आधनुकरतिहै । कैधोंमुखचन्द धरयो
वाहन कुरंगकंध युवामरकतनको मनहिंहरतिहै ॥ कैधों
बलिभद्रभाल कंचनके भाजनमें दीपक युग नैननको

काजर परतिहै । भामिनीकी भोंहकिधों कामकी कमान सोहै जिन्हें देखि सौतिन के गरवगरति है ७ ॥

क० ॥ प्यारी रूप देखि विधि हियमें सरेखि कळू लिखिवे विशेषिसों कलम हाथ गहिगो । भागन तेंपूरी दोऊरूप अति रूरीहोउ गुणनकीकूरी होउवेनएसे कहि गो ॥ शम्भु राजकहै भोंहें जानतें न रचीसो अजानही मेंएककळू एसो बाववहिगो । दासशशिकरिवेको कलम चलाई होती चन्दकी बड़ाई एकआँकलिखि रहिगो ॥

क० ॥ ये बिन पनिचबिन करकी कसीसबिन चलत इशारे यहजिनको प्रमान हैं । आँखिन उड़त आय उर में करतघाय परत न देखीपीर करत अमानहैं ॥ बंक्र अवलोकनकी बानि औरई विधान कज्जल कलित जामें जहर समानहैं । तासों वरवश वेधै मेरोचित्त चंचलकोप्यारी तेरी भोंहें कैसी कहर कमानहैं ६ ॥

स० ॥ नासिका ऊपर भोंहनके मधि कुंकुम बिन्दु मृगमदको कनु । पूछतें पंख पसारिउच्चो मुख और खगा लखि मोतिनको गनु ॥ देवके नैन तुलान पला धरिभाग सुहागके तालतटी तनु । नारिहिये त्रिपुरारि वैँध्यो लखिहारिकै मैन उतारि धर्यो धनु १० ॥

स० ॥ खेलहि खेल शशीमें किधों अति चंचल शावक ह्वै अहिकेरे । कीधों लसै युग पांति मलिन्द की है अरविन्दनके अतिनेरे ॥ भाषे मुनीरघुराज ह्वै रेख वचाय दियो किधों भारि चितेरे । काम कृपाण के कामकमानके रुक्मिणी भोंहपरे दृगहेरे ११ ॥

स० ॥ गोरी किशोरी सुहोरीसी देहते दामिनीकी

द्युति देति विदारै । नारिनवै सब नारिनिकी जवप्यारा
को रूप अनूप निहारै ॥ भौरसी भौहन सोहिरही सुरकी
उरतें न टरें पल टरें । भीजे मनो मुख अम्बुजके रस
भौर सुखावत पंख पसारै १२ ॥

क० ॥ कैधौं लागी पंकजके अंक पंकलीक कैधौं के-
शव मयंक अंक अंकित सुभायको । यंत्रहै सुहाग को-
कि मंत्र अनुराग कोकि मंत्रनिकी बीज अधउरध अ-
भायको ॥ आसन शृंगार कोकि कामको शरासन है
शासन लिखेहै प्रेमपूरण प्रभायको । रोष रुख बेष
विष पियूषम विशेष मैं भामिनीकी भौहै किधौं भौन
हाय भाय को १३ ॥

क० ॥ ताकी एक दीठताकी समताकी छाया परे ध-
नुष कुटिलताकी चाल ढाल खाकीहै । कुंठित कृपाण
ताकी गौरव गुमानताकी बाँकपटाकी छटाकी चालना
छटाकी है ॥ षट दर्शनताकी विद्या सूचन ताकीहै युग
षट अंक रेख लेख विधनाकी है । बहुत बलाकी भरी
करती चलाकी चाल नाथ नित्यताकी भौह वांकी रा-
धिकाकी है १४ ॥ इति भृकुटीवर्णनसम्पूर्ण ॥

अथ भाल वर्णन ॥

क० ॥ केशव अशोक कीधौं सुन्दर शृंगार लोक
कनक केदार कीधौं आनंदके कन्दको । शोभाको सुभाव
कीधौं प्रभाको प्रभाव देखि मोहेहरि रावसखि नन्दन
सुनन्द को ॥ चमकत चारु रुचि गङ्गाको पुलिन कैधौं
चक चौधे चित्त सतिमन्द हू अमन्द को । सेजहै सु-

हागकी किभाग की सभा सुभाग भामिनी को भाल
कीधों भाग चारुचन्द को १ ॥

क० ॥ करत उचाट पाट मंत्रनको मंत्र मनो ललित
लिलाट तेरो रहत हियान है । कालिदास विलसत सें-
दुर को विंदु चारु सुन्दर गोविंद मनमोहन जियान है ॥
सोनेते सलोने भाल पलकमें सुन्दरीके जगमगो दिव्यो
ले तिलक सखियान है । राहुपै चलायो है मयंक यम
धरसोतो रहि गयो मेरेजान उरमें मियान है २ ॥

स० ॥ कीधों शृंगार के वारिज को दल नूतन रूप-
वती सरसी को । कीधों अतंग को आसन ये दमके
छवि कंचन ज्योति लसी को ॥ पारस नेक विलोकतही
वसके मनखेत है कान्ह रसी को । बालको भाल वन्यो
अति सुंदर भाग्य भख्यो मनो भाग शसी को ३ ॥

क० ॥ थापी कैधों यशकी जनमभूमि शशिवत उप-
जत जहां सब सुकृतको जाल है । तिलक तरोवर की
छाया सुकल्पतरु रसके आगरन को अजिर रसाल है ॥
भाग कैसे वासन सोहाग कैसे आसनहै मोहनीको शा-
सन कख्यो तेवस लालहै । कामकेतुरंगनकी थापिका
धरनि यहै किधों बलिभद्र भोरी भामिनीको भालहै ४ ॥

क० ॥ रूपकी नदीमें पारपाइवेको पारोहै किकामको
अखारो है कीरतिको भँडार है । लाजको महल प्यारे
मण्डलकी आंखिनके पैठिवेको पैडो है कियेमरस सार
है ॥ राहुजानि वारनके भारते उरानोयातो चंद्रमाकोमानो
अधखण्ड अवतारहै । चौवनको द्वारके निकई को नि-
कार भोरी गोरीको लिलार कैधों शोभाको शृंगारहै ५ ॥

क० ॥ बेंदीमालु तखतके रूपको बखत यह शम्भु-
राज लखत भँडार काममाल को । आनंदको कंद कैधों
शरदको चंद्र लसै दामिनी अमन्द कै किनारो सुधा
ताल को ॥ मोहिबे को यंत्र कैधों कामरूपी मंत्र विधि
रच्योहै स्वतंत्र मनहरण गोपाल को । अतिही विशाल
कैधों ज्योतिनको जाल यह भारी तेरो भाल है हरैया
लाल साल को ६ ॥

क० ॥ वपुपक्ष ते लगायो भयो गुरुबंधु जानि भुव
सुतभेंटे तक उडपनरिंदु है । कैधों रवि सारथी कुरंग
रथ सारथी भौ कैधों निजनारी उरपर धरे इंदु है ॥ सौ-
तिनके गर्व दहिबेको दे दहन कन बलिभद्र सबैसुख
दैन दुखनिंदु है । राग पियमन को पराग मुख पंकज
को भामिनीको भाल कैधों बदनको बिंदु है ७ ॥

स० ॥ भागको भौन सुहाग को चौतरो सुन्दरता
को सिंहासन सोई । सागर है रसको पुल प्रेमको लो-
चन पंथिन को सुख होई ॥ नूर कहै न सुनै लड़ बावरी
चंदहि दोष कछू नभ होई । होतनहीं सरितेरे लिलाट
की तौ सखि चौथको देखैन कोई ८ ॥

स० ॥ सोहत अंग सुभायके भूषण भौरके भार लटै
लट छूटी । लोचन लोल अमोल विलोकत तीय तिहुं
पुरकी छवि लूटी ॥ नाथ लटूभये लालन जू लखि
भामिनी भालकी बंदन बूटी । चोपसों चारु सुधारस
लोभ विधी विधिमें जनुचार बधूटी ९ ॥

स० ॥ सोहत कंचनपत्र किधौ कलि कीधों सुअष्टमि
चन्द विशाल है । काम कलानि के सीखिवे को किधों

कामकी पाठी रसाल है ॥ भाषे मुनीरघुराज किधों रस-
राज की राजै सभाछवि जाल है । किधों वशीकर मंत्र
के यंत्र की पीठिलसै किधों रुक्मिणी भाल है १० ॥

क० ॥ आधे चन्द्रमा के रूपढांके केश घटा केधों
गगना के नाके विधु आठवीं कलाके हैं । केधों काम-
देवता के कनक वटाके रूप आंधा के धरे हैं हेतु शशि
के सुधाके हैं ॥ केधों एकछत्र ताके छत्र छविताके छिने
नासिका के दंडला के गुण विधनाके हैं । केधों नाथ
भाग्य ताके भाजन भरे धरेहैं केधों ये विशाल भाल
भले राधिकाके हैं ११ ॥ इति भाल वर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ वैदी वर्णन ॥

दोहा ॥

भाल लाल वैदी दिये छुटे वार छवि देत ॥
गहयो राहुअतिआह करिमनु शशिसूरसमेत १
भाल सुवैदी लालतकि जगजानी यह रीति ॥
तेरेशशि प्रतीति कै वसी मीत की प्रीति २
मिल्ल चन्दन वैदी रही गोरे मुखन लखाति ॥
ज्यों ज्यों मदलाली बढ़े त्यों त्यों उघरतजाति ३
प्रथम सौगुणी छविहुती पुनि सो भई दुचन्द ॥
वैदी तैदी भाल में लजत बापुरो चन्द ४
कहत सबै वैदी दिये आँक दश गुनी होत ॥
त्रियलिलार वैदीदिये अगणित बढ़त उदोत ५
सोहत वैदी पीत यों तिय लिलार अभिराम ॥
मनु सुरगुरु सनमानके शशिदीन्हों शिरठाम ६

भाल लाल बेंदी ललन आखत रहे विराजि ॥
 इन्दुकला शशिमें बसी मनोराहु भय भाजि ७
 तिय मुख लखिही राजरी बेंदी बदै बिनोद ॥
 सुत सनेह मानहुँ लियो विधु पूरणबुध गोद ८
 स० ॥ एकसमै वृषभानुसुता परभातही कामकी के
 लि बनाई । नैननकी लखि आरति कीरति कीरति मो-
 तिन माल सुहाई ॥ बेंदी जराव लिलाट दिये गहि
 डोरीदोऊ पटिया पहिराई । ब्रह्मभनै रिपुजानि गहयो
 रबिकी मुसके जनुराहु चढाई १ ॥

स० ॥ ऐनसुरा बिहुली विधु भालमें नाहिन मोमन
 तेटहलै । चन्दके बीचमें कीच असी अलिबालक आ-
 नि पस्यो चहलै ॥ ब्रह्मभनै अलके घुँघरी अलिके कुल
 काटनको कहलै । बैठि मयंकके फूल चितै परकोऊ न
 पैठिसके पहिलै २ ॥ इति बेंदीवर्णनसम्पूर्ण ॥

अथ अलक वर्णन ॥

दोहा ॥

इहि विधि गोल कपोल पै परी छूटि लट साफ ।
 खुसनबीस मुनसी मदन लिख्यो कांचपर काफ १
 सुन्दर गोल कपोल पै छुटी अलक छवि हेत ॥
 मनहुं कोस कल धौत के पन्नग पहरे देत २
 तियमुख अलक बिलोकि कै लहत ममारखसंच ॥
 धनुष उतारि मनोज जनु शशि पर धरी प्रतंच ३
 अलकममारख तियबदन अलकतभांकि निशंक ॥
 मनौचंद के बीच ते निकस्यो जात कलंक ४

छुटी अलक भलकत वदन वदत ममारख मोद ॥
 विचरत पोवा नाग के मनौ चंद की गोद ५
 अलक बाल के वदन लागि रही ममारख राजि ॥
 चढ़ेजात जल अलिमनौ शशिपर सेना साजि ६
 भलक ममारख अलककी लसत वदनकी सीव ॥
 सेली मनसिज की मनौ मेली शशि के ग्रैव ७
 अलक ममारख तिय वदन छूटि लियो जगलूटि ॥
 प्रलयरूप नागिनि मनौ परी चंद पै टूटि ८
 छुटी अलक तिय शीशते करि बेसरि सों रौस ॥
 मानहुं झौना नाग के चाटन निकसे ओस ९
 लट छूटी तिय शीशते रही कुचन पर आय ॥
 मानहुं कुम्भ गयंद के अंकुश धरे बनाय १०
 कुच उत्तंग पर अलक अलि राजति है यहिवेश ॥
 शशि मण्डल तजि अहिवधू लपटी अंगमहेश ११
 छुटी अलक तिय शीशते खुभी आय उरजंत ॥
 मानहुं मत्त गयंद ज्यों सूँड़ि रह्यो धरि दंत १२
 सटकि अलक कुचपरपरी तिहि शोभाको शोर ॥
 मनहुं कनक घट मधुभरे शशि ऐंचत स्याडोर १३
 स० ॥ श्रीनंदलाल गोपाल के कारन कीन्हों श्रृंगार
 राधे बनाई । कुंकुम आड़ सुकंचनदेह दिपे मुकताह
 की भलकाई ॥ शीशते एक छुटीलट सुन्दर आनिके
 कुच पै लपटाई । गंग कहै मनो चन्दके बीचके शम्भु
 पूजन नागिनि आई १ ॥
 क० ॥ आजु लखी ललना लवंग लतिकासी लोनी
 गिन ते जाके आभा उमगै अपार है । खरीही सरोवर

पै लैकर सखीन संग कीन्हों हनुमानतहां तरक विचार
है ॥ मोतिन की माल चारु कुचपै लखात तापै परी मुख
ऊपरते लट सुकुमार है । मानो शम्भु शीश पै निहार
गंगजूको मिलै चलीचन्द्रबिम्ब ते कलिंद जाकी धार है २ ॥

क० ॥ मैचक अलक लट छूटि के कपोल आयो कर
त कलोल गोद पोआ द्विजसजके । मनत दिवाकर
सुटेढी बेढी चाबुक सों सोहतहैं भूमि भूमि सार मह-
राजके ॥ कैधों अरविन्द मकरंद रस लेबेहेतु श्रेणी श्रेणी
बैठिगयो भौरन समाजके । राधिका रसीली कैधों सेली
लटकाइ शीश फाँसिलेत अकुलाइ प्यारो ब्रजराजके ३ ॥

क० ॥ मोहर ज्यों मुकता की युगल विकारी दई लोच-
न तरंग कैधों चाबुक मसंदको । लहकि लहकि टेढी बे-
ढीसी अलक दोऊ बहकि बहकि करै चरचा अनंदको ॥
लटकि कपोलन कलोलन करत भूमि फैलि फहरानो
कैधों ध्वजा कास फंदको । विषम कटोहै अल सोहै से
कुशलसिंह नागन के छौना पै बिछौना कियो चंदको ४ ॥

क० ॥ साँघरे रसिक रस बस विपरीति रची प्यारीके
लजोहैं नैन मनको हरत हैं । मंद मंद मेखलाकी ध्वनि
सुनि दत्त कवि चेटुआ मरालन के मन पकरत हैं ॥ भूम
ती हैं अलकै छबीली मुख ऊपर यों मानो बाल ब्याल
सुधा चंदते भरत हैं । टूट टूट श्रमजल बूंदयोंपरतमानो
कुनकलता ते मुकताहल भरत है ५ ॥

क० ॥ सोने सो शरीर तापै आसमानी रंग चीर औरै
ओप कीनी रवि रतन तरौना द्वै । सोमनाथ कहे इन्दिरा
सा जगमगौ बाल गाढ़े कुच ठाढ़े मानो ईश युग मौना

द्वै ॥ कारी घुंघुवारी मंद पवन भकोर लागे फरहरे अलक
कपोलन के कोना द्वै । सो छवि अमंद मानो पान सुधा
बुंद करि इंदु पर खेलत फनिंदनके झोना द्वै ६ ॥

क० ॥ सरस श्रृंगार रस सारही को धार यह अंकही
की राजनि मयंकमाड़ डारीकी । शीशफूल शीशपैदिनेश
मार तण्ड ताकी सूअम सुताकी रुचिराजतपनारीकी ॥
चोटी चारु चित्रित सुहागिनी की माँग भरी लटकी म-
यंक मुखनागिनहै कारीकी । केशहीकी हलकभलक भ-
लकत लखि लगति न पलक अलक प्राणप्यारीकी ७ ॥

क० ॥ सरस सुगंध घालि शीशते अन्हाय बाल रोरी
बिन्दु भाल की विशाल छवि जोई है । धारी सेत सारी
सो किनारी जरतारी कोर रसिक विहारी प्यारी सुख में
समोई है ॥ भीजी लटें लांबी आय चिपटी उरोजन पैहेरि
यह उपमा अनूप उरगोई है । शीत भीत आतप में मानो
गिरि ऊपरयो ठौर ठौर पन्नगी पसार पूँछ सोई है ८ ॥

स० ॥ रैनि उनींदी प्रिया पलिका पर शोभा समूह
इकैठ रही है । सो छवि प्यारे प्रवीण विलोकत आनंद
सो हिय पैठि रही है ॥ गोल कपोल परीलट एक सनेह
सनी कछू ऐंठि रही है । हेतु अमी निशिपाल के उपर
ब्याल बधू मनो वैठि रही है ९ ॥

क० ॥ विरचि अनूप जात रूप साँ प्रपूरी प्रभाजर
शशि वंश आदि कुण्डली अखण्ड है । तामि माणि भान
क्रान्त कान्त पंज राखी गुनी जगमगज्योति रहीताकी
अति मण्ड है ॥ भनरघुनाथ किधौ चूडामणि तेरी बा-
ल सौत मन शालनको दीन्हों कामदण्ड है । कंधों

मेरु शृंग पै घने घन पै जम्पज्योति तापै उड़कुंड में
विराजो मारतंडहै १० ॥

स० ॥ हैं कचश्याम सोई तनयारवि तेज कढ़ी एक
सौति नवीनहै ॥ कै मधुपावनी मंजु मनोहर बैठिरही
ढिग कंज अधीनहै ॥ बंकपरी लटएक दृगंतर सो छवि
देखत प्यारे प्रवीनहै । रूपप्रवाह नदीतट खेलत मैन
शिकारी बभावत मीनहै ११ ॥

स० ॥ तीयनदी जलसुंदरता कुचकोक सुवार सिवार
लसै । दृगकंज तरंग बली रसरोस करारे लखें सुधि
सातों नसै ॥ लटकी लट बेसरिकै बनसी मुकुता मनि
कंठ सुचारोफसै । मनमोहनको मनमीन विधायकैरीभि
कै मानो मनोजहँसै १२ ॥

क० ॥ तैसी चख चाहन चलन उत्साहनसां तैसो
बिबि बाहन विराजत बिजैठोहै । तैसो भृकुटी को ठाट
तैसोई दिपै लिलाट तैसोई बिलोकिवेको पीको प्राण
पैठोहै ॥ कहैकवि नीलकंठ तैसी तरुणाई तामेंयौवन
नृपति सो फिरत ऐंठो ग्वैठोहै । छूटीलट भालपरसोहै
गोरे गालपर मानोरूपमालपर ब्याल ऐंठिबैठोहै १३ ॥

क० ॥ छोटीछोटी जुलफें द्वै औरन मरोरराखी कैधौं
मुखकंजमें मधुप अरु भानेहैं । कैधौंचंद मंडलपे पीवन
पियूषआये नागिनके छौना मृगमद लपटानेहैं ॥ कैधौं
काम कुंजरके अंकुश सुभगवने भूलिकै धरेहैं रैनिराज
पहिचाने हैं । कैधौं शिशुश्यामके सिपाही दोऊ ऐनखूनी
खैंचि खैंचि खंजरये कौनपै रिसानेहैं १४ ॥

क० ॥ निकसीं सशंकित कलङ्क रेखखीन कैकै वदन

शशी में दृग देखै अटकत है । कैधों अलिवाल पाँति चली
थकि कंजढिग अधर अमीको नागिनी सी छटकत है ॥
पति मिलिबेको भुजभामिनी पसारी एक सौति चित
चाहकी चटक चटकत है । नैन नटनागर लकुट मनि
कण्ठ कैधों कारी सटकारी प्यारी लट लटकत है १५ ॥

क० ॥ देखै मुखचंद्रद्युति मंदसी लगत अति लो-
चन विलोके मृगसावक सरफ है । सोनेकैसेपात गाल
देखत लजात जात मैनका नकही जातरूपऊ तरफ है ॥
मोती मोर बेसरको लसै लाल ओंठन पै जैसे मनि
विम्ब ढिग बुन्दन बरफ है । अतरन भीनी लट लटकै
कपोलन पै मानो त्रिवि आरसी पै फारसी हरफ है १६ ॥

क० ॥ दृगमीन बाभिवेकी वंशी ये सचीहै कैधों ना-
गिन बचीसी पीवै अमृत अमंद है । प्रेम के कपाट
खोलिवेकी अँकुशी है कैधों कैधों ये प्रसाद मन फाँसिवे
के फंद है ॥ रूपके जहाज बीच लंगर लगोहै कैधों मो-
हनीमहलपर लसत कमंद है । चंदकी चटकपर राहु
की सटक कैधों रहीहै लटक लट प्यारेके पसंद है १७ ॥

क० ॥ केशव कसाहै कैधों अनंग की सुरंग भूमि लो-
चन कुरंगनकी चाल हटकति है । पिय मन फाँसिवेको
फाँसीसी पसारी कैधों कैधों उपमाकी मेरीमति भटकति
है ॥ तरणि तनूजा खेलै तारानाथ साथ कैधों हाथपरी तम
की तरुणि भटकति है । सुनि लोल लोचनि नवल निधि
नेहनिकी अलकें कि अलिक अलक लटकत है ॥

क० ॥ कैधों फन्दा दोहरा के चन्दमाके फाँसि
राहुजो चलाके लाके धम्म हठताके हैं । कैधों

सुधा के निमित्त मथिवेके काज रति राज पाट डोर ऐसे
लटका के हैं ॥ कैधों मुख फूल गुच्छा केसे पाके मधु
पाली कैधों ज्वाल विरहा के धूम छेके छके हैं । कैधों
उरगाके जोड़े उमानाथ पिंडिकाके कैधों बाँके अलक
छलक राधिका के हैं १६ ॥

क० ॥ छूटी रति रंग में अनंग की उमंग भरी आनि
मुख चन्द पै अनंदित परै दिये । कछू सटकारी कछू
अधिक गरूर वारी कछू अनियारी श्याम सारी सों लरै
दिये ॥ नोने कवि कहै बाल लाल मदमती कछू आनि
करिछिति जो सुहाइ सो भरै दिये । सौरभ बलक वारी
भलकै कपोलनि पै अलकै तिहारी प्यारी जुलम करै
दिये २० ॥ इति पलक बर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ पाटी वर्णन ॥

क० ॥ कैधों बेनी पन्नगी के फल दुहूं और कैधों मृग
दृग रोकिवे की रूप भूप घाटी है । मुख विधु तानके
वितान युग मेरे जान कमल के ऊपर सिवारन की डाटा
है ॥ कैधों करतल रसराज राखे माथे दोऊ दिप्रतिदिने-
श ताते ललित लिलाटी है । एरी आगे मोहन मयूर
से निरखि नाचै सघन पटलीकी परिपाटी तेरी पाटी है १ ॥

क० ॥ कैधों रसनायक विहंगम के युग पच्छ कैधों
प्रति पच्छ सौति जन के समोद के । कैधों तम पूरि है
कला धरते छप्यो आय कैधों विप्र बालक दिवाकर के
गोद के ॥ परशराम कैधों श्यामवेदके अनूप खण्ड कैधों
काम नटके खिलौना मन्त्र मोद के । पाटी के त्रिभागसो है

पियके अटल भाग नीर भरे मानो चारु पटल पयोदके २ ॥
 कि० ॥ कारीनीकी निपट संवारि नेह चिकनाई सनि
 धनवारी की बनी है प्रेम पथ की । ब्रसन लपेटि कर
 मुरली मुकुट धरि डोरी करि जगत मनोरथके रथकी ॥
 तूर चोप निपट है ताके बलि गयो मन तहीं को भयो
 है तान गावै ताके गथ की । चढ़े तो चढ़्यो है वाट पावै
 उतरिबेकी प्यारी तेरी पाटी कैधों घाटी मनमथकी ३ ॥
 सगुण कैधों कुहू युग आय मिली कैधों भादों रे नि
 के ये युग भाग हैं । काम शृंगार अवास किधों किधों
 ये पिकके पंख हवै संगलाग हैं ॥ जाहनवीधारके दोऊ
 दिशैं किधों कालिन्दी धार कै सोहे अदाग हैं । केशव
 कैधों विद भंसुताके त्रिपाटी लसै युग मैतकी वागहें ४ ॥
 कि० ॥ दरश दरश को परस होत बलिभद्र कैधों हैं
 सरस शलासनि सुरभानकी । रसराज पक्षी कैसे उभै
 पंख कैसे सोहैं ढांकिवैठो छपाकर मेचक वितानकी ॥
 तमके पटल लिपटानेहें मुकुट सों कि ससर कदम्बिनी
 कसौटी पंचवासकी । पाटीतेरी तरुणी युगलऐसी राजें
 मानो जामी युग यमुना शिखा रतनसानकी ५ ॥
 कि० ॥ जूरो तियशीशकै कंगूरा काममंदिरको शूरो उर
 शालतहै पूरोछांह करिकै । चौरि मांगमोती भरि बंदन
 लगावै कैधों पांवड़े विझावै सुखलोक को डगरिकै ॥
 सरस संवारि पाटी पारिपारिकंगही लै सौतिनके नेनन
 करीती सीप करिकै । सोरहूकलाते परिपूरण है कला-
 निधि शीशचढ़ि आईकैधों कारीघटा भरिकै ६ ॥
 कि० ॥ रातेसेत फूलनकी उलही ललित पांति कैधों

चारु यौवन महीपतिकी आटीहै । कालिदास आस पास बिलसै सलोनी श्याम कैधों कामकुटिल बहलिया कीटाटीहै ॥ एरीमृगनैनी हरिमन भटकायवेको कैधों पाटपूरि बेनी घाटही की घाटी है । प्रेम रसपाटी सोहै प्यारीतेरीपाटीकैधोंचारुवरमंत्र बीजबोडवेकीवाटीहै ७ ॥

क० ॥ बदन कलानिधिको परम प्रकाश मानतम भजि हेमशैल शिखर सुडाटी है । कैधों सुधापाय राहु वैठ्यो चन्द्र मण्डल पै ताको मांगरेख चक्र विष्णु अल काटीहै ॥ मनरघुनाथ किधों दोनोंआरकाम श्यामवसत हमेश किधों मोतिनकी टाटी है । सघन सुपाटी घन कैधोंप्रीतिपाटी पढ़िरसपतनाटीकिधोंतेरीबालपाटीहै ८ ॥

स० ॥ बैठी शृंगार शृंगार कैबाल दयो मृगबिन्दु अनूपम भाल पै । का कहिये उपमा तिहिकी घुंघुवारी लुरें अलकेंदोऊ गाल पै ॥ पाटिनबीच सिंदूरकी लीक विराजति है द्विज ऐसे सुहाल पै । मैनमहीप मनोजग जीतिकै खूनभरी वरछी धरीढालपै ९ ॥

स० ॥ मंजनकै तियबैठी आवासमें पासखवासिनिहै सबठाढ़ी । सारीसुगंध सचिक्कनकै शुभवेनी बनायगुही अतिगाढ़ी ॥ पाटिनबीच सिंदूरकी रेख पुखी लखियों उपमा अतिवाढ़ी । चन्द्रके लीलिनको भुकिराहुमनो रसनामुख बाहिरकाढ़ी १० ॥

क० ॥ पटिया के पारे कौनपारे तासुउपमा के कवि ताकेगुण ढंग रहत लजाकेहैं । भृगुवर बेंदाके विराजि-वेको आवदार मेहरावदार दरखम्भ मुकताकेहैं ॥ पिक-निक जोड़ेजाके बैठे मुखजोड़े मनोकैधों चंद्रमा के बीच

चज्यों घटाकेहैं । हीराके कतारपर नीलमजदित बांके
धों निशिनाथताकेअंग कालिमाकेहैं ११ ॥ इतिपाटी
र्णन सम्पूर्णा ॥

अथ मांग वर्णन ॥

दोहा ॥

अरुण मांगपाटी नहीं कामजगतको मारि ॥
असित फरीपैलै धरी रक्त भरी तरवारि १
श्याम रंग पटियान मधि भरिसेंदुरकी मांग ॥
खून भरी मानो धरी युगल ढाल बिचसांग २
सोहन पाटी असित बिचहै सिन्दूर यहि हेत ॥
मानो विधुतुद बन्धु ते रवि कर मिलननदेत ३
मोतिन की लर माँगयो रही वदन व्युतिवेधि ॥
मनो अंध्यारी मध्य ते दै भाज्यो शशि संधि ४
मिलि टीकोभरि मांगते मोतीलर छविवीर ॥
मनो नील गिरि शिखरते बहत सुरसरीनीर ५
क० ॥ तामसी तमोगुण को जानिकै सतोगुणधो
पकी शलाका तासुऊपर चलाई है । कैधों जगजीत
म सांग संदली पै धरी कैधों सुधाधार राहु सदनमें
आईहै ॥ कैधों कोऊ ऋषिताकी मनसाहै मेरेजानहोम
न मध्यमानो आनि उरभाईहै । नूरकहै निपटअधीन
तलालमेरो प्यारीशिर तीखी मांगमोहनी बनाईहै १ ॥
क० ॥ तमके विपिनमें सरल पंथ सात्विकको कैधों
लगिरि पर गंगजूकी धारहै । कैधों बनवारी बीच
जत रजत रेखकीधों चन्द्र कीन्हों अंधकारको प्रहार

है ॥ मापत श्रृंगार भूमिडोरी हास्य रसकी कि बलिभद्र
कीरति किलीक सुकुमारहै । पयकीपसार घनसार कि
असार मांग अमृतकी आपगातु पाईकरतारहै २ ॥

स० नीलके शैल पै राजिरही किधौं गंगकी धार है
शंभुकीठारी । सोहतिहै किधौं श्यामनिशामधि स्वातिकी
पन्थ महा छबिवारी ॥ कामके काननपन्थ किधौं तनुरावरे
चंदनरेख निहारी । फूलीतमालपै मल्लिकाकी लीतिका
किधौं रुक्मिणी मांगमुरारी ३ ॥

क० ॥ निपट नबेलीबाल सुधर सहेलीलाल रचि
पचिशीश मांगसुंदर बनाईहै । ईंगुरकी चहकारीसीधी
लीक लहकारी ताकीद्युति देखिनूर उपमा सुपाई है ॥
दुहूं औरपाटी मानो यमुनाकी छबिठाटी ताकेबीच शा-
रदाकी धारसी सुहाईहै । श्यामघटा मध्यमानो बिज्जु
छटाकीसी रेखकैधौं श्यामगिरिपर बूढिपांतिछाईहै ४ ॥

क० ॥ दुतियाको चंदकीधौं तमके पख्यो है पाले
कैधौंवेनी नागजीभ सुधाको निकारीहै । कैधौं रति काम
दोऊ अंगरिके आपुसमें सुखभूमि बांटे हेमसीमा बीच
डारीहै ॥ कैधौंप्रेम तौलिवेकी डांडीसी बनाईबिधि कैधौं
चंदकोपि राहुपर चोटमारी है। कैधौंसुधाधारचलीनागिन
के आननते कैधौं मांग नागरी की सखिन सुधारीहै ५ ॥

स० ॥ सोवत बाल गोपाल लखी मुख अंचरटारिके
मोदभरेउर । को कविजो छवि भाषिसके भ्रमभूरि रहे
मनपूरि सुरासुर ॥ मांगमें सेंदुर सोहिरह्यो गिरिधारन
है उपमा तिहूपुर । मानो मनोजकी लांगी कृपानपख्यो
काटिबीचतेराहु बहादुर ॥ ६ ॥

क० ॥ पाटिनमें मांगसोहै उपमाकहै सो कोहै ताते कहिये बीचउपचार कीन्होहै । वदन सरोवर में गोल गडोरे शीतनितरूप जलबढ़ि जोवन नवीनो हैं ॥ थ जल भरिकै सरोवर उछरि युगकान कुंडउभक्तिके पपूरिलीन्हो है । नेहीहवै प्रवाहचल्यो उचटि जोमेन ला ताहीलै श्रृंगार वारीमाहिकाटि दीन्होहै ७ ॥

क० ॥ पहिलेही ललनानिवेली अलवेलीरची रचना नमंतकी सहेलिनके संगहै । कालिदासकैसी पाटीपारत नीहै धनी अलकै अनूप वन्यो वंदनको रंगहै ॥ देखि न सुंदर गुविंदको मगन भयोकैसी वनिआई मनमोनीकी मंग है । लै चल्यो दुशाखा जनुदीपक जगाथ को जोवन तमीपतिके आगेहवै अनंगहै ८ ॥

क० ॥ रेशम रसमसम सरोरुह सुंदरीके सघनघटा गी श्यामताई अहटात है । तापै दुहुंओर करतलन वारिपाटी पियमन पारिवेकी घाटी दरशातहै ॥ गुंथित ननि गजमोतिन सँवारी मांगताकी उपमाको मति री अकुलातहै । तमक चमक तमपुंजके चमून चीरानोचारु चंद्रमाकी चौकीचली जातहै ९ ॥

स० ॥ चीकनीचारु सनेहसनी चिलकै द्युति मेचक आई अपारसों । जीतिलिये मखतूल के तारतमीतमार द्विरेफ कुमारसों ॥ पाटी दुहुंविच मांगकी लाली विजाजिरही योंप्रभा विस्तारसों मानोश्रृंगारकी ठाटीमनो मय सींचतहै अनुरागकी धारसों १० ॥ इतिमांग वर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ शीशफूल वर्णन ॥

दोहा

शीश फूल तिय शीश पै नव सत साजे अंग ॥

मानो कंचन बेलि पै मणिलै चढयो भुजंग १

अदभुत कौतुक देखिबे योग आज बिरुयात ॥

चढ्यो चन्द पर राहु पुनि तापर रवि दरशात २

शीशफूल तिय शीश पै इहि उपमा के भाय ॥

मानो भानुस्वर भानुके शीश चढयो दरशाय ३

क० अंग अंग भूषण जडाऊ के जग मगात चौकी

चमकत छवि छाजै भाल गंडकी। सारी जरतारीकी किना-

री सुकमारिकी है पसरी किरण रुचि राजत प्रचण्ड

की ॥ भागके तखत वैठ्यो सोहत सुहागताको छत्र है

छबीली लटलामे द्युति दण्ड की । शीशफूल शीशदेश

राजतदिनेश के सघन घनऊपर उदैज्यों मारतण्डकी १॥

क० ॥ कैधों इयाम घन में प्रकाश है प्रभाकर को

कैधों अधियारी रैनिमध्य आभा इन्दुकी ॥ कैधों गुरु

गिरिके शिखर आनि दीया धर्यो यमुना के जल पर

भाई अरविन्द की ॥ काली के कपाल पर केशव को

पदुम पद पन्नग के माथे कैधों मणिहै फणिन्द की । तेरे

शीश शीशफूल ऐसी शोभा देत आली मानिनी के

पाँय परी मूरति गोविन्दकी २ ॥

क० ॥ शीश फूल शीश पै रतीश के निशान कैधों

लाललै भुजंग दावे मुखमें सोहातहै । भनत दिवाकरकी

यमुना कीतौय पर फूले जलजात सरसात दरसातहै ॥

हारो है लड़ाई कैधों राहुने छपाकरते लागे चोट ग्रीव
नानो लोहू उगिलातहै। कैधों काले मेघ में विभास
जान मंगल है मारतण्ड ज्योति पेखि पेखि तरसात हैश॥

क० ॥ शीश शीशफूल सोहै त्रिभुवन मन मोहै उप-
ना को कवि टोवैवनतन बानको। कंचन घटित मणिमा-
णिक जटित लागे श्याम श्वेत पीत नग विविध विधान
को ॥ प्यारीकी सँवारी पाटी रुचिर अनूपकारी नूरमति
अनुसारी ज्ञान अनुमानको। श्याम गिरिवर पर प्रबल
प्रचण्ड कर मेरे जान प्रातही उदोत अंशुवानको ४ ॥

क० ॥ बादर रसाल पर दामिनी को ख्याल कैधों
पंपक की मालसी लसत बाल लालपै। रति के मुकुर
वै भुजंगिनि लसति कैधों कैधों कारीलट लटकत गारे
गालपै ॥ द्विजराज श्रीपति रसिकमणि शीशफूल उचकि
उचकि कै परत आछे भालपै। मेरेजान नखत समेत
विनटवर प्यारी हाली भरि नाची कालीके कपालपै५ ॥

क० ॥ पीतम प्रवीण के खिलौना है अनोखे किधों
गुति छवि चोखे दिपै हरित दुकूलहै। कैधों घन पाटिन
मध्य चंचला में उड़ निकट त्रभान भये उदित अतूल
॥ भनै रघुनाथ दिव्य दिपत तिहारो भाल हाल लाल
रोहनको कैधों प्रीति मूलहै। शोभा अनुकूल मंजु सेंदुर
मूल किधों मोती युत मांग बाल तेरे शीशफूलहै ६ ॥

क० ॥ जगर मगर होत यमुनकि जल कैधों कोक
द कर्मनीय पूरन प्रभनिको। सुकवि रतन केधोंराजत
तन बर कारी कुण्डली सी फणि ऊपर फवनि को ॥
धों सुर भानुपर भानु भोरही को कैधों उगयो भोमतर

देत अनुभव तरनिको । कैधों प्राण प्यारी की सँवारी
पारी पाटिनमें सोहत सुभग शीशफूल लाल मनि
को ७ ॥ इति शीशफूल वर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ केश वर्णन

दोहा

चिकुर चीकने चटक छवि छोरत छुवै छवानि ॥
अति मेचक मृदु मन बाँधै विना गिरहगुन खानि १
सहजसचिक्कणश्याम रुचि शुचिसुगंध सुकुमार ॥
गनतन मन यथ अपथलाखिविथुरे सुथरे बार २
विथुरे सुथरे चीकने घने बने घुंघवार ॥
रसिक न मन जंजीर से प्यारी थारे बार ३
छुटत छुटावै जगत ते सटकारे सुकुमार ॥
मन बाँधत बेनी बाँधत नील छबीले बार ४
सटकारे कारे सुभग घुंघवारे सुकुमार ॥
मतवारे रसिकन करत नेही तिय तुव बार ५

क० ॥ कारे सटकारे केश मृदुता भरी है वेश मख-
तल श्याम कैधों कुहूके अँधेरे हैं । दिवाकर भट्टयह कहत
विचारि बात कैधों तमधार आय चन्द्रमा को घेरे हैं ॥
जम्बुफलहारे देखिकालिमा अनूप छवि कैधों अम्बु
यमुनाके शीशपे बसेरे हैं । निबिड़ पयोद चहुं कोद अटतु
पावस सी छूट कुच शृंगर छुवै छवालो लट केरे हैं १ ॥

स० ॥ कैसी छबीली की छाय रही छवि छूटि रहेकच
कुंचित कारे । कौन कुहू घन कौन कित्तीक करै तिनसों
तम क्यों समतारे । सोहत आनन ऊपर यों अलिवा-

रेज बीच महा तमवारे । के बिधुऊपर हेतु अवे अहि
मिस केशव शीश सुधारे २ ॥

क० ॥ कारे सटकारे फटकारे चटकारे नेकु धूप दे
नवारे सुखमा समूह बसिगो । कोकिला कुहू के सो दुहू
को कियो मैलो मन काशी राम भौरनि को भावनी के
नसिगो ॥ सावन के घन वन सघन तमाल तरु तराणि
ननूजा ताहि हेरिहियो हँसिगो।तेरे तनरूपकी तरंगिणी
तरुण मन परिवारपारन से वारनि में फँसिगो ३ ॥

क० ॥ कारे कजरारे सटकारे घुंघवारे प्यारे मणि फ-
रेवारे भौर पांयनलौ उटे हैं । वासे हैं फुलेल ते नरम
मख तूल ऐसे दीरघ दराज व्याल व्यालिन भोजूटे हैं ॥
यासीराम चारु चौर यमुना सिवार वारी ऐसी श्याम
नाई पै गगन घन लूटे हैं । आइजै है तिमिर बिहायरेनि
आइ जैहै भारि बाँधि अजहूँ संभार धार छूटे हैं ४ ॥

क० ॥ कैधों करतार तार सरस शृंगार हीते कीन्हों
है निकार ताते सुखमा अपार हैं । कैधों मार पटकार
नेरधारे भार भार सोई मखतूल तूल शोभित सुधार
हैं ॥ सुख के उदार रूपतार कैसे धार कैधों कैधों तोष
कान्हर कुमारजूके प्यार हैं । सटकार सुकुमार मन के
हरणहार कैधों येजरबदार दारतेरे वार हैं ५ ॥

क० ॥ कोमल कुटिल नील मणि की शिखासे चल
वेमल विशाल चारु चीकने नसरि के । सुन्दर उदार
हचनपुर लौ आनिलागे उनये सघनमानो सुखमासों
परिके ॥ जोहनके काजलागे गोहन गोपालडाले सोहन
देनेश मनमोहन हैं हरिके । भौरनके भार मखतूल

कैसे तार देखे होतनिशि चार बूटे वारये कुंवरिके ६ ॥

क० ॥ कैसेहै सिवार जैसे श्याम मुखतूल तार कैसेहै
सुतार जैसे अहिके कुमार हैं । कैसे हैं कुमार जैसे मोर
पखवार कहि कैसे पखवार जैसे अलिनके हार हैं ॥
कैसे हैं सुहार जैसे कामचौर वार कहि कैसे चौरवार जैसे
सघन सुधार हैं ॥ कैसे हैं सुधार जैसे षोडश शृंगार
कहि कैसे हैं शृंगार जैसे प्यारी तेरे वार हैं ७ ॥

॥ क० ॥ कालिंदी की धार निरधार है अधारगण अ-
लिके धरत या निकईके लेश हैं । जीते अहिराज खंडि
डारे हैं सिखंड घन इन्द्रनील किरण कराई न हियेश हैं ॥
एँडिन लगत सैनाहियाको हरषकरे देखत हरत रवि
कंतको कलेश हैं । चीकने सघन अधियारे ते अधिक
कारे लसत लछारे सटकारे तेरे केश हैं ८ ॥

॥ क० ॥ सोधे सुकुमार के सिवार तंतुतार कैधों मेचक
चँवर चारु कामनरनारिके । कैधों मायाजाल योगजामी
भरकत भूमि मत्त अभिलाष ऊखरसे रसवारिके ॥ निधि
नील मंजरी मयूष प्रतिविम्ब कैधों सुंदर विशदश्याम
लांबे समतारिके । तमीतम तारके अगार धूमधार कैधों
बूटे वारवार वृषभानकी कुमारिके ९ ॥

क० ॥ श्यामा अहि कोयलकी श्यामता लगत कैसे
कारे अपकारे प्यारे अरगजे सरसत । दीरघ अमल
केश कपोल । पै कुचन छवै जंघनते लटकि चरणहूलों
परसत ॥ कज्जलते चटक छटकिरहे शीशपर देखि देखि
मेघन ज्यों कजरारी तरसत । चंदनकी चौकीवैठी वारन
सुखावैवाल छोरनते चुवै बुंदमजो मोतीवरसत १० ॥

क० ॥ मरकत सूत कैधों पन्नग के पूत कैधों राजत
प्रभूत तमराज कैसे तार हैं । मख तूल गुण ग्राम शोभि-
न सरस श्याम मृग काननके कुहूके कुमार हैं ॥ कोपकी
केरण कैधों नील नलिनी के तंतु उपमा अनन्त चारु
चमर श्रृंगार हैं । कारे सटकारे भीजेसोधे सों सुगंधवास
से बलभद्र नववाला तेरे वार हैं ११ ॥

स० ॥ मंजन के तिय बैठी अगार बगार दये जनु
ार कुमार हैं । कोऊ कहै तम तोम की धार कोऊ मख
ल के तार सिवार हैं ॥ कौन कहै उपमा तिनकी द्विज
शसुकेशी के डारत डार हैं । सारहैं पीतम के दृगके
वेथुरे सुथरे अलबेली के वार हैं १२ ॥

क० ॥ मरकत तार कैधों काली के कुमार कैधों तम
नहार कैधों लतिका सिंगार हैं । कुहूकी किरिण धार
धों कोप कला चार सनिकी कतार कैधों उठी धूम धार
॥ श्याम मखतूल तार शोभित सिवार कैधों चमर
श्रृंगार कैधों मोहके पसार हैं । खैचि मृगमद सार डोरी
टी कैधों मार मार अवतार कैधों दार तेरेवार हैं १३ ॥

क० ॥ यौवन सरोवर के कोमल सिवार मूल काम
नु तूल मखतूल कैसे तार हैं । पंच शर सिंधुरके श्याम
रि भौर कैधों कैधों शीश सहज सिंगार रस सार हैं ॥
थि मार मरकत मणि के मयूष कैधों कैधों धरे चन्द
ों तिमिर परवार हैं । लांबे लांबे जामें ज्योति लताके
तान कैधों कैधों श्याम वरण डबीले छूटे वार हैं १४ ॥

क० ॥ वाला वार छोरके निवारतहै वारवार तारतार
ल रहे चौगिर्द मुखिन्दु के । लहरत ऐँडिनलों डहरत

चूमे भूमि भर भर मोती परें पुंजन जलिन्दु के ॥ भनै
रघुनाथ कैधों जानिकै सुधाके बुन्द जात चले मुदित
मनोहर मलिन्दुके । मानो चन्द्रमण्डल पै कुण्ड में अमी
के हेतु धाय गये छौना छाय लाखन फणिन्दु के १५ ॥

क० ॥ लांबे सुललित लहकारे सटकारे कारे कंचन
के खम्भ फैले बढे जात पन्नग कुमार हैं । मधुकर भार
मख तूल कैसे तार कैधों मरकत मणि छविदार तम
धारहैं ॥ राजै मणि कण्ठ रसराजके कुमार कैधों सुखमा
सरोवरके सुथरे सिवारहैं । अंजनके सार पियमनके हरन
हार कैधों या छबीलीके छबीले छूटे बार हैं १६ ॥

क० ॥ लांबे लहकारे सटकारे सुकुमार कारे मृग मद
धारे मख तूल कैसे तार हैं । तमके निवास कैधों तामस
प्रकास कै शृंगार के सरोवर में सुथरे सिवार हैं ॥ मारि
शिर मौर के मुबारक ये भार कैधों चातुरी के चोर मनि
मेचक के सार हैं । शशिके समीप कैधों राहुकी रसन सो
है नागिन के बार कै सुहागिन के बार हैं १७ ॥

स० ॥ हठि मांगत बाट किधों लछिमी को सरोजसों
आनि सिवार अरे । किधों आरसीके घर तें उत शंभु
समूह फनी छवि के बगरे ॥ इमि राधिका के मुखके चहुं
ओर विराजत बार महा सुथरे । भजि चन्द चल्यो वि-
चल्यो रन ते तव बुन्द मनो जुरि पाछे परे १८ ॥

क० ॥ रेशम लछारे रसराज रंगिडारे तिन्हें उपमा
सुधारे सोहै मतिन गुनीन के । प्यारी तेरे बार मेरे जान
हैं रचे त्रिरंघि सचिकरि कारे रंग सकल दुनीनके ॥ देखि
के सिमंतवन्त विथुरे सनेहवन्त बुद्धिवन्त कैसे रहै

गुनन गुनीन के । लेत श्यामताई काल कूटहू की आई
पुनि ताकी प्रभुताई मनमोहन मुनीनके १६ ॥

स० ॥ जनु इन्दु उयो अवनी तलतें चहुंओर छटा
छविकी छहरी । तहां देखत शम्भु गोपाल खरे तियके
मुखकी सुखमा सिगरी ॥ बढि एँडिनलों उमड़े बड़े वार
भई तट राधिका न्हाय खरी । जनु सोत समेत धरे तन
दिव्य मनो जल तें यमुना निकरी २० ॥

क० ॥ गरकि गुलाब नीर चीर सों लपटि करे आप
अङ्ग रँग रंगे आभा अति अगरे । जावक जवान मिलि
छाजत छवान छवि जिनकीदवान वन भौर डाहि डगरे ॥
मृग मद कज्जल कलिन्दी तम धूमधार काशीराम वारि-
वे को और श्याम सगरे । नैन पाइवे को फल होन
दैरी पूरो मत बांधि प्यारी जूरोतू रहैदे वार वगरे २१ ॥

स० ॥ नीलमणीनके सूत किधों कैधों पन्नग पूत लसैं
छवि वार हैं । रेशम श्याम समूह किधों कैधों काम बटे
के बरोह अपार हैं ॥ राजिव नयन सुनै रघुराज किधों
रसराज नदी के सेवार हैं । कै सटकारे महा छवि वारे
प्रकाश पसारे सो रुक्मिणी वार हैं २२ ॥

क० ॥ कोमल अमल चल चीकने चिकुर चारुचित
ये ते चित चक चौधित केशवदास । सुनहु छवीली
राधा छूटे ते छुवै छवानिकारे सटकारे हैं सुभावहीसदा
पुवास ॥ सुनिकै प्रकास उपहास निशि वासरको कीनो
है सुकेशव सुवास जाय के अकास । यद्यपि अनेक
चन्द्र साथ मोरपक्ष तऊ जीत्यो एक चन्द्र मुखरूप
जेरे केश पास २३ ॥ इति केश वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथवेनी वर्णन ॥

दोहा ॥

त्रियवेनी परिपीठपर यों छवि युत छहराति ॥
 जनुसुमेर गिरिकीशिला नागिनीसी लहराति १
 सटकारी बेनी ललित छुटीपीठ पर आय ॥
 चढिदिवाल कापूरपै जनु सांपिनि लहराय २
 कामिनि पीठिपरी लखीयों कवरी छवि कीन्ह ॥
 कदलीदल त्रय नागिनीगूँथि मनोधरि दीन्ह ३
 हे त्रिय बेनी रावरी कारी नागिनि रूप ॥
 भेद इतो वाके डसे यहि लखि लहरिअनूप ४
 कामकसीसी लसति है बेनी अतिगतिपाइ ॥
 अबहितबाजीकरनमें लगतिनितम्बनिजाइ ५
 अरुणअसितसितद्युतिधरैलसतिसुमनकीपांति ॥
 सफल करति मनकामना त्रियवेनी की कांति ६
 क० ॥ कैधों मुखकमल चली है अलिमाल मिलि
 कैधों कामभूपकी कृपान हरलेनी है । चाखन अधर
 अमी चढी नव नागिनीसी मुरवा निरखिरही अधिमग
 गैनीहै ॥ कैधों लाल शीशफूल सरजसुता की धार
 कैधों रसरास नदीजाति अतिपैनी है । पावसकी रैनी
 नैन चातक न दैनी सुख कैधों मृगनैनी की बनायगुही
 बेनी है १ ॥

क० ॥ कंगही करत रायबेलाको फुलेललाय लाल
 गुणगुही मोतीलर लटकाई है । कैधों व्याल विषधर
 कलिहरै समेटि गूढी काम कोतवालके कोड़ाते सरसाई

॥ आज न वचौगे लाल कोलकी निरखि वेनी बरवस
सैगीजू कठिन विषताईहै । मंत्रऊ न लागै किलकोटि
रो शिवनाथ वचौ बनवारी खंचिमदन दुहाई है २ ॥

स० ॥ कै मधुपावली मञ्जु लसै अरविन्द लगी म-
रंदहि पोहै । कै रजनी मणि कण्ठ रिसायकै पाछे को
न कियो अरि सोहै ॥ वेनी कैधों ये कलङ्कचुवै किधों
प मसाल को धूम करो है । कंचन खंभ के कंध चढ़ी
कि चंद गहे मुख सांपिनी सोहै ३ ॥

क० ॥ कञ्चन की पाटी पर काजर की धार मानों
प मालऊ पै अलि माल लटकतिहै । कैधों रतिनायक
पीठ पै सिंगार लीक देखि कवितानकी सुमति अटक-
है ॥ श्रीपति भनत कैधों केसरि के खम्भ पै सदम्भ
ई मरकतलरी छटकतिहै । कारी लहकारी वेनी पीठ
सजति मानों रँगी रङ्ग पाटी पै भुजंगी सटकतिहै ४ ॥

स० ॥ कैधों सुधारस चाखिवे को लपिटी लरितीन
वंगिनि कारी । कैधों प्रभाकर भीति शशी निशि को
रेकै निकटै निज धारी ॥ कामकसा किधों राजति है
नकीधों श्रृंगारकी बेलि सुधारी । श्रेनी सही सुखमाकी
जी किधों रुक्मिणी वेनी बनी है तिहारी ५ ॥

क० ॥ कैधों शशिकलिमा उतारिमेलि पाछेधरी कैधों
धियारी कारी नागिनके कूलकी । कैसी करवार कीधों
हुकी कुमार कैधों कालिंदीकी धार कैधों सुधारस मूल
॥ आनन में अंबुज असित तन नागिनिसी मणिसी
राजै माथे शोभा शीशफूलकी । रंगरूपरेनी बनइयाम
बदेनी कैधों अलिकुलश्रेनी सोहै वेनी मखतूलकी ६ ॥

क० ॥ कच अभिराम ज्योति यमुनाकी जीतलेत मो-
तिन की मांग सुरसरिता समान है । बीच बीच राजत
चमक चार मोतिन की दरशी दिनेश सरसुती ऐन आन
है ॥ सब सुखदैनी पिकबैनीकी बनाय गुही श्यामश्वेत
अरुण महा विराजमान है । नाक की निसेनी लपटानी
अलिसेनी अरु बेनी मृगनैनी की त्रिबेनी मेरेजानहै ७ ॥

क० ॥ कैधों हेमशैल शृंग ऊपर विराजो राहु कैधों
रतिनाहि नै निवास लियो भाको है । कैधों बांधि चोटी
कियो सहचरि पुष्ट रम्भ देखि ताहि रम्भाको गुमान
कुलथाको है ॥ भनै रघुनाथ कै नवेली इन्दु आननते
निकसिकलंक जाय बैठोछवि छाको है । जूरो जोखि-
ताको पूरभरो है शृंगार कैधों कैधों प्रीति पूरण यों स-
म्पुट छपाको है ८ ॥

क० ॥ अतर फुलेल मेल हेम ककई सों आँछ पोंछ
कै सरयान दईकेसर तरौटी है । नाइन सिवारसे सम्हार
बार बार बार त्रिलर सुधार गुंध कीन्हों ए कसौटी है ।
भनै रघुनाथ कैधों आनँद अगोटी रसराजसो रंगोटी
रति चोटी करि खोटी है । कैधों ब्याल जोटी युत पन्नगी
सुमोटीबाल कैधों तुव भाल पै सोहाई लसी चोटीहै ९ ॥

स० ॥ बाल चलै अलबेलीसी चाल कछू कबि
ब्रह्मकहै न कहावै । लाज भरे ब्रजराज कुमारकी भाजि
चली भजि जानन पावै ॥ दौरि गही मृगनैनीकी बेनी
सुप्यारी को यों लचकयो तन आवै । भौरन की परत-
चकिये तमकयो मनो काम कमान चढ़ावै १० ॥

क० ॥ वारनकी रचना रचीहै प्राण प्यारी एरी भली

री पूरव जनम कडू देनी है । पीठिपर सोहत यों सुवरन
मि पर दीनी धौं शृंगार रूप रस की थलेनी है ॥

वतामणि मानों अंग सहज सुवास आस कनक लता
लपटानी अलि श्रेनी है । मालतीके फलन ललित
लगुन गूथी बेनीसी लसति मृगनेनीतेरीबेनी है ११ ॥

क० ॥ बेनी नव बाल की बनाय गुही बलिभद्र कु-
म अरुण पाट मन मोहियतु है । कारी सटकारी
की राजति नितम्बपै पन्नगके नारिनकी द्युतिदहियतु
॥ सात्विक सिताई असिताई तेज तामसकी राजस र-
ई मिलिरूप रोहियतु है । त्रिगुन वपुष धार त्रिभुवन
तिबेको मानो महामायाको स्वरूप सोहियतु है १२ ॥

क० ॥ बार गुहि रेशम से दीन्ही लटकाय पीठ व्या-
ो मानों हेम के शिला पै लटकारी है । भनत दिवा-
र सुगन्ध सरसात तामें मलया के चाटि कैधों सौ-
भ बगारी है ॥ देखि देखि मोरिनी करति अनुमान
न कैधों भ्रमरावली को नाग की कुमारी है । लखि
द लाल याते होत है विहाल प्यारी व्याली ते बड़ेरी
ष बेनी में तिहारी है १३ ॥

क० ॥ रैनिकी उनींदी राधे सोवत सकारे भये भीनो
टु तानि परी पायन ते मुखते । शीशते उलट बेनीकंठ
के उरपे कै जानुके छवान कैके लागी सूधे रुखते ॥ सुरति
मर रति योवनके महाजोर जीतभगवंत अरसायराखी
खते । हरको हराय मानो माल मधुकरन की राखी है
तारि मैन चम्पा के धनुष ते १४ ॥

स० ॥ राख्यो मयङ्कके पीछे फनीफन रूप बखानत

याको हितूपर । नेहसनी बनी बेनी गुलाबनिसेनीकोऊ
सुखकी नहिं दूपर ॥ पीठि में देखत दीठि धसै न उपाय
विलोकिये या ब्रज भूपर । अमृत पीवत पूँड डुलै मनो
कञ्चन के कदली दल ऊपर १५ ॥

क० ॥ जीतिरतिकामहि करति रसरीति तहां प्रीतम
ते दुहूं रचि विपरीत रतिहै । मची सिसकार रसना की
भनकार जहां शम्भु मुख चंद्रमाकी छवि छलकति है ॥
कटि लफिलफिलचकत कुचभारनसों हारनते औरों उर
ओप उलहतिहै । पीठिपर बेनी मृगनयनीके लुरत मानों
नागिनि सुमेरु के शिला पै लहरति है १६ ॥

क० ॥ पीठि तन ताकतही दीठि डसि लेत फिरि
फैलिकै विषम विष रोम रोम धावतो । छिनक में ऐसे
हाल केतन के होते तब एतो कोऊ गारुड़ी कहां ते
ढूँढ़ि लावतो ॥ ईश्वर दुहाई जो पै होती ऐसी ब्याली
काली को नथैया कान्ह काहे को कहावतो । मुरि मुस-
क्यानि मंत्र जानती न राधे तो या बेनी के डसन ब्रज
वसन न पावतो १७ ॥

क० ॥ शीश ते सरल ह्वै कै पीठि की पनारी ह्वै-
कै कैधों धरी धारा जो सिंगार के रिसाल की । निशा-
पति अंक ते कैधों निशा रिसाय चली छांह कै छबीली
मुख पंकज के नाल की ॥ तमकी तरंगिनी कै बाढी त-
रुणी के तन कैधों अवलम्बी बेलि अतन तमाल की ।
काम के विलासन की विजै माल कैधों यह कैधों मांग
रूप काछे पाछे बेनी चाल की १८ ॥

स० ॥ सेज ते ठाढी भई उठि बाल लई उलटी

गिराय जम्हाई । रोम की राजी विराजी विशाल
टी त्रिवली अरु पीठि खिलाई ॥ वेनी परी पग ऊपर
छे ते ब्रह्म यहै उपमा उर आई । लोक त्रिलोक
जीतिवे कारन सोनेके काम कमान चढाई १६ ॥

क० ॥ चन्दन चढाय चारु कुम्कुम लगाय पीछे कैधों
शिनाथ निशिनेहसों दुराईहै । कैधों बन्दी बन्दन छि-
के छीर सांपिन सी अलि अवली समीप सुधा सुधि
गईहै ॥ केशोदास हासरस मिलि अनुराग रस सरस
गार रस धार धरा धाईहै । मेलि मालतीकी माललाल
री गोरी गुहि वेनीपिकवेनीकी त्रिवेनीसी बनाईहै २० ॥

क० ॥ लांबीलहकारी अति कारी सुकुमारी सखिया
नै सुधारी मत्त मधुप की सेनी है । डारत कलंकहि
लानिधि निचोरि कैधों कैधों मन धीरज विदारिवेकी
नी है ॥ नागरि सनाल मुखकंजसी लगी है कैधों कैधों
री नागिनि निपट सुखदेनी है । कीनो तम यानके तमी
तेके पाछेपरी कैधों अंधकार धारकैधों यह वेनीहै २१ ॥

क० ॥ लांबीलहकारी बहुपेचनकी भारी अरु गरक
ंधे सारीसो न्यारी अति भोककी । वरनो कहाँलों
ोप मदनकी तोपकैधों इन्द्र करिकोप तररानी एक ओ-
की ॥ नटुवाकी साटिकैधों आलम सधायवेकी कहाँलों
वानौहों पढ़यो न विधि कोककी । नागिनके तिमिर छ-
करमेंछायरह्यो कटिपरवेनी कैनिसेनीसुरलोककी २२ ॥

स० ॥ मृगनैनीकी पीठपै वेनीलसै अतिसंधे सुगंध
मोयरही । अतिचिक्कन श्याम चुभीचितमें सुसुकेशी
केशन जोयरही ॥ उपमाकविदत्तकहा कहिये रविकी

तनया तनतोयरही । मनोकंचनके कदलीदल ऊपर
सांवरी सांपिनि सोयरही २३ ॥

क० ॥ मोहनी के अजिरमें परीकैधों खलिवे कीमार
झोहाराकी छरी चित अवरोहिये । कनकलतापै हवैकै
लख्योहै कालीकैधों चांदनीकेपीछे तमपुंज वरजोहिये ॥
सुखमा त्रिधामकी लगी है पाछे रसराज तामें कैधों का-
लिका को रूप मनमोहिये । मानगृह हेमपाट पै धों मर-
कत श्रेनी कैधों गोरी पाटीपर चोटी चारुसोहिये २४ ॥

क० ॥ नीलमनि मई मनमथकी निसेनी कैधोंमधु
करश्रेनी हेमलतासों रसति है । हाटक बटीते कैधों
कज्जलकी धारा धसी पीठिपर पाछेकीधों जनम रसति
है ॥ कैधों छवि छायाहै छपाकरके मध्यकीधों नागबधू
पीछे आनिपग परसतिहै । लालसेत गुनगुही सबसुख
देनीकैधों बेनी मृगएनीकी त्रिबेनीदरसतिहै २५ ॥ इति
बेनीवर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ जूरा वर्णन ॥

क० ॥ अचरजकला कलाधर धरि राखीपीछे कैधों
सुरभानजा निकर बैर कांध्यो है । कैधों कंजकोस ढिंग
अलि पुंजगुंजरत मंजुल मनोज मृगजानि सरसांध्यो
है ॥ कैधोंअहिकारे लहकारे ते लहरवारे सुधाकरजानिकै
नवीननेह नांध्योहै । चीकने चिकुर चारु चहचह्योजूरो
श्याम ऐंठिगैंठि लटनिलपेट मनवांध्योहै १ ॥

क० ॥ कीधों शशि मन्दिर पै श्यामघन कलशसो है
कैधों देहदामिनी पै तिसिर समेटोहै । गुणनको गूढो

धों शोभाको समूह छूटो कैधों मखतूल समविराजत
जैठोहै ॥ काजरकी धूम कैधों लसत मशालरसराज
श्रृंगार कैधों प्राणपिय पैठोहै । प्यारी शीशजुरो ऐसो
शोभादेत रुरोकैधोंमानो हेमगिरिपैवियरऐंठिवैठोहै २॥

क० ॥ कैधों पुरहूत वारी चाटिकाको नारियर देखि
ष अद्भुत लावतजहूराहै । कैधों यहकरतार वारिको
टा उदार कैधों कामवाम धाम छत्रिको कंगूरा है ॥

धों नीलकंजकी कली है रूपतालही की बाल को
इन आगे तैसो विधु पूरा है । मूराहै गरूराहै सिंगा-
हीको कूराकैधों मारकोमरूराकैधों प्यारीतेरो जूराहै ३॥

क० ॥ कैधों नाग गिंडुरी दे फन उकसाय वैठ्यो
धों काम आँकुश सँवारिवे को पूरा है । कञ्चन को
टिका सो पाटी पारिवे को राख्यो कैधों सालिग्रामको

नूप रूप सूरुा है ॥ कैधों शनिकरत तपस्या तीर का-
रन्दी के वृन्दा को सो फल देखियत मन रूरा है ।
केनो चटक चटकारो कारो श्याम हू ते ऐसो शीश
प्यारी के बिराजमान जूरा है ४ ॥

क० ॥ जूरा शीश ऊपर कँगूरा कामवीर कैसो सेंदुर
कीर मानो भानु के प्रकाश है । भनत दिवाकर नखत
र मोती माँग गंगा स्वच्छ पानी नाली यमुना निकाल-

है ॥ कैधों स्वरभानु घेरी है प्रभात काल तिनके छु-
यवे को तारा आसपासहै । कीरति कुमारी कैधों श्या-
मन बांधि राख्यो फेंट मारि वैठो मानों नाग आम

स है ५ ॥ इति जूरा वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ सर्वदेहउपमा वा छवि वर्णन ॥

क० ॥ आई बरसाने ते बुलाई वृषभान सुता निर-
खि प्रभान प्रभा भानुकी अथैगई । चकि चकवान के
चुकाये चकचोरनि सों चौकत चकोर चकचौधीसी चकै
गई ॥ नन्दजू के नन्दनके नैननि अनन्द मई नन्दजूके
मन्दिरन चंद मई छैगई । कंजन कलिन मई कुंजन
अलिन मई गोकुल की गलिन नलिनमई कैगई १ ॥

क० ॥ आज मुख चंदपर रोचन रुचिर भाल कौन
ब्रजचंदकी बिकावनि सितावकी । आजति छबीली छवि
वरनी न जात मोपै हरिनी हितू जन के हिय के हिताव
की ॥ रति कीनरम्भा की न शची उरवसी हूकी वारि वारि
डारियत उपमा कितावकी । गालिब गुलाब की न पंक-
जके आवकी रही न आफतावकी न तावमहतावकी २ ॥

क० ॥ आवति हो देखे आजु बलि गई चलि देखो
रघुनाथ ठाढ़ी एक पट दीन्हे द्वारिये । एतिक सुगंध
फैल्यो गली मानो छिरकि कै तर कीन्ही अतर गुलाब
कीदौ फवारिये ॥ वरनोकहांलों नखशिखकी सकल शोभा
पर एते रूपकी बनाई बिधि गवारिये । देवनके ऐनवारी
देवदेव सैनवारी एहो लाल जापैवाल सैनवारीवारिये ३ ॥

क० ॥ आजु एकलालना अन्हात में निहारी लाल
पीन पयोधर वीन वानी छीनलंकहै । यमुनाकेजल बीच
कएठके प्रमानपैठि पोंछैजो लिलार लाग्यो मृगमद अंक
है ॥ मुख अरु पानिको परसभये रघुनाथ ऐसी अनिलसी
शोभा परमअशंकहै । वारिजको नातो मानि धौल करिबे

को मानो कौल कलानिधि में को धोक्त कलंक है ४ ॥

क० ॥ अतर पुतायो मदयो महल सुगंधन सां द्वारे
गज मोतिन की तौरनी तनी रहें । चंदन चहल चारु
चाँदनी चँदोवा लाल गोप माल मणीकनी कोरने घनी
रहें ॥ उमा चौर ढारें रमा आरती उतारेंठाढी रम्भारति
मैनकासी कोटिन जनी रहें । हठी देवतान की दिमाक
दाररानी तेऊ राधे महरानीजूके हाजिर बनी रहें ५ ॥

क० ॥ अतर पुतायो चौक चंदनलिपायो विञ्छीगिल-
म गलीचनकी पंगति प्रमान की । कारी हरी पीरी लाल
भालरें भलकरहीं जैसी छविञ्छाई चारु चाँदनी वितान
की ॥ भीनी श्वेत सारी जड़ी मोतिन किनारीदार फैली
मुख आभा हठी राधे सुखदान की । नाह नेह नदी कर
रमा रूप रहीकरवैठी आनिगद्दीपर वेटी वृषभानकी ६ ॥

क० ॥ आजहों गईती वीर सहज निकुंजनमें कौतु-
क बिलोक्यो तहां सब सुखदानी के । कहत बनैन मोपै
अचरज बाट हठी कहि कहि हारे मुख चार वेद बानी
के ॥ श्रवण सुनैन मानै आंखिन दिखाऊं तोहि चलदुर
मेरे साथ चरित गुमानी के । लूटै सुख मूटैकरै मनुहार
कोटै बैठे पायँन पै लोटै लाल राधा महारानी के ७ ॥

क० ॥ अमल अनंगके अनन्दकी उदित भूमि जीति
पिया बाजी दगा बाजी सी पसारी है । कनक के पान से
उदरमें उदित द्युति त्रिवली तिहारीमें निहारी मैन हारी
है ॥ रूप गुण चातुरी सो सुरनर नागन को जीते मनि
कण्ठ विधि सोहै रेख सारी है । सौति सुख उतरेको पिय
ब्रेमचढ़िये को कुन्दनकी प्यारीपैरकारी शीश वारीहे ८ ॥

क० ॥ आनन की उपमा जो आनन को चाहै तऊ
 आनन मिलैगो चतुरानन बिचारेको । कुसुम समान के
 कमानको गुमान गयो करि अनुमान भौह रूप अति
 प्यारे को ॥ गिरिधर दास दोऊ देखि नयन बारिजात
 वारिजात वारिजात मानसर वारे को । राधिका को रूप
 देखि रति को लजात रूप जातरूप जातरूप जात
 रूप वारे को ६ ॥

क० ॥ अहिन खिलावत है मृगन लरावत है शकुन
 पढ़ावत है नेक न टरत हैं । कबहूँ कै शङ्खपूरि शम्भुजी
 की सेवाकरै कबहूँ के कुण्ड बूड़ि सिंहन धरत हैं ॥ कब
 हूँ के कदली के खम्भसों लपेटि जंघ कबहूँ के कंज माथे
 राखि बहरत हैं जा दिना ते न्हात चार आँख भई ता
 दिनाते बावरो सो भांतिभांति भावना करत है १० ॥

स० ॥ आई हुती अन्हवावन नाइन सौधै लिये कर
 सूधे सुभाइन । कंचुकी की छोर धरी उबटैवे को ईगुर से
 रँगकी सुखदाइन । देवस्वरूपकी राशि निहारति पांयते
 शीशलों शीशतें पांइन । ह्वैरही ठौरही ठाढी ठगीसी
 हँसै कर ठोड़ी दिये ठकुराइन ११ ॥

क० ॥ अंग तेरो केशरिसो करिहां केहरि कैसो केश-
 निकी सरकैसे करिसकै कोतमें । कहै कविगंग आछे छबि
 के छबीले नैना नीलेऊ नलिन ऐसे नाहीं देखे होत में ॥
 अहे हे अहीरी तू धों इहाँ कछु जानतिहै काके भाग औ-
 तरी है तोसी तेरे गोतमें । तरुनी तिलक नँदलाल त्यों
 तिलक ताकितो परहौवारों तिलतिलकै तिलोत्तमें १२ ॥

क० ॥ अंगनई ज्योति लै बरंगना विचित्र एक

आँगन में अंगना अनंग कैसी ठाढ़ी है । छवि की
सी उजियारी गोरे तन इवेत सारी मोतिन की माल
सो जुन्हैया जनु बाढ़ी है ॥ आलम सो आली वन-
माली चलि देखु द्युति कनक सुगढ़ कीसी रूप गुण
गाढ़ी है । देहकी दमक वाके चीर की चमक मानो क्षीर
निधि मथि कैधौं चंद मथि काढ़ी है १३ ॥

स० ॥ अंगुरीनलौ जाइ भुलाइ तही फिरि आई
लुभाई रहो तरवा । चप चाइन चाइ हो ऐँड़िन छ्वै धय
धाय छको छवि छाइ छवा ॥ घन आनंद यों रस भीनि
भिजो कबहूँ विसराम न लोक नवा । अल बेली सुजान
के पाँड़न पाइ परो नटरो मन मेरो भवा १४ ॥

स० ॥ अंजन तोरही ताको करै नित पान लखै सुख
त्यो रंग चायन । औरै शृंगार सदा घन आनंद चाहे
उमाहसों आपन दायन । तू अलबेली स्वरूपकी राशि
सुजान विराजत शुद्ध सुभायन । आपन नाच कैसाइ
कछू जोलटू भयो लागो फिरै तुव पांयन १५ ॥

कुन्दन से अंगनवयौवन सुरंगउठै उरज उतंगधन्य
आरो परसतहै । सोहत किनारीवारी तन सुखसारी देव
शीश शीशफूल अध खुल्यो दरसतहै ॥ वैदिया जराऊ
बड़े मोतिन सों नीकी नथ हँसति तखोननिमें रूपसर-
सतहै । गोरी गजगौनी लोनी नवल दुलहियाके भाग
भरे मुखपै सुहाग वरसतहै १६ ॥

क० ॥ सुन्दर सुरंगनैन शोभित अनंग रंग अंग
अंगफैलत तरंगपरिमलके । वारनकेभार सुकुमारिको
लचतलंक राजैपरयंकपर भीतरमहलके ॥ कहैपद्मा-

कर विलोकि जनरीभै जाहि अम्बर अमल के सकल
जलथलके । कोमल कमलके गुलाबनके दलके सुजात
गाड़ि पायँन बिछौना मखमलके १७ ॥

क० ॥ सुखमा सदनभूरि भूषित बदन जाको सोहत
सलोनो चारु चंदहूतें चोखी सो । छांड़ि कुंज मंजु
रहे घेरि और पुंज पाय अंग वारो सौरभ समूह अन
जोखोसो ॥ बचन विलास वेस जाको हनुमान कहै रा-
तौदिन रहतपियूषहू पै रोखोसो छबिसों अपारबैठी भौनदै
कियार तऊ बारबार होत वरि वीजुरी कोधोखोसो १८ ॥

क० ॥ कंचन फरस फैली मणिन मयूषै तन्यो जरी
को बितान तेज तरणि तरापरै । पांवड़े बिछौना परे
मोतिन के कोर वारे चारो और जोर जो प्रभाभरी भरा
परै ॥ हीरन तखत बैठी राधे महारानी हठी रम्भा रति
रूप गिरि धसक धरा परै । छूटी मुख चंद चारु किरण
कतार बांध छवै २ चंद्र मण्डललौ छबिके छरा परै १९ ॥

क० ॥ कंचन सहलचौक चांदनी बिछौना तामें
जरीको बितान तानभानज्योति मन्दकी । लालनकीमालै
लाल सारीकोरदार अंगअँठनकी लाली जिमिलाली
जीववन्दकी ॥ रम्भासी रमासी खासीदासी मैनकासी
हठीठाढी करजोरै तेऊ छिनै ज्योति चन्दकी । गावैवेद
वाणी चौर ढारत भवानी राधेबैठी सुखदानी महारानी
नँद नंदकी २० ॥

क० ॥ कोऊ छत्रलीन्हे कोऊ छाहगी कीनेकोऊवीनै
लै प्रवीनै ये नवीनै सुर गावती । कोऊ जरीजोरै कर
अतर गुलाबवोरै लैलै अलबेली हठी धावनतै आवती

गेऊ चौरदारै कोऊआरती उतारै कोऊ करती सलामे
गेऊ मुजरान पावती । वैठीआन तखतपै वखत बल-
दराधे वाला दिगपालनकी मालापहिरावती २१ ॥

क० ॥ केशरि सों अंग पट केशरि के रंग रंगे सोती
ही मांग है अनंग हू की वालिका । रम्भा सी रमा
नी नैनका सी मञ्जु घोषा सम शची सी उमा सी
मुखमा सी ज्योति जालिका ॥ सांभ समय आन वृष-
नान की कुमारी राधा ठाढी दरवाजे हठी प्राणन की
जालिका । भाग भरे नैनन निहारो नन्दलाल चलिरेनि
गुजरी सी उजरी सी दीपमालिका २२ ॥

क० ॥ केशरि सी केतकी सी चम्पक चमीकर सी
वपला चमक चारु गातकी सोराई है । जाको मुखचन्द
मुख चन्द मन्द ज्योति होति जाको लखि नैन अरविन्द
गुति पाई है ॥ नीलमणि मोतिन की माल उर डोलत
नयूर औ मरालन की पंगति सोहाई है । देखिने को
दौरि आई गोरी ब्रजवाला सबै भानु की किशोरी आ-
जु नन्द गृह आई है २३ ॥

क० ॥ कोठरी अँधेरी प्यारी बरतिमशाल कैसी दीप
के शिखाके द्युति दुरिदवि जाते हैं । भनत दिवाकर कु-
चन गोल गोरी जोरी श्यामके निहारे दृग भूपकिभपाते
हैं ॥ शीशाकेमहलमें अनेकप्रतिविम्बजादूसेप्रत्यक्षहोत
जात करमातेहैं । भौनसे निकसिके अजिर जब आई
राधे चांदनी करत मन्द चन्द भागि जाते हैं २४ ॥

क० ॥ कञ्चन की बेली सी नवेली को शरीर लागे
ज्वालामुखी देवी सी मुखार ब्रज भभकी । भनत दिवा-

कर न रति के न रम्भा के न उरबशी न किन्नरी ब्रि-
लायो सीव नभ की ॥ आरसी उदास घन सारसी
सुवास सुर सम्पा की प्रकाश की जवास तात सभकी ।
भषण व अंजनवो अंगराज जावक के रंगन दुकूल
देह चव की २५ ॥

क० ॥ कंकणकरन कल किंकिणी कलित कटि कंचन
कंगूरा कुच केशकारी यामिनी । कानन करनफूल को-
मल कपोल कण्ठ कंबुककपोत श्रीव कोकिलकलामिनी ॥
केसरि कुसुम कलिधौतकी कञ्जून कांति कोविद प्रवीन
वेनी करिवर गामिनी । कोक कारि कासीकिन्नरीककन्य-
कासीकैधौकामकी कलासीकमलासीखासीकामिनी २६ ॥

क० ॥ कुन्ती पांचाली दमयन्ती तारा शकुन्तला अह-
ल्याहू मन्दोदरी पहिले सुधारे हैं । मैनका घृताची रम्भा
मंजु घोषा उरबशी तिलोत्तमा को तिनहूँ ते हलि की
निहारे हैं ॥ विदुष सुकवि भनै गिरा रमा जमा सिया
मोहनीहूँ रचिफिरिमनमें विचारेहैं । राधेको बनाय विधि
धोयेहाथजामोरंगताको भयोचंदकर भारेभयेतारेहैं २७ ॥

क० ॥ केसरि कलित पच तोरिया ललित लाल
लहंगा लसत लंक लोने पर घेरदार । जगमगे जड़ित
जड़ाऊ पग पायजेव पंकज प्रभानि प्रभा पांवड़े गड़ेर
दार ॥ सदा नन्द सुन्दर सघन धुंधुवारे कच कंचुकी पै
डारे अहि कारे मनो फेरदार । ऐंडदार ऐननि मरोर दार
तोरदार करत कजाकी कजरारे नैन कोरदार २८ ॥

क० ॥ कंचन से गात जलजात से लजीले नयन
भृकुटी कमान मानों मैन की मरोरी है । रंचक उरोजकी

चाई त्यों ललाई अधरानकी मिठाई चारु चोंगुनी
 प्रमोरी है ॥ कहै नन्दराम लरिकरि भरे भरे वैन प्यारी
 स गौरी वृषभान की किशोरी है । श्वेतरंग सारी अंग
 प्रोपतेदुरंग होति जानिपरै केसरि कुसुमरंगवोरी है २६ ॥

क० ॥ कुन्दन से अंग नव जोवन तरंग राजै उरज
 तंक लंक ज्ञान छवि देत है । बादले की सारी दर दा-
 नेनि किनारी दर वदनकी ज्योति मानो हूसन समेत
 ॥ शोभनाथ निरखि सुजान अंगिरान प्यारी दोऊ
 रजोरि मुख मोरि हित चेत है । सदन भलाहकेसला-
 सों उखाहभरी मानोरूप सागरकीठाड़ीथाहलेत है ३० ॥

स० ॥ को रति है अरु कौन रमा उमा झूठी लटे
 नेचुरै गुँधी मोती । हाय अनूठे उरोज उठेभये मैनतुठे
 भये और है कोती ॥ त्यों कवि ब्याल नदी तट न्हाय
 लड़ी लड़ी रूप की सुंदर ज्योती । मोरति नार मरोरति
 भौंह निचोरति चित्त निचोरत धोती ३१ ॥

स० ॥ करता पतिकेउर आनँद की सुखमा यों प्रका-
 शन की सरता । रति रंग समै निज अंगन सों निशि
 में द्युति दामिन की हरता ॥ रघुनाथ भनै विरचीविधि
 ने तिहिकी धन धन्यहै चातुरता । रति रम्भाशची युत
 नैन काहू लखि लाजति बालकी सुंदरता ३२ ॥

क० ॥ कंजसे चरण देव गढीसी गुलफ शुभ कदली
 से जंघ कटि सिंह पहुंचत है । नाभी है गँभीर ब्याल
 रोमावली कुम्भ कुच भुज ग्रीव भाय कैसी ठोड़ी बिल-
 सत है ॥ मुख चंद्र विम्बाधर चौका चार शुक नाक
 मीन नैन भौं हन बकाई अधकत है । भाल आधो वि-

धुभाग करन अमृत कूप बेनी पिक बेनीजू की भूमि परसत है ३३ ॥

स० ॥ कुन्दन को रँग फीको लगे भलकै इमि अंगन चारु गोराई । आंखिन में अलसानि चितौनि में मंजु बिलासन की सरसाई ॥ कोबिन मोल बिकात नही सतिराम लहे मुसकानि मिठाई । ज्यों ज्यों निहारि ये नारे हैं नैननि त्यों त्यों खरी निखरै सी निकाई ३४ ॥

क० ॥ कुन्द से दशन धन कुन्दन वरण तन कुन्द सी उतारी प्यारी क्यों बने बिछुरि कै । शोभा सुख कन्द देखो चाहि कै बदन चंद प्यारी जब मंद मुसक्या तनेक मुरि कै ॥ सेनापति कमल से सोहत अमल मुखतामें दृग चंचल दुराये हून दुरिकै । पलकै नलागै देखि ललकै ललन मन कै कपोल गोल परे अलकै विथुरि कै ३५ ॥

क० ॥ केसरि को रँग अंग संग में न जान्यो जात गातसब सुखमा समूह सरसाई है । खंजन गुमान गंज लोचन विमल जाके मीन कंज पुंजन की उपमा दुरात है ॥ प्यारी अपरा पै दया देव वारि डारीसारी बिम्बअप्रवालते ललित अरुणाई है । ऐसी मृगनेनी पिकबेन सुख दैनीरति मूरति नवीनीलाल भागनतेपाई है ३६ ॥

क० ॥ कारी अपकारी बर बरुणी सुसौहै सोहै भौ हैं मन मोहै कहौ कहाधौ सराहिये । कहैकवि गंग जा की आंखिन के आगे अलि कमल कमीन लागे मीन तौ बहाहिये ॥ अंगिया की लगिया सों करत तनेन कुच देहकी निकाई देखे दाह्यो सोनो दाहिये । अद्भुत

रतूत करी है जोकरतार कहिहांके जानिवेको करामा-
चाहिये ३७ ॥

क० ॥ काजरसी रंगीरैन कारी सारी अंगएन चली
मृग नैनी बुद्धि अतिही अथाहवी । कवि मकरंद जागे
बहुल चुरैलकरै चमकै अकेली गैल ज्योंचिराक चाह-
वी ॥ दशहू दिशान घनगरजि निशान उठे बोलत
नशान वीर तुजक निवाहवी । मणिवारे सांपन के पांव-
डे जरायजरे सोहतहै जाके अभिसारहू में साहवी ३८ ॥

क० ॥ कीन्हीसेत साजब्रजराजके मिलनहेतआधी
गति चली प्यारी निकसि अवासते । गगन समाध
आयो तैसो कवि रघुनाथ भूषण समेत चारु आनन
अभासते ॥ देखि देखि पाहरू चकित भये आपुस में
अद्भुत जान सब ऐसो कहै आसते । टांपि कै मयूषन
ते कंचन लता पै चढ्यो चंदचल्यो जात देखो उतरि
अकास ते ३९ ॥

क० ॥ चारु चांदनी में साजि सोने के सिंहासनपै
बैठी पैन्हि परम पोशाक जरतारी की । जटित जवाहि-
रात जगर मगरसाजे जेवर तमाम इतमाम अधिकारी
की ॥ पान खाति पंखाहोत हँसति सखीन संग दूर खरी
गौरिपास पांति प्रतिहारीकी।चाहोचलि चाहौ चोरीचोरा
चौंधिरैहौ चाहि ठाकुरठसक ठकुराइन हमारीकी ४० ॥

क० ॥ चंद प्रतिविम्ब ऐसो जानि परै जाके आगे
नाथ छवि आनन अनूप ब्रह्मरानी के । लोचन कुरंग
जलजात मीनखंजन से रंजन रसीले मद भंजन भवानी
के ॥ और सब अंग की निकाई में कहांलोकहीं पांयन

की जोरको न राधा ठकुरानी के । प्यारीके चलत ऐसे
लसतधरामें जैसे पांवडेपरतहै बनातसुलतानीके ४१ ॥

क० ॥ चरण धरै न भूमि बिहरैजहांहीं तहांफूलेफूले
फूलन बिछाई परयंकहै । भारके डरनि सुकुमारिचारु
अंगनमें अंगनालगावै रागकेशरिको पंकहै ॥ कविमति
राम लखि बातायनबीच मुख आतपमलिन होत बदन
मयंकहै । कैसे सुकुमारि वह बाहिर बिजन आवै बिजन
बयार लागे लचकतलंकहै ४२ ॥

क० ॥ चोपकरि बिरची बिरंचि रूपराशिकैसी कोक
की कलासी चारुचातुरी की सालासी । चंद्रमासी चां-
दनीसी चामीकर चपलासी पीतमसुधासी होतिसौतिन
को हालासी ॥ कहामंजुघोष उरबशी औ सुकेसी दत्त
जाकी छवि आगे वारियत मैन बालासी । चंपक की
माला हियेलागै बरसिकाला शिशिर दुशालाहोति ग्री-
षममें पालासी ४३ ॥

क० ॥ चंदद्युति वृंदको निचोरिकै बनायोकैधों भानु
छवि छोरियो बिलोकि सगरुपरै । सेवक भनतकोटि
कुंदन तपेको रूपरोचकलै बिरचि बिरंचि अगरोपरै ॥
बीजुरीके सारकै द्वागिनके भाररच्यो राधेके बिचारमें
भूपाक भूगरोपरै । मदनउमंगन ते रंगनके संगप्रति
अंगनतेजाके छविपुंज बगरोपरै ४४ ॥

क० ॥ चारकैसो अंकलंकलचकत कुचभार चारु
छवि घेरदार घांघरो धिरतिहै । सुवरण बेलीसीविराजै
अलबेली बाल खेली हंसचाल गजगिरमें थिरति है ॥
तिलक कपोलन ममारक कह्योनजाय कमल करोरनैन

गेरनिदरति है । आनंद सदनकैकलानिधि बदन ऐसी
लही मदनकैसी दुलही फिरतिहै ४५ ॥

क० ॥ चारुमुख चंदते अमंदकला दीपति है रूप
धा बुंदनके बुंद फुटिकेरहे । रचेगंध गलित मदंध
बंध चंचरीक मंदिरके अंदरचहुंधा जुटिगेरहे ॥ घूंघुट
पटमें लपेटरह्यो जातजाल सौतिनविशाल विषघूंटि
गुंठि के रहे । एकक्षण अक्षन छवीली छविदेखनि को
तलनिमें छोहभरे छैलछुटिकेरहे ४६ ॥

क० ॥ चंदनकी खौर गोरैगात ज्यों भलमलात
सौसरा चमेलीहार राजत गरेगरे । कैधों द्विजराजआ-
ना जलमें हिलोरै लेत कैधों सुरसरी शोभाजात लहरे
गरे ॥ स्वेद जलबुंदके विशेष मुक्ताहलसे योवन के जौ-
री दिखाई है लरेलरे । श्वेत डोरियाकीसारी सोहत
नवेशभारी मानोपौन पानीपर गमत हरेहरे ४७ ॥

क० ॥ चंद सममुख ऐनशोभित विशालनेन भूकुटी
कमानमैन मंजुल बनाईहै । विम्बसे अधरलाल दाड़िम
में दंतजाल बाणीअतिशय रसाल कोकिला लजाईहै ॥
चंपक कनकरंग निंदत मनोज अंग उरज उतंग कर
कंज सुखदाई है । केशरीते कटिखीन विशदनितम्बपीन
परम प्रवीण प्यारी श्याम मन भाई है ४८ ॥

स० ॥ चांदनी में धन श्वेत शृंगारकै वैठी सुगंध ल-
गाय नवीनो । होड़ परीहै दुहून में रूप की देख विरंचि
स्वरूपको कीनो ॥ ताहि समय इक टुक सोवादर द्याय
गयो तन चन्द प्रवीनो । प्यारी की शोभा अमंद निहा-
रि कै चंद लज्यो मनो घूंघट कीनो ४९ ॥

क० ॥ चहचही चहल चहुंघा चारु चंदन की चं-
दक चुनीन चोक चोकन चढी है आव । कहै पदमाकर
फराकत फरश बंद फहर फुहारिन की फरश फबी है
फाव ॥ मोद मदमाती मन मोहन मिलै के काज साज
मणि मंदिर मनोज कैसी महताव । गोल गुल गादी
गुलगिल में गुलाबी गुल गजक गुलाबी गुल गिंदुक
गुले गुलाव ५० ॥

स० ॥ चंदकलाकी कला कलधौत की कै चपला
थिर ह्वै छवि छाजै । कै शशिसूरजकी किरणै इकठौर
ह्वै रूप अनूपम साजै ॥ श्रीपति ज्योतिकी ज्वाल किधौं
अवलोकत ही दुख दीरघभाजै । पावक ज्वालकै दीपक
मालकै लालकी लालकै बाल बिराजै ५१ ॥

स० ॥ चंद सों आनन चांदनी सों पटतारे सी मोती
की माल बिभातिसी । आंखें कुमोदिनी सी हुलसी मणि
दीपनि दीपक दानकी जातिसी ॥ हे रघुनाथ कहाकहिये
पियकी तियपूरन पुण्यबिसातिसी । आई जुन्हाईके दे-
खिवे को बनि पून्यो कि राति में पून्योकी रातिसी ५२ ॥

स० ॥ चिनगी चमकै बिच अञ्चल सो न लता के
मता भटके रहिगे । द्युति दौरै कि दामिनी औरै कोउ
गति चोरैखरे खटके रहिगे ॥ सब अंगलखे विनका क-
हिये गुणसेवकसौ हटके रहिगे । जित जाइपरे तितही के
भये दृग मेरे टके अटके रहिगे ५३ ॥

स० ॥ चमकै दशनावली की निकरै चपि चांदनीहू
मुरभानीरहै । करपांयनकी अरुणाई लखै कमलावली
हू बिलखानीरहै ॥ नरनागरीकी हनुमानकहा सुरनागरी

शोभा सकानीरहै । गति हेरिमराली लजानीरहै । अविपे
रति रानी विकानी रहै ५४ ॥ चंद्र कलंकी कहा करिहै सर कोकिल कीर
कपोतलजाने । विद्रुम हेमकरी अहि केहरि कंजकली
औ अन्नारके दाने ॥ मीन शरासन धूमकीरेख मलक
सरोवर कंवु भुलाने ॥ ऐसी भई नहि है जगमें । नहि
डोयगी नारि कहा कविजाने ५५ ॥

॥ क० ॥ चौथती चकोरे चहुँधारेजानि चंद्रमुखी रही
चंचि डरनि दशन द्युति दम्पाके । लीलिजाते बरही वि-
लोकिवेनी अनिताकी शुही जो न होती तो कुसुम सर
कम्पाके ॥ रामजी सुकवि दिग भौहैं ना धनुष होती कीर
ऐसो छांडते अधरविम्ब भम्पाके । दाखकेसे भौरा भ-
जकत ज्योति योवनके भौर चाटि जाते जो न होती
ग चम्पाके ५६ ॥

क० ॥ चोवासों चुपरिकेश केशरी सुरंग अंग केसरि
खटि अन्हवाई है गुलावसों ॥ अतर तिलौंछि आछे
अस्वर लै पाँछि आँछि छतिया अँगोछि हँसि हँसि रस
गवसों ॥ कटि मृगराज कौसी मुख है मयङ्कमानो तीखे
ग देवगति सीखी मृगशावसों । पैन्हे पीरो चीर चारु
पैकी पर ठाढ़ी भई चांदनी सी प्यारी पै उज्यारी
हतावसों ५७ ॥

क० ॥ चहचही चुभकै चुभी है चौक चुम्बनकी लह
ही लाव्रीलटै लपटी सुलंक परन कहे पदमाकर म-
नि मरगजी मंजु मसकी सु आंगी हैं उरोजनके अंक
॥ सोई सरसार यों सुगन्ध न समोई सेज शीतल

सुलाने कोने बदन मयंक पर । किन्नरी नरीहै कै परी है
छविदार परी टूटि सी परी है कै परी है परयंक पर ॥ ५८ ॥

क० ॥ चैत चांदनी के कैधों चन्द अवलोकनते क्षीर
निधि क्षीर के सपूर पूर उमगे । कहै चिन्तामणि मन
आनंद मगन हवै कै विहरति है सति सु परम प्रेम सो
पगे ॥ अधखुली अखियां सुरति सुख रसबसु मानों और
अधखुले कमलन में खगे । प्यारीके सकल तन श्रम जल
बुन्द सोहै कनकलता में मुकताफल मजो लगे ॥ ५९ ॥

क० ॥ चुनी से चरन चांदनी में चिलकत चकचो-
धत चकोर चिनगी के चाप दूनरी । चामीकरहूते चाप्र
चौगुनी चिमक चोखी चम्पकवरन चोली । चुभी चञ्चु
भूनरी ॥ चन्द्र मुख चन्द्रिका ले चकई चपत चित
चोपत प्रवीन बेणी चैत चन्द सूनरी । चुई सी परति
चपला सी चै चपल चख चञ्चल चितौन चटकीली
चारु चुनरी ॥ ६० ॥

क० ॥ चामी कर जूह चम्प चांदी को चलन कहा
चिन्तामणि चेरिन के चाकरी लहत है चिचिलक चटक
चहूँ घायन चमत्कार चार मुख चक्रपानि चकित रहत
है ॥ चांपन चरन को चितुर युग चेटुआ है चैन सो
प्रवीन बेनी चरित कहत है ॥ चारु अति चण्डिका
को चन्द्रमुख चन्द्रमौलि चखन चकोर किये चोपसों
चहत है ॥ ६१ ॥

क० ॥ चन्द मई चम्पक जराव जरकस मई आवित
ही गैल वाके कमल मई भई । कालिदास मोद मद
आनंद विनोद मई लाल रंग मई भई वसुधा सुधा

मई ॥ ऐसी बनि बानिक सो मदन छकाई रसिकाई
की निकाई लखि लगन लगी नई । नेह को हितै करि
गोपालै मोह दै करि सखिन दुचितै करि चितै करि
चली गई ६२ ॥

क० ॥ चांदनी में चांदे लगयो चांदनी चंदोवा चारु
चांदनी बिछोरन अधिक छवि छाई है । बड़े बड़े मो-
तिन की लरै रुरै चार्यों और बीच बीच जरी कोर
सौहत सुहाई है ॥ गोरे गात श्वेत सारी हीरन किनारी
घनी इन्दु से बदन राधे इन्दिस लजाई है । भालदिये
चन्दन सुनेह मन्द मन्दन सो महक सुगन्धन सो सेज
पर आई है ६३ ॥

क० ॥ चामीकर चौकी पर चम्पक वरण हठी अंग
की चमकें चारु चञ्चलै चलावती । तारा सी तरंगता
सी अतर लगायै रति मुकुर दिखावै विजे बीजते ड-
लावती । कमलाकरन जोरै विमला सु तन्त्र न तौरै
नवलालय मरजी को अरजी सुनावती । सुरनकी रानी
सुर पालन की रानी दिगपालन की रानी द्वार मुजरा
न पावती ६४ ॥

क० ॥ चलत मरालनकी महिमा घटावै वैनवालत
अचैनकरै प्रभुता पिकनकी । मुसक्यात सुधाको सोहाग
सो सकेलिलेति चरनसो जीते सुंदराई सुवरनकी ॥ भनत
कवींद्र वाकी निरखि सुधरताई पाई है दृगन बिड़ाई डीठि
पनकी । मन ते न भूलति भुलावै मनहीको वह चह-
चहे चखन की लहलहे तत की ६५ ॥

क० ॥ चंद्र सो आनन कंजन सो तनहो लखिके वित

मोल बिकानी । औ अरबिंद सी आंखिन को हठी दे-
 खत मेरी ये आंखि सिरानी ॥ राजत हे मनमोहनके
 संग वारीमें कोटि रमारतिबानी । जीवन मूल सबे ब्रज
 की ठकुरानी हमारी है राधिका रानी ६६ ॥
 क० ॥ छूटे छूए छवालौ छबीले घुंघुवारे बार ख-
 उजन से लोचन बदन सुधा धरसो । पीन कुचक्षीण
 लङ्क निविड़ नितम्ब नाभी त्रिवली जघन महा मोहनी
 के घर सो ॥ पङ्कज से पानि पांय बेली सी भुजा है
 जपि द्विज जू गोरई को घुमाडि घन बरसो । चाइन
 सौ पाइन के पासही रहोगे जहां राधा ठकुराइन को
 रूप रंग दरसो ६७ ॥

क० ॥ छहरे छबीली छटाछूटि क्षिति मण्डलमें उमग
 उजेरी महा आजके जवकसी । कविपजनेशकज मंजुल
 मुखीके गात उपमा दिखात कलकुदन तवकसी ॥ फैली
 दीप दीपनलौ दीपति दिपत जाकी दीपमालिका की
 रही दीपति दवकसी । रहति न ताबदेखे मुखमहताब
 जत्र निकसी शिताब महताबके भभकसी ६८ ॥

क० ॥ क्षीरकीसी लहरि छहरगई क्षिति मांहजामि-
 निकी ज्योति भामिनीको मानु एंठो है । ठौरठौर छूटत
 फुहारे मानो मोतिनके देववनु पाकोमनुकाको न अमैठो
 है ॥ सुधीको सरोवर सो अम्बर उदितशशि मुदित
 मराल मानो पैखिको पैठो है । बेलके बिसल फूलफूलत
 समूलमनो गगनते उड़ि उड़गन जनबैठो है ६९ ॥

क० ॥ छूटत लपट लपटत फिरि छूटछूट थकत न
 दोऊ विहरत बड़ी बेरके । लंकलचकत अंकभरत नि-

रंग पर्यंकपरराखे मुक्तानकर ढेरके ॥ तासमय कहत
 उंभु गौरीके गरते टूट छूट चलोसुरत करत फेरफेरके ॥
 हुचवीचिअटको विराजतहै हारमानो धसीगंगधार फेर
 शेखर सुमेरके ७० ॥

क० ॥ जगर मगर जरवाफिये बसनसाजे जेवरज-
 डाऊ भक्कभलक प्रमानकी । अंगअंग रंगरंग अमल
 तरंग मई अमित उमंगहैन ऐसीओपआनकी ॥ ठाकुर
 नेहारी बरबनक विनोद वारीभारी भीरसोहै संगसुंदरी
 तैयानकी । भलीभांति करति प्रकाशित गली है यह
 प्रावति चलीहै सो ललीहै वृषभानकी ७१ ॥

क० ॥ योवन उज्यारी ध्यारी वैठी रंगरावटी में मुख
 जी मरीची यों दरीचीवीच भलकै । भूधर सुकविवांकी
 गौहै मनमोहै खरी खजनसी आखैवनी समनसीपलकै ॥
 शीशफूलवैनी वेदीवारी और वंदनकी चंदनके चरचा
 जी चारुछविछलकै । कोरवारी चनरि चकोरवारी चित
 यनि मोरवारी बेसरि मरोरवारी अलकै ७२ ॥

क० ॥ यमुनाके आगम न मारगमें मारुतन भौरनि
 जी भीरनि पटसे लखिपायेहै । संतनसुकवि सुखखानि
 यद्विनितेरे रूपके तरंगनि अनंग दरशायेहै ॥ वाहिर
 लडन कहैतोसों सो अयानी कौन लेहै वदनामी धैर धर
 धर छायैहै । पटकी लपट लपटति तादिना ते आज
 मानो उनगलिन गुलाव छिरकायेहै ७३ ॥

क० ॥ जाके अवदात कलकंदन से गान्त आगे नेक
 इन दीपतिहै दीपति चमेलीकी । मुखसुखमाकी कहू
 उपमान पाऊ जासुपायनकी लालीकंज लालिमा द्य-

लीकी ॥ दीपति मसालसीहै बालहनुमान जासों कै रही
विशाल शोभा औरही हवेलीकी । संगमें सहेली सबे
सोहती नवेली तऊ राजति अकेली छिटाछूटी अल-
वेली की ७४ ॥

क० जगमगे योवन जराऊ तरवन कान ओंठन अ-
नूठ रस हांसि उमड़े परै । गोरेमुख सेत आवै उससे
उरोज बिंद बदन लिलार बड़ेबार घुमड़ेपरै ॥ गोरेमुख
इवेतसारी कंचन किनारीदार देवमणि भुमका भुमकि
भुमड़े परै । बड़े बड़े नैन कजरारे बड़े मोती नथ ठोढीमें
ठहरि होड़ा होड़ी हुमड़े परै ७५ ॥

क० ॥ ज्योतिसी जगीरहे सो सौतऊजगीरहे सु मेरे
जानपाई रूप भूपति जगीरहे । नीलकण्ठ निरखिलजा-
नी पन्नगी सी चार रहत नगीसी रहै समता नगी रहै ॥
ऐसी कछु हेरिहरि लेत हरिनीकी छवि हरिनी की छवि
जाहि देखत ठगीरहे । लालसै रिभूत हैरी लालसै कचा-
र फेरि लालनअधर लखिलालसै लगीरहे ७६ ॥

स० ॥ जिनहीं बरुपीनसों बांध्यो हियो तिनहीं द्या
हाथ सिचावत है । विषबोये कटाक्षन सों हंसिके जो सु-
जात सुधाहू पियावत है ॥ अनबोलेरह जो अनोखे अ-
जौ रसमें अबरोष दियावत है । घनआनंद चूका न दांड
कहू फिरि मारत चाव दियावत है ७७ ॥

स० ॥ जोहे जहां मग नंदकुमार तहां चली चंदमुखी
सुकुमारि है । मोतिनहूको कियोगहनो मनो फूलि रही शु-
चि कुंदकी डारिहै ॥ भीतरही जो लखी सो लखी फिरि

बाहिर जाहिर होत नदारिहै । जोन्हसी जोन्हगई मिलि
यो मिलिजाति ज्यों दूध में दूध की धारि है ७८ ॥

सर्व ॥ जाहिरै जागतिसी यमुना जबबूड़े वहे उमहे
वह बेनी । त्यों पदमाकर हीर के हारन गंग तरंगनकी
सुखदेनी ॥ पायन के रंगसों रंगिजाति सी भांतिही
भांति सरस्वती सेनी । परै जहां ई जहां वह बाल तहां
तहां ताल में होति त्रिवेनी ७९ ॥

क० ॥ जो पै मुख प्यारी को बतौं चारु चंद सो
में तोपैरहै रातही में ज्योतिनकी जोहिनी । याको तो दि-
वाकर के तेजहू ते तेज तेज जोपै कहूं भानु तो न रेनहोय
सोहिनी ॥ गवाल कवि याते मुख मुख माहिं मुख हैजू
सोमुख सोई अति आनंदकी बोहिनी । आंखते न
देखी सुनी कानते न ऐसी ज्योति जैसी वृषभानु की
दुलारी मिन मोहिनी ८० ॥
क० ॥ जो नित के जूहनि दुरासद दुरूहनि प्रकाश
के समूहनि उजासनि के आकरनि । फाटेक अटूटनि
महारजत कूटनि मुकत मनि जूटनि समेटि रतना क-
रनि ॥ छूटैरही छोह जगलूटि रही द्युति देव कमला
करनि फूटि दीपति दिवाकरनि । नभ सुधासिंधु गोद पूरन
प्रमोद शशि सामुद वितोद चहूं कौद कुमुदा करनि ८१ ॥
क० ॥ जानैभेद कविताहि गौरव गहे रहत परम
प्रसन्न मुखहास छवि छवै रह्यो । द्विज बलदेव कहें क-
अन लतासी चारुचन्द्र ज्यों उदित भरि रूपरस चवै
रह्यो ॥ आलम कळुक अंगिराय भेलिसी करत बलि
तब सीरन बीच वर बवै रह्यो । आईहै तरुनताई याहि

ते उचोहैं कुच सुवुधि सुगन्धको प्रकाश अंग कैरह्यो ८२
 क० ॥ यमुनी अन्हायवे को जाति जवा प्रातिप्यारी
 दौरत चकोर मोर और भीर हारसी कोककी कलासी
 चंपलासी चारु चन्द्रमासी चंपक लतासी मैत कासी
 मैत सालसी ॥ गोकुल की गवैडे गौरी ग्वालनि गुमान
 भरी महगहे गात वहा लोचन मसालसी ॥ सौतिनी के
 सालसी विशाल लाल भालसी प्रवाल रवि बालसी
 कपूर के मसालसी ८३ ॥ जिह्वे जिह्वे पिहि ॥ ०७
 क० ॥ जाही जुही मलिको चमेली मन मोदिनी की
 कोसल कुमोदिनी की उपमा खराब की । कहे पदमाकर
 त्यो तारन विचारनको विगर गुनाह अजगैबी गैर आव
 की ॥ चूरकरी चोखी चांदनीकी छवि छलकत पलकमें
 लीनी छीन आवसहतांबकी । पापर कहत पीया कापर परै
 गी आज गरद गुलाबकी अवाई आफताबकी ८४ ॥
 स० ॥ जिलकी चूनरी चीकनो गात चकोरथके मुख
 चंदके धोखे ॥ लांबीलटे लटकै कटिखीन प्रयोधर द्वे
 मनमोहन पोखे ॥ बंधे मुबारकके उरमें शरणको परै नकटाक्ष
 के ओखे ॥ वाकीतरखी कजाकी कछु जबवाकी चितौनते
 भांकी भरोखे ८५ ॥ ननीकाकी तीरफि डीर निरक
 ॥ क० ॥ लगत समीर लंकलहकै समूल अंग फूलसे
 दुकूलनि सुगंध विथर्यो परै । चंदसो बदन मंदहासी
 सुधाबिंदु अरविदन मुदित मकरंदनी मुखोपरै ॥ ललित
 लिलार अम भलक अलक भार सगमें धरतपग जा
 वके घुस्योपरै । दिवमणि नूपुर पदुम पद दूपर कै भूपर
 अनूपरगा रूपनि चुर्योपरै ८६ ॥ क लकि जगति जग

क० ॥ लहलही लहरै लुनाई की उदित अंग उचके
कुचन कैसी कंचुकी यों गचकी । मंदपग धरति मरु
करि गयंद गति चंद्रमुखी चांदनी चकित चाह सच
की ॥ कैसे घनश्याम वह वाम वनधाम आवै घामके ल-
गेते कोमलता जाति पचकी । अति सुकुमार सिसकति
भार हारनके वारनके भार कैयो वार लंक लचकी ८७ ॥

क० ॥ ललित कलाई कर कोमल कमल अति मंद
मंद गति मनमोहन सो लटकै । नागर निपट नटनागरी
कियेरी बश हेरि हेरि मुख फेरि फेरि कर चटकै ॥ भोरे
भुज मूलते छुटत अचरारी जव विद्वश विहारी हारी
हारी करि पटकै । छविसों छलकि जात गोरे अंग उफ-
नात रूप की लपट भीने पट में न अटकै ८८ ॥

स० ॥ ललना मुख इंदु ते दूनो लसै अरविंद वसै
चखवारसीलै । मुसकानिमनोहर ज्यों न महाकवि मिश्र
जुवान सुधारसीलै । तन ओपकरै द्युति चम्पक लोप
सची सकुचै प्रति पारसीलै । कहि आवै न रूप सिपा-
रसी यातें दिखावै लला कर आरसी लै ८९ ॥

स० ॥ लखिकै दृग मीन दुरे जलमें मन में अरविंद
सकाने रहैं । बढि बेनी भुवंगम देखि चपे कटि केहरि
चाहि लजानेरहैं ॥ उकसोहैं उरोजन देखि विजे मन दे-
वन के ललचाने रहैं । मुखचंद की देखि प्रभा दिन में
चित में चकवा चकवाने रहैं ९० ॥

क० ॥ जातरूप तखतपै बैठीरूपराशिराधे अंगनकी
प्रभा प्रभाकर को लजावती । चीर चारु हीर हार हिये
पहिरायकर भूषण बनाय बालसाजन सजावती ॥ अतर

गुलाब लै सुगंधन लगावैसबै चंदन बढाय भाल भौर-
न भगावती । जोरि जोरि पाणि देवतानहूँकी रानी हठी
कोटि कोटि कोर निशि भुकि के बजावती ६१ ॥

क० ॥ जरीदारकञ्चुकी के ऊपर भलकि आई ल-
लित ललाई मानों चूनिन प्रभाकरी । अंग अनुकूले
फूले फूलसे बिलोकियत लपटि दुकूल भुजमूल ते सुभा-
करी ॥ ऊँचे ऊँचे निपट निवास चढि चंद्रमुखी भांकत
भरोखे चोखे वदनसुधाकरी । अगम जिरह पैधि गिरह
उजेरो कर बिरहा नबेली आजआपही बिदाकरी ६२ ॥

क० ॥ सुथरे सवारे बार सेंदुर सों मांग भरे शीश
फूल ज्योति सब ज्योतिन ते आगरी । सारी जरतारी की
पै किरिण किनारी भाल रोरी आड़ बिंदिया जटितरही
लागरी । बड़े नैन छोटीनथ गोरे मुख पान रच्यो मेहँदी
चुवत दयानिधि अनुरागरी । गरबगहेली छविपाँयन
तेपेलादेखु हेलीयानबेली अलबेलीको सोहागरी ६३ ॥

क० ॥ सारी जरतारी शीश भारी छवि वारी प्यारी
न्यारी ज्योति होति कछु रतिसी छपाय जात । सुधि बि-
सराय ललचाय मुसक्याय नाथ नेह रोपिवे को हिये
भूमिसी न पाय जात ॥ हेमकी सी बेली अलबेली जो
धरत डग कांपिजात लंकउर शंक न कंपाय जात । दबि
जात दामिनि दबकि जात चंद शोभा तपि जात वाम
काम अंगनि समाय जात ६४ ॥

क० ॥ सोने सों सुरंग सब वैसई लसत अंग जग
मग्घो योवन जवाहिर सों संगतास । रूपतरु कंदुक
से सोहै कुच चंद्रमा सों आनन अमंद द्युति मंद मंद

तैसो हास ॥ शोभा की निकाई देव काहू की निकाई हू
ते नीके भाग भूषण भंवर भरे आस पास । चौगुनी
चटक तन चीर के चटक हूते सौगुनी सुगंध ते शरीर
की सहज वास ६५ ॥

क० ॥ सारी घन घोर वारी जरजरी कोर वारी भ्रया
भ्रल भोर वारी जेव वारी तनको । वेनीछवि छोरवारी
धूम धार धोरवारी छूटेलाल डोरवारी लंकलचकनको ॥
आँखें चार कोर वारी कान वोर दोर वारी श्रीपति करोर
वारी मनि मृगगनको । हायवह भोरवारी भृकुटी मरोर
वारी मोर वारी बेसर मरोर डारे मन को ६६ ॥

क० ॥ सोहे श्वेत सारी ढिग कंचन किनारी भारी
भीर मैं निहारी जाति संग सखियान के । सदा नंद
सुंदरी न कोऊ यह रूप जाके आननकी आभासी न
आभा शशि भान के ॥ दृगन की वोर लागी काननकी
छोर जैसी भृकुटी मरोर जोर जोरे धनुवान के । धीरी
चाल वारी मुख वीरी मालवारी वह पीरी शाल वारी
रहै नीरी अखियान के ६७ ॥

क० ॥ सोहै तोहिं प्यारी फुलवारी सारी कैसी श्वेत
अंचराते राते गात कंचन हरतिहै । नेकही निहारी
इन नैनन ते चारि फेरि न्याय नंदलाखनके मन ठह-
रतिहै ॥ कमल कोमल कर करिहां है केहरी सी कदली
से जंघ द्युति दीपसी बरतिहै । तेरे मुख देखे तारा पति
उत दुख्यो जात फिरिपरीचांदनी चवावसी करतिहै ६८ ॥

क० ॥ सोलह कलाको इन्दु माणिकमुखारविंद सो-
लह शृंगार किये सोलह बरस की । अभरण बाहर

कनकवानी बारह किवार हो चरण चुभे चोप कंज रस
की ॥ आठो दंत चौकन सों आठोअंग हीराहारे आ-
ठहु बरंगना सो बिधना सरस की । चारखग चारमृग
चारफलकीसी छबि चारभुजआरतनिकाईहै दरशकी ६६

क० ॥ श्वेतसारी सोहत उज्यारी मुखचन्द कैसी
महलन मंद मुसक्यान को भहमही । अंगिया के ऊ-
पर कै उरभी उरोजन में उर मतिराम माल मालती
डहडही ॥ मांजे मंजु मुकुरसे मंजुल कपोल गोल गोरीकी
गुराई गोरे गातन गहगही । फूलन की सेजबैठी दीपत
फैलाय लायबेलके फुलेलफूली बेलिसीलहलही १०० ॥

क० ॥ सजि ब्रजबाल नंदलाल के मिलैके लिये ल-
गनलगालगमें लमकिलमकिउठै । कहैपदमाकरचिराग
ऐसी चांदनीसी चारोंओर चौकनमें चमकिचमकि उठै ॥
भुकि भुकि भूमि भूमि भिल भिल भेलि भेलि करि
हरी भूपनमें भमकिभमकिउठै । दरदर देखो दरिवानन
में दौरिदौरि दुरिदुरि दामिनीसी दमकिदमकिउठै १०१ ॥

क० ॥ सोसनी दुकूलनि दुरायो रूप रोशनी कै बूटे-
दार घांघरे की घूमन घुमाइ कै । कहै पदमाकर त्यों
उन्नत उरोजन पै तंग अंगिया है तनी तनिन तनाइ कै ॥
छज्जन की छांह छकि छैल के मिलैके हेत छाजत छपा
में यों छबीली छबि छाइकै । कै रही खरीहै छरी फूलकी
छरीसी छबि सांकरीगलीमें फूल कांकरी बिछाइकै १०२ ॥

क० ॥ सोवैं लोग घरके बगर के कियार खले बीती
निजजान युग यामयुग यामिनी । चुपचाप चोरा चोरी
चौकत चकित चित चली हित पासचित चाह भरी

भामिनी ॥ पैठत सकेत के निकेत शम्भु शोभादेत ऐसी
वन वीथिन विराजिरही कामिनी । चामीकर चोर जानों
चंपलता भौर जानों चांदनी चकोर जानों मोर जानों
दामिनी १०३ ॥

क० ॥ सारी जरतारी की भलक भलकत तैसी के-
सरि को अंगराग कीन्हों सब तनमें । तीक्ष्ण तरणि की
किरणि हूते दूनीज्योति जगत जवाहिर जटित आभरन
में ॥ कवि मतिराम आभा अंगन अंगार कैसी धूमकैसी
धार छवि छाजत कचन में । ग्रीषम दुपहरी में पिय को
मिलनजात जानीजाति नारिनादवांरि जातवनमें १०४ ॥

क० ॥ सजि ब्रजचन्द पै चली है मुख चंद चारु
चंद चांदनी को मुख चंद सो करत जात । कहै पदमा-
कर त्यों सहज सुगंधही के पुंज वन कुंजन में कंज से
धरतजात ॥ धरतजहांई जहां पग है सुप्यारी तहां मजु-
ल मजीठहीके माठसे ढरत जात । हारनते हेरोसेतसारी
कीकिनारिनते वारनते मुक्ता हजारन भरतजात १०५ ॥

क० ॥ सूभक्त न गात वीति आई अधरात अरुसो-
येसब जान गुरुजन जेवगरके । छिपिके छवीली अभि-
सार के केवांर खोले खुलिगे सुगंधचारु चन्दन अंगर
के ॥ देवकहै भौर गुंजआये कुंज कुंजनते पूंछि पूंछि पाछे
परेपाहरूडगरके । देवताकि दामिनी मसाल कैधों ज्यो-
ति ज्वाल भगरे परत जागे सिगरे नगरके १०६ ॥

क० ॥ सौरभ सकेलि मेलि केलिन्ह की वेलि कीन्ही
शोभा की सहेली सो अकेली करतारकी । जिनही ढरक
काहू तितही ढरक जाय सांचेसे सुढारी सब अंगनसुढा-

रकी ॥ तपतहरत कबि आलम परस मणि अतिहीरसि-
क रीति जानै रस चारकी । शशिहीको सार सरसीर हू
कोरस सारे सोनेको स्वरूपलै सँभारी घनसारकी १०७ ॥

स० ॥ सोने से अंग सरोज मुखी चली श्यामहू पै
शाशि केसे टके । पगनूपुर दूपुर खोलि धरे सकुचै अति
जेहरि के खटके । गुरुलोगन और छटीसी कटी निचली
रही छुद्रघटी अटके । बिनही अटके अटकीसी चलै अ-
टकी सी फिरै लटके लटके १०८ ॥

स० ॥ सांवरी सारी सखी संग सांवरी सांवरी धारे
बिभूषणगवै कै । त्यां पदमाकर सांवरोई अंगरागन आं-
गी रची कुच द्वैकै ॥ सांवरी रैनमें यों घहरै घनघोरघटा
ओ छटाक्षित छ्वैकै । सांवरीकामरी की दैषुही बलिसां-
वरेपै चली सांवरी द्वैकै १०९ ॥

स० ॥ सुन्दर जोवन रूप अनूप महागुन ज्ञानकी
राशि मची तूं । शील भरी कुललोक उजागरि नागरि
पूरन प्रेम पची तूं ॥ भाग को भौन सुहाग सो भूषित
भूमिको भूषन सांची सची तूं । आठहू अंग तरंगन रंग
सबै रुचि सञ्चि विरञ्चि रची तूं ११० ॥

स० ॥ सुख सो नारिन नारिनजान अनारिनसो पहि-
रावतिपैरन । मालिनमाल विचारतही जकी आपलगी
सरदार निबेरन ॥ चित्रिनचित्र दिखावतही चितहारि
रही न कहीकर फेरन । नाइन पाइन जावक देत लगी
ठकुराइनको मुखहेरन १११ ॥

क० ॥ सुखमाके सिंधुको सिंगारके सुमन्दिरते मथि
के सुरूप सुधासुखसों निकारे हैं । करिउपचारतासों स्व-

च्छता उतारे तामें सौरभ सुहाग श्रीसुहास रसडारे हैं ॥
कन्निरसरंगताको सतजो निथारे तासों राधिका वदनवेस
विधिने सँवारे हैं । वदन सँवारिकै जो हाथ धोवडारे सोई
जलभयो चंदकरभारे भयेतारे हैं ११२ ॥

क० ॥ सहज विलोकि फैसिजात मनकैसी होइ मंद
मुसुकानि वानिफूलसे भरपेरें । द्विजवलदेव रंगसोनेसे
सहसगुनो जीवनको लाभलहि हरपि हरेपेरें ॥ शुचि
सुकुमार प्रभामारसे सरसभई राजति सुगंध परिमलते
तरेपेरें । शशिसम आननको जानन प्रमानन पै सानन
विलोकि मृगकानन डरेपेरें ११३ ॥

क० ॥ सारी जरतारी लगी मणिन किनारी द्युति
दामिनी कहारीगात जातरूप कंद है । हार हिये भूपण
जड़ाऊ भाल बेंदी लाल अधरपर बाल बिम्ब लसै जीव
बंद है ॥ उमाकी रमाकी सुखमाकी देवताकी हठी रंभा
इंदुभासी उपमासी गतिमंदहै तारापतिकैसो मुख लहत
गोविंदवारी तखतपै बैठीराधे वखत बलन्दहै ११४ ॥

क० ॥ सांभहोगईथी वीर भौन वृषभानजीके अति
सुकुमार एकरूपकैसी रासीहै । दाड़िम दशन बिम्ब अ-
धर प्रवालवारी सुधासी भरतचारु मंदमंद हासी है ॥
देखीहै गोपाल ग्वालआज गरवीलीहठी राधेकहिटेरे
जानी रम्भारमा दासीहै । हिमकरकलासी चमकचप-
लासीहैसोशंभुअवलासीखासीदीपमालिकासीहै ११५ ॥

क० ॥ सारी जरतारी लगी मणिन किनारी त्योंही
दामिनि दवायलेत दमक रदनकी । हीरनकेहार हठी
गजरा गोहावदार अंगअंग फैलिरही दीपक मदनकी ।

हेमकी छरीसी मान मुखन जरावजरी सबगुण भरीपरी
छबिके कदनकी । चांदनी बिछौना भाल चन्दन लगावै
वाल चांदनीमें बैठीलाल चंदसे बदनकी ११६ ॥

क० ॥ शशिकैसो बदन जाको कनक ऐसरूप कुंद
की कली मानों डारुसे तोरीहै । चंद्रमाकी ऐसी उजि-
यारी केसरि कुसुंभ वारी पहिरे प्रेमसारी दिननहूंकीथो-
रीहै ॥ कहिबेकौनारी वृषभानकी दुलारी श्रीनंदकी सँ-
वारी रुचिरुचिरंगमेंबोरीहै । येहोयशोदारानीकैसेकैस-
नेह होत तेरोकृष्णकारोहमारी राधिकाजीगोरीहै ११७ ॥

क० ॥ भूषण जरायन के पांयन अनोटओट कंचन
अनूपरूप सांचेहीकी ढारीसी । घुंघुरू पायलपर जेहर
बिराजै और छजै धुद्रघंटिका निहारि मतिहारीसी ॥
कंठकंठ मालमाथे बेदीलाल लालकीहै भालकी दिनेश
द्युति देखेंलागै तारीसी । मनिमयवारी नखशिख उजि-
यारी निशिकारीनीलसारी जगजगतदिवारीसी ११८ ॥

क० ॥ भोजनकै भामिनि भवन बीचठाढीभईचुनीसे
चरण चारुचौकी रंगामेजपर । पन्ननके पानदान पानन
की बीरी भरनीरी करिदीन्ही लीन्ही मनकी मजेजपर ॥
फूलनके हारभरे भौरनके भारदेव आली पहिराये ते
सुहाये तनतेजपर । सौ सौ शशिकैसो आस पास ते उ-
दोसो करिआइबैठीशीशाके महलसोंधी सेजपर ११९ ॥

स० ॥ भाषतहै मुखबैन सखीनसों लाखहियेअभि-
लाषन जोहै । कोमल हासनि नैन बिलासनि अंग सु-
वासनिकै मनमोहै ॥ मूरतिवंत किधों तुलसी तुलसी

वनमें रति मूरतिको है । कुंजविराजत गोपवधू कमला
जनुकुंज कुटीमहँ सोहै १२० ॥

क० ॥ भाल में विशेषवास अधर बुभावै प्यास
लोयनको कोये शाल ग्राम के प्रकाश हैं । भृकुटी पिना
क नाक मघवा निवास पुर पांच जन्य ग्रीवा परि जात
के सुवास है । दिवाकर कहे कान करन प्रयाग तीर्थ वेनी
शीशशेषदात हीराके उजासहै । येतेद्रव्यदेवमिलेवनिता
मिलत अंक ताके परि रम्भनमें कौनपरिहास है १२१ ॥

स० ॥ भौनते गौनके भानुलली कढि देखन आई
सबै ब्रज नारै । पीरो दुकूल श्रृंगार सजै मनो फूलि रही
वन चम्पक डारै ॥ पांयनतें अंगुरी नखकै हठी लालीकी
लीकै कढी असरारै । मैलीभई उपमासिगरी मनो पीली
महीमें महाउर धारै १२२ ॥

क० ॥ मौलसिरी रासतें न मालती हुलास तें गुला
व बरदासतें न मानखसखासतें । बेला के विलासतें जुही
के परगासतें निवारि हू कीआसतें न सेवती उजासतें ॥
चंपक बिकासतें न केवरे निकासतें नसेवक प्रकाशतेंमल्लै
के उजुवासतें । लाडिली के हास तें सो अंग की सुवास
तें सुकै रह्यो सुवासित अवास आस पास तें १२३ ॥

क० ॥ मन्द मुसक्यानमें अनन्द छवि छलकत छिन
छिनहोत छबिछीन छपा करकी । लाल कवि भूषन बसन
को बनाव दिपै दूनी द्युति देहकी न कहूँपटतरकी ॥ तैसी
श्याम सारी में लसत ओप भारी देखि हाइ करि हारी
हिये प्यारीजलधरकी । भौहैं कजरारीदृग अंजन सुधारी
कहौ कापै असवारी आजभई पंचशर की १२४ ॥

क० ॥ मंद मंद चली नंद नंद पै अनन्द भरी उमंगि
अनंद शम्भु मंद मुसकान की । बोलत अलीसों विहँस-
त ललना के लटकन की लुरन औ मुरन अधरानकी ॥
फहरात छोर थहरात लहँगेकी छवि गूजरी जराइकीबो
जावक जपानकी । पगन की लाली पग नखनउजाली
आगेजालीसी परतिजात आली मुक्तानकी १२५ ॥

क० ॥ मृगनकी मीननकीचंचलाई चखनमें मोतिन
कीहरिनकी ज्योतिहै रदनमें । आँठनमें आईहै मिठाई
सब सिमिटिके दाखमें न ऊखमें न स्वाद सरदनमें ॥
महा कवि बालमके खुलेहै विशाल भाल रातोदिन राज-
ति मसालसी सदनमें । विधना गुलाबकैसो अरक उतार
मानो चन्द्रकी निकाईराखी प्यारीके बदन में १२६ ॥

क० ॥ मोतिनकी मालतोरि चीर सब चीर डाख्यो फेर
नहींजैयों आलीहुख बिकरारै है । देवकी नंदन कहै धोखे
नाग छौनन के अलकै प्रसून तेऊनोच निरवारै है ॥ जान
मुख चन्द्रकला चोचदीनी अधरन तीनों ये निकुंजन में
एकैतार तारे है । ठौर ठौर डोलत मराल मतवारै तैसे
मोर मतवारै लो चकोर मतवारै है १२७ ॥

स० ॥ मद मैनसो यों अलसानी लसै जनुजागी भले
भरि यामिनी है । मृदुबैनसुने हनुमान कहै कहा कोकिल
मंजु कलामिनी है ॥ चकचौंध सी लागै लखे अँखियां
तव कैसे कहों रति कामिनी है । परयंक पै सो है सोहाग
भरी यों मनो थिर कैरही दामिनी है १२८ ॥

स० ॥ मतिमंद यों जाकी मजाको लखै हँसीहोत ग-
यन्दके चालकीहै । मुखहेरिकै चन्द्र लजोईरहै रुचिके

कहै कञ्ज कमालकीहै ॥ हनुमान नखावलीपै तियके अ-
वली परैफीकी प्रवालकी है । दवि दामिनी जात प्रभा
निरखे कितनी छवि मंजु मसालकी है १२६ ॥

क० ॥ मदन तुकासी किधों राधे कुन्दकासी मनोकञ्ज
कलिकासी कुचजोरी हविकासी है । गांसीभरी हांसीमुख
भासी मोहफांसीमद यौवन उजासी नेहदीयाकीसिखासी
हैजाकीरति दासीरसरासीहै रमासीकौनतिलोत्तमाऐसी
रूप सदन विकासी है । कामकी कलासी चपलासी कवि
नाथकिधों चम्पकलतासी चारुचंद्रिकाप्रकासीहै १३० ॥

क० ॥ मांग सिंदुरारी तन तरुण अरुण ज्योति बेंदी
रविवन्यो छविपुञ्ज उधरतु है । सघन जघन कुच सकुच
दुब्रीचदव्यो उचकि उचकि लङ्क लचक्यो परतु है ॥ यो-
वन वनक बनेतन में तनक देव भूषण कनकनणिआभा
उभरतु है । बेसरिको मोती सुध्राविंदु सो चुवत मुखइन्दु
सो उवतु बूड़ि बूड़ि उछरतु है १३१ ॥

क० ॥ मृदु मखतूल तूल कमल गुलाबफूल मखमल
सेजपै सन्हारे पाय धरती । कच कुचभारन सों दर च-
लहारो वेग धारत में कज्जल महावर को डरती ॥ भनै
रघुनाथ हे स्वरूप सुखशोभा धाम निज मृदुतासों रति
रम्भाको निदरती । अति सुकुमारी प्राणप्यारी रतिरंग
समय कैसेप्राण प्यारेको निशङ्क अङ्क भरती १३२ ॥

क० ॥ मोतिन की तोरनी तमासेदारद्वारे रेंवा अमित
तरैयन की शोभावड़े सानकी । मखमली गिलम गलीचा
मखतूलनके अतर अतूलनकी भोंकै हठी मानकी ॥ ज-
रकसी जरव जलूसन की गद्दीपर रवि छवि रही भुकी

भालर बितानकी । कंचनकी बेली रमारति ते नबेली अ
लबेली रङ्ग रावटी अकेली वृषभान की १३३ ॥

क० ॥ मखमली गिलम गलीचन की पांति चार
जरकसी सेज तैसीरही छबि छाइकै । हीरन के मणि
केमोत मालतीके हार लालन प्रवालनके ल्यावती बना
इकै ॥ एकै लियेसारी जरतारी कनीकोर वारी एकै हठ
बीनलै रिभावे गीत गाइकै । चन्दन चढ़ाय भाल बन्दन
लगाय राधे बैठी चंद मंदकै मसिंदपर आइकै १३४ ॥

क० ॥ मणिन महल मह महकै सुगंधै तैसी फटि
शिलानहूँ को फरश सँवारो है । जेबदार जेबदारजरी अ
जलूसदार चीजदार विशद बिछौनन पसारो है ॥ चंद्रमणि
चौकीपर चम्पक वरण हठी रम्भा रमा उमारूप गरब उ
तारो है । देखो नंद नंद सुखकंद ब्रजचंद आजु राधेमु
चंद चंदमंद करि डारो है १३५ ॥

क० ॥ मलिन अटापै ठाढी पुरट पटापै प्यारी रूपक
घटासीदेखि रीभूतगोपाल है । चरन करनकी औ चमक
आभरनकी तन आभरनकी सुफैली प्रभा लालहै ॥ जवि
रहे थकिरहे देखिचक बकरहे हठीनर नारिन को ऐसे
भयो हालहै । कैधौं कछुरूप्यालहै कै मोहनीको जाल है
कैलालन की मालहै कैमदन मसालहै १३६ ॥

स० ॥ मंजन चीर सुहारहिये शिखन्दन अंजन मो
तिन बानकी । जावक नूपुरमाल औ किंकिणि कंचुक
चन्दनहै गति यानकी ॥ कंकणसोहै केयूर भुजान लर
मुखपान औ बैदी गुँधानकी । आवै गलीमें बिलोको च
ली यह कंजकली सी लली वृषभान की १३७ ॥

क० ॥ मोतिन सों भरी मांग शीशफूल टीको दिये
बेसर तरौना छवि सारी जरतारी की । मोतिन को हार
माल फूलके हमेल हेम कंकण जराव छवि आरसी नि-
हारी की ॥ भरमी सुकविकटि किंकिणी रसाल बाजै जे-
हर औ पायजेव शोभा सुख कारी की । विछिया अनौट
राजै खोड़श शृंगार साजे मोह्यो मन मोहन कोदेखि
द्युति प्यारी की १३८ ॥

क० ॥ भानुसे अधर विम्ब कृष्णसे चिकुर प्यारी
शीत कर आनन छटान बगरायोहै । हरि सोहै लंक बंक
भृकुटी कमान मैन नयन खरसान दंत दामिन दुरायोहै ॥
बदत दिवाकर उरोज शम्भु गंगा हार नखन सरस्वती
विमल धार छायो है । देखि नापरतहै चलाकी कमला
सनकी जिन बनितामें सारे देवता बनायो है १३९

क० ॥ बाला कोऊ सेवक विशाला इहिं घरमांभ मा-
ला रूपरंग कीसी चितमें चढ़तिहै । नखशिख नजरिन
आवै चखचौंधनिसों जगमग साचेमोदमंत्रसों मढ़तिहै ॥
ऐसी दिव्य दीपति न देखी कहूं और ठौर ठौर फेरि
भौन भागिसी बढ़तिहै । आगिसी कढ़ति बड़वागिसी क-
ढ़ति दावा दागसी कढ़ति काम लागसी कढ़तिहै १४० ॥

क० ॥ बिनलाये अंजन नचत नैन खंजन से कंजन
की वास अंगवास में जगति है । कनक की भूमिसी
लसत छाती मोतीराम सहज स्वभाइनमें सहजे ठगति
है ॥ भूषणकी छवि लागे दूषणसी छवि आगे अंगअंग
योवनकी ज्योति उमगति है । सजनीय दीपनमें दीपक
शिखासीदिपै तारापतिहीमें तारापतिसीलगतिहै १४१ ॥

स० ॥ बिहंसै द्युति दामिनिसी दरसै तन ज्योति जु-
न्हाई उईसीपरै । लखि पायनकी अरुणार्ई अनूप ललाई
जपा की जुईसी परै ॥ निकरैसी निकाई निहारै नई
रतिरूप लुभाई तुईसीपरै । सुकुमारतामंजु मनोहरता
मुख चारुता चारु चुई सी परै १४२ ॥

क० ॥ वृषभानु षष्ठमकी सुखमा कहाँलों कहीं अष्टम
सीचढ़ै सौतिहिये नखियन पै । तीनमें प्रथम होवे दश
केतुजूके जोर कुचन एकादश लजावेलखियन पै ॥ कहै
मारकंडे कटि पंचम दुरे हैं देखि खायके चतुर्थबर आप
ने जियन पै । भौंह पैन नाम कबौ आज लौंभयेहैं सप्त
द्वादश दिवाने छबिरास अखियन पै १४३ ॥

क० ॥ वारिजात वारिजात पारिजात पारिजात माल
ती विदारिजात सो धेनकी भरीसी । माखन सी मैनसी
मुरार मखमल सम कोमल सरस तरु फूलन की छरी
सी । गह गही गरुई गुराई गोरी गोरे गात श्री पति
बिलौर सीसी ईगुरसों भरीसी । बीजथिर धरीसी कनक
रेखकरीसी प्रवालद्युतिहरीसी ललित लाललरीसी १४४

क० ॥ बांकीचारु चन्द्रिका बिराजै भालबांकी खौरि
बांकी भौंह चंचल चितौन चख बांकीहै । बांकी नक-
वेसरि मधुर मुसक्यानि बांकीकहै हनुमान बांकी अध
ललाकीहै । सुखराशि भूषण शृंगार चंद्र कला कीने
बांकी परयंक वैठी मूरि करुणाकी है । भुकिभुकि भू
भूमि भांकी करै देववधू कहै अनुपमसिरी राधिक
की भांकीहै १४५ ॥

क० ॥ वैसकी किशोरी गोरी शोभा बरणीन जात ग

तकी निकाई छवि नाही काहूयोन में । वासर गँवायोखोलि
जामें वियोग बेलि सांभू समय व्यथावाढी बैठिपिय भौन
में ॥ औधिके व्यतीत भये रंचको न कलपरी व्याकुलसी
भईजात सारे मंद पौनमें । नीचेले उठाय नारिडीढि पर
जागनासुआगिआगिआगिकेकेभाजिगईभौनमें १४६ ॥

क० ॥ बैठीरंग भरी हैं रंगीली रंग रावटी में कहांलों
बखानों सुन्दरई शिरताज की । चांदनी की चम्पक की
चंचला चमीकर की इन्दिरा तिलोत्तमा की शोभा कौन
काजकी ॥ मोतिन के हारगरे मोतिनसों मांगभरे मोतिन
सों बेनीगुही हठी सुखसाज की । चाल गजराज मृगराज
कीसी लंकद्विजराजसो बदनराजै रानीव्रजराजकी १४७ ॥

क० ॥ बजत बधाय गाय मंगल सोहाय मग पांवड़े
परायहै अवाई मुखवानकी । बैठी सुखपाल सुखपालनमें
रानी साथ ब्रज महरानी के प्रगट जग जानकी ॥ बोलिके
पठाईआई नगर लुगाई सब देखिछवि आईजिन्हें सुभ-
तन आन की । महर मन भाई हठी कुलह सोहाई ऐसी
गोकुलहि आई राधे बेटी वृषभान की १४८ ॥

क० ॥ बैठी कुंज भौन गोरी कीरति किशोरी राधे छू-
टत फुहारे हिमवारे एकपाती है । अतर गुलाब घिस
चन्दन चहल मची चारो ओर सुमन सुगंध सरसाती
है ॥ कैयोरंग वारीहठी उठती तरंगें त्यों अनन्त अंगना
सी अंग आभा उफनाती है । बांधि बांधि परा सरासरी मु-
ख किरणें योंओरलौ धरापैछूटि हराखाय जातीहै १४९ ॥

क० ॥ बैठीचढि चांदनीमें चन्द्रमा विलोकनको उन्नत
उरोजनते उछरेहरापरै । दमाछमा केतक तिलोत्तमाहें घ-

नइयाम रमा रतिरूपदेखि धसके धरा परै ॥ जेवर जड़ाऊ
मोर जगमगै अंगनते नेवर जड़ाऊ तेजतरुण तरापरै ।
राधे मुख मण्डल मयूषन ते महाराज छूटि के छपाकरके
ऊपर छरापरै १५० ॥

क० ॥ वह चितवन वह सुन्दरकपोल द्युतिवह दशन
निछवि बिज्जुकी धरति है । वह अँठलाली वह नाशिका
सकोरनि में वह हावभाव कैयों कौतुक करति है ॥ कहै म-
नाराम छवि बरणिसके को वह रतिते सरस मन मुनिको
हरति है । वह मुसक्यानि युग भौंहनि कमान द्युति वह
वतरानि न बिसारी बिसरति है १५१ ॥

क० ॥ बाटिका बिहारी अभिसार को सिधारी प्यारी
सांकर अँधेरीमें उजेरी कैसो कंद है । भादों को बिषम
मेह दीपसी दुरैन देह नागरके नेहको सनेह दृष्टिबंद है ॥
शिवा जान्यो नागरि पिशाचनि कमरुया जान्यो मृगनि
कलानिधि औ छली जान्यो छंद है । बिज्जु जान्यो घन
घोर घटापट मोरजान्यो रविजान्यो चोरन चकोरजा-
न्यो चन्द है १५२ ॥

स० ॥ बारिज सो मुख मीनसे नयन सेवार से बारन
की सुख दासी । कम्बु सो कण्ठ लसै कुच कोक सो-
भौर सो नाभि भरी भ्रम भासी । गोकुल धारसी रो-
मावली लहरीसी लसै त्रिवली छबिरासी । लालबिहार
करो रस में वह बालवनी सुखकी सरितासी १५३ ॥

क० ॥ फटिक शिलान सो सुधाख्यो सुधा मन्दिर उद-
धि दधिकैसी अधिकाई उमगे अमन्द । भीतरतै बाहिर
लौं भाति न दिखाई देत दूध कैसो फेज फैल्यो आंगन

फरश बन्द ॥ तारासी तरुणि तामें ठाढी भिलमिलि
होति मोतिन की ज्योति मिलि मल्लिका को मकरन्द ।
आरसी से अम्बर में आभासी उजारीलगे प्यारी रात्रि-
का के प्रतिबिम्बसो लगत चन्द १५४ ॥

क० ॥ फूलेहैं न शरद सरोज इहि समय कहूं फूलेहैं
न फूल फैल्यो सौरभ कहाते है । चंपक थलीन मिलि
मालतीहू अवलीन केसरि परसि पौन आयो न तहांते
है ॥ तोल्यो है न घनसार खोल्यो ना कुरंगसार सौरभ
अपार पाशवारको जहांतेहै । वल्लभ रसिक हम जानी
लपटानीप्यारी आईरंगमहलमें मिलन उहांतेहै १५५ ॥

क० ॥ फटिक शिलानके महल महरानी बैठी सुरन
की रानी जुरिआई मनभावती । कोऊ जलदानी पान-
दानी पीकदानीलिये कोऊ करवीनैलै सोहाय गीतगाव-
ती ॥ कोऊ चीरचीनै चारु चांदनी से चौजवारि हठल्लै
सुगंधनसों अलकै बनावती । मोतिनके मणिनके पन्नग
प्रवालनके लालनके हीरनके हार पहिरावती १५६ ॥

क० ॥ रोहिनी रमण की मरीची सी सुखद सीरी सो-
हिनी सरस महामोहिनी के थलसी । श्रीपति सुकवि
बाला रविके किरण ऐसी मदन मुकुरसी अमल गंगा-
जलसी ॥ ग्वालिगरबीली जाकेगातकी गोरार्इ आगे च-
पला निकाई ऐसी लागत सहलसी ॥ माखनमहलसीपरा-
गकेचहलसी गुलाबकेपहलसी नरममखमलसी १५७ ॥

क० ॥ रात प्रियचांदनी विलोकियेको रतिवास
सिगरी बुलाई मोदमन्दिरमें भरिगो । रघुनाथ तामसय
की शोभाको समाज देखि रीभरह्योमोपै न बखान कहु

करिगो ॥ धूँघुटकेखुलत दुलहिनी केआननते दशहूदि
शानमें प्रकाश ऐसोअरिगो । ढरिगोगुमान तमसौतिन
के जीको भटू तारन समेत तारापति फीकोपरिगो १५८ ॥

क० ॥ रंगभरी रसभरी सुन्दरसुगंधभरी सुखभरी
पैन ऐन नैन मैनकासीहै । दर्पणसी देह तैसी नेहकी नई
नवेली ब्रजबनितान ऐसी सुरपुरबासीहै ॥ आलमसुकवि
लोने सोनेकेसरोजहीते फूलहीके भारेभर पानकी लता
सीहै । चन्दनचढाय चारु चांदनीसी छायरही चन्द्रमा
सी मोतीसी चमक चन्द्रमासीहै १५९ ॥

क० ॥ राजत रंगीली रंगभौन रसमाती तहां जागत
भरोखनते ज्योतिनको चन्दहै । ज्वालामुखी मंदिरप्रसि-
द्ध सोदिखात वहां कैधों खर्गशैलकी गुहामें प्रभाकन्द
है ॥ भनत रघुनाथ लोग लखत विचारे मन तारागण
चन्दहै कि भानुहै कि छन्दहै । चन्दते दूनो दीप्त कन्द
सदापूनोसम होतहैनऊनोमुखवाला बालचन्दहै १६० ॥

स० ॥ राधे के अंग गोरईसी और गोरई विरंचि
वनावन लीनी । कैसतबुद्धि बिबेकसों एक अनेकविचार-
नमें मति दीनी ॥ बानिक तैसी बनीनावनावत केशव
प्रस्तुत होगई हीनी । लैतब केसरि केतकी कंचन चंप-
कके दल दामिनी कीनी १६१ ॥

स० ॥ रूपअनूप लख्यो कितनो रघुनाथ कहै ब्रज
बनिता को । पैनहिं ऐसो पख्यो कोउदीठि बन्यो इहि भां-
तिनते शिर पाको ॥ और कहों सोसुनो चितदै जि
भांतिनते निरख्योगुन वाको । जात दिगंतनलौ चलि
मिलिसाथ समीरके सौरभ जाको १६२ ॥

स० ॥ राधिका रूप विरंचिरच्यो सबलोकनकी सु-
खमा शुभ लैलै । अंगके रंगनके ढिगजात कै जात है
शंभुसवै रंग मैलै ॥ लालनसो परवालनसों वैधी लालन
जानिपरै वह गैलै । पांवधरै जितही वहवाल तही रंग
लाल गुलाब सो फैलै १६३ ॥

क० ॥ राधिका के चरण विराजै चारु माणिकसे मंग
की फरीसी भली आंगुरी सुभाखै हैं । गदाधर कहै करी
करसे युगल जानु क्षीण कटि केसरि सी विष अभिलाखै
हैं ॥ पानसो उदर हेम कुम्भसे उरोज वर बाहु लतिका
सी खासी कामतरु शाखै हैं । इंदुसों वदन कुरुविंद से
अधर लाल कुंदसे रदन अरविंद सम आँखेंहें १६४ ॥

क० ॥ राधाठकुरानी पासवानी लिये पानीखरी आस
पासचेरी चौरठारै देवदारसी । अंगरागअंगतिलगायवे
कोल्याई रतिअम्बरअमललियेफूलनकोहारसी ॥ युगल-
किशोर कहै नन्दको किशोर जहां जोरे करजोहै ज्योति
जिनकी चारसी । मोदकवढायवेको तुरकीहरा है लिये
एक हाथ फूलगेंद एकहाथ आरसी १६५ ॥

क० ॥ हारहीके भार उरभारना सँभारै नारिअल्प
अहार रसवासको अहार है । सीरेते सिराति तातेतार्ता
कैकै जाति डोलै पौनके परसप्यारी पानकैसी डारहे ॥
कहैकवि आलम न रतिहू न रंभाहू न मैनकाघृताची
ऐसीरूपकी अपार है । बानक विचित्र औन चित्रमें न
ऐसीकोऊ चित्रलिखि पूतरी जिआई करतारहै १६६ ॥

स० ॥ हीरनके मुक्तानके भूषण अंगन ले घनसार
लगायो । सारी सुपेदलसै जरतारकी शारदरूप स्वरूप

क० ॥ गोरेमुख गोलहरे हैंसत कपोलबड़े लोइन वि-
लोकलाल लोयलिये लाजपर । लोभालागी लाल लखि
शोभाते उठत गोभासे लगत देव रूपरंग के समाजपर ॥
बादलाकी सारीनवनारी जरतारी दरदावन किनारी भी-
नी भालरके साजपर । मोतीगुहे कोरन चमक चहुंओरन
ज्यों तोरन तरैयनकी तानी द्विजराज पर १७६ ॥

क० ॥ गरब गुरजपै चढाईतोप कोपकरि सौतिन ज-
खीराकियो योवन जमाकोहै । भणित कबिंद्र अभरनभार
भारीभटनपुर नगारे नौवतीन को भमाको है ॥ मैनगढ-
पति आगे लडैनेन सैनदेके छूत कटाक्ष बाणलाग उर
जाको है । हांको चहुंघाको करि प्यारो लेनचाहै प्यारी ते-
रोरूप गढ ग्वालियरहू ते बांको है १७७ ॥

क० ॥ गहिरी गुराईते प्रथम चूमि चामीकर चम्पक
के ऊपर बहुरि पांवरोप्यो है । तीसरेअमल अरबिंद आ-
भा बसंकरि हैंसकरि तड़िताको तोयदमेंतोप्योहै ॥ भनत
कबिंद्र तेरे गानसमय सौतेकहा सुरबनितान को गुमान
जात लोप्यो है । मेरेजान आली आज ऐंडभरो तेरोमुख
सौहैंतान भौहैंरी कलानिधि पै कोप्यो है १७८ ॥

क० ॥ गोरी महाभोरी तेरे गात की गुराई देखि
दिन दिन दामिनी की छाती होति खुधा सी । श्रीपति
कमल की कसानी मखमल की बदरुसानी लाल की
ललाई लागे सुधा सी ॥ मोम निदरत सो प्रकाश को
हरत जोम रोम रोम छुरत छपायन की क्षुधा सी । सु-
खमा को ऐनमई शीतल को चैनमई पीवन को मै
मई नैनन को सुधासी १७९ ॥

स० ॥ गतिमन्द यों जाकी मजाकी लखें हँसी होति
गयंदके चालकीहै । मुख हेरिके चंद लजोईरहै रुचिको
कहै कंज कमालकी है ॥ हनुमान नखावलीपै तियके अ-
वलीपरै फीकी प्रवाल की है । दवि दामिनी जाति प्रभा
निरखें कितनी छवि मञ्जु मसाल की है १८० ॥

क० ॥ गतिपै गयंद वारों पग अरविंद वारों हठी
अलिवृन्द वारों अलकन फंद पै । गुलफ गुलिंद वारों
शीतला पै सिंधुवारों सकल सुगंधवारोंमुखकी सुगंधपै ॥
कटिपै मृगेंद्रवारों तनछवि वंदवारों बेनीपै फनिंदवारों
जात नंदनंदपै । ओठ जीव बंधुवारों हासी सुधाकंद
वारों कोटि कोटि चंदवारों राधे मुखचंदपै १८१ ॥

क० ॥ पलिकाते पांय जोधरति धाय धरणी में छाले
परै पगमांभ पैडक गवन तें । लीलैजो तमोल तौतो ताप
आवै बलिभद्र होतिहै अरुचि पानपीक अचवन तें ॥
हारनके भार और चीरहू के तनभार यातेंनहीं वामहोति
बाहिर भवनतें । लागै जोसमीर तौतो खुरेपरें सौतिनके
फूलज्यों उडत प्यारी पंखाके पवन तें १८२ ॥

क० ॥ पीतसित मिश्रित सुकेशन ललितसारी जगि-
त जवारी ज्योति मोतिन जगीपरै । हीरनकेप्रदर प्रकाश
प्रतिबिम्बतापै पगपग मग जगमग उमगीपरै ॥ मर्कत
मणिन चंद्रिकान चकचौधै कौधै पजन प्रियाके अंग अ-
द्भुत पगीपरै । वरुकसुगंधचन्दनादिक महकमूक पावक
लहक भांकि दहक दगी परै १८३ ॥

क० ॥ प्यारी तुव अंगनि की उमगी सुवास सोई
लागी हरि चन्दन में इन्दिराके घर में । मालती लता

वनमें सेवती गुलाबनमें मृगमद घनसार अस्वरअगर
में ॥ उछल अछेह छवि छाई पुनि क्षिति पर देखियत
सोई मन माणिक मुकुर में । चम्पकवनीमें चिरागनकी
अनीमें चारुचंदकी कलामेंचपलामें चामीकरमें १८४॥

क० ॥ पलकाते पद भौन भूमिपै धरतु नेकु फलका
परत ततकाल पगतलमें । नाइनि गुलाब भांवो भांव-
ति जौ हरे हरे भांई परै आनन भाँवाई परै बलमें ॥ हनू-
मान कशमीर आदितैं अलेपतहू ऊबी रहै आपनेही
अंग परमलमें । सुरजामें नागजामें नगजा जलजामें
सुकुमार देखी वृषभानुजा सकल में १८५ ॥

क० ॥ पहिरे बनाय सित भूषण दिनेश सब केशन
कुसुम गज मोतिन की पांति है । सारी जरतारी तामें
तैसी यो किनारी द्युति जाति ना निहारी बनी प्यारी
जेहि भांति है ॥ बोलि उठी गोपिका कन्हाई तब जान
पाई नातो एक देखत उज्यारी जैसी राति है । रूप की
अन्हाई क्षीर निधि कैसी छाई छवि मेंतो जानी माई
के जुन्हाई चली जाति है १८६ ॥

क० ॥ पैन्है इवेतसारी जरी मोतिन किनारी द्युति
दामिनि कहारी प्रतिजातरूप कंदहै । हारहिये भूषण
जड़जमाल बेंदी लाल अधर प्रवाललाल और ज्योति
वंद है ॥ दमक समाकी हठी रमा उमा इंदमाकी रति
रूप उपमाकी करैगति मंदहै । नखत पतीसो मुख ल-
खत गोविन्द ठाढीतखतपैवैठी राधेवखतबलंदहै १८७॥

क० ॥ तनकी सुवास आसपास रासमण्डलमें भौं-
रनकी भीरभारी देखियतभोरते । संतनकहतलोने लांक

की लोनाईलाखि लचकनिधिपुल नितम्ब भ्रुकभोरते ।
पांवनतेलाखि दरदावन किनारी गज मोतिनसों सारी
जरतारी ओरओरते । श्यामघन घटनते निकसि निशंक
मानो चंदमुख चपलनि घेख्यो चहुंओरते १८८ ॥

क० ॥ ताराकिधों विधुदार किधों घृत धारसी जा-
वकहै परिरंभौ । कामकी कामिनी कै मधुयामिनी दीप-
शिखा किधों विज्जु सदंभौ ॥ देखी न जाति विशेषीवधू
किधों हेमबरेखी रमा रुचिरंभौ । सांभू शशी की प्रभा-
तको भानु किधों वृषभानके भौन अचंभौ १८९ ॥

स० ॥ प्रभा चपला कीकहै को भली लजी जासों दबी
घन में घहराति । छपाकर छीन मलीन महा द्युति ताकी
नहीं मुख पै ठहराति ॥ कही हनुमान परै तिय कयों प्रति
अंगनते उपमा लहराति । नहीं तनुरूप विलोकि परै तन
ऊपर कै छवि यों छहराति १९० ॥

क० ॥ तैसी चष चाहन लगत उर शायक सी तैसी
विधि वाहन विराजत विजैठो है । तैसी भृकुटीन घाट तै-
सोई लसै लिलाट तैसोई विलोकिवे को लाल मन पैठो
है ॥ कहै नीलकण्ठ अंग तैसी तरुणाई आई योवननरे-
श तहां फिरै अंग ऐंठो है । बूटी लट भालपै विराजै गोरे
गाल पै सुमानों रूप मालपै बियाजऐंठि वैठो है १९१ ॥

क० ॥ देखीभट्टभावती प्रकाशभारे भानकैसो कोकि-
लासे बैन नैन ऐनन जुरैगई । मैतकासी नारी हठीमैतका
कहारी प्यारी रम्भा रमा उमावारी मनको भुरैगई ॥
कमल कलीसीलली राजतअलीनबीच गोकुल गलीनमें
गुलाव सो कुरैगई । विज्जुल के जालन की कोटिन मशा-

लन की लालनकी मालन की दीपति दुरैगई १६२ ॥

क० ॥ देखी भांति भली हरि आज वृषभानुलली
ओट कै अलीकी चली या गलीमें जाति है । बापुरो
मयंक सर कीजै कहा सकलंक जाके रूपआगे रंकरंभासी
लजातिहै ॥ केती कबिताई कैसवांरक निकाई कहै सीप
गहिराई कहूंसरिता समातिहै । सौरभ सों अंगचढी भौर
भीर संगसढी बाहरकैअंगकढी शोभा मड़रातिहै १६३ ॥

क० ॥ देहमें बनक सीहै नूपुरभनकसीहै लांकहूतन-
क सीहै महाछवि बढीहै । चालगति मंदसीहै लगेसुख
कंदसीहै निरखते चंदसीहै कोक कलापढीहै ॥ आलम
के प्रमुबांके पटतरदीजै कौन तेरे चितबसी चहै वाकेसम
गढीहै । आंगनमें पगभरै सखी कंध बाहुधरै कंचनके
खम्भ मानो चंपलताचढीहै १६४ ॥

स० ॥ दास लला नवला छविदेखिकै मोमति है उप-
मानलतासी । चंपक मालसी हेमलतासी कि होइ जवा-
हिरकी लवलासी ॥ ज्योतिसों चित्रकी पूतरी काढि कि
ठाढी मनोजहिकी अबलासी । दीपशिखासी मशाल प्र-
भासी कहौं चपलासी कि चंदकलासी १६५ ॥

क० ॥ घूंघटके घूमके सुभूमके जवाहिरके भिलमि-
ल भालरेकी भूमलौ भुलतजात । कहैपदमाकर सुधा
कर मुखीके हीर हारनमें तारनके तोमसे तुलत जात ।
मंदमंद मोकल मतंगलौ चलेई भले भुजन समेत भु
भूषण डुलतजात । भूनाकी भूकोरन चहुँघाखोरखोर
में खासे खुशबोईके खजानेसे खुलतजात १६६ ॥

क० ॥ घांघरो घनेरो लांबीलटै लचकीलो लंकका

करेजी सारीखुली अधखुली ठाड़वह । गोरी गजगौनी
दिनदूनी द्युति होतदेव लागति सुलोनी गुरलोगनि के
लाड़ वह ॥ चंचल चितौनि चुभिरही चितचोर वारी मोर
वारी बेसर औ केसरकी आड़वह । मृदुहँसि बोलनकी
गोरे गोरे गोलनकी ललित कपोलन की जीमें गड़ी
गाड़ वह १६७ ॥

स० ॥ उसरैपट पौन प्रसंगनसों द्युति दामिनीके स-
म दौरति है । बतराय सखीजन सों मुसब्याय सुचांदनी
की छवि छोरति है ॥ अधिकाय सुगंधनि सेवक चारु
मलिनको भूक भोरति है । धनिबाल सुचालसों फा-
लभरे लौ मही रँगलाल में बोरति है १६८ ॥

क० ॥ धारे लालसारी प्यारी हीरन किनारीवारी अं-
गन अनंग द्युति रंगचढ़ि आयोहै । दामोदर कहै बाल
बैठीहै विनोदभरी लालको बिलोकिबेको मोदमढि आयो
है ॥ भांकीभुकि भूपकि भरोखा खोलि घूँघटको बदन
विकासको प्रकास बढि आयोहै । जोरि के नक्षत्रन वि-
थोरि घनघोर मानो फोरि रविमण्डल को शशि कढि
आयो है १६९ ॥

क० ॥ उज्ज्वल अखण्ड खण्ड सातयेमहलमहा मं-
डल चवारी चंद्रमण्डलकी चोटही । भीतरहू लालन
की जालनि विशाल ज्योति बाहिरजुन्हाई जगीज्योतिन
के जोटही ॥ वरपतिबानी चौर डारति भवानी करजोरे
रमारानी ठाड़ीरमनकी ओटही । देवदिगपालनिकी देवी
सुखदाइनते राधाठकुराइन के पांयन पलोटही २०० ॥

क० ॥ चोटी देख संपालजे चंपा अंग रंग देख कंपा

देख चन्द्र चन्द्र बिम्ब जिहि गोरी को । चाल देख लजत मराल मद माते व्याल देखे जोत जाल जोत जाल तन चोरीको ॥ कहि रघुनाथ हाथ निरखिलजातकंज लाजत है भौम भालबिन्दु लखि शोरीको । नाहीं उपमान है सुजान समताको कहूं ऐसी है अनूपरूपकी रतिकिशोरीको २०१ ॥

क० ॥ दन्तन की दमक दवाके द्युति हीरन की अधर प्रबालनते अति अगरो परै । मंजुल कपोलन की कल कमनीय तासों अनुपम मुकुर सरूप रगरो परै ॥ निरखी नखनकी निकाई द्विज ऐसीभांति उपमान जिनते सहमि सगरो परै । अमित उमंगनते कहिये कहाँ लौ प्रति अंगन तेजाके छविपुंज बगरो परै २०२ ॥ इति सर्वदेह उपमा वा छवि वर्णन सम्पूर्णम् ॥

दोहा ॥

नखशिखयह संग्रहकियो अपनी मति अनुसार ॥
भूल चूक जो होय कछु सज्जन लेव सुधार १
संवत उशिस जानिये तापर और पचास ॥
जेठ कृष्ण तेरस दिना कीन्हों ग्रंथ प्रकास २

इति नखशिखहजारा परमानन्दसुहाने संग्रहीत सम्पूर्णम् ॥

नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापखाने में छपा
दिसम्बर सन् १८८३ ई० ॥

सनोफ़ सहफ़ूज़ है वहक़ नवलकिशोर प्रेस ॥

और उनके परस्पर प्रीतिमान और आसक्त होने की कथाओं का कीर्तन ९ करोड़ों प्रपंच और छलरचना और बहुरूप धारण करने की विद्या के द्वारा म्लेच्छोंका विजयकरना और और नानाप्रकार की सुन्दर शोभायमान और चित्तको प्रसन्न करनेवाली कथावर्णित हैं और ये उक्त आख्यान यथाचित रससम्बन्धी नानाप्रकारके छन्दों से संपुटित हैं इस पुस्तककी पूरी पूरी प्रशंसा पढ़नेही से जानी जासکتी है परन्तु हम संक्षेपमात्र इतना कहसक्ते हैं कि स्वस्थताके समय को व्यतीत करनेके लिये और इसके पढ़नेसे चित्तको प्रसन्न और आह्लादित करनेके लिये यह पुस्तक अद्वितीय है और ऐसी अद्भुत है कि हरप्रकारके व्यसनी मनुष्यके लिये उपयोगी है हरभक्त इसको पढ़कर ईश्वरमें दृढप्रीति और विश्वास करेंगे--शूरवीर इसके पाठसे वीररसमें छुक्ति हो जायँगे रसिकोंका चित्त इसके अवलोकनसे प्रफुल्लित होजायगा विरहियोंको इसका पाठ प्रिय दर्शनकी समान सूचितहोगा और ईश्वरीय वनस्पति रचनाको अवलोकन काव्यसन रखनेवालों को इसके पाठ में परम प्रीति उत्पन्न होगी ॥

इस अपूर्वग्रंथको स्वदेश निवासी महज्जनोंकी प्रीतिके निमित्त श्रीमद् भार्गववंशावतंस श्रीयुत मुंशीनवलकिशोर जी (सी, आई, ई) ने आगरा नगर पापलमंडीनिवासी चौरासिया गौड़वंशावतंस पंडित कुंजबिहारीलाल उपनाम कुंजलाल से रचनाकराकर अपनेनिज नामांकित यन्त्रालयमें मुद्रित कराया है अब हमको आशाहै कि हमारे भारतदेश निवासी इस मनोहर अपूर्व और अद्भुत ग्रंथको ले लेकर पढ़ें और इसके पाठसे परमानन्द प्राप्तकरके हमको कृतार्थकरें ॥

संजय नवलकिशोर
प्रमु लखनऊ

+ यह पुस्तक २१ जुन ४ बर्षकीहै कीमत १०/१० है परंतु मोटागरी का अक्षयवा और भी बड़ीतादादके पुरीदारोंके सहिये कि द्वाय मतवाहे एक किताबतकरें—

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगमपुराण स्मृति सांख्यादि सारभूत परम रहस्य गीताशास्त्र का सर्व विद्यानिधान सौशील्य विनयोदार्य्य सत्यसंगरशौच्यादि गुणसंपन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परमअधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सबप्रकार अपार संसार निस्तारक भगवद्भक्ति मार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता वज्रवत् वेदांत व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धिसे पार नहीं पासके तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देवभाषाही पठनपाठन करनेकी सामर्थ्य है वहकब इस के अन्तराभिप्रायको जानसके—हैं और यह प्रत्यक्षही है किजब तक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छे प्रकार बुद्धिमें न भासितहो तबतक आनंद क्योंकर मिलै इसप्रकार संपूर्ण भारतनिवासी श्रीमद्भगवत्पदाब्जरसिकजनों के चिन्तानंदार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्मधुरीण सकल कला चातुरीण सर्वविद्या विलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमान् मुंशी नवलकिशोरजी (सी, आई, ई) ने बहुतसाधन व्ययकर फर्कखावाद् निवासि पण्डित उमादत्तजीसे इस मनोरंजन वेद वेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तकको श्रीशंकराचार्य्य निर्मितभाष्यानुसार संस्कृत से सरलदेश भाषा में तिलक रचाय नवलभाष्य आख्यसे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादियाहै कि जिसकोभाषा मात्र के जानने वाले पुरुष भी जानसके हैं ॥

मिताक्षरा भाषा टीका सहित ॥

यह पुस्तक संपूर्ण धर्मशास्त्रोंका शिरोमणिहै जिसमें आचार काण्ड, व्यवहारकाण्ड और प्रायश्चित्तकाण्ड नामक तीनकाण्ड हैं जिनसे गृहस्थादि चारों आश्रम और ब्राह्मणादि चारों वर्णों के संपूर्ण कर्मधर्मादि और राजसम्बन्धी कार्यों में दायभागादि व्यवहारों में दादी प्रतिवादियों के धर्मशास्त्र सम्बन्धी मामिले और मुद्दइमों की व्यवस्था वर्णित है ॥

